कर्ण -- अंग का राजा

"एक युवा काल्पनिक कथाकार।"

हिंदू

केविन मिसल

Table of Contents

□□□□-□□□□□□ □□□□□
□□□□□□ □□□
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28

29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46
47
48
49
50
51
52
53
54
55
56
57
58
59

60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80
81
82
83
84
85
86
87
88
89
90

91
92
□□□□□□□□□

[redacted]
[redacted] [redacted]
[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted], [redacted] 900 [redacted] [redacted]
[redacted] [redacted]

SIMON &
SCHUSTER

London · New York · Sydney · Toronto · New Delhi

1

जुड़वां बेटे… एक मां जिसके खून में अश्वेत वंश है…
वह वहीं था। ठीक वहीं, विशालकाय पेड़ों की गहराई में, लताओं से लिपटे हुए, मानो किसी बूढ़ी औरत के टेढ़े-मेढ़े हाथों की तरह। उसकी माँ भी वहीं थी। हालाँकि, वह उसकी असली माँ नहीं थी। बल्कि वह माँ थी जिसने उसे तब अपनाया जब उसके राजपरिवार ने उसे बेदखल कर दिया था। उसने उसे राज-काज और युद्ध-प्रणाली के बारे में सब कुछ सिखाया, जितना वह जानती थी। लेकिन आखिरी दिन, जब वह दुनिया में वापस जाने के लिए तैयार था, तो उसने दक्षिणी माँगी।
और उसने उससे पूछा कि वह क्या चाहती है, जिस पर उसने एक तेज धार वाला स्टील का चाकू काई लगी जमीन पर रख दिया और फुसफुसाते हुए कहा: "मुझे मार डालो।"

Girivraj, Magadha, modern day south Bihar
जरासंध पसीने से भीगा हुआ जाग उठा।
सपने। मनहूस सपने!
उसने रेशमी चादर को कसकर पकड़ा और छत की ओर देखा। नग्न अवस्था में लेटे जरासंध चालीस वर्ष से अधिक के नहीं लग रहे थे, उनकी दाढ़ी सलीके से रंगी हुई थी और बाल छोटे-छोटे कटे हुए थे। उनकी गर्दन लगभग न के बराबर थी और उनका शरीर पहलवान जैसा था, उनकी भुजाएँ मोटी और कमर चौड़ी थी। उन्होंने करवट बदलकर अपने बिस्तर के खाली हिस्से को देखा और उसे छुआ। एक समय था जब उनकी पत्नी उन्हें सहलाकर सुला देती थीं। लेकिन वह सब बीत चुका था। बहुत समय पहले।
वह अब इस दुनिया में नहीं रहीं।
वह उत्तर-पश्चिम के शक्तिशाली राज्य मगध का राजा था और उसके पास नगर-राज्यों के साथ गठबंधन बनाने के लिए आवश्यक रानियों के अलावा कोई रानी

नहीं थी। इन वैवाहिक अनुबंधों पर हस्ताक्षर करते समय भावनाओं का कोई लेना- देना नहीं था, बल्कि केवल रणनीतिक व्यावहारिकता ही मायने रखती थी।
और इससे पहले कि जरासंध अपने विचारों और अतीत के सपनों से दूर होकर दोबारा सो पाता, उसने अपने पीतल के दरवाजे पर एक ज़ोरदार दस्तक सुनी।
रात काफी हो चुकी है। कौन हो सकता है?
दरवाजे पर लगातार दस्तक के बीच, जारा अपनी सुनहरी, केसरिया धोती पहने हुए, नंगे बदन और पसीने से तर-बतर होकर दरवाजे की ओर बढ़ा, उसकी बांह पर रुद्राक्ष की माला लिपटी हुई थी और गले में त्रिशूल का एक पेंडेंट लटका हुआ था।
उसने दरवाजा खोला। उसके सामने उसका सेनापति खड़ा था। एक ऐसा व्यक्ति जो वेताल की तरह पीला पड़ा हुआ था, वही प्राणी जिसके बारे में जरा की बूढ़ी नानी चाँद की रोशनी में बैठकर उपदेश दिया करती थीं। सिर से पैर तक गंजा, उसे मुँह के कोने में तंबाकू चबाने की आदत थी।
"गोनंदा, तुम्हारे यहां होने का कोई अच्छा कारण होना चाहिए," जरा ने कहा। वह थका हुआ लग रहा था, उसने सिर हिलाकर और झुककर कहा, "जी महाराज। मैं करता हूँ।"
"यह क्या है?"
और एक नाटकीय आह भरते हुए उन्होंने कहा: "विजया डॉक पर हमला हुआ है।"

जरा को वहां नहीं जाना चाहिए था। दरअसल, राजा को केवल दरबार के मामलों को ही देखना चाहिए, युद्ध के मैदान के मामलों को नहीं। इसीलिए उनके पास इतने सारे सेनापति और लेफ्टिनेंट थे; उनका यही काम था। लेकिन यह विजया बंदरगाह था। गंगा के उत्तर में स्थित किलों और इमारतों का एक विशाल क्षेत्र, जो मगध के लिए जहाज निर्माण और व्यापार केंद्र के रूप में कार्य करता था। यह एक महत्वपूर्ण बंदरगाह था जहाँ से वे अपने जहाजों को यूनानियों या मिस्रियों की ओर पश्चिम की ओर रवाना करते थे।
"आपको जाने की जरूरत नहीं है," गोनांडा ने कहा।
लेकिन तब तक वे आम सड़कों पर पहुंच चुके थे, जो शाही महल के निकास द्वार की ओर जाने वाला कंकड़-पत्थर से भरा रास्ता था।

"तुम जानते हो मैं क्यों जा रहा हूँ।"
वहाँ माल से लदा एक जहाज़ था। एक महत्वपूर्ण जहाज़, जो अगले दिन बंदरगाह से रवाना होने वाला था। और वह मन ही मन भगवान शिव से प्रार्थना कर रहा था कि वह जहाज़ नष्ट न हो। लेकिन ऐसा सोचना व्यर्थ था।
वह बिना कवच के अपने रथ पर बैठा था, म्यान में रखी तलवार को बगल में रखे हुए था, जबकि सरदार अपने घोड़े पर सवार था। उनके पीछे सौ आदमियों के साथ, वे तारों की आभा और धुंध भरे चाँद की रोशनी में विजया की ओर तेजी से बढ़े। जैसे ही द्वार खुले, मगध उनके सामने रात के अंधेरे में डूबा हुआ, जुगनुओं की तरह जगमगाता हुआ दिखाई दिया। यह सचमुच एक सुंदर राज्य था। उनका महल रणनीतिक रूप से ऊँची जगह पर स्थित था, जबकि शहर दो मंजिला इमारतों और संकरी सड़कों, ईंटों से बनी भट्टी की दीवारों और तीरंदाजों से लैस ऊँची मीनारों से सुसज्जित था। दीवारें कंटीले द्वारों और किलों से मजबूत थीं, जिन पर उनके सैनिक उनकी प्रजा की रक्षा के लिए तैनात थे। यह एक सुसंगठित समाज था, जो मगध को एक शक्तिशाली राज्य बनाने के लिए दिन-रात काम कर रहा था।
वह अपनी आरामदायक सीट पर करवट लेकर अपने साथ सवार मुखिया की ओर मुड़ा, तभी मुखिया ने पूछा: "क्या हमें पता है कि गोदी पर हमला किसने किया?"
“नहीं,” मुखिया ने कहा। “महाराज, मुझे पूरा यकीन है कि ये लुटेरों और डाकुओं का गिरोह है। और कौन हो सकता है?”
अगर ऐसा है तो नुकसान कम होगा।
लेकिन सितारे उसके पक्ष में नहीं थे, वह इसे महसूस कर सकता था। उसे ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने उसे मुक्का मारा हो, कि कुछ बहुत ही भयावह साजिश चल रही है।
वह आधी रात को सबको पीछे छोड़कर माल ढोने के लिए जा रहा था। और उसे पूरी उम्मीद थी कि माल सुरक्षित होगा।
ऐसा होना ही चाहिए।

2

दूरी बहुत अधिक थी और यात्रा थका देने वाली थी। बीच-बीच में उन्होंने डेरा डाला, लेकिन विजया बंदरगाह तक पहुँचने में उन्हें घंटों लग गए।
लंबी यात्रा ने जरा को उन चीजों पर विचार करने का समय दिया जिन्हें उसने नजरअंदाज कर दिया था। उनमें से एक उसके जैसे ही एक अन्य नगर-राज्य के साथ उसके जटिल संबंध थे।

भारत के उत्तरी भाग आर्यावर्त में कई राज्य थे जिन्हें जनपद कहा जाता था, जिनका व्यापक अर्थ नगर-राज्य होता था। अंग, वंग और मथुरा जैसे शहर इसी श्रेणी में आते थे। इसके बाद महाजनपद थे, जिन्होंने अपनी कुशल रणनीतियों, सैन्य नियंत्रण, विशाल साम्राज्य और अर्थव्यवस्था के कारण एक अलग ही पहचान बनाई थी। सौभाग्य से मगध भी इन्हीं में से एक था, और उसका घनिष्ठ सहयोगी और शत्रु दोनों ही हस्तिनापुर सबसे बड़ा राज्य था।
जरा को हस्तिनापुर से अपने संबंध बिल्कुल पसंद नहीं थे। ये संबंध जटिल थे। कुछ मामलों में उनके अच्छे संबंध थे, तो कुछ मामलों में उनसे निपटना बेहद मुश्किल था। जरा को हस्तिनापुर के साथ नरमी बरतनी पड़ती थी ताकि कोई महायुद्ध न छिड़ जाए। अन्यथा, स्थिति बेकाबू हो जाती और लाखों लोग मारे जाते, सरकार विफल हो जाती और वे राख के महल के लिए लड़ रहे होते। इसलिए, शीत युद्ध जारी रहा, जिसमें मुस्कान और हंसी के पीछे उनके असली इरादे छिपे हुए थे।
एक निर्णायक मोड़ तब आया जब उन्होंने एक संधि की, एक प्रकार का समझौता जिसके तहत उनके प्रिय वन क्षेत्र, अंगा को दो भागों में बाँट दिया गया। एक भाग जरा को और दूसरा हस्तिनापुर को दिया जाना था। हालाँकि यह समझौता हो गया और सभी लोग खुशी-खुशी घर लौट गए, लेकिन हाल ही में जरा के अंगा क्षेत्र

में बहुत अच्छी लकड़ी की पैदावार हो रही थी जिससे वह ऐसे जहाज बना रहा था जो उसकी नौसेना को मजबूत बना सकें।
और इसलिए, इन नए घटनाक्रमों से भयभीत होकर, हस्तिनापुर दूर-दूर रहने लगा था। स्पष्ट शब्दों में कहें तो, ठंडा पड़ गया था। हालांकि जरा को उनका दूर रहना अच्छा लगता था, लेकिन उसके सेनापति ने उसे बताया था कि यह इस बात का संकेत हो सकता है कि हस्तिनापुर मगध के साथ अपने संबंधों पर पुनर्विचार कर रहा है।
लेकिन युद्धविराम जारी रहा। कम से कम, अभी के लिए।

वे पहुँच चुके थे।
उसने देखा कि बंदरगाह पर उदासी का एक भयावह माहौल छाया हुआ था - उसके आदमियों के शव जमीन पर बिखरे पड़े थे, लोहे की नोक वाले तीर उनके मांसल सिरों, आंखों या छाती में धंसे हुए थे।
जरा रथ से उतरे और उनकी निगाहें घाट पर चारों ओर घूमने लगीं। वे एक खुले मैदान में थे, जहाँ लकड़ी से बना एक अधनिर्मित जहाज रखा था और उनके सभी मजदूर, जो अपवित्र जाति के थे, हाथ जोड़कर उन्हें प्रणाम कर रहे थे। उन्हें कोई चोट नहीं आई थी। लुटेरों ने उन्हें नुकसान पहुँचाने के बारे में सोचा भी नहीं था।
जब उसका सरदार लोगों से पूछताछ कर रहा था, जरा अपने दो अंगरक्षकों के साथ आगे बढ़ा। भोर होने वाली थी, सूरज नारंगी प्रकाश की तरह चमक रहा था। जैसे ही वह उस बंदरगाह के पास पहुँचा जहाँ पवित्र गंगा नदी बहती थी, उसका चेहरा आकाश के प्रकाश से दमक उठा। वहाँ उसके विशाल जहाज खड़े थे और यद्यपि बंदरगाह पर शव पड़े थे, जहाजों को कोई नुकसान नहीं पहुँचा था। न ही वे जले थे। मानो उन पर किसी ने हाथ ही न लगाया हो।
वह बेवकूफों की तरह मुस्कुराया। उसके चेहरे पर राहत के भाव छा गए। माल सुरक्षित रहेगा।
“इसे मेरे लिए खोलो।” उसने अपने आदमियों को आदेश दिया कि वे तख्ता उसके एक जहाज पर रखें, जिस पर वह चलकर गया। एक पल के लिए उसने उस अनोखे जहाज की सुंदरता को निहारा, जिसका ढांचा उसके पसंदीदा जानवर, बैल के आकार का था,

जिसका अगला हिस्सा मजबूत था और जिसका मस्तूल लगभग पचास फीट ऊंचा था ताकि तेज हवाओं का सामना कर सके।
वह नीचे उतरा, क्वार्टरमास्टर के केबिन से गुज़रते हुए और शराब के अस्तबल के अंदर जाकर सबसे निचले तल पर पहुँचा, जहाँ उसका माल रखा होना था। जाँच करने के लिए उसने दरवाजे खोले और पाया...
कुछ नहीं।
खाली।
सब कुछ नष्ट हो गया था।
उसे डूबने जैसा अहसास हुआ और उसके घुटने कांपने लगे, लेकिन उसने अपनी भावनाओं को ज़ाहिर नहीं होने दिया। सारे डिब्बे, सारा माल, जलकर राख हो गया था।
मानो…
मानो…
बंदरगाह पर हुआ हमला इसी को निशाना बनाकर किया गया था। इस विशेष माल को। यह लुटेरों का हमला नहीं था। यह एक सोची-समझी रणनीति थी।
यह माल महत्वपूर्ण था क्योंकि इसमें भारी मात्रा में सोना और चांदी थी, जो यूनानी द्वीपीय जनजातियों में से एक - आयोनियनों - को उनके भार ढोने वाले घोड़ों के बदले में दी जानी थी। ये साधारण घोड़े नहीं थे। वे बेहद मजबूत और सामान्य घोड़ों से कहीं अधिक तेज थे, और यदि यह सौदा पूरा हो जाता, तो यह जरा की घुड़सवार सेना के लिए लाभकारी होता, जो उसके राज्य में सबसे कमजोर थी।
वह जल्दी में था क्योंकि वह सोने और चांदी के माल का एक और जत्था तैयार करके जहाज को रवाना नहीं कर सकता था। उसे एक निश्चित समय पर जाना था। आयोनियन लोग समय को लेकर काफी सतर्क थे और वे इस बात पर अड़े थे कि माल बत्तीस सूर्यास्त के भीतर पहुंच जाए, अन्यथा वे सौदा रद्द कर देंगे।
पर अब…
अगर वह समय पर सारा सोना और चांदी ले भी आए, तो भी सैकड़ों घोड़ों को लेकर ग्रीक द्वीपों तक जाकर वापस आने वाला जहाज बनाने में बहुत समय और बहुत पैसा लगेगा।
वह पहले ही बहुत कुछ खो चुका था।
वह खालीपन भरी निगाहों से उस खाली जगह को देखता रहा।

जिसने भी यह किया है, उसे इसका परिणाम भुगतना पड़ेगा।

जारा वापस घाट पर चला गया और तब तक उसके सरदार ने बढ़ई और घाट के मजदूरों को आगे खड़ा कर दिया था। वे अधनंगे थे, उनकी आँखें थकी हुई थीं, और वे सभी उसके सामने घुटनों के बल बैठे थे, उनकी आँखों में आँसू थे, वे अपनी जान की भीख माँग रहे थे, कह रहे थे कि इसमें उनकी कोई भूमिका नहीं है, जबकि जारा का सैनिक उन्हें कोड़े मार रहा था।
आगे एक आदमी खड़ा था, एक बढ़ई, घनी मूंछों वाला, जिसने अपनी हथेलियाँ आपस में जोड़ रखी थीं।
जरा गुस्से से लथपथ होकर उसके ऊपर खड़ा था, गुस्से से उसकी हड्डियां तक झुलस रही थीं, और उसने अपने जबड़े भींचकर पूछा: "यह कौन था?"
“हमने नहीं देखा, महाराज।”
“मेरे पास यहाँ सौ आदमी थे। वे सब मर चुके हैं। यह कैसे संभव है कि आपने कुछ नहीं देखा?”
“यह सब इतनी जल्दी हुआ। हम आराम कर रहे थे और सो रहे थे कि हमारे आदमी एक-एक करके गिरने लगे। तीर कहीं से भी आ रहे थे। यह एक खामोश हमला था,” उस आदमी ने कहा। “और जब हममें से कुछ लोगों ने देखा, तो हमने जहाज पर एक आकृति देखी, महाराज। वह जहाज से सामान अपनी नाव पर फेंक रहा था, और फिर वह उसे लेकर चला गया।”
“एक आकृति?” जरा उस आदमी के बगल में घुटनों के बल बैठ गई और उस पर व्यंग्य करते हुए बोली, “आकृति से तुम्हारा क्या मतलब है?”
"एक आदमी, महाराज।"
"बस एक ठो?"
बढ़ई ने सिर हिलाया। “और भी होंगे, लेकिन हमने तो सिर्फ एक को ही देखा। और ऐसा भी नहीं था कि हमने उसे रोकने की कोशिश नहीं की। हम उसके पास गए। उसने हमारी तरफ देखा। हमने उससे कहा कि इसे मत लो, यह तुम्हारा माल है। हमने उससे विनती की…” अब वह आदमी कांप रहा था। जरा उससे यह उम्मीद नहीं कर सकता था कि वह इतने क्रूर तीरंदाज को रोक देगा।
“क्या तुमने उसका चेहरा देखा?” जरा ने पूछा।

यह अंधेरे में छिपा हुआ था।
एक रहस्यमय शख्सियत।
“उसने क्या कहा?”
“उसने कहा…” बढ़ई ने हत्यारे के अंतिम शब्द फुसफुसाते हुए कहे।
जारा का खून जम गया। "धन्यवाद, मेरे दोस्त।"
वह अपने पैरों पर खड़ा हुआ और कमान प्रमुख की ओर बढ़ा।
"क्या आपको लगता है कि वे इसमें शामिल थे?" गोनांडा ने हमेशा की तरह तंबाकू चबाते हुए पूछा।
जारा ने सिर हिलाया। “वे बहुत कमजोर हैं। लेकिन एक-दो को मार दो, ताकि दूसरों को सबक मिले। मैं इस वजह से अपना कार्यबल खोना नहीं चाहता।”
सरदार ने सिर हिलाया। "एक अकेला आदमी हमारे सौ आदमियों को कैसे मार सकता है?"
जरा के पास एक पल के लिए कोई शब्द नहीं थे। वह अनिश्चितता में रुक गया। “आयनियों के साथ हमारा अनुबंध टूट गया और यही इस आदमी की चाह थी,” जारा ने कहा। “वह नहीं चाहता था कि हमारे पास घोड़े रहें। लेकिन मुझे यकीन है कि वह अकेला काम नहीं कर रहा है। उसके सहयोगी हैं। मजबूत सहयोगी, नहीं तो उसे यूनानियों के साथ हमारे समझौते के बारे में कैसे पता चलता?”
"जासूस?"
जारा ने सिर हिलाया। "और कौन चाहेगा कि जासूस हमारी जासूसी करते रहें?" इसका उत्तर सरल था।
"अच्छा तो इसका क्या मतलब है?"
बढ़ई ने उसे बताया था, उसके कान में फुसफुसाते हुए उस जघन्य, क्रूर शिकारी के अंतिम शब्द कहे थे, जो उसने अपनी नाव पर सवार होने से पहले कहे थे: हस्तिनापुर से शुभकामनाएँ।
जरा ने मुखिया की ओर सख्ती से देखते हुए वह बात कही जो उसे बहुत पहले ही कह देनी चाहिए थी जब गोनांडा ने उसे लगातार चेतावनी दी थी: "हम हस्तिनापुर के साथ युद्ध करने जा रहे हैं।"

3

Hastinapur, Capital of Kuru Kingdom, modern day Meerut
सुयोधन जमीन पर गिर पड़ा। थकावट से। उस दर्द से, जो उसकी मजबूत बाहों में गूंज रहा था।
वह अपने गदा के पास घुटनों के बल बैठ गया, जिस पर वह सहारा लिए बैठा था। वह घंटों से अपने गदा का अभ्यास कर रहा था और चाहे उसका शरीर ही मर जाए, वह अभ्यास जारी रखेगा। उसे एक बेहतर योद्धा बनना था। एक परिपूर्ण योद्धा। उन पांडव परजीवियों से बेहतर।
कुछ ही वर्ष पूर्व, तेजस्वी सुयोधन को पता चला था कि उसका सिंहासन खतरे में है, जब पांडव वन से लौटे और उसके पिता ने उन्हें स्वीकार कर लिया। आख़िरकार, पांडव सुयोधन के चचेरे भाई और उसके पिता के भतीजे थे। पाँचों को आंशिक उत्तराधिकारी माना जाता था, हालाँकि उनके पिता, पांडु, जो उत्तराधिकारी थे, ने सख्ती से सिंहासन अपने अंधे भाई को सौंप दिया था और एक संन्यासी बनने के लिए वन चले गए थे—अन्यथा, वे राजा होते। एक संत और तपस्वी बनने के लिए। उन्होंने यह अपने धार्मिक कारणों से किया था। लेकिन पांडवों की माता कुंती, पांडु की मृत्यु के बाद, भारत के सबसे शक्तिशाली शहर हस्तिनापुर का सिंहासन छीनने के लिए अपने बच्चों को वापस ले आईं। उन्होंने निर्दोष होने का नाटक करते हुए कहा कि उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह चाहती थीं कि उनके पुत्र स्वस्थ वातावरण में पले-बढ़ें, न कि अब वन में।
सब झूठ है।
अपनी गदा उठाकर उसने उसे तीन सौ साठ डिग्री घुमाना शुरू कर दिया। गुस्से में आकर उसने इसे और तेज़ी से घुमाया, उसकी बाहें कस गईं, पैर कमज़ोर पड़ गए और वह थक गया तथा प्यास से बेहाल हो गया क्योंकि उसके शरीर से पानी तेज़ी से निकल रहा था, उसका सिर धीरे-धीरे ढीला पड़ रहा था...
परजीवी।

उसके रगों में एक अजीब सी ऊर्जा दौड़ रही थी। पिछले कुछ वर्षों से पांडव सुयोधन के परिवार की देखरेख में थे। वे उनसे जुड़ते जा रहे थे। फिर, जब शक्तिशाली राजगुरु द्रोणाचार्य को उज्जैनक में राजपुत्रों को प्रशिक्षण देने का कार्य सौंपा गया, तो सुयोधन ने सोचा कि वह और उसके निन्यानवे भाई ही चुने जाएंगे, लेकिन पांडव वहां भी उनके साथ ही बने रहे।
बह!
वह हमेशा अपने पिता से प्यार करता था, लेकिन वह आदमी बिल्कुल अंधा था और उसके फैसले भी कुछ खास अलग नहीं थे। एक समय वह एक चतुर रणनीतिकार हुआ करता था, लेकिन अब वह बस एक ऐसा व्यक्ति था जिसकी जगह कोई भी हथिया सकता था। उन्हें तो इन्हें शुरू से ही स्वीकार नहीं करना चाहिए था।
अब वे उस मुकाम पर पहुँच चुके थे जहाँ उन्हें रंगभूमि प्रतियोगिता में भाग लेना था, जो द्रोणाचार्य द्वारा आयोजित शस्त्र प्रतियोगिता थी। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य प्रत्येक शाही बच्चे की प्रतिभा और द्रोण के मार्गदर्शन में अर्जित ज्ञान को प्रदर्शित करना था। साथ ही, उन्हें आपस में प्रतिस्पर्धा भी करनी थी।
यह मुकाबला अगले सप्ताह होने वाला था और सुयोधन को उस दुष्ट और क्रूर व्यक्ति भीमा से गदा युद्ध में भिड़ना था...
उसने गदा को ज़मीन पर पटक दिया, मानो लकड़ी के लट्ठे फाड़ रहा हो। फिर पूरी ताकत से उसने गदा उठाई और आगे बढ़कर उसे ज़मीन पर पटक दिया, जिससे लाल, धूल भरी रेत हवा में घनी तरह से उड़ने लगी।
वह प्रशिक्षण परिसर में था, जो ऊपर से पूरी तरह बंद था, सिवाय एक छोटे से छेद के जहाँ से प्रकाश की एक किरण अंदर आ रही थी। चारों ओर रेत के बड़े- बड़े टीले थे, और उसे लगभग ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी रेगिस्तान में हो। वह उस पर गिर पड़ा, धराशायी हो गया, धीरे-धीरे खुद को रेत में समाहित कर लिया, क्योंकि उसके चारों ओर मशालें जलाई जा रही थीं, जिससे उसकी कांस्य जैसी काया पर नारंगी रंग की रोशनी पड़ रही थी।
मैं रंगभूमि में यह साबित कर दूंगा कि मैं भीम से श्रेष्ठ हूं।
मैं यह साबित कर दूंगा कि मैं हस्तिनापुर का असली वारिस हूं।

वह बाथटब में नग्न अवस्था में लेटा हुआ था, एक लकड़ी की रेलिंग से टिका हुआ था, जबकि एक युवती अपने मिट्टी के घड़े से ठंडा पानी टपका रही थी।
फिर उसने घड़े को टब में डुबोया, और अधिक पानी लेकर सुयोधन के साथ वही प्रक्रिया दोबारा दोहराई।
हर साधना के बाद यह उनका नियमित अनुष्ठान था। स्नान करना और लाड़-प्यार पाना। उनका शरीर कमजोर महसूस हो रहा था। उनकी त्वचा में खुजली और कोमलता थी। उन्होंने अपनी बाहों की खाल उतरवाई, आँखें बंद कर लीं और अपनी सेविका मीना की मधुर गुनगुनाहट सुनी, जो वही धुन गा रही थी जो उनकी माँ गांधारी उनके बचपन में गाया करती थीं।
“क्या तुम्हें लगता है कि मैं जीतूंगा?” सुयोधन ने उससे पूछा।
वह चुप हो गई, उसका गुनगुनाना बंद हो गया।
“क्या तुम्हें लगता है कि मैं जीतूंगा?” उसने उससे दोबारा पूछा।
“मुझे नहीं पता, युवराज। आप किस चीज़ में विश्वास करते हैं?” उसकी आवाज़ अमृत के समान थी।
सुयोधन ने अपनी आँखें खोलीं और उसके कोमल शरीर को निहारा। वह कद में छोटी थी, खासकर तब जब सुयोधन छह फीट से भी अधिक लंबा था। उसका जबड़ा सुस्पष्ट था और उसकी आँखें मछली जैसी बड़ी और पानीदार थीं। उसके होंठ कोमल और कमल जैसे थे और उससे सूरजमुखी के बीजों की खुशबू आ रही थी। "मेरी दाढ़ी धो दो," उसने आदेश दिया।
उसने पानी का एक घड़ा लिया और उसकी ठुड्डी और गालों के बाल साफ करने लगी। वह जानता था कि बाल बढ़ गए थे और हर अभ्यास के बाद उनमें खुजली होती थी। “मेसोपोटामिया के लोग मानते थे कि दाढ़ी साहस, पौरुष और शक्ति का प्रतीक है। केवल राजपरिवार के लोगों को ही दाढ़ी रखने का अधिकार था, इसलिए यूनानियों ने भी इसी पद्धति को अपनाया,” उन्होंने अपने गुरु द्रोण से विदेश संबंध अध्ययन के दौरान सीखी हुई बात को दोहराते हुए कहा। “क्या आपको लगता है कि दाढ़ी अच्छी लगती है?”
मीना ने अपने जबड़े कस लिए और जबरदस्ती मुस्कुराते हुए कहा, "मुझे वे कामुक लगते हैं।"
सुयोधन मुस्कुराया। उसे महसूस हो रहा था कि उसकी उंगलियाँ उसके जबड़े और होंठों पर फिर रही हैं, और धीरे-धीरे वह उसका अंगूठा चूसने लगा, उसकी जीभ

उसकी त्वचा पर फिसल रही थी। उसकी आँखें बंद थीं, लेकिन वह उसकी हल्की सी आह सुन सकता था।
उसके हाथ मीना की ओर बढ़े, उसने मीना के नितंबों को थाम लिया और उन्हें जोर से दबाया। मीना सहम गई और उसका चेहरा लाल हो गया जब सुयोधन ने आंखें खोलकर मीना को देखा।
सुयोधन की निजी नौकरानी बनकर वह जानती थी कि उसे क्या झेलना पड़ेगा। वह नौकरानियों और नर्सों के साथ संबंध बनाने के लिए मशहूर था। और खासकर अभ्यास के बाद, ताकि वह अपनी थकान मिटा सके।
उसने उसे टटोला और टब के अंदर ले गया। वह अभी भी कपड़ों में थी, लेकिन उसने उसे धीरे से कपड़े उतारने नहीं दिए। उसने कपड़े फाड़ दिए, जिससे उसके स्तन नंगा हो गए। उसका मुंह बंद हो गया, लेकिन उसके मुंह से आह निकली, जब उसने अपने दांत उसके निप्पल्स पर दबाए और उन्हें चूसा, पहले धीरे से और फिर जोर से, उन्हें काटते हुए। उसने उसे अपनी टांगों के बीच लाया और उसके अंदर प्रवेश किया, जब वह बुदबुदाई:
“युवराज…ओह…युवराज…” फुसफुसाहट धीमी-धीमी गूंजती है।
“मुझे राजा कहो।” उसने उसके बाल पकड़ लिए। “मुझे महाराज कहो।”
“मेरे राजा! मेरे राजा!” वह जोर से कराह उठी और वह अपने भीतर की ऊर्जा को उसकी ऊर्जा से मिलते हुए महसूस कर सकता था।
हाँ। मैं एक राजा हूँ।
फिर उसे खांसी की आवाज सुनाई दी। लेकिन वह खांसी उन दोनों में से किसी की भी नहीं थी।
वह तेज़ी से मुड़ा और मीना को पानी में धकेल दिया, जो अभी भी होश में आने की कोशिश कर रही थी। मीना घबराई हुई और असंतुष्ट लग रही थी, तभी सुयोधन ने मुड़कर देखा तो एक लंबा-चौड़ा आदमी पतली मूंछों के साथ खड़ा था, उसके सिर पर बैंगनी पगड़ी और शरीर पर कुर्ता था। उसका व्यवहार बहुत ही शालीन था। वह सुयोधन के साक्षात चाचा थे—विदुरा।
उन्होंने कहा, "मेरा हमेशा से यही मानना रहा है कि स्नान करना पुरुषों का निजी मामला है।"
“इससे मुझे यह सवाल उठता है कि हस्तिनापुर के प्रधानमंत्री मेरी निजता में दखल देने के लिए यहां क्यों आए हैं?” सुयोधन खड़े हो गए और मीना को आदेश दिया कि वह उनके गुप्तांग पर शॉल लपेट दे।

"अगर यह जरूरी न होता तो मैं ऐसा नहीं करता।"
“क्या बात है?” सुयोधन का चेहरा चिंता से गंभीर और उदास हो गया।
“यह जरासंध है,” विदुर ने उत्तर दिया। “उसने अभी-अभी हमारे खिलाफ युद्ध की घोषणा की है।”

4

जब तक वह युद्ध कक्ष में पहुंचा, तब तक उसके पिता और उसके गुरु पहले से ही वहां मौजूद थे और गहन चर्चा में मशगूल थे।
उसके पिता धृतराष्ट्र अपने सिंहासन पर बैठे थे, जो आम सभाघरों के सिंहासन से छोटा था। वे शांति से द्रोण का प्रवचन सुन रहे थे, जो अपनी छड़ी के सहारे झुके हुए थे। सुयोधन ने गौर किया कि उसके पिता एक विनम्र, संकोची व्यक्ति थे, जिन्होंने लंबा वस्त्र पहना था, उनकी आंखें पीली थीं और उनके कंधे पर चांदी जैसे बाल लहरा रहे थे। उन्होंने आज रात अपना मुकुट नहीं पहना था और उनके बाल बिखरे हुए थे, शायद खबर सुनकर उनकी नींद अचानक टूट गई थी।
दूसरी ओर, गुरु द्रोण को पीठ की समस्या थी, जिसके कारण वे लकड़ी की छड़ी का सहारा लेकर चलते थे। उनकी दाढ़ी बर्फ़ जैसी सफ़ेद थी, बाल सफ़ेद थे और चेहरा झुर्रियों से भरा था। उनकी शक्ल-सूरत से ही उनकी बुद्धिमत्ता का आभास होता था। उन्होंने भीष्म पितामह से मुलाकात नहीं की, क्योंकि वे पूर्व में एक अभियान पर थे और शायद वापस नहीं लौटे।
“क्या वे आ गए?” धृतराष्ट्र ने पूछा.
“हां,” द्रोणा ने उत्तर दिया।
सुयोधन आगे बढ़ा और युद्ध कक्ष में उसने जलते हुए दीपकों की झिलमिलाती रोशनी देखी, जो उस अंधेरे मैदान को रोशन कर रही थी जहाँ सर्वश्रेष्ठ कलाकारों द्वारा भारत का नक्शा बनाया और चित्रित किया गया था। रणनीति बनाने के लिए नक्शे पर लकड़ी की छोटी-छोटी मूर्तियाँ रखी जाती थीं, जिनकी ऊँचाई सुयोधन की आधी थी।
“वहीं रुक जाओ,” द्रोण ने सुयोधन को आदेश दिया और उसने वैसा ही किया।
वह रुका। उसने सिर झुकाया। और बोला, "गुरुजी, आखिर क्या हुआ है?"
“बेटा, ये बहुत बुरे दिन हैं,” उसके पिता ने जवाब दिया। “हम पर युद्ध आ पड़ा है। और वो भी हमारे ही सहयोगी के हाथों।”
“और उसका मन क्यों बदल गया?” सुयोधन ने पूछा।

“उसे लगता है कि हम उसे उकसा रहे हैं। हमें जो पत्र मिला है, उसमें साफ तौर पर लिखा है कि दो हफ्ते पहले विजया डॉक पर हमने उसके खिलाफ जो कार्रवाई की थी, उससे उसे ठेस पहुंची है,” द्रोणा ने मन ही मन हंसते हुए कहा। “हमसे लड़ने का कितना हास्यास्पद बहाना है, क्योंकि हमने डॉक पर हमला तो किया ही नहीं।”
सुयोधन ने अपनी भौंहें उठाईं। “बिल्कुल। जरासंध ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसे हमें शत्रु बनाना चाहिए।”
उसके पिता ने सिर हिलाया। “तुम सही कह रहे हो, बेटे। यह हमारे संसाधनों, समय और सच कहूँ तो, हमारी अर्थव्यवस्था की बर्बादी है।”
“क्या हमें युद्धविराम की अपील करनी चाहिए?” सुयोधन ने सुझाव दिया। विदुरा, जो कुछ देर से अपने सीने पर हाथ रखे चुप बैठा था, उसी क्षण आगे आया। "दुर्भाग्य से, वह केवल खून चाहता है, मेरे प्यारे भतीजे।"
“वाह, और वो तो चालाक भी है।” द्रोण ने छड़ी को ज़मीन पर थपथपाया, जिससे तक तक की आवाज़ आई। “वो जानता है कि अगर उसने महान हस्तिनापुर पर हमला किया तो वो हार जाएगा। लेकिन ये उसकी योजना नहीं है,” बूढ़े गुरु भारत के नक्शे पर चलने लगे, जब तक कि वो उस जगह पर नहीं पहुँच गए जहाँ सुयोधन को रुकने के लिए कहा गया था, और उस स्थान पर निशान लगाया, “ये यहीं है। उसे यही चाहिए।” सुयोधन मानचित्र देखने के लिए झुका और उसने देवनागरी लिपि में लिखे स्थान का नाम पाया: अंगा।
भारत का वन क्षेत्र। लकड़ी के उत्पादन और निर्माण के लिए सबसे उत्तम स्थानों में से एक। समुद्री क्षेत्र में प्रगति का ज्ञान रखने वाला कोई भी व्यक्ति अंग की भूमि से ही प्राप्त करता है।
“पत्र में स्पष्ट रूप से लिखा है कि वह हमसे चम्पा नदी के किनारे साठ सूर्यास्त के समय मिलने की उम्मीद कर रहा है, जहाँ युद्ध होगा,” विदुरा ने आगे कहा। “और उसने अंगा के अपने हिस्से से अपने लोगों को पहले ही वापस बुला लिया है, ताकि हम उन पर सर्जिकल स्ट्राइक न कर सकें। वह इसे बहुत गंभीरता से ले रहा है।”
प्रधानमंत्री की बात सुनकर सन्नाटा छा गया। राजा ने कंधे उचकाए और आह भरी। धृतराष्ट्र ने हताशा भरी आह भरते हुए कहा, “वह हमारे द्वारा की गई संधि से हमेशा असंतुष्ट रहता था। उसका लक्ष्य और उद्देश्य विदेशी भूमि पर आक्रमण

करना है, और जितनी अधिक लकड़ी होगी, उतने ही अधिक जहाज होंगे और उतने ही अधिक आक्रमण होंगे।”
“महाराज, आपने जो कहा वह तो बड़ी अच्छी बात है, लेकिन आप एक बात भूल गए। वह विदेशी धरती पर आक्रमण इसलिए करना चाहता है ताकि हस्तिनापुर को हराने के लिए पर्याप्त सेना जुटा सके।” द्रोण ने चतुराई से जवाब दिया और सोच-विचार करते हुए अपनी दाढ़ी खुजलाई। “वह एक संक्रमित कुत्ता है जो धीरे-धीरे पागलपन की ओर बढ़ रहा है। हो सकता है कि वह आज न काटे, लेकिन एक दिन ज़रूर काटेगा। और हम व्यक्तिगत रूप से ऐसा नहीं चाहते।”
Dhritarashtra nodded.
सुयोधन ने खांसते हुए पूछा, "अगर मैं पूछ सकता हूँ, तो उसे ऐसा क्यों लगा कि हमने उस पर हमला किया?"
“एक सिपाही,” विदुरा ने उत्तर दिया। “उसे लगता है कि हमने उसे लूटने और उसके आदमियों को मारने के लिए एक सिपाही भेजा है।”
“आह!” द्रोण कराह उठा। “ज़रूर यह उसका अपना आदमी होगा और वह इसे बहाने के तौर पर इस्तेमाल कर रहा है। महाराज, क्या मैं कुछ सुझाव दे सकता हूँ?” Dhritarashtra nodded. “Yes, guruji.”
“चलो इसे यहीं खत्म करते हैं। मुझे सेना का नेतृत्व करने दो…”
विदुरा ने झल्लाकर कहा, “गुरुजी, मैं आपका पूरा सम्मान करता हूँ, लेकिन आपने कभी अंग में कदम नहीं रखा है। अंग के ज्ञान के मामले में उनका पलड़ा भारी है।”
“और साथ ही,” राजा ने आगे कहा, “आप मेरे बच्चों और भतीजों के गुरु हैं। एक मामूली लड़ाई में भाग लेने की तुलना में यहाँ आपकी भूमिका कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।”
“जी हाँ। मेरा व्यक्तिगत मानना है कि हमें यह ज़िम्मेदारी देवी को सौंप देनी चाहिए।” विदुर ने राहत भरी मुस्कान के साथ कहा, “वह अंग की सेनानी का जिक्र कर रही थीं, जो धृतराष्ट्र के क्षेत्र से शासन करती थीं। वह धृतराष्ट्र की सेना में एकमात्र महिला सेनापति थीं। “वह अंग की राजनीति जानती हैं, अंग के सैनिकों से निपट चुकी हैं और इस क्षेत्र की हर छोटी-बड़ी बात जानती हैं।”
“पर वह क्षत्रिय नहीं हैं,” धृतराष्ट्र सोचने लगे। “और वह स्त्री हैं।” देवी को रोजमर्रा के कामों के लिए भेजा गया था, युद्धों के लिए नहीं। “हमें

उनका नेतृत्व करने के लिए किसी बुद्धिमान व्यक्ति की आवश्यकता है।” वे किसी सेनापति का नाम सुझाने ही वाले थे कि सुयोधन ने कहा, “महाराज, मेरे पास एक सुझाव है। यह थोड़ा हटकर है, लेकिन सबसे तर्कसंगत है।”
“खुद को आगे मत बढ़ाओ, मूर्ख,” द्रोण ने गुस्से से कहा और सुयोधन को शर्मिंदगी का झटका लगा। “तुम अभी भी विद्यार्थी हो।”
“मैं अपना नाम नहीं ले रहा था। दरअसल, गुरुजी, मैं उस व्यक्ति का नाम ले रहा था जो आपके विद्यालय से स्नातक होने में असमर्थ था, लेकिन फिर भी उसने आपसे सब कुछ सीख लिया। उसने आपके गुरु परशुराम से भी सीखा, ब्रह्मास्त्र का रहस्य जाना और उसे अंग विद्या का ज्ञान कंठस्थ है। क्योंकि उसका जन्म वहीं हुआ था। अंग विद्या उसके रक्त में है,” सुयोधन ने समझाया।
“इंद्र के वज्र की कसम,” द्रोण ने दांत पीसते हुए और थूकते हुए कहा, “मुझे उम्मीद है कि आप उसकी सिफारिश नहीं कर रहे हैं।”
सुयोधन ने अपने गुरु के आदेश की अवहेलना की, और आगे बढ़कर अपने पिता के पैरों के पास झुककर उनके पैर छुए।
“वह कौन है?” उसके पिता ने पूछा, उन्हें उस व्यक्ति के बारे में कोई जानकारी नहीं थी जो हस्तिनापुर का गुप्त हथियार हो सकता था।
“उनका नाम वासुसेना था, वे मेरे सहपाठी थे और सोने के दिल वाले इंसान थे,” सुयोधन ने कहा। “कर्ण।”

5

दरवाजे जोर से बंद कर दिए गए, और द्रोण और विदुर को कमरे से बाहर जाने के लिए कहा गया क्योंकि वे दोनों इस विचार से नफरत करते थे, जिससे धृतराष्ट्र और सुयोधन अकेले रह गए।
द्रोण ने कहा था—वह एक सूत है। एक सारथी का पुत्र है। वह हमारे लिए युद्ध के मैदान में भीषण तबाही मचाएगा। मैंने उसे अपने गुरुकुल से निकाल दिया क्योंकि वह कमजोर था और उसमें कोई प्रतिभा नहीं थी।
विदुरा ने कहा था—वह तो बस एक लड़का है। सुयोधन से कुछ ही साल बड़ा है। वह युद्ध का नेतृत्व नहीं कर सकता।
लेकिन सुयोधन ने राजा को अपने इस कथन के पीछे का तर्क समझाने के लिए एकांत में मिलने का अनुरोध किया। सुयोधन को आश्चर्य हुआ जब राजा ने इसकी अनुमति दे दी।
और उसे अपने पिता के करीब होने का एहसास हुआ। उसे ऐसा लगा जैसे वह अपने पिता से बात कर रहा हो, न कि किसी राजा से, जो चल रहा था और उस मेज तक जाने का निर्देश चाहता था जहाँ शराब का प्याला रखा था। और वहाँ से उसने एक घूंट लिया और मेज पर झुक गया।
"क्या तुमने अब तक शराब पी है?"
टन।
“नहीं, पिताजी।”
“तुम तो बड़े ही घटिया झूठे हो। मेरे जैसे नहीं।” उसने गर्व से एक और गिलास भरा और अपने बड़े बेटे को देते हुए कहा, “इसे पी लो, जब तक हम अपने द्वारा बनाए गए क्षणिक घमंड के इस कारागार का आनंद लेते हैं।”
उन्होंने एक साथ एक घूंट लिया और चुप रहे। फिर उनके पिता ने कहा, "तुम मुझे अधीरथ के पुत्र को चुनने के पीछे का कारण कब बताओगे?" उन्होंने कर्ण के पिता का नाम लिया, जो धृतराष्ट्र के चापलूस थे, जो बिना किसी सवाल के उनकी बात सुनते थे।
क्या आप कर्ण के बारे में जानते हैं?

Dhritarashtra shrugged.
“मुझे याद है, अधिरथ मेरे पास आया था और मुझसे निवेदन किया था कि कर्ण को द्रोण के गुरुकुल में प्रवेश दिया जाए। मुझे उस ब्राह्मण पर दया आ गई और मैं मान गया। मैंने द्रोण को आदेश दिया कि भले ही कर्ण को राजसी पद से हटा दिया जाए, फिर भी वह प्रवेश दे। द्रोण… खैर… चलिए मान लेते हैं कि वह शुरू में खुश नहीं थे, इसलिए मैंने एक परीक्षा लेने को कहा, यह देखने के लिए कि कर्ण वहां रहने के योग्य है या नहीं। और द्रोण ने परीक्षा ली। मुझे याद है, अधिरथ मेरे चरणों में गिरकर रोया था कि कर्ण परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया है और वह गुरुकुल में एक शिष्य के रूप में प्रवेश करेगा। द्रोण उसे चुनकर खुश थे, उन्होंने कहा कि उसमें प्रतिभा है। फिर मन में सवाल उठता है…” “हाँ। अब वह उससे नफरत क्यों करता है?” सुयोधन ने सिर हिलाया।
उसके पास कोई कारण जरूर होगा।
सुयोधन इस पर विचार करने लगा। कर्ण सूत था। इसका कोई अर्थ तो था। वह अंतर्जातीय पुत्र था, उसके पिता ब्राह्मण और माता क्षत्रिय थीं। अंतर्जातीय संतान के साथ अक्सर बुरा बर्ताव किया जाता था। क्या यही कारण था? या फिर सारथी का पुत्र होने के कारण?
"अगर आपको बुरा न लगे तो पिताजी, आपने ही कर्ण के पिता को सारथी बनाया था।" उनके पिता ने थोड़ी झुंझलाहट के साथ सिर हिलाया। “वह प्रतिष्ठा की तलाश में था।” उनका इशारा धृतराष्ट्र जैसे महान राजाओं के उस विचार की ओर था, जिसमें वे अंग के राजा जैसे छोटे राजाओं को अपने सहायक के रूप में इस्तेमाल करते थे। यह सामान्य बात थी। उदाहरण के लिए, अस्माक वंश का राजा लंबे समय तक उनका सेनापति रहा था। लेकिन यह महान राजा के प्रति सम्मान और कुछ हद तक मजबूरी के कारण किया जाता था, न कि उनके प्रति प्रेम के कारण। “वह अंगा का राजा था। मुझे यकीन है कि उसे यह उपाधि अधिक पसंद आई होगी।” धृतराष्ट्र ने इस बारे में ज्यादा कुछ नहीं कहा। वे चुप रहे। “उसे मेरी मदद चाहिए थी और मैंने उसकी मदद की। तो क्या यही तुम्हारा तर्क है? मेरे पुराने मित्र के बेटे से कहना कि वह इस धर्मयुद्ध में मेरी मदद करे?”
मैं आपको कुछ दिखाना चाहता हूँ। चलिए, मैं आपको रास्ता दिखाता हूँ। धृतराष्ट्र हिचकिचा रहे थे और फिर उन्होंने मजाक में कहा, "क्या मैं अपना शराब का प्याला ला सकता हूँ?"

सुयोधन मुस्कुराया और उसने डेकैंटर उठाया और अपने पिता को देते हुए कहा, "आप सब कुछ ला सकते हैं।"

वे साथ-साथ चलते रहे, आले को पार करते हुए नक्काशीदार गलियारों से गुज़रे, जिन पर विचित्र भित्तिचित्र और चित्रकारी थी, उनके सामने प्रेम के देवताओं और योद्धाओं की मूर्तियाँ थीं। महल की प्राचीन दीवारों से लगी एक मूर्ति थी, जो भरत की थी, जिस पर दीपक की रोशनी ठहर सी गई थी। भरत उनके पूर्वज थे, जिन्होंने इस भूमि की स्थापना की और इसे अपने नाम से प्रसिद्ध किया। फिर एक कछुए की मूर्ति थी, जिसे भगवान विष्णु के दूसरे अवतार कूर्म का प्रतीक माना जाता था।
सुयोधन ने अपने पिता को रास्ता दिखाया, जो शराब पी रहे थे, और छत पर पहुँचकर उन्होंने देखा कि उनके सामने का इलाका गंगा नदी की धाराओं से घिरा हुआ था, जो उसमें बह रही थीं। विशाल हाथी की मूर्तियों से सजे खूबसूरत बड़े-बड़े टावर, उस शांत शहर के ऊपर खड़े थे जो देर रात सन्नाटे से भरा हुआ था।
“हवा…” धृतराष्ट्र ने मुस्कुराते हुए महसूस किया, “तुम ही मुझे छत पर ले आई।”
"आपको पता है।"
“बिल्कुल। मैं तो पूरी जिंदगी यहीं रहा हूँ, बेटे।”
“हाँ। लेकिन तुमने छत के बगल में लगे पीपल के पेड़ को नज़रअंदाज़ कर दिया होगा।” उसने उसे छत की दरारों में फैली हुई उसकी लटों को महसूस कराया। “सचमुच। हम सबसे सरल चीजों पर ध्यान नहीं देते,” धृतराष्ट्र उत्सुकता से बोले। “और यह कैसी आवाज़ है?” यह एक ठंडी, मधुर बांसुरी जैसी ध्वनि थी। “यह एक रॉबिन पक्षी की तस्वीर है। यह रात में गाता है।”
“जी हां। तो आप मुझे यहां क्या दिखाना चाहते हैं?”
“रॉबिन पक्षी सबसे कम आंके जाने वाले पक्षी हैं। मैं यह जानता हूं, क्योंकि मैं विभिन्न प्रजातियों पर शोध करता हूं। लेकिन वे सबसे मजबूत भी होते हैं, मौसम के अनुसार उनकी गति भी तेज होती है।”
"और आप इसके माध्यम से क्या संकेत देना चाह रहे हैं?"

"हो सकता है कि कर्ण आपकी आदर्श पसंद न हो, लेकिन इस काम के लिए वही सही व्यक्ति है।"
"सेना का नेतृत्व करने के लिए?"
सुयोधन ने सिर हिलाया। "और अंग के राजा बनो।"
धृतराष्ट्र झुंझलाहट से मुड़े। वे परेशान थे। "इसका मतलब यह होगा कि अंग पर हमारा कोई प्रभाव नहीं रहेगा।"
“जब मैं राजा बनूंगा, तो कर्ण मेरे प्रति निष्ठा की शपथ लेगा। यह अधिरथ को कठपुतली राजा और सहायक बनाकर रखने से बेहतर होगा। आंगनवासी भावुक लोग हैं। वे इस बात की परवाह करते हैं कि उन पर कौन शासन कर रहा है। जब से आपने आंगन पर कब्जा किया है, तब से आपने कितने विद्रोहों का सामना किया है? आपको कितने दमन और जानमाल का नुकसान उठाना पड़ा है? आप जरासंध की तरह नहीं हैं, जिसने उन्हें यातनाएं देकर अपना काम करवाया, इसलिए आप कभी लकड़ी से लाभ नहीं कमा पाए। लेकिन जरासंध ने कमाया। आंगनवासियों की नजरों में आप एक अत्याचारी, एक हड़पने वाले हैं, भले ही आपने खून न बहाया हो, आप जरासंध से बेहतर नहीं हैं। आप एक पागल हैं जिसने उनकी जमीन पर कब्जा कर लिया है। वे अधिरथ से प्यार करते थे, लेकिन अधिरथ योद्धा नहीं था और उसे हटाना पड़ा, जो आपका एक बुद्धिमानी भरा निर्णय था। वह ब्राह्मण था। लेकिन कर्ण नहीं है। वह क्षत्रिय है, भले ही वह न हो। वह क्षत्रिय होने के सभी लक्षण दिखाता है। और आंगनवासी उससे प्यार करने लगेंगे।” उसे।"
“इससे हमारी समस्या का समाधान कैसे होगा?”
“हाँ, ऐसा ही है। क्योंकि इस समय जनरल देवी को अंगन की सेना से सैन्य मोर्चे पर कम समर्थन मिल रहा है। हम जानते हैं कि हम हस्तिनापुर से सैनिक नहीं भेज सकते। यह संसाधनों और सैनिकों की बर्बादी होगी। अगर कर्ण उनका नेतृत्व करता है, तो उसे जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त है और अंग के लोग उसके साथ लड़ेंगे। जरासंध को परास्त करने के बाद अनावश्यक विद्रोह नहीं होगा।” धृतराष्ट्र संगमरमर की रेलिंग पर झुककर आँखें बंद किए बैठे थे। वे इस विषय पर गहन चिंतन कर रहे थे। यदि ये शब्द किसी और के होते, तो वे बिना सोचे-समझे उन्हें अस्वीकार कर देते। लेकिन ये उनके सबसे बड़े बेटे के शब्द थे। "क्या आपने उससे संपर्क किया है?"
“परशुराम से लौटे हुए उन्हें कुछ महीने हो गए हैं और वे मालिनीपुर में रह रहे हैं। मैं उनसे मिलने गया था और हमने बातचीत की,” उन्होंने अपने पिता से

कहा। “वे दान-पुण्य कर रहे हैं। लोगों की मदद कर रहे हैं। वे लोगों का दिल जीत रहे हैं और लोग उनसे प्यार करने लगे हैं।”
क्या वह एक अच्छा आदमी है?
"जितना मुझे पता है, उतना ही अच्छा है।"
“और…” उनके पिता की आवाज में जिज्ञासा झलक रही थी, “…क्या वह सचमुच ब्रह्मास्त्र का रहस्य जानता है?”
सुयोधन मुस्कुराया। वह प्रसिद्ध विनाशकारी हथियार। किंवदंती कहती है कि स्वयं भगवान ब्रह्मा ने हजारों लोगों को मारने के लिए इस मिसाइल का निर्माण किया था और मिसाइल का खाका केवल कुछ ही लोगों को दिया गया था। और जिनके पास यह रहस्य था, वे इसे किसी को नहीं बता सकते थे। अपनी अंतिम सांस तक भी नहीं। सुयोधन केवल दो लोगों को जानता था जिनके पास यह रहस्य था: द्रोण और अब कर्ण। और वह निश्चित रूप से अपने मित्र से ईर्ष्या करता था। “जी पिताजी, उसे पता है।”
“यह हमारे लिए मददगार हो सकता है। युद्धकला और सर्वोत्कृष्ट हथियार के बारे में इतना ज्ञान रखने वाला व्यक्ति जरासंध को हरा सकता है,” उसने अनमने ढंग से कहा। “लेकिन…”
वहां तनाव की एक मोटी परत सी बन गई थी और सुयोधन, जिसके चेहरे से पसीने की एक बूंद टपक रही थी, अपने पिता के कुछ कहने का इंतजार कर रहा था। धृतराष्ट्र ने आह भरी। “तो उसे एक बात का वादा करना होगा। आपके प्रति निष्ठा की शपथ लेनी होगी और जरूरत पड़ने पर आपकी सहायता करनी होगी। और केवल तभी जब जरासंध पराजित हो जाए—और यह एक बड़ी शर्त है—उसे पूर्ण राजा का दर्जा दिया जाएगा। लेकिन अभी के लिए, वह अंतरिम राजा रहेगा।”
सुयोधन ने आज्ञाकारी भाव से सिर हिलाया।
“वह लड़का है। अभी नौजवान है। मैं अपने अच्छे आदमियों को इसमें नहीं लगाना चाहता, लेकिन मैं यह भी नहीं चाहता कि जरासंध को लगे कि मैं बिना लड़ाई के अपना लकड़ी का किला छोड़ दूंगा। उसे सिर्फ देवी और उसकी सेना मिलेगी। अगर उसे और सेना चाहिए, तो उसे या तो खुद जुटानी होगी या मुझे उसके लिए भुगतान करना होगा।”
“जी पिताजी।”
“और जब वह जरासंध को परास्त करके राजा बनेगा, तो उसे मुझे लकड़ी का उतना ही प्रतिशत देना होगा जितना मुझे अभी मिल रहा है; विद्रोहों के बावजूद, मुझे

अपनी बेची गई लकड़ी से अच्छा मुनाफा मिलता है।” वह रुका, उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान थी। “लेकिन तब मैं देवी और उसके आदमियों को अपने अंग के हिस्से पर शासन करने के लिए नहीं भेजूंगा। वह सब उसका होगा, उसकी स्वायत्तता होगी, उसके नियम होंगे, सिवाय उस प्रतिशत के जो मुझे अभी भी चाहिए होगा।” यद्यपि धृतराष्ट्र एक समझदार राजा थे, फिर भी वे अर्थव्यवस्था को लेकर हमेशा चिंतित रहते थे। वे इस बात को लेकर बहुत चिंतित रहते थे कि खजाने में क्या आ रहा है और क्या नहीं। “मुझे आशा है कि आप उसे शर्तें जल्दी बता देंगे।”
“जी हाँ, पिताजी, मैं करूँगा। मुझे नहीं लगता कि उसे कोई आपत्ति होगी।” “अच्छा, तो मैं लेखकों को इसके लिए एक फरमान जारी करने का आदेश दूंगा और उसे दूतों के माध्यम से समाचार पहुंचाने के लिए भेज दूंगा,” राजा ने कहा। “सुनने के लिए धन्यवाद, पिताजी।”
Dhritarashtra nodded.
“और हाँ, बेटा?”
"हाँ?"
वह मुड़ा और सुयोधन की गठीली भुजाओं को थाम लिया। मुस्कुराते हुए उसने कहा, "तुम एक अच्छे इंसान और एक अच्छे योद्धा हो। लेकिन वह रॉबिन पक्षी वाली उपमा... कृपया उसे किसी को मत बताना। वह बिलकुल बेवकूफी भरी थी।"
उस रात पिता और पुत्र दोनों ने दिल खोलकर हँसी।

6

Suyodhan had lied.
कर्ण मालिनीपुर में नहीं था। वह अंगा के आस-पास भी नहीं था।
दरअसल, वह यहीं था। हस्तिनापुर में। वह बस छिपा हुआ था; सही लोगों से छुपा हुआ था।
और इसलिए सुबह तड़के, जब सूरज निकलने ही वाला था, सुयोधन अपनी सबसे अच्छी घोड़ी को लेकर शहर से सटे पहाड़ी रास्तों पर बेतहाशा दौड़ पड़ा। उसने अपने आदमियों को अपने साथ आने की सूचना नहीं दी, जबकि राज आदेश के अनुसार उन्हें आना अनिवार्य था। उसने अपना चेहरा और सिर पगड़ी और उसके पल्लू से ढक लिया। और वह खिड़की से निकल भागा।
घोड़े पर सवार होकर वह हरे-भरे जंगल से होते हुए ऊंचे और भव्य पाण्डेश्वर मंदिर के पास से गुजरा, तब उसे एहसास हुआ कि वह पहाड़ियों में स्थित घने जंगल में प्रवेश कर रहा है। वहां कड़ाके की ठंड थी; त्वचा के नीचे चुभती ठंड। उसका चेहरा भावहीन था, उसके पिता द्वारा उसकी योजना को स्वीकार किए जाने की खुशी उसके शांत चेहरे के पीछे छिपी हुई थी।
जैसे-जैसे वह करीब आता गया, उसने देखा कि आकाश और धरती मिल रहे हैं और उगते सूरज की नारंगी किरणें उस पर पड़ रही हैं। वह सूरज के इतना करीब आ गया था कि उसे सुबह होने की खुशी महसूस हो रही थी। सूरज के निकलते ही चारों ओर एक अलग ही सकारात्मकता छा जाती है।
सुयोधन खुले मैदान की खाइयों से निकलकर चट्टान के करीब पहुंचा, तभी उसके खुर रुक गए और उसका शरीर एक झटके से हिल गया, उसकी रीढ़ की हड्डियों पर ज़ोरदार चोट लगी। लेकिन उसकी पीठ सीधी थी, ठीक वैसे ही जैसे उसे सिखाया गया था।
वह घोड़े से उतर गया, क्योंकि उसने अपने मित्र को अपने सामने देखा। चट्टान के बिल्कुल करीब। वास्तव में, चट्टान पर ही। एक धक्का और वह गिरकर मर जाता। लेकिन उसमें नर्तक जैसा संतुलन था। उसका एक पैर दूसरे के ऊपर था, जबकि उसके हाथ सूर्य की ओर प्रणाम की मुद्रा में जुड़े हुए थे।

सुयोधन ने उनसे पूछा था कि वे हमेशा सूर्य की पूजा क्यों करते हैं, तो उन्होंने कहा था कि क्योंकि उनकी माता ने उन्हें ऐसा करना सिखाया था। उनकी माता का नाम राधा था। उन्होंने कहा था कि सूर्य सबसे शक्तिशाली देवता है, मनुष्यों का सहायक है, जो उन्हें प्रतिदिन नया जीवन देता है। फिर, जब सुयोधन उनसे हाल ही में मिले थे, तो कर्ण ने उन्हें बताया था कि सूर्य के सामने श्वास-प्रश्वास करने से मन पर अधिक नियंत्रण रहता है, धैर्य बढ़ता है और इससे धनुर्विद्या में बहुत सहायता मिलती है—जो युद्ध कला कर्ण का अभ्यास करते थे। उन्होंने यह कला उत्तर में परशुराम से सीखी थी।
सुयोधन प्रतीक्षा करता रहा। घुटनों के बल बैठकर वह कंकड़ों से खेलने लगा और सीधी दृष्टि से देखता रहा, जबकि कर्ण सूर्य के सामने विभिन्न श्वास-अभ्यास कर रहा था। एक क्षण के लिए सुयोधन को लगा कि कर्ण और सूर्य… एक हो गए हैं। सूर्य और भी अधिक चमकने लगा।
And when Karna stopped, he did a pranaam once again, and Suyodhan said: "यह हो चुका है।"
उसका मित्र मुड़ा। सूर्य की चकाचौंध में उसका चेहरा छिपा हुआ था। सुयोधन यह नहीं देख सका कि वह खुश था या दुखी। वह खुश ही होगा। वह अंग का राजा बनना चाहता था।
इसीलिए उसने उन सभी लोगों को मार डाला था। इसीलिए उसने जरासंध को लूटा था। वह दोनों राज्यों के बीच युद्ध छेड़ना चाहता था क्योंकि वह जानता था कि जरासंध हस्तिनापुर पर सीधा हमला नहीं करेगा और अंग के गढ़ पर हमला करेगा, क्योंकि यह आसान था। यह नज़दीक था। जरासंध के मगध और अंग के बीच केवल एक ही विभाजन था, और वह थी चंपा नदी।
और कर्ण को आयोनियनों को सोना भेजे जाने की सूचना किसने दी? दरअसल, यह सूचना सुयोधन ने ही दी थी, जिसने अपने जासूसों के माध्यम से यह जानकारी पहुंचाई थी।
हस्तिनापुर के युवराज ने कर्ण के पिता को मूर्ख बनाकर आंतरिक रूप से उसकी मदद की थी। उसे यह भी यकीन नहीं था कि कर्ण जरासंध को हरा पाएगा या नहीं।
उसे बस इतना पता था कि उसे यह करना ही है।
और यह मित्रता के कारण नहीं था। यह कर्ण के प्रति उसके ऋण के कारण था।

“फिलहाल आप अंतरिम राजा रहेंगे। इसकी घोषणा राजसी आदेश द्वारा की जाएगी। मैंने आपकी सभी आज्ञाओं का पालन किया है। क्या मैं कर्ज से मुक्त हो गया हूँ?” सुयोधन ने पूछा।
“तुम हमेशा से ऐसे ही थे।”
वह सही था, क्योंकि कर्ण ने सुयोधन को राजा बनने में मदद करने के लिए मजबूर नहीं किया था। उसने बस पूछा था। लेकिन अपने मित्र के प्रति अपने ऋण के कारण... उसने ऐसा किया। "ठीक है, अब हिसाब बराबर हो गया।" वह खड़ा हो गया। "मुझे आशा है कि तुम यह युद्ध जीतोगे। मैंने तुम्हारे लिए सिफारिश की है। तुम्हारे पास सेना भी नहीं होगी। क्या तुम्हें जरासंध को हराने का कोई तरीका सूझता है?"
“नहीं,” कर्ण ने कहा, जो अभी भी सूरज की तेज रोशनी में छिपा हुआ था। “लेकिन मैं इसका हल निकाल लूंगा। धन्यवाद।”
“देखो…” सुयोधन रुका। चिंतित। परेशान। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह कहे या न कहे, इसलिए उसने सोच-समझकर शब्द चुने, “अगर तुम जरासंध पर जीत गए, तो मुझे पता है कि तुम हस्तिनापुर का राजा बनने में मेरी मदद नहीं करोगे। मेरे प्रति निष्ठा की शपथ सरासर झूठी है और मैं यह जानता हूँ। तुम मेरे पिता से इसलिए नफरत करते हो क्योंकि उन्होंने तुम्हारे पिता से अंगा को छीन लिया था, जबकि उन्होंने यह तुम्हारे पिता की भलाई के लिए किया था। उन्होंने यह उनके लिए किया था। तुम जरासंध से नफरत करते हो और सच कहूँ तो…” वह रुका, “…मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं उनके प्रति तुम्हारी नाराजगी समझता हूँ। मैं तुम्हारा कर्ज चुका रहा हूँ, लेकिन साथ ही साथ अपने पिता की गलतियों को भी सुधार रहा हूँ। इसलिए उनकी ओर से माफी मांग लो।”
फिर कर्ण सूर्य की तेज रोशनी से बचते हुए आगे आया और उसका चेहरा दिखाई देने लगा। सुनहरी, झिलमिलाती आंखें, जिनमें कांस्य की झलक थी, एकदम तराशी हुई त्वचा और कंधे पर टिके बाल। उसके कानों में कुंडल लटके हुए थे जो चमक रहे थे और सुयोधन पर प्रकाश बिखेर रहे थे।
“तुम सही कह रहे हो। मैं तुम्हारी सहायता नहीं करूँगा,” कर्ण ने कहा, और सुयोधन तुरंत निराश हो गया। “पर तुम्हारे इस सहयोग से तुम्हारे पिता के पाप क्षमा हो गए हैं। मेरी बस एक विनती है। बस एक और।”
"वह क्या है?"

“रंगभूमि में यह घोषणा करो कि मैं अंग का राजा हूँ। अपने पिता से ऐसा करवाओ।”
जैसे ही उसने यह कहा, सुयोधन सदमे से जम गया। रंगभूमि एक प्रतिष्ठित आयोजन था जिसमें कुरु वंश के सभी वरिष्ठ, मंत्री और सैकड़ों लोगों की भीड़ आती थी, यहाँ तक कि सहयोगी राजा और उनके पुत्र-पुत्र और सैनिक भी। कर्ण को सबके सामने लाना और उसका प्रदर्शन करना एक मूर्खतापूर्ण कदम होता। वह हस्तिनापुर के राजपरिवार का भी सदस्य नहीं था। वह एक बाहरी व्यक्ति था। वह एक सारथी का…
मैं यह कहना नहीं चाहता।
"क्यों?"
मेरे पास इसके कारण हैं।
सुयोधन ने आह भरी। “मैं आपको इसका वादा नहीं कर सकता। आपको तो प्रदर्शन करने के लिए केंद्र में प्रवेश करने की भी अनुमति नहीं होगी…”
“उसकी चिंता मुझ पर छोड़ दो।” उसके चेहरे पर एक शरारती मुस्कान थी और सुयोधन उस मुस्कान को पहचान गया। वह उसे अच्छी तरह जानता था। इसका एक ही मतलब था। उसके मन में कुछ चल रहा था, कुछ कुटिल।
“Fine, Karna.”
"हाँ?"
“हां। मैं वादा तो नहीं कर सकता लेकिन…” उसने हांफते हुए कहा, “मैं कोशिश करूंगा।”
कर्ण मुस्कुराया।
इसमें हंसी की क्या बात है?
वह कोई जवाब नहीं दे पाया और अपना कुर्ता लेने चला गया। थोड़ी देर रुककर उसने कहा, "कुछ नहीं। जब मैंने तुमसे जरासंध के बारे में सब कुछ बताने को कहा था, तब भी तुमने यही कहा था।"
और एक और हल्की हंसी के साथ, वह सुयोधन को एक परेशान करने वाली सोच में छोड़कर चला गया। लेकिन चाहे इस मुद्दे से उसे कितना भी दुख हुआ हो, वह एक ही बात सोचता रहा:
वह रंगभूमि में अपने राज्याभिषेक की घोषणा क्यों करना चाहता है?

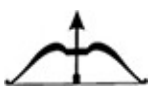

खुरों की धमक के साथ, धूल के बवंडर और जमीन पर कुचले हुए पत्तों को छोड़ते हुए, सुयोधन भाग गया।
उसने वादा तो नहीं किया, लेकिन उसे पता था कि वह ऐसा करेगा।
और कर्ण वहीं सूर्य की तेज रोशनी में नहाया हुआ शांत बैठा रहा।
सुयोधन, तुम्हें अंदाज़ा भी नहीं है कि मैं तुम्हारे पिता से कितनी नफ़रत करता हूँ, और मैं उन्हें इतनी आसानी से माफ़ नहीं करूँगा। कर्ण ने सोचा।
क्योंकि वह सच्चाई जानता था। उसने खुद यह सच्चाई जान ली थी। कोई भी आश्चर्य कर सकता है कि महल के शाही अंगरक्षक को रिश्वत देकर कितना कुछ सीखा जा सकता है, जैसा कि कर्ण ने किया था।
तुम्हें लगता है कि उसने मेरे पिता के साथ जो किया, वह अंगा के लिए अच्छा था? कर्ण ने अपने साथी की नासमझी पर मुस्कुराते हुए सिर हिलाया। तुम गलत सोच रहे हो।
क्योंकि सच्चाई सबके सामने है और आप उसे देखना नहीं चाहते।
लेकिन मैंने किया।

7

तीस साल पहले, अंग प्रदेश के बाहरी इलाके…
जिस क्षण उसने युद्ध में कदम रखा, हर कोई समझ गया कि वे मुसीबत में हैं। मगध के राजा जरासंध की यही प्रतिष्ठा थी कि वे हार को भी जीत का हिस्सा बना लेते थे। और यहाँ वे अपनी सेना के अग्रभाग में दृढ़ता और बलिष्ठता से खड़े थे। अपने बलिष्ठ सैनिकों की तुलना में वे कद में छोटे थे। उनकी गर्दन चौड़ी थी और कंधे थोड़े झुकने पर ऊपर उठ जाते थे, मानो कोई प्राणी आक्रमण करने के लिए तैयार हो।
उसके ऊपरी होंठ पर एक निशान था और उसके कान बैंगनी रंग के थे, जैसे कोई घाव हो। उसके बाल नारंगी रंग से रंगे हुए थे, क्योंकि उस समय ऐसा करना चलन में था। विदेशी लोग खुद को सुंदर दिखाने के लिए ऐसा करते थे।
वह एक पालतू बैल पर बैठा था, जबकि उसके सभी समकक्ष घोड़े पर सवार थे। उसके हाथ काठी पर थे और वह अपने सामने की सेना को देख रहा था।
वह सेना उसके शत्रु, अंग के राजा अधिरथ की थी।
वह अंगा को चाहता था। एक खास वजह से।
लेकिन उन्होंने इसका कारण नहीं बताया।
चुप रहो।
वह ऐसा कभी नहीं करेगा। इस बात को लेकर अफवाहें फैल गई थीं कि वह इसे इतनी शिद्दत से क्यों चाहता था, लेकिन उसने बिना स्पष्टीकरण दिए अफवाहों को फैलने दिया।
“क्या तुम मेरे साथ चोपट खेलते-खेलते इतना ऊब गए हो कि खून-खराबा करना चाहते हो?” उसके पीछे से एक आवाज आई।
जारा ने मुड़कर देखा तो काले बालों वाला बाना अपने घोड़े पर सवार होकर मुस्कुराते हुए अंदर आया और भुने हुए भेड़ के पैर का आनंद ले रहा था। “बाना,” जरा ने असम राज्य के अपने पुराने मित्र का जिक्र करते हुए खुशी और उत्साह से कहा। “तुम अपने और सिक्के मुझसे हारना नहीं चाहोगे।”
"अरे नहीं, मैं तो जीतने ही वाला था।"

जरा ने दबी आवाज़ में हँसते हुए कहा। वह पूरे युद्ध के दौरान बाना के साथ खेलता रहा था।
और अब जब वह अंदर आ चुका था, तो वह चाहता था कि यह युद्ध का आखिरी दिन हो। वह इस बात से निराश था कि उसकी सेना अंगा की छोटी सेना को पूरी तरह से पराजित नहीं कर पाई थी। उसने सोचा था कि वह अपने तंबू में आराम करेगा और अपने सहयोगी और मित्र बाना के साथ खेलेगा, जो अपने सैनिकों को युद्ध में लेकर आया था। दरअसल, केवल वही नहीं, उसका दूसरा सहयोगी, चेदी वंश का राजा दमाघोषा, अंगा पर विजय प्राप्त करने के बदले में उसे कुछ हज़ार सैनिक भेज चुका था।
युद्ध जीतने पर सभी को भुगतान किया जाना था और उन्होंने भारत के सबसे सफल राजा - जरासंध पर दांव लगाया था।
उस व्यक्ति ने अब तक कोई युद्ध नहीं हारा था, यहाँ तक कि यह अफवाह भी उड़ने लगी थी कि वह एक असुर है, या शायद एक देवता भी हो सकता है।
लेकिन वह एक पुरुष था। एक चतुर, बुद्धिमान और दृढ़ निश्चयी पुरुष।
“लेकिन योजना क्या है?” बाना ने पूछा।
"तुम्हें यहाँ रहने की ज़रूरत नहीं है," जरा ने कहा, खून से लथपथ, धूप से तपते रेगिस्तान के दूसरे छोर की ओर देखते हुए, जहाँ भाले गड़े हुए थे, चूहे इधर-उधर भाग रहे थे और गर्मी जानलेवा थी।
उनकी सेना शोर मचा रही थी; चीख रही थी। ढोल बज रहे थे। वे पंक्तिबद्ध हो रहे थे। उनके सेनापति एकजुट हो रहे थे।
“नहीं, भाई, तुम जहाँ भी जाओगे, मैं तुम्हारे साथ जाऊँगी। तुम यह जानते हो,” बाना मुस्कुराई और जरा भी मुस्कुराई।
वह एकमात्र ऐसा दोस्त था जिस पर वह भरोसा कर सकता था। जारा वैसे तो मिलनसार नहीं था, लेकिन वह जानता था कि चाहे आधी रात को भी वह किसी मुसीबत में हो, बाना उसकी मदद के लिए जरूर आएगा। चाहे वह कितनी भी बड़ी मुसीबत में क्यों न फंसा हो, और वैसे भी वह बहुत बड़ी मुसीबत में था—क्योंकि वह अय्याश था। लेकिन यह कहानी किसी और समय के लिए है।
जारा अपने दूत का इंतजार कर रहा था, जो अब तक अपने खच्चर पर सवार होकर आ चुका था, और वह जोर-जोर से सांस ले रहा था और हांफ रहा था।
“महामहिम,” उन्होंने कहना शुरू किया, “वे क्राउंचा व्यूह बना रहे हैं।” उनका तात्पर्य बगुले के आकार की युद्ध संरचना से था।

जारा ने सिर हिलाया।
“क्या वे आक्रामक रुख अपना रहे हैं?” बाना ने आगे कहा। “मुझे कहना पड़ेगा, भाई, उनमें हिम्मत तो है।”
अधीरथ जैसे राजा से ऐसी उम्मीद नहीं थी, जो हमेशा रक्षात्मक मुद्रा में रहता था। शायद वह हारते-हारते थक गया था और कोई बड़ा प्रहार करना चाहता था। “योजना क्या है?” बाना ने फिर पूछा।
जारा जानता था। हाँ, वह जानता था। उसकी माँ ने उसे युद्ध की रणनीति, युद्ध के नियम और उनसे निपटने के तरीके के बारे में सब कुछ सिखाया था। उसे आज भी जंगल में अपनी माँ के साथ बिताए वो पल याद आते थे, जब वह एक छड़ी की मदद से रेत पर अलग-अलग युद्ध रणनीतियों के बारे में समझाती थी। और वह उसे बताती थी कि हर आक्रमण के बदले रक्षात्मक रुख नहीं अपनाया जा सकता।
लेकिन बस ऐसा भ्रम पैदा करें कि आप रक्षात्मक मुद्रा में हैं।
"मकारा फॉर्मेशन!" जरा चिल्लाया, और स्पष्ट किया कि वह किस फॉर्मेशन की बात कर रहा है।
और ऐसा ही हुआ। बड़े-बड़े ढोल बजाने वाले अपनी विशाल छड़ियों से पृष्ठभूमि में तोड़-फोड़ और तबाही मचा रहे थे। उसकी सारी पैदल सेना, घुड़सवार सेना को संगठित किया जा रहा था और एक रणनीति के तहत तैनात किया जा रहा था...
मछली!
हाँ। यह मछली भी हो सकती थी या मगरमच्छ भी। उसे मछली चाहिए थी।
उन्होंने अधिरथ की सेना को आगे बढ़ते देखा। उन्होंने न तो शंख बजाया और न ही तुरही। उन्होंने अपना हाथ उठाया।
और उसे आगे की ओर फेंक दिया।

सैनिक सचमुच मछली के आकार में संगठित होकर दुश्मनों की ओर बढ़ने लगे। आसमान से युद्ध देख रहे किसी भी व्यक्ति के लिए, मकरा संरचना में मछली का आकार बनाना मूर्खतापूर्ण प्रतीत होता है। यह क्राउचा संरचना की रक्षात्मक रणनीति है, जिसमें आगे की ओर एक चोंच होती है, जिसका उपयोग आक्रमण के लिए किया जाता है, जबकि संरचना के पंखों का उपयोग जरा की सेना के बाहरी किनारों पर हमला करने के लिए किया जाता है।

लेकिन जरा के पास एक योजना थी।
वह हमेशा ऐसा ही करता था। और उसने दूर से देखते हुए अपने सेनानी को निर्देश दिया था कि इसे कैसे करना है।

“क्या तुमने मत्स्य के बारे में सुना है?” जरा ने बाना से पूछा।
उसके दोस्त ने सिर हिलाया। "वो कौन है?"
“ओह, भगवान विष्णु के पहले अवतार! क्या अद्भुत कहानी है!” जरा को अपनी माँ की कहानी याद आ गई और उसका खून तेजी से दौड़ने लगा। “देखो, मनु नाम का एक यादव राजा था, जो पहला मनुष्य, हमारा पूर्वज था। एक दिन, समुद्र के किनारे, उसे एक मछली मिली। उसकी हालत बहुत खराब थी।”

मकरा संरचना का मुख सबसे पहले अंदर की ओर धंसा और क्राउचा संरचना से सीधे टकरा गया।
बगुले की चोंच ने मछली के मुँह को भेद दिया, जिससे सैकड़ों पैदल सैनिक बाल-बाल बच गए। तलवारें आपस में टकराईं और खून बहने लगा। भाले फेंके गए और घोड़े ज़मीन पर गिर पड़े, ठीक वैसे ही जैसे घुड़सवार सेना के रथों के पहिए टूटते हैं।
यह कैसी अव्यवस्था थी। सूर्योदय के नीचे एक खूबसूरत, अव्यवस्थित अव्यवस्था।
जरा के इतने सारे आदमी मारे गए—उन्होंने बस तबाही मचा दी।
और जब अधिरथ की सेना इस बात पर खुशी मना रही थी कि उन्होंने मछली के मुंह में छेद कर दिया है, तभी उनके एक सैनिक ने कुछ देखा।
मछली का मुँह, और वे पैदल सैनिक जिन्हें उन्होंने अभी-अभी मार गिराया था— वे दुबले-पतले थे, उनकी पसलियाँ स्पष्ट दिखाई दे रही थीं और उन पर कवच कम था। उनके गाल धँसे हुए थे और त्वचा पीली पड़ गई थी।
उन्हें भूखा रखा जा रहा था। और कोई भी सैनिक कभी भूखा नहीं रहता। लेकिन कैदी भूखे मर रहे थे।

कैदी…
नहीं।
अधिरथ के सैनिकों को यह बात समझ आ गई।
उन्होंने जरा के सैनिकों को नहीं मारा था। उन्होंने तो सिर्फ दिखावे के लिए आए सैनिकों को मारा था।

"...और मनु इतना दुखी और भयभीत हो गया था," जरा ने कहा, "कि उसने मछली को अपने हाथ में लिया और उसे पानी से भरे एक जार में डाल दिया।"
बाना सुन रहा था और उसे समझ नहीं आ रहा था कि यह कहानी उसे क्यों सुनाई जा रही है। लेकिन जरा ने फिर भी शरारती मुस्कान के साथ कहानी जारी रखी।
“उसे इस बात का एहसास नहीं था कि यह साधारण मछली सिर्फ एक मछली नहीं थी। यह दिव्य थी। और इसलिए…” उसने अपना सिर वापस मैदान की ओर घुमाया, और अपनी सेना को फैलते हुए देखा।
ऐसे ही।
वह बढ़ने लगा था। मछली का मुँह बंद होने के कारण, बगुले की चोंच का अधिकांश भाग उसके मुँह के अंदर था। मछली चारों ओर से बढ़ने लगी। उसके सैनिकों ने अपनी टुकड़ियों को इस प्रकार फैलाना शुरू कर दिया कि उन्होंने बगुले के पंखों को भी ढक लिया, और अधिरथ की सेना के दोनों किनारों को घेर लिया। “मछली बढ़ती ही गई…” जरा ने मुस्कुराते हुए कहा, “…इतनी कि मनु उसे जार में नहीं रख पा रहा था।”
और मैदान में जरा की सेना इतनी भव्य दिख रही थी कि मछली बगुले को निगलने ही वाली थी।

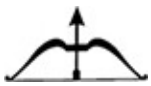

अधिरथ की सेना को यह समझ आ गया था कि मछली का मुँह जानबूझकर नष्ट किया जा रहा है ताकि वे उसके मुँह में प्रवेश कर सकें और फिर फँस जाएँ, जबकि मछली बढ़ती जा रही थी और उनके पंखों को भी ढक रही थी। उनकी घुड़सवार सेना का नरसंहार हो रहा था।

और उन्होंने मछली की पूंछ तक पहुंचने की कोशिश की। उन्होंने उस पर हमला करने की कोशिश की, इस उम्मीद में कि शायद इससे मछली का घेरा टूट जाए और मछली का फैलाव रुक जाए।
वहीं दूसरी ओर, मछली बगुले की पूंछ पकड़ने की कोशिश कर रही थी, पूंछ उसके लिए सहारा का काम कर रही थी। मछली उन पर बेरहमी से हमला कर रही थी। खून बह रहा था और हड्डियां व मांस चारों ओर बिखर रहे थे।
लेकिन अब, बगुले की पूरी संरचना मछली के अंदर थी और वे जरा की सेना से घिरे हुए थे।
असली सेना ने अधिरथ की सेना को चीरते-काटते हुए अपना रास्ता बनाना शुरू कर दिया।
सैनिक मारे जा चुके थे। तीर चलाए जा रहे थे।
लेकिन अधिकांश पैदल सेना अंतिम छोर तक पहुंच चुकी थी।
और जब उन्होंने मकरा गठन की सुदृढ़ता पर हमला करने के लिए ऐसा किया, तो उन्हें एहसास हुआ—
अरे नहीं।
जारा अपने बैल के साथ इंतजार कर रहा था।

उसके बाद सब कुछ अफरा-तफरी में घटित हुआ।
वह मकरा सेना के पिछले हिस्से की ओर घोड़े पर सवार होकर उसकी सेना का हिस्सा बनने के लिए आगे बढ़ा। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। राजा को हमेशा दर्शक की भूमिका में रहना चाहिए था, लेकिन जरा सिर्फ एक राजा से कहीं बढ़कर था।
वह एक योद्धा थे। अपने देश के नायक। मगध सम्राट।
अपने कोड़े और उग्र बल के साथ, वह अपने शत्रुओं पर अंधाधुंध प्रहार करने लगा। धारदार चाबुक हर दिशा में घूमते हुए शरीरों को खरोंचते, छेदते और भेदते जा रहे थे। उसका रक्त उफान पर था, उसका मुंह सूख गया था और उसकी आंखें लाल थीं।
वह बाना को भी भूल गया था, जो इतना कायर था कि खुद युद्ध में जाने की हिम्मत नहीं कर पाता था।

उसने दुश्मनों पर प्रहार किया, जबकि बैल के सींग बीच में आने वाले घोड़ों का नरसंहार कर रहे थे। उसने अपने सैनिकों को लड़ते हुए देखा, जबकि रथ पलट रहे थे।
और फिर उसे इसका एहसास हुआ।
यह असहनीय दर्द था... ऐसा लग रहा था जैसे किसी तीर ने उसकी छाती में वार कर दिया हो।
एक पल के लिए सब कुछ थम गया। उसने अपने बैल को रोका, लेकिन वह अभी भी उग्र अवस्था में था...
इसलिए वह उससे गिर गया।
वह जमीन पर गिर पड़ा, उसके हाथों में अभी भी उसका कोड़ा था, और उसने गहरी सांस लेने की कोशिश की।
चलो भी।
और उसने तीर बाहर निकाल लिया। उसने मुट्ठी भींची और अपनी नसों में दौड़ रहे दर्द को सहते हुए दांत पीस लिए।
उसकी छाती से खून बहने लगा और जिस क्षण वह दर्द से हार मानने ही वाला था, युद्ध के बीचोंबीच…
उसे इसका एक और तेज झटका महसूस हुआ।
एक लात।
वह उसके पसलियों पर झपटा और वह एक तरफ गिर पड़ा। उसका कोड़ा उसका पीछा नहीं छोड़ रहा था। वह अभी भी उसकी मुट्ठी में जकड़ा हुआ था, जब उसने चक्कर के बावजूद देखने की कोशिश की तो उसे अपने ठीक सामने दुश्मन का एक सैनिक दिखाई दिया।
उसके पास एक चाकू था।
वह जरा के लिए आ रहा था। और जरा ने इंतजार नहीं किया। उसने अपना कोड़ा दुश्मन के हाथ की ओर फेंका, जिसने उसे घेर लिया, कोड़े की धारें उसकी हथेलियों को भेद गईं और फिर उसने कोड़ा हाथ से खींच लिया।
सिपाही का हथियार गिर गया और चीखते ही उसकी हथेली खून से लथपथ हो गई।
जारा ने और इंतजार नहीं किया। वह अब अपने हथियार का इस्तेमाल नहीं करना चाहता था। वह शारीरिक संघर्ष के लिए बेताब था।
वह सैनिक की ओर तेजी से दौड़ा और बैल की तरह अपने सिर से उसकी छाती पर जोरदार प्रहार किया।

[illegible]

8

अधिरथ जानता था कि वह एक हारी हुई लड़ाई लड़ रहा है।
जब उसने अपने सैनिकों को युद्ध के मैदान से घायल और जख्मी लौटते देखा, जिनमें से कुछ अपने कंधों पर शव लादे हुए थे—तो उसके मन में भय के सिवा कुछ नहीं था। सब कुछ अंधकारमय और निराशाजनक रूप से उसके भीतर समा गया। जरासंध पर हमले की दूसरी लहर एक पूर्णतः विनाशकारी सिद्धि थी, जिसके परिणामस्वरूप अधिरथ की सेना पूरी तरह से पंगु हो गई।
धूल भरे और खून से लथपथ मैदान में दुष्ट राजा जरासंध की सेना प्रचार कर रही थी। वह मगध का शासक था, जो सबसे श्रेष्ठ महाजनपदों में से एक था और आधुनिक भारत में सबसे कीमती धातु, सोने के आयात-निर्यात के मामलों में मिस्रियों और यूनानियों जैसे शासकों से व्यापार करता था।
और उसके पास एक बड़ी सेना, बड़े घोड़े और सबसे बड़ा हाथी था, जिसे उसने फारसियों से खरीदा था।
जरासंध को पता था कि वह जीत जाएगा। यह सिर्फ समय की बात थी।
अधिरथ ने अपनी ठुड्डी रगड़ी, डर को झटकते हुए अपने तम्बू में प्रवेश किया, उसका सेनापति—उसकी सेना का सेनापति—उसके पीछे-पीछे आया। अधिरथ को महसूस हुआ कि उसके गाल लाल हो रहे हैं, उसका मुंह सूख रहा है, और वह ज़मीन पर गिर पड़ा, साँस लेने की कोशिश कर रहा था।
“महाराज,” उनके सेनानी ने उन्हें पकड़ते हुए कहा, “आप ठीक हो जाएंगे, कृपया अपना ख्याल रखें।”
अधिरथ मलमल के तकियों पर झुककर बैठ गया, तभी उसकी सेनानी ने उसे शराब दी जिसे उसने पीकर ज़मीन पर थूक दिया। उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे, और उसने कहा: “सत्या, मुझे लगता है कि हमारा काम तमाम हो गया है। उसके पास पचास हाथी और दस हज़ार सैनिक हैं जबकि हमारे पास केवल एक हज़ार हैं और हर हमले के साथ हम और ज़्यादा खो रहे हैं। अगला हमला तो निश्चित रूप से हमारा विनाश होगा।”

उनके सेनानी चुप रहे, एक सफ़ेद बालों वाले, गंजे हो चुके व्यक्ति जो अधिरथ के साथ बचपन से थे। “जब आपके पिता से आपको यह उपाधि मिली, तो सेना ने आप पर विश्वास नहीं किया, महाराज। आप सूत थे। आपके पिता बेशक क्षत्रिय थे, लेकिन आपकी माता ब्राह्मण थीं। इस प्रकार, आप सूत पैदा हुए। उन्हें लगा कि मिश्रित नस्ल का व्यक्ति हमारा राजा नहीं हो सकता। केवल एक सच्चा क्षत्रिय ही हो सकता है। लेकिन मैंने आपका साथ देने का फैसला किया क्योंकि मुझे आप पर विश्वास था कि आप अपनी जाति से ऊपर उठेंगे। मुझे आपकी योग्यता पर विश्वास था।”
“लेकिन…लेकिन…” अधिरथ को इन मीठे शब्दों से अच्छा महसूस होना चाहिए था, लेकिन उसके लाल चेहरे पर केवल गर्म आँसू बह रहे थे।
वह एक तंदुरुस्त आदमी था और उसके कांसे के कवच, दस्ताने और घुटने के पैड को उसके ऊपर फिट करना उसके सहायक और नौकरों के लिए एक बड़ा आश्चर्य था। उसका शरीर गठीला था, लेकिन उसमें मांसपेशियां नहीं थीं। चलते समय वह अनाड़ी सा लगता था।
और इस प्रकार, इस अयोग्य व्यक्ति को अंग प्रदेश का यह शाही राज्य सौंप दिया गया, जो भारत का पूर्वी गढ़ था, लेकिन फिर भी एक छोटा राज्य था।
यह राज्य शस्त्रों और योद्धाओं के लिए प्रसिद्ध नहीं था। यह एक शांतिपूर्ण राज्य था, जो देश के बाकी हिस्सों से अलग-थलग था। यह राज्य केवल बेहतरीन लकड़ी के लिए ही प्रसिद्ध था। जी हाँ, लकड़ी को काटकर बलिष्ठ श्रमिकों की पीठ पर लादकर जहाज़ निर्माताओं को भेजा जाता था, जिससे बेहतरीन जहाज़ बनाए जाते थे। भारत ने दुनिया के लिए अपने द्वार खोल दिए थे और लकड़ी की भारी मांग थी, इसलिए नौसेना निर्माण में तेज़ी आ रही थी। लकड़ी के अलावा किसी और लकड़ी में वह गुण नहीं था जिससे जहाज़ पानी पर तैर सके और लहरों का सामना कर सके।
और अंग प्रदेश अब और भी अधिक स्पष्ट और गोपनीय हो गया। अब वह जांच-पड़ताल और आलोचनाओं का सामना करने लगा। वह अब निरर्थक राज्य नहीं रहा, बल्कि समृद्धि की असीम संभावनाओं का राज्य बन गया। हर कोई उस पर अपना अधिकार जमाना चाहता था, उसका स्वाद चखना चाहता था।
इस प्रकार, जरासंध अंग प्रदेश को अपने लिए चाहता था। वह लकड़ी उत्पादन का एकाधिकार केवल अपने नाम पर चाहता था, अधिरथ के नाम पर नहीं।

“हमें इस दिन के लिए तैयार रहना चाहिए था,” अधिरथ ने मन ही मन सोचा। “मुझे विश्वास था कि हमारा कोई विरोध नहीं होगा क्योंकि हम कुछ भी नहीं थे। लेकिन अब, जब हमारे साथ कोई सेना नहीं है, तो हमारे पास आत्मसमर्पण करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।”
“एक राजा को योद्धा होना जरूरी नहीं, बल्कि एक बेहतरीन व्यवसायी होना चाहिए,” उनके सेनानी ने कहा। “और जब आपका व्यवसाय ठप हो जाता है, तो एक व्यापारी क्या करता है? वह निवेशकों की तलाश करता है, कोई ऐसा व्यक्ति जो उसे सहारा दे सके।”
“आप क्या सुझाव देते हैं?” अधिरथ ने अपनी भौहें ऊपर उठाईं, वह इस सुझाव से तुरंत उत्सुक हो गया।
सेनानी सत्य ने योजना बताते हुए अपने जबड़े भींच लिए। "महाराज, मेरा मानना है कि अब आपके मित्र - कुरु राज्य के सर्वोच्च राजा - धृतराष्ट्र से सहायता लेने का समय आ गया है।"

दिन बीत गए थे, और जबकि अधिरथ की सेना के बचे हुए सैनिक सत्य की सहायता से अपनी सीमित क्षमता में जरासंध की सेनाओं के खिलाफ लड़ रहे थे, अधिरथ अपनी पत्नी के तम्बू में अपने मित्र और राजा धृतराष्ट्र की प्रतीक्षा कर रहे थे।
उनकी पत्नी राधा, चाँद की तरह पीली पड़ गई थीं, तकियों के बीच लेटी हुई थीं। उनके चेहरे पर मोमबत्तियों की जलती रोशनी से एक बनावटी चमक आ गई थी और लैवेंडर की अगरबत्ती की महक अधीरथ की नाक में घुस रही थी। वह कमजोर थीं, लेकिन फिर भी उनकी बादामी रंग की आँखों में जीवन की चमक थी। उनका जबड़ा सुस्पष्ट था, माथा छोटा था और बाल सीधे, काले रंग के थे।
“यह तीसरी बार है,” उसने कहा।
उसने सिर हिलाया। कहते हैं ना, तीसरी बार में किस्मत साथ देती है, लेकिन यहाँ तो उसकी बदकिस्मती ही आ गई थी। ज़मीन पर तो वह हर दिन हारता ही था, साथ ही घर पर भी उसे एक लड़ाई हारनी पड़ी। एक प्राकृतिक कारण की लड़ाई। उसकी पत्नी का तीसरा गर्भपात हो गया था और उनकी शादी को दस साल हो चुके थे, लेकिन संतान का कोई आभास नहीं था, न ही वारिस का।

"शायद इसलिए क्योंकि तुम यहां आए हो," अधिरथ ने अपने आंसू रोकने की कोशिश करते हुए कहा।
“नहीं,” उसने सिर हिलाते हुए कहा। “याद है वो दिन जब हमारी शादी हुई थी और मैंने वादा किया था कि मैं उसी रास्ते पर चलूंगी जिस पर तुम चलोगे? मैं आज भी उस विचार पर कायम हूं।”
"युद्धक्षेत्र गर्भवती महिला के लिए उपयुक्त जगह नहीं है," अधिरथ ने घोषणा की, हालांकि वह जानता था कि इससे राधा क्रोधित हो जाएगी, जो एक आधुनिक, प्रगतिशील महिला थी।
लेकिन वह चुप रही।
और फिर वह बोलता रहा, “मक्खियाँ हैं, गर्मी है, सभी आवश्यक वस्तुएँ उपलब्ध नहीं हैं, मतलब इस बार तो हमारी ही गलती है…” यह कहते हुए उसे खांसी आ गई और उसकी आँखों से आंसू बहने लगे।
“नहीं,” राधा ने उसके हाथ पकड़ते हुए कहा, “शायद यही देवताओं की इच्छा है।
वे नहीं चाहते कि हम संतान उत्पन्न करें और यह ठीक है। हम… खैर…”
वह उसे शांत करने की कोशिश कर रही थी, लेकिन वह जानता था कि यह काफी नहीं है। उसने अपने जीवन में केवल एक ही स्त्री से प्रेम किया था और वह थी राधा।
बहुत छोटी उम्र से ही। जब से वह सिर्फ एक राजकुमार था।
“लड़ाई की स्थिति क्या है?” उसने पूछा।
“उसने चंपा पर कब्ज़ा कर लिया है,” उसने गंभीर स्वर में घोषणा की। उसे यह बात उसे कभी न कभी बतानी ही थी, तो अभी क्यों नहीं? चंपा अंग प्रदेश की राजधानी थी, एक समृद्ध शहर जो मीनारों और किलों से बना था, उनका घर भी, जहाँ उन्होंने दस साल बिताए थे—अब उसके शत्रु जरासंध ने उसे घेर रखा था।
उसके मुंह से एक गहरी, बेतरतीब आह निकली। "तो तुम्हारा मतलब है कि हम वापस नहीं जा सकते?"
“हां। हमारा कोई घर नहीं है। हम मालिनीपुर में डेरा डाल सकते हैं,” उन्होंने पास के शहर अंग प्रदेश के मालिनीपुर का जिक्र करते हुए कहा। “लेकिन…” उसने देखा कि उसकी आँखों से आँसू बह रहे हैं। “मैंने वह महल अपने हाथों से बनाया, उसे सजाया और एक बच्चे की तरह उसमें कारीगरी की। मैं कैसे… मैं कैसे…” उसे बोलने में मुश्किल हो रही थी, उसके होंठ सूख गए थे और वह मुड़कर अधीरथ की तरफ पीठ करके खड़ी हो गई।

वह सिसकने लगी और उसने उसे बाहों में भर लिया, लेकिन उसने खुद को छुड़ा लिया।
उसके द्वारा ठुकराए जाने पर, अधिरथ को पहले से कहीं अधिक बेकार महसूस हो रहा था। अपने होंठ सिकोड़कर, वह कुछ देर चुपचाप इंतजार करता रहा, उसकी गहरी, बेचैन साँसें ही उसकी एकमात्र साथी थीं, तभी उसने तम्बू के बाहर से यह आवाज़ सुनी:
“महामहिम? क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?”
अधिरथ ने अनुमति दी और सत्य सुनहरे तंबू के पर्दों से अंदर दाखिल हुआ, उसकी तलवार उसकी कमरबंद से लटक रही थी। उसके चेहरे पर चिंता के भाव थे।
युद्ध की वर्तमान स्थिति क्या है?
“महामहिम, हम हार गए हैं और हमारे दो हाथियों को चोट लगी है। वे शायद अगले दिन तक जीवित न रहें, लेकिन हम फिर भी उनकी देखभाल करेंगे, क्योंकि उन्होंने हमारी अच्छी सेवा की,” उन्होंने कहा।
अधिरथ ने सिर हिलाया और अपनी पत्नी के सिसकने के बीच बोलते हुए कहा, "धृतराष्ट्र का क्या हुआ?"
“महामहिम, वह अपने दस हजार सैनिकों के साथ यहाँ उपस्थित हैं। इसलिए मैं आपको सूचित करने आया हूँ,” उन्होंने कहा।
अधिरथ ने राहत भरी मुस्कान दी। उसने अपने मित्र के पास एक कबूतर और एक दूत भेजा था, और वह जरासंध पर आक्रमण करने के लिए पूरी सेना लेकर आया था। लेकिन सबसे असहज और भयावह सवाल यह था कि बदले में वह क्या चाहेगा?

9

जारा जैसे योद्धा और राजा के लिए, उन्होंने अपने जीवन में केवल दो बार ही असुरक्षा और चिंता का अनुभव किया था।
एक घटना तब हुई जब उसके पिता ने उसे उसके जुड़वां भाई के साथ जंगल में छोड़ दिया था।
और अब।
वह तंबू के बाहर इंतज़ार कर रहा था, जबकि उसकी पत्नी उषा उसके बच्चे को जन्म दे रही थी। उसे पसीना आ रहा था। वह ज़ख्मी था, और ज़ख्मों पर आयुर्वेदिक दवा लगाई गई थी। दर्द अभी भी था, पर उसे कोई फ़र्क नहीं पड़ता था। दर्द जीवन का हिस्सा है, यह बात उसने बहुत पहले ही समझ ली थी। दर्द ही गौरव है। और दर्द ज़रूरी है। जो कष्ट नहीं सहते, वे सीखते नहीं। जो खुद को दर्द महसूस करने नहीं देते, वे कायर हैं।
“वह ठीक हो जाएगी,” बाना ने कहा, जो कोने में खड़ी होकर जरा के साथ बेसब्री से इंतजार कर रही थी। “वह सबसे मजबूत है,” उसने जरा की कई पत्नियों का जिक्र करते हुए कहा।
उसने अपने जीते हुए राष्ट्रों में पत्नियाँ इसलिए नहीं रखी थीं क्योंकि वह उनसे संबंध बनाना चाहता था, बल्कि इसलिए रखी थीं क्योंकि उसे उनसे संबंध स्थापित करने थे। और विवाह एक समझौता था, एक अनुबंध था, जिसके द्वारा वह संबंध स्थापित करता था।
लेकिन उषा अलग थी।
जब वह अपने आदमियों और पिता के साथ काशी आया था, तब उसने गंगा नदी के पास बने पुल पर प्रवेश करते समय उसे देखा था। उसने उसकी ओर देखा और फिर दोबारा उसकी ओर नज़र भी नहीं डाली।
बाद में, उनकी मुलाकात हुई और उन्होंने बातचीत की। जरा डरा हुआ था। वह तो बस एक मसखरा था। एक पहलवान, जिसके पास तेज दिमाग तो था, लेकिन वह उसका इस्तेमाल नहीं करता था। उषा अलग थी; अधिक मुखर, बहुत व्यंग्यात्मक। लेकिन

जब उसने जरा के कठोर शरीर के पीछे एक कोमल आत्मा देखी, तो उसे जरा पसंद आने लगा। उसने गौर किया कि जरा के शरीर पर गहरे घाव थे।
वह अकेली ऐसी व्यक्ति थी जिसे उसके जीवन के बारे में पता था।
उसके पिता द्वारा उसे और उसके भाई को छोड़ देने के बारे में।
उसके अंततः अकेले लौटने के बारे में।
उनके पिता बृहद्रथ ने उन्हें कुश्ती के लिए चुनौती दी। यदि वे जीत जाते, तो उन्हें सिंहासन मिल सकता था।
और जरा ने ऐसा ही किया।
इस प्रकार, वह फिर से उत्तराधिकारी बन गया।
लेकिन उनके पिता को यह नहीं पता था कि उनके इतने फुर्तीले और मानसिक रूप से इतने चुस्त होने का कारण उनकी सौतेली माँ थी।
वैद्य भीषक अपनी पत्नी के तम्बू से बाहर आया और दाईयाँ उसके पास हाथ धोने के लिए घड़े लेकर दौड़ पड़ीं। जरा का ध्यान अतीत से हटकर वर्तमान पर केंद्रित हो गया।
जरा और बाना उसके पास आए।
“वह कैसी है?” उसने पूछा।
भीषक ने अपना चेहरा पोंछते हुए कहा, “वह ठीक है। वह आराम कर रही है।” और फिर उसने जरा के कंधे पर हाथ रख दिया, जबकि राजा को इस तरह छूना मना था।
लेकिन जरा को कोई आपत्ति नहीं थी, क्योंकि भिसक ने कहा: "बधाई हो, आपको दो बेटियाँ हुई हैं।"

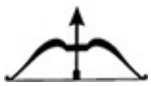

जरा अपनी भारी-भरकम बाहों में दोनों शिशुओं को देख रहा था, जब वह उनके साथ खेल रहा था, जबकि उषा एक कमजोर मुस्कान के साथ उसे देख रही थी, तकियों के बीच में लेटी हुई थी, उसके शरीर पर एक रंगीन चादर थी।
"मुझे खेद है," उसने मुस्कुराते हुए कहा।
जारा ने अपनी बेटियों के साथ नाचना बंद कर दिया और अपनी पत्नी की ओर देखा। उसने अपने जबड़े भींचते हुए कहा: "किस बारे में?"
"लड़का पैदा न करने के बारे में।"

जारा को पता था कि यह बातचीत कभी न कभी होगी। उसने उससे वादा किया था कि वह अपनी बाकी रानियों के साथ संबंध नहीं रखेगा क्योंकि वह उससे प्यार करता था और मगध का वारिस सिर्फ उसी से पाना चाहता था। लेकिन अब...
“तुम जाओ और दूसरों के साथ रहो,” उसने मुँह फेरते हुए कहा। और जारा को महसूस हुआ कि वह उस कड़वाहट को बहुत मुश्किल से सह रही है। “मैं निराशाजनक साबित हुई हूँ।”
“नहीं, ऐसा नहीं है। आपने मुझे बेटियाँ दी हैं और इसके लिए मैं हमेशा आपका आभारी रहूँगा,” उन्होंने कहा। “ऐसा बिल्कुल भी मत सोचिए। हम वारिस के लिए और कोशिश करेंगे, लेकिन इन दो प्यारी बच्चियों को पाकर मैं बेहद खुश हूँ।” उषा ने सिर हिलाया। वह पूरी तरह आश्वस्त नहीं लग रही थी, लेकिन जरा जानता था कि समय के साथ वह उसे मना लेगा।
वह एक अच्छा पति नहीं था। उसके अतीत के कई ऐसे बुरे अनुभव थे जिनसे निपटना उसके लिए मुश्किल था और इसी वजह से वह सोमा नामक मादक पेय का सेवन करने लगा था। यह एक नशे की तरह था जिससे उसका सिर चकरा जाता था और वह हिंसक हो जाता था, यहाँ तक कि अपने प्रियजनों के प्रति भी।
लेकिन उसे यह लेना ही पड़ा। वह सोमा का आदी था। यही उसके अतीत से छुटकारा पाने का एकमात्र तरीका था।
सोमा के प्रभाव के कारण, उसने मौखिक और शारीरिक हिंसा करके उषा को भी चोट पहुंचाई थी, जिसका उसे बहुत पछतावा था।
उन्होंने कहा, "मैं आपसे वादा करता हूं, मैं दोबारा कभी उस पेय का सेवन नहीं करूंगा।"
उसने ऊपर देखा और हंसते हुए खांसी। "तुम्हें अचानक बदलने की क्या वजह थी?" वह देख सकता था कि वह क्रोधित थी और साथ ही पश्चाताप भी कर रही थी। वह एक सम्मानित महिला थी और अगर नशे की हालत में उसे चोट पहुँचाने के लिए उसकी लगातार विनती और क्षमा न होती, तो वह कभी भी इस शादी में नहीं टिकती।
वह बचाव करते हुए कहता था कि जब भी वह शराब पीता था, वह एक अलग ही इंसान बन जाता था।
लेकिन यह पर्याप्त कारण नहीं था।
“मेरी बेटियाँ,” उन्होंने कहा। “वे मुझे एक बेहतर इंसान बनाएँगी। और उनकी खुशी ही मेरी खुशी होगी। उनका दुख ही मेरा दुख होगा। मैं तुमसे वादा करता हूँ।”

उषा ने सिर हिलाया और फिर अपनी बाहें फैला दीं।
जारा आया और अपनी बेटियों को बाहों में लिए हुए उसे गले लगा लिया। वे उसी स्थिति में रहे जब बाना तंबू के पर्दों से बाहर आई और मुस्कुराते हुए बोली: “वाह, क्या नजारा है!”
“चैद्य, उनसे मिलो!” जरा ने उत्साह से कहा।
बाना बच्चों को देखता रहा और उनकी उंगलियों से खेलता रहा, जब तक कि उसने जरा को बुरी खबर नहीं सुनाई और फुसफुसाते हुए कहा: "धृतराष्ट्र अपनी सेना के साथ यहाँ आया है।"
जरा अपने शत्रु को अच्छी तरह जानता था। उसने कुरुओं का सामना तो कर लिया था, लेकिन धृतराष्ट्र एक हठी और लालची व्यक्ति था। जैसे ही उसे एहसास हुआ कि अंतिम युद्ध जरा ने जीता है और अधीरथ हताश है, जरा ने अपने जबड़े भींच लिए। यह स्पष्ट था कि वह सहायता के लिए पुकारेगा।
“हमें क्या करना चाहिए?” बाना ने पूछा। “उनकी सेना को भीष्म पितामह ने प्रशिक्षित किया है। हम उनका मुकाबला नहीं कर सकते। आप यह जानते हैं, खासकर इसलिए क्योंकि हम कई हफ्तों से लड़ रहे हैं और हमारे सैनिक थक चुके हैं।”
जारा हमेशा से यह जानता था कि जरूरत पड़ने पर पीछे हटना और पूरी तरह से तैयार होने पर ही हमला करना महत्वपूर्ण है।
उसने अंगा की राजधानी चंपा पर कब्जा कर लिया था। शहर के आसपास के अधिकांश कस्बों और गांवों पर उसका नियंत्रण था।
तो फिलहाल वह ठीक था।
“उनसे कहो कि वे संयम बरतें और पीछे हटें। हमें फिलहाल वापस लौटना होगा,” जारा ने कहा।
“तुम इतनी आसानी से हार मान लेते हो?”
कभी नहीं।
जारा ने सिर हिलाया। “बहस मत करो। बस पीछे हट जाओ।”

10

वह क्या चाहेगा? यह विचार उसके मन में कौंध गया, लेकिन उसने फिलहाल इसे नजरअंदाज कर दिया।
अधिरथ ने अपने दोस्त को जितना हो सके उतना कसकर गले लगाया, फिर उसे तकियों पर आराम से बिठाकर युद्ध के बारे में चर्चा शुरू की।
वे अकेले थे। फिलहाल के लिए।
वह अपने उस अंधे दोस्त को देख रहा था, जिसके साथ वह पला-बढ़ा था, हस्तिनापुर के खेतों में खेलते हुए, जो अब धृतराष्ट्र की राजधानी बन चुका था। वह अब अस्त-व्यस्त और दुबला-पतला हो गया था, उसका चेहरा सूजा हुआ था, उसकी आंखें संगमरमर के रंग की थीं, और उसके सुनहरे और नीलम जड़े वस्त्र पर बिखरे हुए हल्के भूरे बाल थे।
धृतराष्ट्र के नेतृत्व वाला कुरु राज्य भारत का सर्वोच्च राज्य था, जिसके पास सबसे शक्तिशाली सेना थी। उनकी सेना को उनके सेनापति भीष्म पितामह द्वारा प्रशिक्षित किया गया था।
अधिरथ ने धृतराष्ट्र के चाचा के बारे में बहुत कुछ सुना था, लेकिन उसने उन्हें कभी देखा नहीं था। लेकिन उनकी सेना में उनकी उपस्थिति ने उन्हें इतना शक्तिशाली बना दिया कि कोई भी अन्य राज्य उनका मुकाबला करने की हिम्मत नहीं कर सका।
इस प्रकार, कुरु साम्राज्य ने वंगा, कलिंग और गांधार जैसे छोटे राज्यों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करके अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की। उन्होंने इन राज्यों पर विजय प्राप्त नहीं की, बल्कि उन्हें अपना अधीन बना लिया। ये छोटे राज्य श्रेष्ठ राज्यों को कर देते थे और बदले में उनकी सुरक्षा प्राप्त करते थे।
अधिरथ ऐसा कभी नहीं चाहते थे, क्योंकि अंग प्रदेश उनका और केवल उनका ही क्षेत्र था। धृतराष्ट्र ने इसका सम्मान किया और कभी कोई प्रस्ताव भी नहीं दिया।
अब तक तो ऐसा ही था।

परिस्थिति बदल गई थी और समय भी बदल गया था।
अधिरथ बात शुरू करना चाहता था, लेकिन चुप्पी उसकी दुश्मन बन गई और उसे असहजता का एहसास होने लगा, जबकि फलों की टोकरी उनके बीच में रखी हुई थी।
"उम...उह, तो महाराज..."
“क्या मैंने आपको बताया है कि मुझे ताज कैसे मिला?” उसने पूछना शुरू किया। उन्होंने अफवाहें सुनी थीं, लेकिन उन्होंने कहा: "कृपया, जरूर बताएं।" “मैं जन्म से अंधा था और कहते हैं कि यह देवताओं के प्रकोप के कारण हुआ था। यद्यपि मैं सबसे बड़ा पुत्र था, फिर भी मेरे भाई को सिंहासन मिला, जब तक कि उसने भौतिक संसार को त्यागकर वैराग्य का मार्ग नहीं अपनाया। जब मेरे भाई पांडु संन्यासी बनने के लिए वन चले गए, तो मुझे राजा बनाया गया, क्योंकि उनके पास कोई और विकल्प नहीं था। मेरे मामा भीष्म राजा नहीं बन सके क्योंकि उन्होंने राजा न बनने का वचन दिया था, यद्यपि वे मुझसे कहीं अधिक योग्य थे। और मेरे सौतेले भाई विदुर निम्न जाति के हैं, इसलिए वे महाराजा की उपाधि धारण नहीं कर सकते थे।” वह मन ही मन मुस्कुराए। अधिरथ जानते थे कि यदि वे विदुर की जगह होते भी, तो वे यह उपाधि धारण नहीं कर सकते थे, क्योंकि वे सूत थे। महाराजा की उपाधि केवल क्षत्रिय को ही दी जा सकती है। “मेरे साथियों के सामने मेरी अंधता ही मेरी कमजोरी थी, जब तक उन्होंने यह नहीं देखा कि मैंने दूसरे राज्यों के साथ क्या किया। मैंने सत्ता हथियाई, मैंने संधियाँ कीं और मैंने कुरु को एक ऐसा राजवंश बनाया जिसे अगले सौ वर्षों तक याद रखा जाएगा।” वह रुका। “और जब मैं तुम्हें देखता हूँ, तो तुम्हारी भी अपनी समस्याएँ हैं, तुम्हें भी मेरी तरह हर दिन कम आंका जाता है क्योंकि तुम सूत हो, फिर भी तुमने मुझे यहाँ बुलाकर और एक निर्णय लेकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है।”
"पसंद?"
“जी हां, आपके राज्य की बेहतरी के लिए।” वह मुस्कुराया।
अधिरथ को महसूस हुआ कि वह अपने मित्र से नहीं, बल्कि एक राजा से बात कर रहा है। और वह भी एक बेहद निर्दयी राजा, जिसकी मुस्कान शांत थी और त्वचा पीली पड़ गई थी। उस व्यक्ति को देखकर अधिरथ के रोंगटे खड़े हो गए, लेकिन अधिरथ घुटनों के बल जमीन पर बैठकर और हाथों को जांघों पर रखकर महाराजा की बातें ध्यान से सुन रहा था।

“जरसंध तुम्हारे लिए उतना ही बड़ा शत्रु है जितना मेरे लिए। उस पर विजय पाना मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान होगा। वह मगध में बैठा है और उसने कुरुओं से दूरी बना ली है,” धृतराष्ट्र ने समझाया। “वह कोई भेंट नहीं देता और मेरे मित्रों को भी हानि पहुँचाता है। मेरे लिए वह एक दुष्ट और धूर्त है और उसे इसका परिणाम भुगतना ही होगा।”
“जी हाँ,” अधिरथ ने जल्दी से मुस्कुराते हुए अपने मित्र के पैर छुए, जिस पर धृतराष्ट्र ने उन्हें ऊपर उठा लिया। “महाराज, कृपया मेरी मदद कीजिए। मेरे सैनिक लड़खड़ा रहे हैं।”
“मैं करूँगा। लेकिन मैं तुम्हारी ज़मीन के लिए अपने आदमियों को खतरे में डालूँगा। बदले में उन्हें क्या मिलेगा?” उसने पूछा।
अधिरथ ने अपने मित्र के पूछने के तरीके पर ध्यान दिया। उसने सारा दोष अपने सैनिकों पर मढ़ दिया, जबकि वे राज्य के आम सैनिक थे। अधिरथ को कभी विश्वास नहीं हुआ कि जिस लड़के ने उसके साथ चौतरंग खेला था, वह बड़ा होकर इतना कुशल कूटनीतिज्ञ बनेगा।
“महाराज, मैं आपका जागीरदार बनने के लिए तैयार हूँ। बिल्कुल वांगा या...” उसने अन्य राज्यों के नाम गिनाना शुरू किया।
“यह तो बहुत बढ़िया है। लेकिन आपके राज्य में काम ज़्यादा है और इनाम कम। जरासंध के साथ हमारा युद्ध वर्षों तक चलेगा,” उन्होंने कहना शुरू किया। “आज आप जो लड़ाई लड़ रहे हैं, वह अंग प्रदेश की सीमा पर ही है। इसे खत्म करने में मुझे एक हफ़्ता लगेगा, लेकिन जरासंध इतनी आसानी से हार नहीं मानेगा। वह हमले जारी रखेगा, खासकर तब जब मुझे पता चला है कि चंपा पर उसका कब्ज़ा है। अंग प्रदेश को लेकर उससे युद्ध जारी रहेगा और इसके लिए… मैं आपसे मामूली कर नहीं लूंगा।”
“तो फिर?” उसकी सांस अटक गई, नाक से पसीना टपकने लगा।
“मैं अपने सेनानी को अंगा के दूसरे गढ़ मालिनीपुर में तैनात करूँगा। वही शासन करेगा और आदेश लागू करेगा। बेशक, तुम्हें राजा की उपाधि तो मिलेगी, लेकिन तुम्हारे सारे कर्तव्य छीन लिए जाएँगे।” उसके ये शब्द अधीरथ की पीठ में छुरा घोंपने जैसे थे। “मेरा सेनानी मुझे जरासंध के विरुद्ध होने वाले गृहयुद्ध की रोज़ाना रिपोर्ट देगा।” वह रुका और अपने पतले होंठों को चाटा। “और इसके बदले में, मैं तुम्हारी लकड़ी उत्पादन का आधा हिस्सा ले लूँगा।”

“आधा?” उसका चेहरा पीला पड़ गया। “लेकिन महाराज…”
“जरासंध पहले से ही आपके राज्य के आधे हिस्से पर कब्ज़ा कर चुका है। तो एक तरह से, मुझे बस पचास प्रतिशत ही मिल रहा है। लेकिन यह पचास प्रतिशत अंग के उन अजेय शहरों और कस्बों से आएगा। बदले में, मैं आज आपकी रक्षा कर रहा हूँ और मैं आपसे वादा करता हूँ कि भीष्म आपकी सेना की देखभाल करेंगे और उन्हें प्रशिक्षित करेंगे, ताकि अगली बार जब आप ऐसी स्थिति का सामना करें तो आप पीछे न हटें।”
अधिरथ भीष्म के इस संकल्प से प्रसन्न थे, लेकिन यह तो कई प्रतिकूल बातों में से एक अच्छी बात थी। जरासंध अंगा पर अपना अधिकार जमा रहे थे, और धृतशास्त्र भी अपने तरीके से ऐसा ही कर रहे थे।
और मेरा क्या होगा? इस सबमें मेरी क्या भूमिका होगी?
“एक साधारण राजा होने से कहीं अधिक महान पद। तुम अपने सर्वोच्च राजा की आँखें, कान और मार्गदर्शक बनोगे। तुम मेरे सारथी बनोगे,” उन्होंने शांत भाव से मुस्कुराते हुए कहा। “जिस प्रकार पंचाल राजा मेरे वित्त मंत्री होने के साथ-साथ अपने राज्य के राजा भी हैं, उसी प्रकार तुम मेरे कार्यालय के एक अंग के रूप में कार्य करोगे।”
सारथी? एक राजा, जो सारथी बन गया?
अधिरथ अपना गुस्सा ज़ाहिर नहीं करना चाहता था, लेकिन अंधे राजा को देखकर उसकी आँखें लाल हो गईं, क्योंकि वह उसके क्रोध को देख नहीं पा रहा था। वह उस आदमी पर हमला करना चाहता था और उससे अपनी दोस्ती तोड़ देना चाहता था। लेकिन क्या उसके पास कोई विकल्प था? अगर उसने मना कर दिया होता, तो वह अपनी पत्नी और अपने आदमियों के साथ मर जाता।
“कितने समय तक?” उसने धीमी आवाज़ में पूछा।
“Hmmm?” Dhritarashtra hummed.
“यह कब तक चलेगा?”
“बेशक,” वह गहरी मुस्कान के साथ बोले, “जब तक तुम या तुम्हारा उत्तराधिकारी…” उन्होंने इस शब्द पर थूकते हुए कहा क्योंकि धृतराष्ट्र जानते थे कि अधिरथ का कोई पुत्र या पुत्री नहीं है, “…अंग पर शासन करने और जरासंध से छुटकारा पाने के लिए सेना का नेतृत्व करने के योग्य न हो जाएं।” उसे यह भी नहीं पता था कि ऐसा कब होगा। यह किसी दूर की कौड़ी या परीकथा जैसे सपने जैसा लग रहा था।

“तो, क्या हमारा सौदा पक्का हो गया?” उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया।
और उसने अपने जबड़े भींचकर और दांत पीसते हुए, स्वीकृति के संकेत के रूप में अपने मालिक के हाथ को चूमा।

11

युद्ध समाप्त होने के बाद वे मध्य बिंदु पर मिले थे।
बरसात की रात में, दोनों आदमियों के लिए शिविर लगाया गया, जबकि पहरेदार उनके चारों ओर घेरा बनाकर खड़े थे। एक कोने में एक संगीतकार बांसुरी बजा रहा था, जबकि दूसरे कोने में कोई तबला ज़ोर-ज़ोर से बजा रहा था। बारिश तेज़ थी, ठीक वैसे ही जैसे रात के अंधेरे में छिपे हुए वे दोनों आदमी।
"शानदार योजना है, महाराज," जरा ने मुस्कुराते हुए कहा।
दूसरी ओर, धृतराष्ट्र गंभीर थे। उन्होंने खुशी या दुख का कोई भाव नहीं दिखाया। “इस कार्यक्रम का हिस्सा बनने के लिए धन्यवाद। और आपकी नई बेटियों के लिए बधाई।”
जारा ने पीतल के प्याले से मूंगफली चबाते हुए सिर हिलाया। "जानते हो, बात ये है," वो हँसते हुए बोला, "मुझे कभी उम्मीद नहीं थी कि इस खूनी लड़ाई के बीच में तुम्हारा ये पत्र आएगा जिसमें मुझसे साझेदारी करने और बदले में अंगा का पचास प्रतिशत हिस्सा लेने का अनुरोध किया गया है। मैं सारा हिस्सा ले सकता था, लेकिन..."
“अपने लोगों को खोना और अपना समय बर्बाद करना। यह विचार—क्या यह ज़्यादा समझदारी भरा नहीं है?” धृतराष्ट्र ने पूछा। “अपने सैनिकों को बर्बाद करने के बजाय, हम अपनी योजना से लाभ उठाएँगे।”
“बिल्कुल। मैं तो खून-खराबे के पक्ष में हूँ, पर यह तरीका बेहतर लगता है,” जरा ने फिर सिर हिलाया। “तुमने उस मूर्ख अधिरथ को कैसे मना लिया?” धृतराष्ट्र ने कहा, “वह मेरा इतना सम्मान करते हैं कि उन्हें यह पता ही नहीं चलता कि मैंने उनसे कितना लाभ उठाया है। लेकिन इस बारे में बात नहीं होनी चाहिए। हमारा गठबंधन। कुछ महीनों में हम घोषणा करेंगे कि इतने खून-खराबे के बाद हमने युद्धविराम पर सहमति जताई है। हम उस युद्धविराम पर हस्ताक्षर करेंगे और हमारी यह अनौपचारिक बैठक वैध हो जाएगी।”
“और क्या हर कोई इस विचार को अपना लेगा? यहां तक कि अधिरथ भी?”

"उसे लगेगा कि लगातार लड़ते रहने और अपनी जमीन को नष्ट करने के बजाय युद्धविराम पर हस्ताक्षर करना बेहतर है।"
“जी हाँ। तो यह तय हो गया। चंपा नदी के नज़दीक होने के कारण चंपा मेरी है। मालिनीपुर तुम्हारी है।” जरा ने तिरछी नज़रों से अंधे आदमी को देखते हुए मुस्कुराया। उसने शराब की बोतल से अपना प्याला भरा और पूछा: “क्या हमें जश्न मनाना चाहिए?”
धृतराष्ट्र ने सिर हिलाया, अपना प्याला उठाया, उसे जरा के प्याले से टकराकर तोड़ दिया और फिर उसमें से एक घूंट पिया।
“तुम्हें पता है, सब मुझे बुरा आदमी समझते हैं, मगध का दुष्ट जरासंध समझते हैं…” वह हँसते हुए बोला, “…जब वे तुम्हारा असली कुटिल स्वभाव देखेंगे तब तो उन्हें पता चलेगा।”
“कोई नहीं सोचेगा।” हस्तिनापुर के राजा ने अपने लहजे में तीखा बदलाव लाते हुए कहा। “उन्हें सोचने दो…कि मैं बस एक गरीब, बूढ़ा, अंधा आदमी हूँ, किसी काम का नहीं।”
और जरा ने देखा कि धृतराष्ट्र अपनी जीत पर मुस्कुरा रहे हैं। इन सब के बाद उनके मन में केवल एक ही बात आ रही थी।
कितना बड़ा कमीना है!

12

वर्तमान में…
शाही खून बहाने के लिए मंच तैयार था।
यह एक विशाल स्टेडियम जैसा था, जिसमें सौ से अधिक लोग अर्धवृत्ताकार स्टेडियम में बैठे थे। छोटे कस्बों, गांवों, मछली पकड़ने वाली बस्तियों से उत्साहित भीड़ जमा हो गई थी; यहां तक कि भगवा वस्त्र पहने तपस्वियों ने भी खबर सुनी थी और इस नजारे को देखने के लिए वहां आ गए थे।
दूर-दूर से आए लोग शहर की दीवारों के बाहर, जलधाराओं की ओर ढलान वाली भूमि पर डेरा डाले हुए थे। कोलोसियम के चारों ओर हजारों मशालें जलाई गई थीं, क्योंकि लोग रंगभूमि की प्रतीक्षा कर रहे थे और रात बाहर ही बिता रहे थे। अंदर, लोगों को उनकी जाति के अनुसार अलग-अलग बैठाया गया था। ढोल और तुरही बजाने वालों की मधुर और उत्साहवर्धक संगीत की धुनें सुनाई दे रही थीं। कुरु वंश के शाही परिवार और बुजुर्ग लोग बाकी सभी से ऊपर, अपनी-अपनी आलीशान बालकनियों पर अंगूर, खुबानी और शराब के साथ बैठे थे, जबकि उनके नौकर उन्हें पंखा कर रहे थे।
धृतराष्ट्र अपनी पत्नी और सुयोधन की माता गांधारी के साथ थे। अपने पति की तरह दिखने के लिए, गांधारी ने अपनी आँखों पर कपड़ा बाँध रखा था, ताकि देखने की क्षमता होने के बावजूद वह कुछ न देख सकें। दोनों के सिंहासनों के कोनों में वक्ता बैठे थे, जो उन्हें आसपास की घटनाओं की जानकारी दे रहे थे। दूसरी बालकनी में पांडवों की माता कुंती बैठी थीं। उनके बालों की चोटी बनी हुई थी और वे पहले से अधिक युवा और तेज नजर आ रही थीं। उनकी बड़ी-बड़ी आंखों में काजल लगा था और गले में पतले-पतले गहने थे। वे अपने बेटों का प्रदर्शन देखने के लिए इंतजार कर रही थीं और उन्हें उम्मीद थी कि वे अपने चचेरे भाइयों से बेहतर प्रदर्शन करेंगे।

वहाँ विभिन्न सहयोगी राजाओं के स्वामित्व वाले चबूतरे थे, जिनमें से एक द्रौपद था जो अपनी पुत्री पांचाली और पुत्र शिखंडी के साथ था। जन्म से स्त्री होने के बावजूद, शिखंडी ने बड़े होकर स्वयं को पुरुष के रूप में पहचाना और जहाँ द्रौपद को इस तथ्य को स्वीकार करने में कठिनाई हुई, वहीं पांचाली अपने भाई से, चाहे वह जैसा भी रहना चाहता हो, प्रेम करती थी। “तुम्हें तो खुश होना चाहिए,” शिखंडी ने पांचाली को चिढ़ाते हुए कहा, जब उनके पिता शराब पीने में व्यस्त थे। “तुम अर्जुन को देखने जा रही हो।” पांचाली ने मुंह बनाया। पांडवों में से एक अर्जुन वास्तव में एक सुंदर पुरुष था, जिसके चेहरे पर दैवीय देन थी, लेकिन वह घमंडी भी था। और पांचाली को यह बात बिल्कुल पसंद नहीं थी। “मैं यहाँ केवल धृष्टद्युम्न के दर्शन के लिए आई हूँ। किसी और के लिए नहीं।”
शिखंडी खिलखिलाकर हंस पड़ी। भाई-बहन हिमालय की तलहटी में स्थित अपने राज्य पंचाल से बहुत दूर आ चुके थे।

बर्फीली दाढ़ी और पीले कवच वाले भीष्म पितामह, अपने मौन सेनापति कृपा के साथ, अपनी छत पर थे, तभी चिंतित विदुर ने उनसे कहा:
“यह विचार बुरा है। चचेरे भाइयों और भावी राजकुमारों को एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा करने से उनके बीच और अधिक दुश्मनी ही पैदा होगी।”
भीष्म को इस बात पर यकीन नहीं था। उनका मानना था कि उन्हें एक-दूसरे की खूबियों और कमियों को जानना चाहिए, और यह इसे प्रदर्शित करने का सबसे अच्छा तरीका था। “चिंता मत कीजिए, प्रधानमंत्री जी। मेरे पोते-पोतियां आपकी कमजोर बुद्धि से कहीं अधिक मजबूत हैं। वे जानते हैं कि यह सिर्फ एक प्रतियोगिता है।”
"जी हां," कृपा ने गंभीरतापूर्वक सहमति व्यक्त की, जो भीष्म का पीछा करने वाला और अपने स्वामी के लिए पूंछ हिलाने वाला कुत्ता था।
विदुरा को बुरा नहीं लगा, बस उसने आह भरी। वह बूढ़ा व्यक्ति योद्धाओं को हराने वाला और एक सम्मानित व्यक्ति था, लेकिन विदुरा के विपरीत, वह शांतिवादी होने के बजाय हिंसा में अधिक विश्वास रखता था।

विदुर ने शहद और दूध से बने अपने पेय का एक घूंट लेते हुए सोचा कि कृपा के साथ उस खूनी अभियान से उसे कभी वापस नहीं लौटना चाहिए था।

दर्शकों की सीटों के निचले हिस्से में एक रहस्यमयी आकृति मंडरा रही थी, जो धीरे-धीरे उस लकड़ी की रेलिंग की ओर बढ़ रही थी जहाँ पहरेदार खड़े थे। उसके आगे सूरज की गर्मी रेत में घुल रही थी, वह मैदान जहाँ आगे की कार्रवाई होनी थी। लोगों के बीच से गुज़रते हुए उसे पसीने की गंध, सड़े हुए दाँतों और गंदगी की दुर्गंध महसूस हो रही थी। एक विशालकाय की तरह लंबा वह व्यक्ति रेलिंग तक पहुँचा और वहाँ खड़ा हो गया, उसका सिर मलमल की शॉल से ढका हुआ था और उसके परेशान होंठ छिपे हुए थे।
उसके सामने जो मैदान था, वह लाल धूल और लाल मिट्टी का बना था, लेकिन बीच में उसे एक ऊंचा चबूतरा भी दिखाई दिया। संगमरमर और ग्रेनाइट से बनी इस चबूतरे तक टेढ़ी-मेढ़ी सीढ़ियाँ जाती थीं, और कोनों में माणिक और नीलम जैसे बेहतरीन पत्थर चमक रहे थे। भाले से लेकर तलवारों और गदाओं तक, हर तरह के हथियार सामने प्रदर्शित थे। यह योद्धाओं के लिए था। युवा योद्धाओं के लिए!
यह स्टेडियम इसी उद्देश्य से बनाया गया था। और केवल इसी उद्देश्य से। इस पर कितना पैसा खर्च होगा, यह उस रहस्यमय व्यक्ति को नहीं पता था। लेकिन यह व्यर्थ था। भाइयों के बीच प्रतिद्वंद्विता भड़काना सबसे बुरा है।
और इस प्रकार, इन्हीं विचारों के साथ, उस आकृति की निगाहें निर्मित मीनारों की बालकनियों की ओर घूम गईं जहाँ राजघराने के लोग बैठते थे और उसका चेहरा मंत्री मंडल की छत की ओर मुड़ गया, जहाँ उसने एक व्यक्ति को देखा।
कोई ऐसा व्यक्ति जिसे वह जानता था।
मैं तुम्हारी वजह से यहां आया हूं।

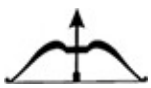

सुयोधन जानता था कि कर्ण रंगभूमि में अपने राज्याभिषेक की घोषणा क्यों करवाना चाहता था।
इसका मकसद अर्जुन को नीचा दिखाना और पांचाली को प्रभावित करना था।
यही कारण होगा, बेशक। और क्या कारण हो सकता है? कर्ण को द्रौपद की पुत्री से हमेशा से लगाव था और वह अर्जुन से इसलिए नफरत करता था क्योंकि अर्जुन ने कर्ण के साथ जो किया था।
मैं भी ऐसा ही करता।
वह खांसा और अंधेरे कोने में ही बैठा रहा। वह चुप था। बिलकुल चुप। जब उसने अपना सिर घुमाकर अपने चचेरे भाइयों और भाइयों की ओर देखा, तो उसे तलवारों की खड़खड़ाहट और धनुष की डोरियों के बंधने की आवाज़ सुनाई दी।
वह स्टेडियम की दीवारों के भीतर था, जो योद्धाओं के लिए एक बंद प्रतीक्षा स्थल था।
एक-एक करके लोग नेतृत्व करेंगे। अपना कुछ काम करेंगे।
समय बीतता गया और उसकी चिंता उस पर हावी होती गई। खासकर जब उसने उस क्रूर प्राणी को देखा। भीम।
वह आदमी विशालकाय था। उनमें सबसे बड़ा। लगभग सात फीट लंबा। उसका चेहरा टेढ़ा-मेढ़ा था, नाक उभरी हुई थी और बाल घुंघराले थे। उसका जबड़ा बड़ा था और उसकी आँखें क्रिस्टल जैसी नीली थीं, ठीक उसी कवच की तरह जो उसने पहना था। उसके पास सुयोधन से भी भारी गदा थी और वह अपने भाइयों से बातें कर रहा था और उनकी पीठ थपथपा रहा था।
सुयोधन को अपने शरीर में रक्त प्रवाह में तेज़ी महसूस होने लगी और उसकी आँखें काली पड़ने लगीं। उसकी पुतलियाँ सिकुड़ने लगीं, उसकी उंगलियाँ ठंडी पड़ने लगीं। यादें उमड़ने लगीं। अतीत की यादें। गुरुकुल के दिनों की यादें।
जब भीम उसे डुबो देता था। उसे धक्का देता था। उसे कीचड़ में फेंक देता था और उसके चेहरे पर घूंसे मारता था।
“क्या तुम ठीक हो?” उसे एक आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ दूर से आ रही थी। कोने से बहुत दूर, ऐसा लग रहा था।
उसने ऊपर देखा। वह पसीने से भीगा हुआ था।
वह सुशासन था। उसका भाई। उसके सबसे करीबी लोगों में से एक।

“हाँ, हाँ, उम…” सुयोधन के दिमाग में कई सवाल दौड़ रहे थे। “तुम्हारी रथ दौड़ कैसी रही?”
“अच्छा। सबने तालियाँ बजाईं,” सुशासन मुस्कुराते हुए घुटनों के बल बैठ गया और सुयोधन ने अपने भाई की चमकीली हरी आँखें देखीं, जो बिल्कुल उसकी अपनी आँखों जैसी थीं। वह एक नाज़ुक आदमी था और द्रोण ने उसे रथ दौड़ में अपने कौशल का प्रदर्शन करने के लिए कहा था।
हर किसी को अपना हुनर दिखाना था। सुयोधन को अपनी गदा से पेड़ों के तने तोड़ने थे, लेकिन भीम ने एक नकली लड़ाई का प्रस्ताव रखा। यह खूनी नहीं होगी, क्रूर नहीं होगी, बल्कि मनोरंजक होगी। द्रोण ने विचार किया और उत्साह बढ़ाने के लिए मान गए। और उस रात जब सुयोधन को इस बारे में पता चला, तो वह सो नहीं सका। उसकी धड़कनें तेज़ हो गईं थीं।
मुझे लगता है कि तुम्हें भीम से नहीं लड़ना चाहिए।
लेकिन तब मुझे कायर कहा जाएगा।
ओह नहीं। यह संभव नहीं था। मुझे साबित करना होगा कि मैं ताज के योग्य हूं।
और यहाँ उपस्थित सभी बुजुर्ग उन्हें उनकी पूरी शक्ति और सामर्थ्य में देखेंगे, जो एक क्षत्रिय के गुणों का प्रदर्शन कर रहे थे।
“यह संभव नहीं है।”
“वह तुम्हारे माता-पिता के सामने तुम्हें शर्मिंदा करना चाहता है। वह यह दिखाना चाहता है कि वह तुम्हें हरा सकता है…”
सुयोधन अपना सिर हिलाता रहा। वह हताश था। उसे अजीब सा महसूस हो रहा था। उसे ऐसा लग रहा था मानो उसके अंदर हजारों घोड़ों के खुर दौड़ रहे हों, जो उसे चूर-चूर कर रहे हों।
“तो मुझे उसे गलत साबित करना होगा।” उसने अपने छोटे भाई की ओर देखा और उसकी खोपड़ी पर उंगलियां फेरते हुए उसके माथे पर चुंबन किया। “तुम्हें समझना होगा, ऐसा करके मैं साबित कर दूंगा कि हम ही वो लोग हैं जिनका लोगों को सम्मान करना चाहिए और जिनका अनुसरण करना चाहिए।”
लेकिन अगर आप हार गए तो क्या होगा?
सुयोधन रुक गया। इतनी गंभीर आँखों से वह ऐसा क्यों कह रहा था? लेकिन उसने अपने गुस्से पर काबू पाया और कहा, "तो फिर हम हस्तिनापुर पर शासन करने के योग्य नहीं हैं।"
“और अर्जुन के बारे में क्या?”

यह भी एक समस्या थी। अर्जुन अपनी तीरंदाजी का हुनर दिखाता था। वह बचपन से ही एक प्रतिभाशाली बालक था, पाँच साल की उम्र से ही तीरंदाजी की कला में माहिर था। उसने सरकंडे के धनुष को अपना दोस्त, साथी और प्रेमी बना लिया था। जब लोग सोते थे, वह अभ्यास करता था।
उनसे अधिक बलवान कोई नहीं था और भले ही सुयोधन भीम पर विजय प्राप्त कर लेता, अर्जुन अपने दिव्य कौशल का प्रदर्शन करते। उन्होंने धनुष-बाण से असंभव कारनामे किए थे और वे फिर से वही कर दिखाएंगे।
“लेकिन वह किसी से प्रतिस्पर्धा नहीं कर रहा है?” सुयोधन ने पुष्टि के लिए पूछा।
“क्योंकि कोई भी उससे प्रतिस्पर्धा नहीं करना चाहता। भीम धीमा, कमजोर और क्रूर है, लेकिन अर्जुन एक प्रतिभाशाली है। अगर आप तीरंदाजी में उसकी गति धीमी भी कर दें, तो भी वह अपनी रणनीतिक बुद्धि से आपको हरा देगा।”
मुझे किसी की याद आ गई। सुयोधन मुस्कुराया।
"तो आपका मतलब यह है कि अगर वह अकेले ही लड़ रहा है तो भी भीड़ उसके लिए जयकार करेगी और उससे प्यार करेगी?"
“Yes,” Sushasan said.
हालांकि, एक तरीका है। अर्जुन को शर्मिंदा करना या उसे शर्मिंदा करने के करीब पहुंचना।
उस रास्ते का एक नाम था।
और वह कर्ण था।
कर्ण ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो अर्जुन के निकट रहने के योग्य था, भले ही वह अर्जुन जितना कुशल न हो। कर्ण कोई शिष्य नहीं था। वह देवताओं द्वारा प्रदत्त प्रतिभावान भी नहीं था। समय के साथ, अभ्यास से और धैर्य से वह एक शक्तिशाली धनुर्धारी बना।
मुझे उसे आने के लिए कह देना चाहिए था। मुझे तो यह भी यकीन नहीं है कि वह यहाँ है भी या नहीं।
“खैर,” सुयोधन ने कहा, “उम्मीद करते हैं कि अर्जुन गड़बड़ कर दे।” "शुभकामनाएं।"
सुशासन ने सिर हिलाया और अपने भाई को गले लगाकर उसे अकेला छोड़ दिया। यह क्षणिक ध्यान भटकाना उसके लिए अच्छा था।

उन्हें ढोल बजने की आहट सुनाई दी और उन्होंने देखा कि दरवाज़े खुल गए हैं, और सामने रोशनी दिखाई दी। वे द्रोणाचार्य को सफेद धोती और लाल त्वचा पर सफेद डोरी पहने आसन पर खड़े होकर सुयोधन और भीम के नाम पुकारते हुए सुन सकते थे।
अब मेरी बारी है।
और उसकी नज़रें भीम से मिलीं। एक तीखी निगाहों में खोई हुई। वह उस नज़र को जानता था। इसका स्पष्ट अर्थ था कि भले ही यह एक दिखावटी लड़ाई थी...
भीम उसे नहीं बख्शेगा।

13

जैसे ही वह अपनी गदा लेकर खुले और चमकदार स्टेडियम में दाखिल हुआ, उसे अपने अंदर दबाव बढ़ता हुआ महसूस होने लगा।
वह अपने चारों ओर यमराज—मृत्यु के देवता—के फंदे को महसूस कर सकता था, जो उसकी गर्दन के चारों ओर कसता जा रहा था और उसे आग और गंधक के गलियारों में घसीट रहा था।
मुझे इतना डर पहले कभी नहीं लगा।
उसने अपनी दाढ़ी को छुआ, उसे सहलाया, उसकी बर्फीली उंगलियां गर्म त्वचा को छू गईं। उसने पहले कभी ऐसा महसूस नहीं किया था और भीम को जितना अधिक वह देखता, उतना ही अधिक भयभीत होता जाता। वह व्यक्ति सुयोधन से कहीं अधिक लंबा था, और जैसे ही वे ऊँचाई पर पहुँचे, भीड़ ने उनका उपहास उड़ाया। किसके लिए, यह तो मुकाबले के नतीजे से तय होगा।
वे चबूतरे पर पहुँच गए, अपने झुके हुए गुरु के दोनों ओर खड़े हो गए, जो भीड़ के ऊपर खड़े होकर गुस्से से घूर रहे थे और चिल्ला रहे थे:
“अब मैं अपने दो प्रिय योद्धाओं का स्वागत करता हूँ। गदा युद्ध में श्रेष्ठ। जहाँ अन्य योद्धा रक्त-दण्ड के नाम पर एक-दूसरे को हराने से डरते थे, वहीं इन दोनों ने इससे ऊपर उठकर एक-दूसरे की शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए युद्ध किया। एक ओर, कौरवों के नेता दुर्योधन का स्वागत करता हूँ…” लेकिन यह मेरा नाम नहीं है!
वह लगभग दबे स्वर में चिल्ला उठा, लेकिन द्रोणाचार्य को नाम चुनने का हुनर आता था। आखिरकार, उन्होंने ही कर्ण का नाम वासु से बदलकर कर्ण रखा था।
"वह व्यक्ति जो बेरहमी से लड़ता है।"
सुयोधन नाम का अर्थ था 'वह जो धर्मपूर्वक युद्ध करता है'। उन्होंने इसका अर्थ ही उलट दिया।
और मेरे दूसरी ओर, पहाड़ों के राक्षसों का मुकाबला करने वाला विशालकाय भीम है!
लोगों ने उपहास किया। तालियाँ बजाई गईं। ढोल बजाए गए।

तब द्रोण ने अपनी आवाज धीमी की और सुयोधन के करीब आकर कहा, "मुझे उम्मीद है कि तुम अपने पिता को गौरवान्वित करोगे।"
Suyodhan nodded.
“मैंने सुना तुमने कर्ण के बारे में क्या कहा। तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए था। मुझे लगा जैसे वो… व्यक्तिगत हमला था।” उसने सिर हिलाया। “और इसीलिए मैंने भीम को कहा है कि वह तुम्हारे साथ नरमी न बरते।” उसकी मुस्कान बनावटी थी।
सुयोधन का खून जम गया। शायद लोगों को सुयोधन द्वारा अपने पिता को जरासंध के विरुद्ध कर्ण की स्थिति के बारे में समझाने की बात पता थी। आखिरकार, धृतराष्ट्र ने ही उस आदेश पर हस्ताक्षर किए थे और उसे अपने करीबी लोगों के बीच साझा किया था।
द्रोण कर्ण से घृणा करते थे। और इसके कारण केवल वे दोनों ही जानते थे। उसने ऐसा क्या किया था जिसके लिए उसे यह सब सहना पड़ा?
माथे पर शिकन लिए वह चला गया।
इन दोनों को बीच में छोड़कर।
सुयोधन भीम को घूर रहा था, जो बस मुस्कुरा रहा था, उसके टेढ़े-मेढ़े दांत मुंह से बाहर निकले हुए थे। उसका चेहरा टूटा हुआ और क्षतिग्रस्त लग रहा था।
भीम को सुयोधन की खूबसूरती से बेहद चिढ़ होती थी। वह जवान था। भीम ने उसे गायों का गोबर चखने के लिए मजबूर किया और एक पेड़ से टकरा दिया, जिससे उसकी पसलियां टूट गईं। जब सुयोधन शिकायत करता, तो द्रोण भीम को धूप में बाहर बैठने और भीषण गर्मी सहने की सजा देते थे।
लेकिन इतना ही?
द्रोणाचार्य एक क्रूर शिक्षक थे और इसी कारण सुयोधन पहले की तुलना में अधिक शक्तिशाली हो गया था।
इससे पहले कि सुयोधन ढोल बजना बंद होने और उपहास रुकना बंद होने का इंतजार कर पाता, भीम उसकी ओर तेजी से दौड़ा और उसे जमीन पर पटक दिया।
उसका सिर जमीन पर जा गिरा, उसके शरीर में असहनीय, जलन पैदा करने वाला दर्द दौड़ गया, क्योंकि उसने देखा कि गदा उसकी ओर पीछे हट रही है।
तेजी से।
और वह मुड़ गया।

और फिर मुड़ गया।
गदा उसे कुछ इंच से चूक गई, वरना उसका सिर चूर-चूर हो जाता।
भीम का भारी-भरकम मुखौटा उस पर छा गया था, उसकी जांघें सुयोधन की कमर के चारों ओर कस गई थीं और ऐसा लग रहा था जैसे कोई हाथी उस पर बैठा हो।
सुयोधन ने भीम के चेहरे पर अपने ढीले ढंग से संभाले हुए गदा के बजाय अपनी मुट्ठी से प्रहार किया - इस प्रक्रिया में उसका जबड़ा टूट गया, नमकीन खून की बूंदें सुयोधन के चेहरे पर बह गईं, जबकि भीम बुरी तरह घायल पड़ा था।
उस प्रहार को सहने के बाद जैसे ही भीम थोड़ा भ्रमित सा दिखा, सुयोधन ने उसे धक्का देकर दूर कर दिया और उसके चेहरे पर फिर से लात मार दी।
इस बार भीम ने उसे पैरों से पकड़ लिया।
और मुस्कुराया।
वह सुयोधन का पैर मरोड़ने ही वाला था और इससे लड़ाई खत्म हो जाती—तभी सुयोधन ने अपने हाथ में मौजूद गदा निकाली और सीधे उसकी बाईं बांह पर प्रहार किया, जिससे उसके चेहरे पर दर्द की एक गड़गड़ाहट सी फैल गई और वह कराह उठा।
“तुमने मुझे इतना क्यों सताया?” सुयोधन ने अपने पैरों को ढीला करके खड़े होने की कोशिश करते हुए पूछा, जबकि भीम ज़मीन पर पड़ा था। “क्यों? क्यों?” उसे महसूस हो रहा था कि उसकी आँखों से आंसू बह रहे हैं और भीड़ के शोर में उसकी आवाज़ सुनाई नहीं दे रही है।
“कमजोर,” भीम ने खड़े होते हुए और खून से सना थूकते हुए कहा। “तुम कमजोर थे। कुपोषण के शिकार, नाक पोंछते और ताकत पाने के लिए दूध पीते थे। माँ कहती थीं, यही तुम्हारा राजा बनेगा। हा!” वह ऐसे हँसा जैसे कोई मज़ाक कर रहा हो। “तुम? और राजा? मेरा लिंग तो राजा बनने के लिए ज़्यादा बेहतर है।” जब उसने यह कहा, तो सुयोधन ने इंतजार नहीं किया। वह बेचैनी से आगे बढ़ा और उसके बगल में दौड़ पड़ा, लेकिन भीम ने उसके गुस्से का फायदा उठाते हुए उसे चकमा दे दिया…
चतुराई से आगे बढ़ते हुए उसने उसकी पीठ पर जोरदार प्रहार किया।
सुयोधन जमीन पर गिर पड़ा। और इससे पहले कि वह मुड़कर भाग पाता, उसे गदा का जोरदार प्रहार अपने चेहरे पर महसूस हुआ...

उसकी नाक टूट गई। उसके दांत टूट गए। उसके माथे पर निशान पड़ गए। उसकी आंखें बंद हो रही थीं...और उसका चेहरा कोमल होता जा रहा था, उसका भविष्य, वर्तमान और अतीत एक साथ मिल रहे थे...तभी उसने भीम का चेहरा देखा, जिसने कहा:
लेकिन मैं गलत था।
सुयोधन ने अपने खून से लथपथ, लाल चेहरे के बीच से भीम को देखा, जिसकी बड़ी- बड़ी उभरी हुई आंखें नरम पड़ गई थीं।
“तुम बलवान हो।” उसने गदा पर प्रहार नहीं किया। अब और नहीं। क्योंकि अगर वह ऐसा करता, तो सुयोधन मारा जाता। “तुम बलवान हो गए हो और मुझे दृढ़ विश्वास है कि तुममें राजा होने का गौरव है।”
उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया। भीड़ एकदम शांत हो गई थी।
यह दोस्ती का हाथ था। स्वीकृति का हाथ था।
“मैंने जो कुछ भी किया, उसके लिए मैं माफी मांगता हूं। अतीत में, मैं बच्चा था,” भीम ने गहरी सांस लेते हुए कहा। “मुझे अपनी लंबाई को लेकर असुरक्षा महसूस होती थी और जो भी मेरे सामने झुकता था, मैं उससे झगड़ा कर बैठता था।”

कौरवों और पांडवों के दादा भीष्म पितामह मुस्कुरा रहे थे; खिलखिला रहे थे और ताली बजा रहे थे। उनके सफ़ेद दाँत प्रकाश में चमक रहे थे।
कोने में खड़ा विदुरा उत्सुक था। उसने पैनी नजरों से पूछा, "क्या आपको पता था कि ऐसा होगा?"
भीष्म ने प्रधानमंत्री की ओर रुख किया; एक सीधा-सादा, नीची जाति में जन्मा, लेकिन तेज बुद्धि वाला व्यक्ति। हालांकि, बूढ़े भीष्म से ज्यादा तेज नहीं। “पांडव अपूर्ण संतान हैं, लेकिन वे मेरे ही प्रतिबिंब बनेंगे। मुझे पहले से ही पता था। भीम ने जो किया, वह उन्होंने सही समझकर किया। उनमें मेरा खून है।”
“और सुयोधन के बारे में क्या?” विदुर आगे झुके। “क्या आपको लगता है कि वह भीम को माफ कर देगा?”
भीष्म के चेहरे पर अनिश्चितता की एक झलक दिखाई दी। वह तुरंत परेशान नजर आने लगे।
"खैर, अब हमें पता चल ही जाएगा।"

ऐसा नहीं होना चाहिए था।
लेकिन द्रोण ने भीम को उसके साथ सख्ती बरतने के लिए कहा, और तब भी भीम ने उनकी सलाह को नकार दिया और वही किया जो बेहतर था।
वह एक बेहतर इंसान बन गया।
लेकिन क्या मैं सच में ऐसा हूँ?
सुयोधन ने कुछ समय लिया। उसने भीम की ओर देखा। उसका हाथ बुरी तरह छिल गया था। अब तक उसके शरीर से खून की बदबू आ रही थी। और उसकी गदा उसके हाथ से गिर चुकी थी।
उसके हाथ नहीं थे। वह कमजोर था।
उस पर हमला करने का मौका था। लेकिन क्या उसे ऐसा करना चाहिए था?
“भाई, लड़ाई नहीं करते। चलो…”
अब बहुत देर हो चुकी है।
सुयोधन ने अपनी गदा को मजबूती से पकड़ा और भीम के चेहरे पर जोरदार प्रहार किया, जिससे उसका गाल और चेहरा बुरी तरह फट गया और वह जमीन पर गिर पड़ा, मानो साँस लेने के लिए संघर्ष कर रहा हो। लाल चेहरे के साथ, सुयोधन ने अपनी गदा का इस्तेमाल करने के बजाय, अपने चचेरे भाई पर फिसलते हुए उसका गला पकड़ लिया और उसे दम घोंटने लगा।
अब कोई मजाक नहीं उड़ा रहा था।
भीम आत्मसमर्पण करने के लिए जमीन पर हाथ फेर रहा था, लेकिन सुयोधन ने उसे नहीं छोड़ा। उसने उसे कसकर पकड़ रखा था।
“भाई…भाई…” सुयोधन गुर्राया। “मैं तुम्हारा भाई नहीं हूँ। मैं तुम्हें मार डालूँगा। मैं तुम्हें नष्ट कर दूँगा, तुम गंदगी के ढेर।”
उसे महसूस हो रहा था कि भीम की ताकत धीरे-धीरे कम हो रही है, उसकी धड़कनें धीमी होती जा रही थीं...और सब कुछ सुन्न सा हो गया था।
सुयोधन को आग और गंधक के सिवा कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। बिल्कुल पहले की तरह। लेकिन इस बार आग उसने खुद ही लगाई थी।
"सुयोधन! सुयोधन!" एक परिचित आवाज चिल्लाई.

और हाथों ने उसे धड़ से पकड़कर दूर धकेल दिया। भीम खांसते-खांसते दम घुटने लगा, जैसे ही उसे पकड़ से छुड़ाया गया, उसने जमीन पर थूका और सांस लेने की कोशिश की, जबकि सुयोधन की लाल आंखें उस आदमी पर टिकी रहीं जिसने इस लड़ाई में दखल दिया था।
उनके गुरुजी.
“क्या तुम दोनों पागल हो गए हो? मैंने तुम दोनों को एक-दूसरे को मारने के लिए नहीं भेजा था। यहाँ कोई विजेता नहीं है,” उसने फुसफुसाते हुए कहा और फिर भीड़ की ओर मुस्कुराया, जबकि उसके दोनों पहलवान नीचे लेटे हुए सैनिकों के आने और उन्हें उठाने का इंतज़ार कर रहे थे। “सब ठीक है। सब शांत हो गया है। वाह! क्या लड़ाई थी, है ना? खैर, अगली लड़ाई बहुत महत्वपूर्ण है…”
और सुयोधन को लकड़ी के स्ट्रेचर पर अंदर ले जाते समय पृष्ठभूमि की आवाज़ धीमी होती महसूस हुई। उसकी निगाहें भीड़ पर टिक गईं जहाँ उसे जयकारे लगाते हुए किसी का नाम सुनाई नहीं दे रहा था।
No Bheem. No Duryodhan.
अगर हम आपस में लड़ें और एक-दूसरे को मार डालें ताकि दूसरों की नज़रों में हम बेहतर दिखें, तो क्या हमें वाहवाही नहीं मिलेगी? क्या किसी के खिलाफ हिंसा करने पर एक पल का मौन रखा जाता है? लेकिन जब हमने शुरू किया तो उन्होंने जयजयकार किया। शायद इंसान हिंसा के भ्रम को, हिंसा करने से ज़्यादा पसंद करते हैं।
वह शांत रहा। हालांकि, भीम के चुने हुए रास्ते से वह अभी भी विचलित था।
अंधेरा छाने से पहले ही उसकी नजर भीड़ में से एक व्यक्ति पर टिक गई।
और उस एक व्यक्ति ने, एक नकाब के नीचे, एक कवच पहन रखा था जिस पर सूर्य का प्रतीक खुदा हुआ था।

14

राजमाता कुंती चुप थीं, क्योंकि उन्होंने अपने एक बेटे का खून बहते देखा था, और खून की हर बूंद के साथ उनका दिल दुख में और भी गहरा डूबता जा रहा था। क्या उन्हें यहाँ लाना सही था? क्या उन्हें उनके चचेरे भाइयों के अत्याचार के आगे झुकने के लिए मजबूर करना सही था?
लेकिन पांडु ने अपनी अंतिम सांस लेते हुए उससे कहा था—“मुझे शासन करना था, लेकिन मैं तपस्वी बन गया। लेकिन स्वाभाविक रूप से, सद्गुण और धर्म के अनुसार, हस्तिनापुर के राजा हमारे बच्चे ही होने चाहिए।”
और इसी सोच और इस विश्वास के साथ कि उसे आसानी से सिंहासन मिल जाएगा, उसने धृतराष्ट्र से विनती की। अंधे राजा के कई गुण थे, लेकिन अपने खून के प्रति वे सच्चे वफ़ादार थे। वास्तव में, जब उन्हें ताज पहनाया गया था, तब उन्हें इससे घृणा हुई थी, उन्होंने कहा था कि उन्हें केवल अंधकार दिखाई देता है और वे अपनी प्रजा को प्रकाश की ओर नहीं ले जा सकते। इसलिए जब वह लौटी, तो उन्होंने उसका स्वागत किया।
एक निस्वार्थ व्यक्ति।
उसने चाहे असहायों या द्वेषियों के प्रति धृतराष्ट्र के तौर-तरीकों के बारे में कुछ भी सुना हो, वह धृतराष्ट्र का सबसे अधिक सम्मान करती थी। वह आसानी से उसके बच्चों और उसे भी मार सकता था, लेकिन उसका मानना था कि सिंहासन पर उनका भी उचित अधिकार है।
लेकिन यहाँ बैठकर, कड़वी हवा का सामना करते हुए, और भीम के शरीर में बहने वाले रक्त से लाल हो चुके खेत को निहारते हुए—उसे इसका पछतावा हुआ।
मुझे चले जाना चाहिए। मैं उन्हें दोबारा चोट लगते हुए नहीं देख सकता। बार-बार।
लेकिन तभी उसने घोषणा सुनी। द्रोण अपने विशिष्ट बेंत और झुके हुए शरीर के साथ चबूतरे पर चढ़े, गंदे खून से बचते हुए और जितना हो सके उतनी ऊँची आवाज़ में बोले: “मैं अब आपके सामने एक ऐसे व्यक्ति को लाया हूँ, जिसे मैं अपने बेटे से भी ज़्यादा प्यार करता हूँ। वह न केवल एक प्रतिभाशाली तीरंदाज है,

बल्कि वह मेरा रक्षक भी है। एक दिन पहले, मुझ पर एक मगरमच्छ ने हमला किया था और जब मेरे सभी शिष्य संभल रहे थे, तब उसी ने मगरमच्छ की आँखों में तीर मारकर उसे मार डाला। उसकी उंगलियाँ उसके तीरों की गति जितनी ही फुर्तीली हैं…”
वह जानती थी कि यह कौन है। उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई। अर्जुन। उसका शिष्य। बचपन से ही वह उसे बताती आई थी कि वह इंद्र का पुत्र है। वह उसे लगातार यही विश्वास दिलाती रहती थी। उसने अपनी एक पुजारिन से सीखा था कि यदि बच्चा यह विश्वास करे कि वह भगवान का पुत्र है, तो वह आगे चलकर असंभव कारनामे कर बैठेगा। अपने बच्चों को महान बनाने की यह एक मूर्खतापूर्ण इच्छा थी।
लेकिन उनके पति पांडु ने कोई कसर नहीं छोड़ी। उन्होंने अलग-अलग देवताओं की पूजा करने वाले पुजारियों के साथ पांच बार उनका नियोग संस्कार करवाया। यह उनकी संतानों में देवताओं की शक्ति का संचार करने का एक तरीका था। हालांकि, वे पूर्ण, वास्तव में दिव्य संतानें पैदा करने के विचार से ग्रस्त थे, क्योंकि वे अध्यात्मवाद और धर्म से इतने मोहित थे। उन्होंने विज्ञान का भी अध्ययन किया, जीन और उसके वंशानुक्रम के बारे में भी जाना। कुंती मान गई। हमेशा की तरह। अर्जुन को अपने गुरुजी की ओर चलते, उनके चरण स्पर्श करते और हमेशा की तरह शानदार दिखते हुए देखकर—अपनी भूरी आँखों, सुंदर मुस्कान, लहराते बालों और गठीले शरीर के साथ—कुंती को लगा कि उसने सही किया है।
भले ही इस बात का कोई प्रमाण नहीं था कि अर्जुन में इंद्र की शक्ति थी, फिर भी वह इंद्र की मूर्तियों के समान ही शक्तिशाली थे। बाज की तरह सुंदर और सांप की तरह फुर्तीले।
“इंद्र के पुत्र अर्जुन के लिए,” द्रोण ने उन्हें पुकारा, “वह उस एकमात्र प्राणी से युद्ध करेगा जो आकाश के निकट रहता था और अपने प्राकृतिक आवास में ही गर्जन का सामना करता था। वह प्राणी जो भारत में नहीं, बल्कि उससे परे के देशों में पाया जाता है। जी हाँ। हमारे यूनानी मित्रों ने कृपा करके इसे हमें उपहार स्वरूप दिया है…”
क्या यह यूनानी है? कुंती रेलिंग पर झुक गई, चिंतित आँखों से किसी शत्रु के उठने की प्रतीक्षा कर रही थी, लेकिन उसे केवल एक बड़ा लोहे की जाली वाला पिंजरा दिखाई दिया, जो रेशमी कफ़न से ढका हुआ था। पिंजरा लुढ़क रहा था और

घिसट रहा था, जिससे पाताल लोक की गहराइयों से निकले किसी राक्षस जैसी आवाजें आ रही थीं।
वह किससे या किस चीज से लड़ रहा है? ओह नहीं।
“उसे काबू में करने के लिए तीस आदमियों की ज़रूरत पड़ी और उसे यहाँ लाने के लिए पूरे बेड़े की ज़रूरत पड़ी। बेहोश। सो रहा था। वहाँ के किसी भी जीव से बड़ा। पेश है…” द्रोण ने पिंजरे की ओर इशारा करते हुए कहा, “माउंट एरिमांथोस का सूअर।”
कफ़न हटाया गया और कुंती की एकमात्र आवाज़ एक भयानक, कांपती हुई चीख थी।

15

“यह तो बहुत बड़ा जंगली सूअर है!” शिखंडी चिल्लाई।
पांचाली सदमे से लगभग हांफ उठी, जब उसने बढ़ते भय के साथ उस मैदान को देखा जहाँ कुछ ही क्षणों में अर्जुन के शरीर के टुकड़े बिखरे पड़े होंगे। वह प्राणी विशालकाय था, भैंसा जैसा, मोटी टांगों वाला, तीन सींगों वाला और काले रंग की दागदार त्वचा पर उभरे हुए मांसल बालों के गुच्छे थे। पिंजरे से बाहर निकाले जाने पर वह सूअर गुर्रा रहा था और लगभग भ्रमित सा लग रहा था।
सबसे पहले इसने जो किया वो ये था—
उसने पास खड़े सैनिक को बुरी तरह नोंच डाला; उसकी आंतें और हृदय निकाल कर रख दिए। फिर वह उसे चबाने लगा और अर्जुन की ओर देखा, जो अब केवल अपने सरकंडे के धनुष और काले पत्थर से बने तीरों के साथ अकेला रह गया था।
छोटे बालों और कानों में चूड़ियों से सजे शिखंडी उत्साहित होने लगे। "क्या आपको लगता है कि वह बच पाएगा?"
पांचाली को यकीन नहीं था। लेकिन अर्जुन को देखकर, जो इस दृश्य से बिल्कुल भी विचलित नहीं लग रहा था—उसे पूरा भरोसा हो गया कि वह ऐसा कर सकता है। वह उसे तब से जानती थी जब वह उसे अपना आदर्श मानती थी। वह छोटी थी। उससे भी छोटी, और वह एक आकर्षक, सुंदर लड़का था। और अब, वह सिर्फ सुंदर ही नहीं था… वह उन कहानियों के योद्धा जैसा लग रहा था जो उसके पिता उसे सुनाया करते थे।
भगवान राम और भगवान परशुराम की कहानियाँ।
वह दिव्य थे।
देखते हैं कि वह जीतता है या नहीं।

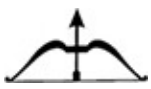

अर्जुन ने सांस ली।

क्यों?
और फिर उसे पता चल गया, क्योंकि उसे दोबारा भूकंप के झटके महसूस होने लगे। वह मुड़ा...
लेकिन बहुत देर हो चुकी थी।
सींग अर्जुन की छाती में घुस गए और उसे ज़मीन पर गिरा दिया। घायल, लेकिन मरा नहीं, सूअर ने अपने सींग से उसे दूर धकेल दिया। अर्जुन का दर्द असहनीय था, और उसे अपने चारों ओर रेत और धूल महसूस हो रही थी। वह खांसते हुए अपनी छाती पर खून उगल रहा था। उसे अपनी माँ की तेज़ चीख सुनाई दे रही थी, लेकिन वह उठने के लिए संघर्ष कर रहा था।
उसे एहसास हुआ कि उसके तीर और धनुष कुछ गज की दूरी पर थे।
और जंगली सूअर फिर से हमला करने के लिए आगे बढ़ रहा था।
उसके शरीर में खून तेजी से दौड़ रहा था, जैसे ही वह अपने धनुष की ओर लड़खड़ाते हुए बढ़ने लगा। उसका एकमात्र हथियार।
चलो भी!
उसने अपने खून से लथपथ घाव को वहीं छोड़ दिया और धनुष को पकड़कर एक तीर उठाया और उसे चला दिया।
वह गेंद हमलावर सूअर की आंख पर लगी और एक पल के लिए वह जानवर भ्रमित सा प्रतीत हुआ।
अर्जुन तैयार था, जैसे ही वह लड़खड़ाते और कांपते हुए अपने पैरों पर खड़ा हुआ। उसने तरकश खो दिया था और उसके तीर बिखरे हुए थे, लेकिन उसने एक और तीर उठाया और कमजोरी से धनुष की ओर देखा।
मैं यह कर सकता हूँ। मैं इंद्रपुत्र हूँ।
और जैसे ही वह आगे बढ़ा, उसने उसकी आंख पर एक और तीर चलाया…
उसने गोली चलाई।
लेकिन तीर निशाने से चूक गया।
नहीं।
यह सब देखकर सूअर बुरी तरह क्रोधित हो गया और इतनी उग्रता से टूट पड़ा कि अर्जुन को अपनी मृत्यु स्पष्ट दिखाई दी। वह ठीक उसके सामने था। सिसकियाँ सुनाई दीं और मृत्यु का क्षण निकट था...
जब सूअर मुड़ा, तो वह अब अर्जुन पर हमला करने नहीं जा रहा था।
लेकिन जनता की ओर।

16

Karna hated Arjun.
लेकिन यह घृणा पंद्रह वर्ष पूर्व प्रसिद्ध धनुर्धर द्वारा झेली गई अपमानजनक हार के कारण नहीं थी, बल्कि इसलिए थी क्योंकि वह उस खूंखार सूअर का सामना नहीं कर सका। उसने जनता पर हमला कर दिया। रंगभूमि का कार्यक्रम रद्द कर दिया गया। चिकित्सक आए और सूअर के शिकार लोगों को ले गए। और कर्ण, जो अपने राज्याभिषेक की घोषणा की प्रतीक्षा कर रहा था—
निराश।
और वह यहाँ था। हस्तिनापुर के राजमहल के सार्वजनिक कक्षों में। हाथीदांत से जड़ी दीवारें और संगमरमर के फर्श, लाल कालीन और फ़ारसी मलमल के पीले पर्दे। कक्ष विशाल थे। सौ से अधिक सैनिक, अपनी ढालों और कवचों से सुसज्जित, हाथी के प्रतीक चिन्ह को धारण किए हुए, जो कुरु वंश का प्रतीक था। अपनी पूरी शान में हाथी ज्ञान का प्रतीक था, जो स्पष्ट रूप से कुरु वंश की संपत्ति थी।
क्षमा करें मैं असहमत हूं।
शाही परिवार के सभी सदस्य अभी भी वहीं थे, आपस में फुसफुसा रहे थे और आश्चर्य से एक-दूसरे को देख रहे थे, जबकि भोजन कक्ष में उनके लिए दावत तैयार की जा रही थी। लेकिन फिलहाल, दावत उनकी सबसे छोटी चिंता थी, भले ही कर्ण के पेट में चूहे दौड़ रहे थे।
वह अपने पुराने गुरु द्रोण के बगल में खड़ा था। अर्जुन दूसरे छोर पर खड़ा था, जबकि सभी परिवार के लोग उन पर पैनी नजर रखे हुए थे। भीष्म का चेहरा गुस्से से लाल था, वे कर्ण को घूर रहे थे, वहीं पांचाली अपने पुराने मित्र कर्ण को दर्शकों में देखकर स्तब्ध थी।
कर्ण के द्रोण छोड़कर जाने की खबर सभी को फैल गई थी और वह लगभग तीन साल तक लापता रहा। किसी ने उससे संपर्क नहीं किया। सुयोधन, उसके पिता और धृतराष्ट्र को छोड़कर किसी ने नहीं। फिर, सभी ने अनुमान लगाया कि उसकी मृत्यु हो गई है, और अब वह रंगभूमि पर लौट आया है।

वे राजा के सामने थे। धृतराष्ट्र बहुत क्रोधित थे, उनके चेहरे पर शिकन थी और मुट्ठी भींची हुई थी, जबकि गांधारी उनकी बाहों को मलते हुए उन्हें शांत कर रही थीं।
“गुरुजी,” वह गुस्से से बोला, “आपने मुझे निराश किया है। रंगभूमि एक मनोरंजक आयोजन होना चाहिए था, लेकिन आपने इसे हिंसक और घृणित बना दिया। दस से अधिक लोग मारे गए और जो बच गए, वे गंभीर रूप से घायल हो गए।”
द्रोणा का सिर झुका हुआ था, उसकी बाहें उसकी छड़ी पर टिकी हुई थीं। वह शर्मिंदा लग रहा था और उसका चेहरा लाल हो गया था।
रोशनी कम थी, कुछ ही लैंपों से नारंगी रंग की हल्की रोशनी निकल रही थी। सुनहरे जालीदार खिड़कियों से चांदनी अंदर आ रही थी।
कर्ण एक तरफ मुड़ा, उसकी निगाहें राजा के सारथी, अपने पिता पर टिक गईं, जो हमेशा किसी पट्टे पर बंधे कुत्ते की तरह इधर-उधर घूमते रहते थे, जिनका चेहरा भूत की तरह पीला पड़ गया था और जो अत्यंत गंभीरता और हैरानी से उसे देख रहे थे। कर्ण दिखने में उनसे बिल्कुल अलग था। वह थोड़े स्वस्थ थे, उनका पेट निकला हुआ था और उनकी मूंछें पतली और तेल लगी हुई थीं। कर्ण अपने पिता को गले लगाना चाहता था, लेकिन लगा नहीं सका। वह राजा के सामने खड़ा था। “मेरा इरादा कभी भी इसे बेकाबू होने देने का नहीं था। मेरा इरादा था…” द्रोणा ने कहना शुरू किया।
राजा ने कहा, "इरादा कभी खतरनाक नहीं होता, लेकिन इसके परिणाम खतरनाक होते हैं।"
कर्ण को सुयोधन टूटी हुई भुजा और पट्टी बंधे चेहरे के साथ मिला। वह और भीम दोनों ही अपने सामान्य रूप में नहीं दिख रहे थे। दूसरी ओर, अर्जुन के चेहरे पर कोई घाव नहीं था, लेकिन उनके धड़ पर चाकू के घाव थे, जिनका आयुर्वेदिक चिकित्सक द्वारा सावधानीपूर्वक इलाज किया जा रहा था।
“महाराज, मुझे क्षमा करें। आप सही हैं,” द्रोण ने उदास भाव से सिर हिलाया। राजा कर्ण की ओर मुड़ा। "और तुम... तुम कौन हो?"
अपने कवच पर बने शानदार सूर्य चिन्ह और कुंडलों के साथ, कर्ण को लगा कि लोग उसे पहचान लेंगे। लेकिन उसने जरा भी घमंड नहीं दिखाया और कहा, "महाराज, कर्ण।"
“कर्ण?” अंधे राजा ने अपनी भौंहें उठाईं। “जी हाँ।” वह नाम जानता था। आख़िरकार, उसने अभी-अभी इस आदमी को राजा बनाया था। “इन लोगों को बचाकर

तुमने एक महत्वपूर्ण काम किया है। और इसके लिए हम सब तुम्हारे आभारी हैं। लेकिन तुम अंधेरे में क्यों छिपे हुए थे?”
दूसरी तरफ से अर्जुन के मुंह से अरुचि भरी गड़गड़ाहट की आवाज आ रही थी, जो झुक रहा था।
“महाराज, मैं एक ईमानदार व्यक्ति हूँ,” कर्ण ने उत्तर दिया। “और इसलिए मुझे कहना चाहिए कि मैं अर्जुन से लड़ने आया था, लेकिन जब वह सूअर को संभाल नहीं पाया तो मेरी योजना विफल हो गई और मुझे उसकी जगह यह काम करना पड़ा।”
लोगों के बीच ज़ोरदार हंसी गूंजी। खासकर कौरवों को, जिन्हें कर्ण का अर्जुन के प्रति दिखाया गया तिरस्कारपूर्ण रवैया बहुत पसंद आया। अर्जुन अब क्रोध और निराशा से बौखला गया था, लेकिन उसने एक शब्द भी नहीं कहा। “अर्जुन से युद्ध? तुमने इसकी योजना कैसे बनाई?” राजा ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा।
लोग आपस में फुसफुसा रहे थे।
"सबके सामने उसे चुनौती दो।"
पांडवों की ओर से उपहास की आवाज आई। यह भीम थे। वे इस कथन की बेतुकीपन पर खुशी से टिप्पणी करने से खुद को रोक नहीं पाए।
धृतराष्ट्र ने अपने बलवान और विशालकाय भतीजे की ओर मुड़कर कहा, "तुम्हें इसमें मज़ा क्यों आ रहा है, बेटा?"
“महाराज,” भीम अपने भाइयों युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव के बगल में खड़े होकर बोले। युधिष्ठिर और सहदेव राजा के प्रति भीम के इस घमंडी रवैये से नाराज़ थे। “मैं अपनी बेबाकी के लिए क्षमा चाहता हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि नियमों में स्पष्ट रूप से लिखा है कि केवल राजा ही राजा से द्वंद्वयुद्ध कर सकते हैं। और जहाँ तक मुझे याद है…” उन्होंने कर्ण को घूरते हुए कहा। “वासु एक सारथी और सूत का पुत्र है। मेरा मतलब है…” युधिष्ठिर के इशारे पर वे फिर हँस पड़े।
कर्ण ने दांत पीसते हुए उस मोटे-ताज़े आदमी को पीटने का मन किया, खासकर जब उसने अपने पिता के चेहरे पर निराशा का भाव, झुकी हुई आँखें और कसता हुआ जबड़ा देखा। अपने पिता के दुख को देखकर उसका सीना डूब गया। कभी राजा रहे, अब सारथी। और कर्ण को उन पर दया आ गई।

धृतराष्ट्र बोलने ही वाले थे कि सुयोधन ने बीच में ही टोकते हुए कहा: "क्या मैं बोल सकता हूँ, महाराज?" उनकी आवाज़ में पेशेवर और तीक्ष्ण व्यंग्य झलक रहा था।
“जी बेटे,” राजा ने कठोर स्वर में कहा।
“मुझे लगता है कि खबर अभी तक सामने नहीं आई है, लेकिन…” सुयोधन कर्ण की ओर मुड़ा और मुस्कुराया। उसकी मुस्कान बहुत प्यारी थी।
क्या वह सचमुच ऐसा कर रहा है?
लेकिन कर्ण तो राजा है।
और यह सुनकर कर्ण के मुस्कुराए बिना न रह पाने पर उसे एक और तरह की सिसकियां सुनाई दीं।
हाँ मैं हूँ।
सूतपुत्र ने एक बार फिर सुयोधन की ओर देखा और मुस्कुराया। यह अरुचि का भाव नहीं था, बल्कि उस व्यक्ति के प्रति सम्मान का भाव था जिसे इस तरह घोषणा करने की आवश्यकता नहीं थी, फिर भी उसने ऐसा किया।
“राजा? कौन सा राजा?” भीम ने पलटकर कहा। “वह कोई राजा नहीं है!”
“जी हाँ, वह है।” राजा ने धीमी आवाज़ में कहा, जिससे भीम की सहजता भंग हो गई और वह चिढ़ गया। “अभी तो कुछ ही लोग जानते हैं, लेकिन वह अंग का अंतरिम राजा है। फिलहाल के लिए।”
कानाफूसी शुरू हो गई। हर तरफ मुस्कान और गुस्से का भाव था। यह घृणा विशेष रूप से भीष्म की ओर से आ रही थी, क्योंकि कर्ण जानता था कि भीष्म को यह पसंद नहीं आएगा कि कोई गैर-क्षत्रिय पश्चिम में स्थित उनके सबसे महत्वपूर्ण गढ़ का राजा बने। कर्ण ने कहा, “हमें अपने पूर्व सहयोगी जरासंध की सेनाओं से खतरा है और इसलिए हम हर संभव प्रयास कर रहे हैं। वह अंग को अपने हाथों में लेना चाहता है। और मैंने कर्ण को अंग और उसके लोगों का नेतृत्व करने और जरासंध के विरुद्ध लड़ने के लिए चुना है, भारत के महाराजा के रूप में।” कर्ण ने किसी और की ओर देखने की परवाह नहीं की, केवल अपने पिता की ओर देखा। उसकी आँखों में आँसू थे। वह टूटा हुआ था और दुख और खुशी के गहरे आलिंगन में जकड़ा हुआ था।
मैंने कर दिया है, पिताजी।
जब उसने सुयोधन से कहा था कि रंगभूमि में राज्याभिषेक की घोषणा करने के उसके पास कारण हैं, तो यह केवल अर्जुन को चुनौती देने और उसकी राजसी स्थिति

से उसे शर्मिंदा करने के लिए ही नहीं था—बल्कि अपने पिता को यह दिखाने के लिए भी था, जिसके बारे में वह जानता था कि वह वहीं होगा जहाँ राजा होगा… कि वह ताज को घर ले आया था।

17

"क्या मैं कुछ बोल सकता हूँ, महाराज?"
कर्ण के राज्याभिषेक की अचानक घोषणा के बाद, जो आवाज कुछ देर तक शांत रही, वह अंततः अत्यंत उदारता और गंभीरता के साथ बोली।
“जी अर्जुन?” राजा ने अनुमति दी।
"मेरा मानना है कि अगर कर्ण राजपरिवार से है, तो मैं उससे लड़ने के लिए तैयार हो सकता हूं।"
"अब?"
जब भी आप चाहें।
आप घायल हैं।
द्रोण ने अर्जुन की ओर मुड़कर कर्कश स्वर में कहा, "यह व्यर्थ है।"
अर्जुन चुप हो गया। लेकिन कर्ण ने अब कहा, "मैं अब यह करने के लिए तैयार हूँ।"
“हां,” अर्जुन अपने गुरु की छाया में खड़े होकर सहमत हुआ। “फिर देखेंगे कि कौन बेहतर है।”
कौरवों ने सहमति में ताली बजाई, पांडवों ने भी ऐसा ही किया। पहले जैसी ऊर्जा का कोई नामोनिशान नहीं था। मेहमानों की आँखों में उत्साह झलक रहा था और राजरक्षक आपस में फुसफुसाते हुए शर्त लगा रहे थे कि कौन जीतेगा।
“और हमारे मेहमानों की आँखों में तीर चलाएँगे? नहीं, धन्यवाद,” राजा हँसते हुए बोले। “आज हम पहले ही बहुत सारी मौतें देख चुके हैं, लेकिन…” वे रुके, “क्या मैं कर्ण और अर्जुन से यह जान सकता हूँ कि आप दोनों एक-दूसरे से इतनी नफरत क्यों करते हैं?”
अर्जुन ने अपने प्रतिद्वंद्वी की ओर देखा, कर्ण ने भी ऐसा ही किया। "क्योंकि तुम अहंकारी हो। तुम घमंड से भरे हो, और तुम खुद को भगवान का पुत्र समझते हो, जबकि तुम केवल मनुष्य के शरीर के बने हो," कर्ण ने सोचा। उसे नहीं पता था कि अर्जुन के मन में क्या चल रहा है, लेकिन उसे यकीन था कि

उसके अपने कारण होंगे। "और उस दिन की वजह से... उस दिन, पंद्रह साल पहले। तुमने जो किया था।"
"मेरे पास एक विचार है, अगर आप दोनों द्वंद्वयुद्ध करना चाहते हैं और अगर मेहमानों को यह विचार पसंद आता है।"
उसने ताली बजाई और तलवारों और ढालों के साथ रक्षक प्रकट हो गए।
“अपने हथियार सौंप दो, जवानों।”
अर्जुन को पीतल की तलवार दी गई थी और कर्ण को भी वैसी ही तलवार दी गई थी। “यह क्या है?” अर्जुन ने पूछा।
“तुम्हारे हथियार। तुम दोनों ही बेहतरीन तीरंदाज हो। लेकिन तलवारबाजी में तुम्हारी महारत कैसी है? देखते हैं।”
कर्ण, तलवार और ढाल को थामे हुए, कमजोरी महसूस कर रहा था। उसे लग रहा था जैसे वह खुद नहीं है। उसे पराया सा लग रहा था। ये हथियार किसी और के थे और कुछ पल के लिए वह असमंजस में पड़ गया। लेकिन फिर...
अगर मुझे उसे इसी तरह हराना है, तो ठीक है।
द्रोणाचार्य ने द्वेषपूर्ण भाव से अपना चेहरा हिलाया, जब कर्ण और अर्जुन नाटकीय ढंग से एक-दूसरे के चारों ओर चक्कर लगाने लगे, मानो चील की तरह एक-दूसरे को परख रहे हों। अर्जुन अपने लाल रंग से लिपटे धड़ पर पीला और थका हुआ लग रहा था; टांके खुल गए होंगे। उसे पसीना आ रहा था और उसकी आँखें धुंधली थीं। लेकिन फिर भी उसमें जोश और ऊर्जा थी। वह रंगभूमि में कर्ण द्वारा किए गए अपमान का बदला लेना चाहता था।
पंद्रह वर्ष पूर्व, अर्जुन ने कर्ण को उसकी योग्यता का परिचय दिया था।
आज उन्हें वह अवसर मिला।
अर्जुन ने तलवार से एक साधारण वार किया, जिसे कर्ण ने ढाल से रोक दिया और साथ ही उसकी छाती पर कोहनी से वार किया—ठीक उसी जगह पर जहाँ वह पहले से घायल था। दर्द से कराहते हुए अर्जुन पीछे हट गया, और उसके शरीर से पसीना और भी अधिक बहने लगा।
कर्ण धैर्यवान था। वह अपनी जगह पर था। उसने कवच पहन रखा था। उसका पलड़ा भारी था। उसके पास अपने प्रतिद्वंद्वी को आसानी से हराने की पूरी शक्ति थी...
जब अर्जुन दोबारा आगे बढ़ा, तो उसने तुरंत हमला करने के बजाय कर्ण के घुटनों पर प्रहार किया।

सूतपुत्र उछला और लुढ़क गया, जिससे ढाल अर्जुन की पीठ पर लगी और वह जमीन पर गिर गया।
अर्जुन ने पैर पटके और गुस्से से गुर्राते हुए अपने पैरों पर खड़ा हो गया, ढाल को दूर फेंक दिया और कर्ण की तलवार पर बार-बार प्रहार करने लगा... पूरी आक्रामकता के साथ, जिसे कर्ण ने रोक दिया और तलवार की खनक सुनाई दी...
जब कर्ण ने पूरी ताकत से उसे जमीन पर धकेल दिया, तो उसने यह आवाज सुनी… "नहीं!"
लड़ाई खत्म होने से पहले ही, दर्शकों के बीच से एक आवाज आई, जो छिपी हुई थी, उसने बालों में भूरे रंग की लकीरों वाली एक अधेड़ उम्र की महिला को देखा। वह उसे काफी देख चुका था।
“Rajmata Kunti,” said King Dhritarashtra, “what is it?”
मैं अपने बेटे को मरते हुए नहीं देख सकता। यहाँ नहीं। व्यर्थ में नहीं।” राजा मुस्कुराया। “वह ऐसा नहीं कर पाएगा। अर्जुन मजबूती से डटा हुआ है।” कर्ण और अर्जुन अभी भी उसी स्थिति में थे, तलवारों के मूठों को कसकर पकड़े हुए एक-दूसरे पर दबाव डाल रहे थे। कर्ण इस बात से प्रभावित था कि अर्जुन का इतना खून बह गया था कि उसे रात भर सोना चाहिए था, फिर भी उसमें उससे लड़ने की शक्ति थी।
"लेकिन…"
“राजमाता कुंती, केवल राजा ही अपने महल में चल रहे शाही द्वंद्वयुद्ध को रोक सकते हैं। आप जल्द ही विजेता या हारने वाले को देख लेंगी। पुत्रों, आप आगे बढ़ें।” नेत्रहीन राजा बड़े चाव से पीछे की ओर झुककर आनंद ले रहे थे, क्योंकि वक्ता उनके कानों में द्वंद्वयुद्ध की जानकारी फुसफुसा रहा था। कर्ण ने अर्जुन को पीछे से धक्का दिया, और अर्जुन एक पल के लिए चक्कर खा गया, फिर उसने अंधाधुंध कर्ण पर हमला करना शुरू कर दिया। कर्ण ने अपनी तलवार फेंक दी और अपनी ढाल के किनारों से अर्जुन के धड़ पर प्रहार किया। अर्जुन दर्द से कराहते हुए चिल्लाया, तभी कर्ण...
उसने अपनी ढाल भी फेंक दी।
उसने फुसफुसाहट सुनी, लेकिन अर्जुन घुटनों के बल गिर पड़ा और उसकी तलवार अभी भी उसके पास थी।
"क्या हुआ?" धृतराष्ट्र ने पूछा.

कर्ण ने राजा की ओर देखा और कहा, “यह एक अनुचित लड़ाई है। मेरे पास कवच है और उसके पास नहीं। वह कमजोर भी है, असहाय भी। उसकी माँ भी है जो उसे बहुत याद करती है। मैं एक बात जानता हूँ। मैं उससे नहीं लड़ सकता जो मेरे बराबर का न हो। जब अर्जुन फिर से लड़ने के लिए तैयार हो जाएगा, तब मैं उससे लड़ूँगा।”
“तू कमीना!” अर्जुन गुर्राया। “मुझसे लड़,” लेकिन उसकी आवाज़ लड़खड़ा गई और वह ज़मीन पर गिर पड़ा। उसकी आवाज़ में दम था, पर उसमें कोई शक्ति नहीं थी। वह एक कमज़ोर बच्चे जैसा लग रहा था।
“लेकिन ऐसा करने से, बेटा, तुम हार मान लोगे, जिसका मतलब है कि तुम तकनीकी रूप से द्वंद्वयुद्ध हार जाओगे?” राजा ने पूछा। “उसके पास अभी भी उसकी तलवार है। उसे छीन लो, तो शायद तुम द्वंद्वयुद्ध जीत जाओगे।”
कर्ण ने अर्जुन की पकड़ी हुई तलवार को देखा, मानो वह किसी शिशु के खिलौने की तरह हो। लेकिन उसने खुद को रोका और सिर हिलाया। "मैं अर्जुन के बारे में तो नहीं जानता, लेकिन अगर मैं कमजोर स्थिति में होता, तो मैं भी यही उम्मीद करता कि मेरा शत्रु हार मान ले।"
अंधे राजा ने सिर हिलाया। "ठीक है, तो ऐसा ही हो। अर्जुन जीत गया।"
लेकिन कोई ताली नहीं बजी। सिर्फ सहानुभूति। कोई वाहवाही नहीं। बस दया। भीम अर्जुन को उठाकर ले जा रहे थे, और कर्ण को जहरीली निगाहों से देखते हुए उसे वहीं छोड़ गए।
“इधर आओ,” राजा ने कर्ण को पुकारा।
और उसने ऐसा ही किया। अपनी मौन पत्नी गांधारी को पीछे छोड़ते हुए कर्ण उसके पास पहुंचा। जैसे ही वह शराब की गंध से लथपथ, धुंधली और पीली आंखों वाले राजा के करीब पहुंचा, उसके भीतर अनायास ही क्रोध उमड़ने लगा। उसके चेहरे पर गहरी झुर्रियां थीं और बाल बिखरे हुए थे। वह ऐसा लग रहा था मानो कर्ण उसे अपने पिता के साथ विश्वासघात करने के लिए घूंसा मार दे, लेकिन वह महाराजा था। राजाओं का राजा।
कर्ण को उससे लड़ने की स्थिति में होना चाहिए था, इतनी स्थिति में कि वह उसे मुक्का मार सके।
"हाँ महाराज?"
“तुम अच्छे इंसान हो, बेटा। लेकिन याद रखना, ये नैतिकता, ये नियम, युद्ध में लागू नहीं होते। एक दिन आएगा,” उसकी आवाज़ कर्कश फुसफुसाहट जैसी थी, “जब

तुम ऐसे किसी व्यक्ति से मिलोगे जो इनका पालन नहीं करता और वह इसका इस्तेमाल तुम्हारे खिलाफ करेगा। मत भूलना, वह दिन शायद नज़दीक ही हो।” कर्ण रुक गया। उसे प्रलोभन हुआ। लगभग, हाँ। लेकिन फिर, उसे किसी मनुष्य को इस तरह से देखने की उम्मीद तो करनी ही चाहिए थी। आख़िरकार, वह स्वयं एक पतित था—दूसरों के राज्य पर पलने वाला पिशाच, एक मांस खाने वाला राक्षस। लेकिन फिर, महाराज, कौन ज्यादा बड़ा आदमी होगा? मैं या वह?
और फिर एक और ठहराव आया, क्योंकि राजा के चेहरे पर एक घिनौनी, दिल दहला देने वाली मुस्कान फैल गई।
अंधे राजा ने उपहास उड़ाते हुए कहा, "मेरी बात मानो, लड़के, किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता।"

18

और जबकि शाही मेहमान अपने-अपने तरीके से जश्न मना रहे थे, उन महलों में दावत का आनंद ले रहे थे जहाँ तुरही बज रही थी और भोजन बेहतरीन मटन और चिकन, शिकार की गई मछली और बत्तखें थीं - कुंती का सामाजिक मेलजोल और खुशी मनाने का कोई मूड नहीं था।
उसे पता था कि उस दिन कई लोग मारे गए थे और भले ही वे नीची जाति और निम्न कुल के थे, और राजपरिवार ने उनके जीवन में आगे बढ़ने से पहले उनके बारे में जरा भी नहीं सोचा होगा, लेकिन वह ऐसा नहीं कर सकी। इसलिए वह अपने कमरे में ही रही।
लेकिन एक और वजह थी। वो थी वो व्यक्ति, जिसने उसे ऐसा महसूस कराया जैसे उसने कोई भूत देखा हो। वो भी…
कर्ण।
वह उसका कवच पहने हुए था। उसके कुंडल…
वे उसकी थीं।
वह कुछ सोचना नहीं चाहती थी। वह अपने होंठ काट रही थी। अपने कमरे में गद्दे पर लेटी हुई, पंखा चलाती हुई, खिड़कियों और चांदनी की हल्की-हल्की किरणों को देख रही थी।
मुझे किसी से बात करनी चाहिए। कम से कम किसी से तो!
वह विचारों में उलझने लगी। कौन हो सकता है? कौन बुद्धिमान और समझदार होने के साथ-साथ उसे सही रास्ता बताने की प्रतिभा भी रखता होगा? विदुरा…लेकिन वह उसके करीब नहीं थी।
धृतराष्ट्र… एक नेक इंसान थे, लेकिन आज उन्होंने बिलकुल निर्मम चेहरा दिखाया। ऐसा चेहरा जो उसने पहले कभी नहीं देखा था। अब उसका उन पर भरोसा नहीं रहा।
वह अपने बच्चों को यह बात नहीं बता सकी…
शायद…द्रोण। वे आचार्य थे, लेकिन कर्ण से उन्हें वैसी ही घृणा थी जैसे उनकी आँखों में जहर चुभता है। इसके कारण केवल वे दोनों ही जानते थे।

वहाँ कोई और भी था।
कोई ऐसा व्यक्ति जो तटस्थ था।
उसे देखना चाहिए…

अर्जुन उदास बैठा था, तभी उसके विशालकाय भाई ने, जो शराब में डूबा हुआ था, उसकी पीठ पर एक थप्पड़ मार दिया।
वे ईंट और गारे से बने योद्धा परिसर में थे, जहाँ सूती पर्दे लगे थे। एक गौरवशाली और खूनी जगह से एक पतित जगह पर पहुँचने में उन्हें महज़ तीन घड़े शराब लगी। हर कोई गा रहा था, नाच रहा था और शहर की वेश्याएँ योद्धाओं को प्रभावित करने आई थीं। राजा और रानी उस जगह के पाप की भूमि बनने से पहले ही वहाँ से चले गए थे। यहाँ तक कि बड़े-बुजुर्ग भी कहीं नज़र नहीं आ रहे थे। केवल कौरव ही थे, जो दूसरी मेज़ पर बैठे थे, एक सौ एक—इतने सारे, सभी अलग-अलग माताओं की संतान।
गांधारी कौरवों का मात्र चेहरा थीं, लेकिन उनके रक्त और मांस में केवल तीन ही वंशज थे—सुयोधन, सुशासन और सुशाला। युयुत्सु भी वहीं थे, लेकिन उनका जन्म दासी की संतान के रूप में हुआ था। अर्जुन के बाकी चचेरे भाई वैध नहीं थे, वे सभी उस सूअर की तरह लालची थे जिससे उन्होंने उस दिन पहले युद्ध किया था। सूअर की तरह मोटे, नाजायज या व्यभिचार से पैदा हुए, नीच कुल की महिलाओं की कोख से जन्मे। राजा एक निरंकुश शासक था, जो सैकड़ों व्यभिचार करने में विश्वास रखता था और यही प्रवृत्ति सुयोधन में भी आ गई थी। और राजा होने के नाते, धृतराष्ट्र ने सभी बच्चों को स्वीकार कर लिया था और उन्हें महल में रखा था।
“आज जो कुछ हुआ, उसे दिल पर मत लो,” एक जानी-पहचानी, कोमल आवाज़ ने कहा और उसने मुड़कर देखा तो सामने उसका सबसे बड़ा भाई युधिष्ठिर था, जिसके घुंघराले बाल और मनमोहक मुस्कान थी। वह सबसे छोटा था, अंडाकार चेहरे और तेज आँखों वाला, लेकिन वह अर्जुन की तरह सुंदर या भीम की तरह बलिष्ठ नहीं था। वास्तव में, वह परिवार में सबसे अलग था, लेकिन उसमें एक नेता का आभास था। शांत संयम और गंभीरता से बोलने वाला। वह बाकी भाइयों की तरह न तो खा रहा था और न ही पी रहा था, क्योंकि वह कभी भी बुरी आदतों में लिप्त नहीं हुआ

था। दूसरी ओर, भीम की गोद में दो दासियाँ बैठी थीं और वह खुलेआम उनके स्तन चूस रहा था। उसे किसी बात की कोई चिंता नहीं थी।
वह अर्जुन को चाचा विदुर की याद दिलाता था।
“पांचाली ने सब कुछ देख लिया,” अर्जुन ने हताश होकर आह भरते हुए कहा। “यह सोचकर मेरा दिल टूट जाता है कि कहीं वह मुझे…एक निकम्मा लड़का न समझे।” युधिष्ठिर ने सिर हिलाया। “तो इसीलिए तुम कर्ण से लड़ना चाहते थे? उसे प्रभावित करने के लिए?”
वह हमेशा मुझसे ज्यादा उसे पसंद करती थी।
इससे क्या फर्क पड़ता है? उसके पिता तुम्हें ज्यादा पसंद करते हैं। अर्जुन ने उपहास किया। “मैं न तो उसके पिता से और न ही उसके भाई से विवाह करने वाला हूँ।” फिर वह मुड़कर वासना और विकृति के इस तहखाने को देखने लगा। राजपरिवार के लोग, जिन्होंने आज खून-पसीना नहीं बहाया था, राजमहल के भोजन कक्ष में थे, जहाँ पांचाली अपने पिता के साथ होगी। उसे वहीं जाना चाहिए था, लेकिन भीम ने उसे यहाँ आने और दुनिया भर की विदेशी युवतियों के बीच मजे करने के लिए मजबूर किया था। इन सभी ने इन महिलाओं को लाने के लिए पैसे जमा किए थे, अपनी बचत से, और महल में बहुत कम लोगों को इन सब बातों की जानकारी थी। यहाँ तक कि उनके गुरु द्रोण भी, जो शायद अब तक अपने कमरे में सो रहे होंगे, आज की घटनाओं के बाद राजा की निगाहों में मुक्ति पाने का सपना देखते हुए खर्राटे ले रहे होंगे।
मुझे उससे बात करनी चाहिए।
“हमेशा वही होती है, आप जानते हैं। लोग यह बात समझते नहीं हैं,” युधिष्ठिर ने कहा। “आपने जो कुछ भी किया, उसके लिए ही किया। सारा अभ्यास, तीरंदाजी के प्रति सारा प्रेम—आप उसके लिए ही सर्वश्रेष्ठ बनना चाहते थे।”
अर्जुन कुछ नहीं बोला। वह जन्मजात धनुर्धर था। लेकिन उसे याद आया कि पांचाली ने उसे एक बार अभ्यास करते देखा था। वह आठ साल की थी और वह मुश्किल से बारह साल का था, और पांचाली मुस्कुराई। उसने उससे सिखाने को कहा और उसने सिखाया। वे खिलखिलाए, बातें कीं। तभी उसे एहसास हुआ कि वह उसके साथ रहना चाहता है। ऐसा लगा जैसे... वह सिर्फ पांचाली है... केवल पांचाली, हमेशा पांचाली।
मुझे उसके हॉल में जाकर उससे बात करनी चाहिए।
“वह सो रही होगी, पार्थ,” युधिष्ठिर ने उसे उसके गृहभूमि के नाम से पुकारा।

लेकिन अर्जुन ने उनकी बात नहीं सुनी, तभी भीम ने उनकी पीठ पर एक जोरदार थप्पड़ मारा और ऐसा लगा जैसे कोई गर्जनाशील लहर उन पर टूट पड़ी हो। भीम ने कहा, "सुनो, उसके बारे में चिंता करना छोड़ो और भानुमति से मिलो।"
अर्जुन का परिचय एक लंबी लड़की से कराया गया जो आसानी से भीम की लंबाई को टक्कर दे सकती थी। वह दुबली-पतली और खूबसूरत थी, लेकिन अर्जुन को उसमें कुछ भी आकर्षक नहीं लगा।
“अगर तुम्हें ऐसी चीज़ें पसंद हैं, तो उसकी जांघें तुम्हारा गला घोंट सकती हैं,” भीम ने कहा। “क्यों न तुम उसे अपना गला घोंटने दो?”
अर्जुन कराह उठा, और भीम खिलखिला उठा। भानुमति लगभग नग्न अवस्था में खड़ी थी, उसने एक पारदर्शी कपड़ा ओढ़ा हुआ था जिससे उसके उभरे हुए स्तन साफ दिख रहे थे। उसकी नाक बाज जैसी थी और उसे इस पर गर्व था। एक अनोखे लहजे में वह अर्जुन के सामने घुटनों के बल बैठ गई और बोली: "मैं तुम्हें उसी तरह सुख दे सकती हूँ जैसे मैं अफ्रीकी पुरुषों को देती हूँ।"
अर्जुन खड़ा हुआ और उसे एक तरफ धकेल दिया। “धन्यवाद। लेकिन मैं ठीक हूँ।” उसने अपने बड़े भाई युधिष्ठिर की ओर देखा, जबकि भीम अर्जुन के व्यवहार से निराश था। “मुझे उससे मिलना चाहिए।”
युधिष्ठिर ने उदास भाव से सिर हिलाया।
और अर्जुन ने बिना दूसरी नज़र डाले आगे बढ़ गया।

कुंती ने पर्दों को हटाकर प्रवेश किया और लाल कालीन पर कदम रखा, तो उसने खुद को एक भव्य, फव्वारों से सजे कमरे में पाया, जिसके एक तरफ हथियारों का एक बक्सा था और एक छत थी जो एक और फव्वारे की ओर खुलती थी।
“क्या बात है, कुंती मां?” एक कर्कश, भारी आवाज सुनाई दी।
उसने मुड़कर देखा कि वह कहाँ से आया है, लेकिन वह दिखाई नहीं दिया। फिर वह छत की ओर बढ़ी, ताकि परछाई को हिलते हुए देख सके और वहाँ वह व्यक्ति, स्वयं भगवान प्रकट हुए।
Gangaputr Bhishma Pitamah.
उसके बाल छाती तक लंबे और सफेद थे, और उसका शरीर इतना गठीला था कि वह किसी जवान लड़के को भी टक्कर दे सकता था, हालांकि वह उन सबमें सबसे बड़ा था।

उसकी मजबूत मांसपेशियों पर सोने का हार बंधा था, और कमर पर सोने और सफेद रंग की धोती लिपटी थी। उसकी आंखें पानी की तरह नीली थीं।
"तुम्हें कैसे पता चला कि यह मैं ही था?"
“तुम्हारे कदमों की आहट। तुम संभलकर चलते हो, ऐसे कदम रखते हो मानो तुम यहाँ के न हो।”
लेकिन मैं ऐसा नहीं करता।
“तुम्हारा अधिकार है। हस्तिनापुर तुम्हारा है। पांडु ही असली उत्तराधिकारी थे, लेकिन उन्होंने अपना अधिकार खो दिया, किसलिए…”
एक तपस्वी बनना और दिव्य संतान की चाहत रखना। वह प्रयोग करता, प्रकृति के साथ खेलता। वह परिपूर्ण संतान चाहता था और जानता था कि उसकी संतान परिपूर्ण नहीं होगी।
“हाँ, मुझे पता है। लेकिन फिर भी, ये गलियारे सुनसान हैं। मुझ पर भरोसा करने वाला कोई नहीं है। मैं सिर्फ आपको जानती हूँ, जो मेरे बेटों और गांधारी के बेटों के प्रति दयालु हैं,” उसने आदरपूर्वक सिर झुकाया और घुटने टेक दिए।
भीष्म वहीं खड़े रहे, उनकी बाहें कसी हुई थीं और छाती पर एक दूसरे से लिपटी हुई थीं। “तुम चिंतित हो। क्या बात है?”
मुझे आपको एक कहानी सुनानी है।
“क्या तुम मुझे कहानी सुनाने आए हो?”
"यह एक महत्वपूर्ण मामला है।"
“जी हां। बोलिए। मैं सुनूंगा।”
“बहुत समय पहले, जब मैं बच्ची थी, मुश्किल से पंद्रह साल की, तब मुझे एक आदमी से प्यार हो गया था। वह सोलह साल का था और वह गुरु दुर्वासा का शिष्य था, जो सूर्यदेव का उपासक था।”
"हम्म।"
दुर्वासा एक ऐसा नाम था जिसका दबदबा था, क्योंकि वे "क्रोध" शब्द के पर्याय के रूप में प्रसिद्ध थे। वे छोटी-छोटी बातों पर क्रोधित हो जाते थे।
“हम दोनों को प्यार हो गया और मैं गर्भवती हो गई। इतनी कम उम्र में मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था। वह दुर्वासा के साथ चला गया और मैं भी उसके पीछे चली गई। जब दुर्वासा को हमारे बारे में पता चला, तो उन्होंने कहा कि हम बच्चे के जन्म तक उनके साथ रह सकते हैं और उसके बाद बच्चा उनकी देखरेख में

रहेगा। मुझे यह ठीक लगा और मैंने वैसा ही किया जैसा उन्होंने कहा था।” उसकी आँखों में लगभग आँसू आ रहे थे क्योंकि तारे टिमटिमा रहे थे और पृष्ठभूमि में उल्लू की आवाज़ सुनाई दे रही थी। “लेकिन फिर जैसे-जैसे प्रसव का समय नज़दीक आया, मैंने दुर्वासा में बदलाव देखे। जब आखिरकार बच्चा पैदा हुआ, तो दुर्वासा ने उसे ले लिया और मुझे पता चला कि मेरे प्रेमी और उसने… बच्चे को मारने की योजना बनाई थी। क्योंकि वह एक घृणित प्राणी था, एक बच्चे और एक छात्र का बेटा। उसे मारना ही था। मैंने बच्चे को छीन लिया और भागी… और भागती रही…”
“जब तक मैं तुम्हारी माता गंगा के तट पर नहीं पहुँची, तब तक मैं आशा से भरी एक घाटी की तरह बहती रही और मुझे पता था कि मेरे पास बच्चे को पानी में डालने के अलावा कोई चारा नहीं है। और मैंने ऐसा ही किया, लेकिन मैंने यह सुनिश्चित किया कि मैं उसे अपना कवच, जो राज्य में बना था, और अपने कुंडल, जो मुझे बचपन में उपहार में मिले थे, दे दूँ। मैंने उसे ये इसलिए दिए क्योंकि मैं चाहती थी कि ये उपहार, जो मेरे लिए बचपन में सौभाग्य लाए थे, उसकी रक्षा करें। मुझे पता था कि मैं अपने पिता के पास वापस नहीं जा सकती और न ही इसे दुर्वासा को दे सकती हूँ… इसलिए मैंने बच्चे को टोकरी में डालकर पानी में डाल दिया…”
“तुम क्या कहना चाह रही हो, स्त्री?” भीष्म उसके करीब आए, और उससे काफी लंबे दिखाई दिए।
उसके मुंह में खट्टापन महसूस हो रहा था, और उसकी चूड़ियाँ चमक रही थीं। "मुझे विश्वास है कि कर्ण मेरा पुत्र है।"
भीष्म ने अपनी भौंहें उठाईं। "आपको ऐसा क्यों लगता है?"
“उसने वही पहना है जो मैंने अपने उस बच्चे को दिया था। क्या आपको लगता है…”
भीष्म ने उसे अपनी बात पूरी नहीं करने दी, बल्कि उसके कंधे पकड़कर उसे ऊपर खींच लिया और अपनी कठोर आँखों से उसे घूरते हुए पूछा, "क्या तुमने यह बात किसी और को बताई है?"
नहीं। मुझे नहीं पता था कि और किसे बुलाऊं…
“अच्छा। फिर कभी इस बारे में बात मत करना,” भीष्म ने कहा।
वह कांप उठी, उसकी रीढ़ की हड्डी ठंडी पड़ गई। "क्यों?"

क्योंकि भले ही वह आपका बेटा हो, लेकिन आपके संरक्षण में रहना, आपका उसकी मां बनना उसका कर्म नहीं है।
“लेकिन…लेकिन मैं उसकी माँ हो सकती हूँ…”
“देवता ऐसा नहीं चाहते। अगर वे चाहते, तो वह अर्जुन या युधिष्ठिर जैसा होता। लेकिन वह ऐसा नहीं है। वह लड़का विवाह के बाहर पैदा हुआ है और जहाँ तक मेरी बात है, वह तुम्हारा बेटा नहीं, बल्कि एक गलती है।”
उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह भीष्म जैसे बुद्धिमान व्यक्ति से ये शब्द सुन रही है, लेकिन वह इस बारे में गंभीर और दृढ़ थे।
उन्हें जानने का अधिकार है।
“कुंती, मेरी प्यारी बेटी,” उन्होंने उसे गले लगाया और कहा, “जब तुम जंगल से यहाँ आई थीं, तो मैंने ही राजा को तुम्हें अपने यहाँ रखने के लिए राजी किया था। जानती हो क्यों? क्योंकि मैंने उनके पुत्रों को देखा था। वे… खैर, चलो मान लेते हैं… हस्तिनापुर पर शासन करने के योग्य नहीं थे। मैं वर्षों से सिंहासन का रक्षक रहा हूँ, भले ही मैं सिंहासन पर नहीं बैठा हूँ। सबसे योग्य उत्तराधिकारी चुनना मेरा कर्तव्य है। लेकिन जब मैंने युधिष्ठिर को देखा, जो अपनी उम्र से कहीं अधिक बुद्धिमान था, तो मुझे सिंहासन का उत्तराधिकारी मिल गया। मैं यह बात किसी से नहीं कहता, लेकिन मुझे इस पर पूरा विश्वास है। वह उन सबमें सबसे बड़ा और सबसे बुद्धिमान है। वह पांडु वंश का है और वही सही उत्तराधिकारी है। लेकिन जब तुम यह कहानी बताओगी, तो हस्तिनापुर के लोग… युधिष्ठिर पर संदेह करेंगे। वे सोचेंगे कि वह सबसे बड़ा नहीं है।”
हाँ। कर्ण है।
“तुम्हारी वो गलती सबसे पहले हुई थी और इसी वजह से सिंहासन पर बैठने का सही हक उसी का है।” उसने अपनी नाक फुलाते हुए, उसके कोमल हाथों को कसकर पकड़ लिया और उसे गंगापुत्र का दबाव महसूस हुआ। “और मैं जानता हूँ कि मेरे पिता, हस्तिनापुर के राजा शांतनु, जिनके पुत्र पांडु और धृतराष्ट्र हैं, का ही वंश उस सिंहासन का उत्तराधिकारी होगा। न कि कोई ऐसा बच्चा जो आध्यात्मिकता का अध्ययन करने के बजाय स्त्रियों को गर्भवती करने में व्यस्त रहा।”
लेकिन क्या युधिष्ठिर भी एक पुजारी के पुत्र नहीं थे?

“लेकिन, प्रिय कुंती, नियोग के नियमों के अनुसार। नियोग के नियम स्पष्ट रूप से कहते हैं कि यदि पति अपनी पत्नी को गर्भ धारण कराने में असमर्थ हो, तो वह पंडित से ऐसा करने का अनुरोध कर सकता है, और वह पुत्र पति का ही होगा, भले ही पति का वीर्य स्त्री के गर्भ में न हो। यही नियम है। और मैं नियमों का पालन करता हूँ। लेकिन कर्ण का जन्म तुम्हारे और उस लड़के के बीच की वासना से हुआ था,” उसने कर्कश स्वर में कहा और कुंती को उसके कठोर शब्दों से गहरा दुख हुआ। “नियोग में वासना नहीं होती, केवल वंश को आगे बढ़ाने का दृढ़ संकल्प होता है।”
कुंती ने सिर हिलाया। लेकिन पुजारियों का चुनाव... पांडु ने कुंती को गर्भ धारण कराने के लिए सबसे उपयुक्त पुजारियों को खोजने में बहुत मेहनत की थी। उन्हें परिपूर्ण संतान की तीव्र इच्छा थी। दिव्य संतान। उन्होंने सैकड़ों बार यह जांच की थी कि क्या पुजारियों में योग्यता है, उनमें कौन-कौन सी प्रतिभाएं हैं, क्योंकि जीन ही वह चीज है जो पुजारी से बच्चे में जाती है।
“मैं किसी सूतपुत्र को उस खूनी सिंहासन पर नहीं बैठने दे सकता जिसकी मैंने वर्षों से रक्षा की है। वह कुछ भी नहीं है, उसे जरासंध के साथ अपना तुच्छ युद्ध लड़ने दो। लेकिन हस्तिनापुर की बात हो तो, वह यहाँ कदम भी नहीं रखेगा।” कुंती की आँखों में आँसू आ गए, बच्चे को छोड़ने के अपराधबोध से व्याकुल और इस अनिश्चितता से परेशान कि कर्ण उसका पुत्र है या नहीं। “यदि तुम्हें उसे बताना ही है, तो बता दो। उसे तब बताना जब संसार का अंत हो जाए और जब सबसे भयंकर युद्ध छिड़ा हो। लेकिन अभी नहीं। अन्यथा, तुम अपने सगे पुत्र की प्रतिष्ठा और सिंहासन पर उसके दावे को ठेस पहुँचाओगी और तब तो मैं भी तुम्हारी मदद नहीं कर पाऊँगा, प्रिय कुंती।” उसकी आवाज़ नरम पड़ गई, लेकिन कुंती अब भीष्म की चालाकी को समझ सकती थी।
वह युधिष्ठिर के अलावा किसी और को नहीं चाहता था, हालांकि सही मायने में सिंहासन के लिए कर्ण दावेदार होना चाहिए था।
लेकिन सब ठीक था।
युधिष्ठिर कर्ण से कहीं अधिक महत्वपूर्ण थे। बहुत अधिक। उन्हें यह भी यकीन नहीं था कि कर्ण उनका पुत्र है या नहीं। हो सकता है उसने वह कवच चुराया हो या अदला-बदली की हो।

हालांकि वह जानती थी, भले ही वह उसे बता न सके—उसे उससे बात करनी चाहिए थी।
सिर्फ एक बार, यह देखने के लिए कि क्या वह सचमुच उसका बेटा था।

19

कर्ण बाहर बैठा था, अपने थके हुए हाथों को देख रहा था जिनमें तलवार पकड़ने से छाले पड़ गए थे और दर्द हो रहा था। आज रात उसने कवच नहीं पहना था; कवच और हथियार उसके कमरे में रखे थे।
उसने योद्धाओं के अभ्यास स्थल की ओर देखा। यह एक गुंबदनुमा संरचना थी और रात में, पारदर्शी, चमकते वस्त्र पहने युवतियाँ परिसर के अंदर घूमते हुए जुगनुओं की तरह दिखती थीं। कर्ण जानता था कि यह मना था, लेकिन सुयोधन ने ही इसका प्रबंध किया होगा और बड़े-बुजुर्गों ने इस पर आँखें मूंद लीं, मानो इससे कोई फर्क ही न पड़ता हो, मानो स्त्रियों से तृप्ति पाना योद्धा होने का हिस्सा हो।
वह परिसर राजमहल से काफी दूर, कुछ ही गज की दूरी पर, जंगल के किनारे स्थित था। वहीं पांडवों और कौरवों का उत्सव चल रहा था; वे भरपूर आनंद ले रहे थे, जैसा कि उन्हें लेना चाहिए था। उसे अपने हमउम्र लोगों के साथ वहाँ होना चाहिए था, लेकिन राजा ने उसे इस भोज में आमंत्रित किया था, जो अधिक एकांत और शांत था, जहाँ केवल फुसफुसाहट और हंसी की आवाजें गूंज रही थीं। उसने पांचाली को अक्सर देखा था। दूर से ही दोनों ने एक-दूसरे को देखा, लेकिन कुछ नहीं बोले। वह सचेत था; असमंजस में था कि उसे पांचाली के पास जाना चाहिए या वह खुद उसके पास जाएगी।
लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। और तब तक, जब योद्धा जश्न मना रहे थे और सुबह तक ऐसा करते रहे, दावत खत्म होने वाली थी। राजघराने के लोग सोने के लिए अपने कमरों में वापस जा रहे थे।
तभी उसने एक परिचित आकृति को उनकी ओर बढ़ते हुए देखा।
हॉल से तुरही की आवाज सुनाई दे रही थी, लेकिन आंगन में कवियों और शराबी पुरुषों के अलावा लगभग कोई नहीं था।
वह अपने पिता से बात नहीं कर पाया था।
सुधार: वह उससे बात करने की हिम्मत नहीं जुटा सका।
इसलिए वह बाहर था। उससे दूर। सबसे दूर।

लेकिन उसके पिता ने उसे ढूंढ लिया। जैसे ही कर्ण ने उन्हें चलते देखा, उसका मन हुआ कि वह उन्हें गले लगा ले, लेकिन उसने खुद को रोक लिया। शायद इसलिए कि काफी समय बीत चुका था। उसने अपने पिता को आखिरी बार शायद पांच साल पहले देखा था, जब वे गुरुकुल जाते समय उसे, उसकी माँ और उसके भाई को विदाई दे रहे थे।
इस बीच, उनके पास उनसे मिलने का अवसर था, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्हें अपना वादा निभाना था।
“ये तुम हो,” उसके पिता ने अविश्वास से कहा। “साक्षात तुम।”
कर्ण चुप था। क्या मुझे उसे गले लगाना चाहिए?
“महामहिम, मुझे आपको बधाई देनी चाहिए,” अधिरथ ने उपहास करते हुए कहा।
"पिता…"
अधिरथ उसके पास नहीं बैठा। वह वहीं स्थिर रहा। कर्ण समझ गया कि अधिरथ अपने बेटे को याद कर रहा है, लेकिन साथ ही वह क्रोधित भी था।
और उसके पास इसके अच्छे कारण थे।
“हमने सोचा… मैंने सोचा था कि तुम मर गए हो। तुम धरती से गायब हो गए थे और मुझे पता नहीं था कि तुम कहाँ हो। मैंने पूरे देश से संदेशवाहक भेजे, लेकिन कोई तुम्हें ढूंढ नहीं पाया।”
“मैं उत्तर में था। परशुराम के यहाँ,” कर्ण ने शर्म से थोड़ा सिर झुकाते हुए कहा।
मैंने पत्र भेजे…
“मुझे मिल गए,” कर्ण ने सिर हिलाया। “आखिरी पत्र…” वह रुका। उसके बारे में सोचते हुए उसका गला भर आया।
यह वो समय था जब स्नातक की पढ़ाई के अंतिम वर्ष में उन्हें द्रोण के गुरुकुल से निकाल दिया गया था और वे अपने गुरु की अवज्ञा करके उत्तर की ओर जाकर मार्शल आर्ट की पढ़ाई पूरी करने की सोच रहे थे—तभी उन्हें एक पत्र मिला। उनके पिता ने पत्र लिखकर बताया कि उनकी माताजी बीमार हैं…बहुत बीमार…और मृत्यु के करीब हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें छुट्टी लेकर वापस लौट आना चाहिए। लेकिन वे रो पड़े। वे इसलिए रोए क्योंकि वे उनके अंतिम दिनों में उनके साथ नहीं रह सकते थे। उन्हें अपना वादा निभाना था।
“और तुम नहीं आए,” अधिरथ की आँखों में पीड़ा और दर्द झलक रहा था। “मुझे तुम्हारी उम्मीद थी। मुझे जवाब की उम्मीद थी।”

“मुझे पता है, पिताजी,” कर्ण ने कहा। “क्या वह…”
“हां। उसी वर्ष।”
कर्ण ने अपने जबड़े भींच लिए। उसे थोड़ा पछतावा था, लेकिन फिर भी उसे अपने किए पर गर्व था: उस वादे को पूरा करने के करीब पहुंचने पर।
“शॉन कैसा है?” उसने अपने भाई के बारे में पूछा।
“तुम्हें मुझसे सवाल करने का कोई हक नहीं,” उसके पिता की आवाज भर्रा गई, उनकी आंखों में आंसू थे। “तुम्हें जवाब पाने का कोई हक नहीं है। तुम्हारी मां के आखिरी दिनों में वापस न आने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? क्या तुम्हारे अंदर कोई भावना नहीं है? क्या तुम्हें लगता है कि तुम गोद लिए हुए हो और इसीलिए हमारे साथ ऐसा बर्ताव कर रहे हो?”
कर्ण ने अपने होंठ दबा लिए। बात यहीं खत्म नहीं हुई। मैं गोद लिया हुआ हूँ, लेकिन आप दोनों हमेशा से मेरे माता-पिता रहे हैं, वह कहना चाहता था, लेकिन चुप रहा।
“और अब तुम आए हो, इस तरह शान से प्रवेश किया है और मुझसे उम्मीद करते हो कि मैं तुम्हारे लिए बाहें खोल दूँ?” अधिरथ की आँखें लाल थीं।
मुझे पिताजी से कोई उम्मीद नहीं है।
“तुम मेरे लिए अजनबी हो। चार साल। चार साल तक कोई जवाब नहीं; खामोशी। शोन और मैं…हम तुम्हारे और तुम्हारी माँ के बिना रहे। मुझे लगता है, अब भी हमें ऐसा ही करना पड़ेगा।” वह रुका, क्योंकि कर्ण चुप रहा। उसके पास जवाब में कहने के लिए कुछ नहीं था, बस बड़बड़ा रहा था। उसके पास एक वजह थी, लेकिन जब तक वह उसे साबित नहीं कर देता, वह कुछ कहना नहीं चाहता था। “अंगा के लिए, अपनी धरती के लिए, तुमने जो किया, वह बहुत बड़ी मेहरबानी है। राजा ने तुम्हें किसी कारण से अपना करीबी दोस्त चुना है, मेरा सुझाव है कि तुम उन्हें निराश मत करो। लेकिन अगर तुम्हें लगता है कि तुम वह कर सकते हो जो मैं नहीं कर सका, तो तुम गलत हो। एक समय आएगा जब जरासंध तुम्हें कुछ भी नहीं समझेगा और वह राजा के साथ मिल जाएगा और सब कुछ जल्द ही खत्म हो जाएगा। तुम्हारा अभियान, तुमसे किए गए वादे…सब खत्म हो जाएंगे। और तुम मेरी तरह अकेले रह जाओगे।” कर्ण उसकी आवाज़ में चिंता सुन सकता था और भले ही वह अपने बेटे से नफरत करता था, फिर भी उससे प्यार करता था। कर्ण यह देख सकता था। “मैं खूनी रथ चलाने की शर्म और अपमान सह सकता था। मैं नहीं चाहता कि तुम्हारा और शॉन का भी वही हाल हो। मैं तुम दोनों को इस खून-खराबे, युद्ध

और राजनीति से दूर रखना चाहता था। यह हमारे स्वभाव में नहीं है, इसीलिए मैंने वर्षों पहले यह काम छोड़ दिया था।”
आपको गुमराह किया गया था।
“और जब तुम मुझे छोड़कर चली गईं, तो मैंने यह सुनिश्चित किया कि शॉन एक आश्रम में शामिल हो जाए और पुजारी बनने के लिए कड़ी मेहनत करे। वह सुखी जीवन जिएगा।”
अधिरथ फिर से हिलने-डुलने लगा, तभी कर्ण ने उसके पैर पकड़कर पुकारा: “पिताजी?”
अधिरथ मुड़ा। उसका चेहरा घबराया हुआ था। उसने कुछ नहीं कहा।
क्या आप कभी अंगा वापस लौटे?
"आपका क्या मतलब है?"
"जब मैं चली गई थी, जब मां वहां नहीं थी, तो क्या तुम अंगा लौट आई थी?" “वहाँ कुछ भी नहीं बचा। बस अराजकता और खून-खराबा है… पहले जैसा नहीं रहा। यह बहुत बदल गया है और वनों की कटाई के कारण ऐसी भूमि बन गई है जहाँ फसल तो उगती है लेकिन बोई नहीं जाती। लकड़ी धड़ल्ले से बिक रही है। तुम्हारी माँ सही कहती थी,” उसने ताना मारा। “उसने मुझसे कहा था कि अगर मैं राजा का साथ देता हूँ, तो मैं आधा राज्य भी खो दूँगा और हमारे पास अंगा नहीं रहेगा। लेकिन तब मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। मैं कमज़ोर था। मैं अब भी कमज़ोर हूँ!” उसकी आवाज़ दर्द से भर्रा गई। “लेकिन मैं अपने बेटों को उस रास्ते पर जाते हुए नहीं देख सकता। क्योंकि मुझे पता है कि वे भी असफल हो जाएँगे।” “मैं इस अन्याय को सुधारना चाहता हूँ,” कर्ण ने कमजोर स्वर में कहा। “अंगा हमारी है और मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि यह हमारी ही रहे।”
“किस कीमत पर?” चांदनी उसके चेहरे पर छनकर आ रही थी।
“सब कुछ,” कर्ण ने भावहीनता से उत्तर दिया।
उसने उपहास उड़ाते हुए कहा, "सत्ता के लिए तुम्हारी लालसा गलत है।"
मुझे सत्ता की तलाश नहीं है। मुझे उस वादे को पूरा करना है।
“तुम एक बात में सही हो,” कर्ण ने कहा। “तुम एक कमजोर आदमी हो। लेकिन दूसरी बात में तुम गलत हो। मैं कमजोर नहीं हूँ।”
अधिरथ अपने बेटे के इस दृढ़ रवैये से स्तब्ध रह गया, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। कंधे उचकाते हुए वह चला गया।

कर्ण चुपचाप बैठा रहा, पर उसका कुछ भी करने का मन नहीं था। उसे अजीब और अकेलापन महसूस हो रहा था, उस व्यक्ति ने उसे ठुकरा दिया था जिसे वह सुबह अंग का राजा बनकर दिखाना चाहता था, उसे गर्व महसूस कराना चाहता था, लेकिन इसके बजाय यह हुआ। उसे लगा जैसे उसने उसे ठुकरा दिया हो और वह इस बात पर फूट-फूट कर रोना चाहता था। हालात कैसे बदल जाते हैं! पर यह उसे अपने लक्ष्य से नहीं भटका सकता था। उसे अपने लक्ष्य तक पहुंचना ही था, चाहे इस प्रक्रिया में वह सबको निराश ही क्यों न कर दे।
शॉन एक कुशल तलवारबाज था, लेकिन पिता ने उसे पुजारी बनने के लिए प्रेरित किया। यह गलत था। केवल इसलिए कि वह कमजोर था, इसका मतलब यह नहीं है कि उसकी संतान भी कमजोर होगी।
जीवन भर, उसे सूतपुत्र कहलाने का संघर्ष करना पड़ा। अंतरजातीय वंश का वंशज। समाज द्वारा ठुकराया हुआ। समाज चाहता था कि वह अपने पिता की तरह सारथी बने, लेकिन वह यह भाग्य नहीं चाहता था। उसे लगता था कि उसके पिता अलग होंगे क्योंकि वे भी पीड़ित थे। लेकिन उसे यह भी लगता था कि कर्ण किसी काम का नहीं है और वह युद्ध हार जाएगा। वास्तव में, कर्ण को पूरा विश्वास था कि हर कोई यही सोचता है।
और अब, उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि उसे उस एक व्यक्ति द्वारा अस्वीकार कर दिया जाएगा जिसकी पहचान उसने जीवन भर अपने साथ रखी थी। हालांकि वह जानता था कि एक व्यक्ति ऐसा था जो उसे कभी अस्वीकार नहीं करेगा। एक व्यक्ति जो हमेशा उसके साथ मधुर व्यवहार करता था।
Panchali.
वह यहाँ हो सकती है। उसे उससे मिलना चाहिए। आख़िरकार, वह उसे बड़ी उत्सुकता से देख रही थी। कई साल बीत गए थे, उससे मुलाकात नहीं हुई थी, लेकिन अब होगी।
क्योंकि वह अगले दिन अंगा के लिए रवाना होने वाला था। जरासंध के विरुद्ध युद्ध की तैयारी के लिए।
जैसे ही वह ट्यूलिप के बगीचों में दौड़ रहा था, उसकी यादें भी उन दिनों में वापस चली गईं जब वह उससे मिला था, उस बिंदु तक जहां उसे कपटी, दुष्ट अर्जुन द्वारा अपमानित किया गया था।
वे दिन उज्ज्वल और अंधकारमय दोनों थे।
यह वह समय था जब उन्हें कर्ण नहीं बल्कि वासु कहा जाता था।

20

12 साल पहले…
इसे हाथियों का शहर कहा जाता था।
और देखो, ऐसा ही हुआ।
वासु ने उस जगह के बारे में सिर्फ अपने आसपास के लोगों से ही सुना था। चाचा सत्य ने उसे थोड़ा-बहुत बताया था और जब वे अंगा में ही रुककर अपने गुप्त सैन्य विस्तार को जारी रखने लगे, जिसका नेतृत्व एक दिन वासु करेगा, तब वासु और उसका परिवार हस्तिनापुर के लिए निकल पड़ा। वह उस जगह नहीं जाना चाहता था जहाँ गद्दी हथियाने वाला धृतराष्ट्र रहता था, लेकिन वह अपने माता-पिता को बिना किसी कारण के मना नहीं कर सका।
सूर्यदेव के प्रतिष्ठित पर्व छठ पूजा के लिए संपूर्ण राजपरिवार को हस्तिनापुर आमंत्रित किया गया था। वास्तव में, सर्वोच्च राजा के कई अन्य सहयोगी राजपरिवारों को भी बुलाया गया था और उन्हें महल में ही ठहरने की व्यवस्था की गई थी। धृतराष्ट्र स्वयं उनका स्वागत करने के लिए वहाँ उपस्थित थे।
और हालांकि वासु को यह सब पसंद नहीं था, फिर भी वह हाथियों के शहर, ज्ञान के शहर और सबसे महान वास्तुकला के शहर की सुंदरता और चमत्कार की सराहना किए बिना नहीं रह सका।
दूर से देखने पर हस्तिनापुर में संगमरमर और ग्रेनाइट से बनी पचास फीट ऊंची हाथी की विशाल मूर्तियां दिखाई देती थीं, साथ ही चार चौकियां भी थीं ताकि कोई दुश्मन अंदर न घुस सके। वहां कंटीले बुर्ज और कांटों से बने द्वार थे, लेकिन छठ पूजा के कारण अब उन्हें गुलाबों से सजाया गया था। पूरा शहर एक छोटी पहाड़ी पर बसा था और सड़कें टेढ़ी-मेढ़ी होकर पहाड़ी की चोटी तक जाती थीं, जहां भव्य महल स्थित था।
विशाल दीवारें रक्षा का काम करती थीं और दोनों ओर छोटे-छोटे किले और आश्रम थे जहाँ सेनानी और पुजारी निवास करते थे। वहाँ चहल-पहल से भरे बाज़ार थे और झुग्गी-झोपड़ियाँ थीं जो शहर के निचले तबके का हिस्सा थीं।

वहाँ एक विशाल, गोलाकार मंदिर था, जिसके बाहरी घेरे भीतरी घेरों से छोटे थे। उसके ऊपर देवी काली की मूर्ति स्थापित थी।
“यह पाण्डेश्वर मंदिर है,” उनके पिता ने समझाया। “यहीं पर पांडु के पुत्रों और कौरवों के पुत्रों को महान ऋषि और गुरु आचार्य द्रोण द्वारा पुराणों और स्मृतियों की शिक्षा दी जाती है।”
द्रोण…
नाम।
वासु उस लोकप्रिय नाम को इतनी अच्छी तरह से जानता था कि उसने जन्म से ही उसके बारे में सुना था।
और वह जानता था कि छठ पूजा के लिए यह यात्रा उसके लिए उस बूढ़े व्यक्ति को प्रभावित करने का एक अवसर हो सकती है।
उन्होंने द्रोण के बारे में केवल सुना था—एक घुमंतू ऋषि, जो पौराणिक अमर भगवान परशुराम से मिले और उनके माध्यम से उन्हें राजपरिवार के बच्चों के आचार्य बनने का अवसर मिला। उनके प्रिय शिष्य अर्जुन थे, जो धनुर्धरों के उस्ताद थे। उन्होंने सब कुछ सुना था और अब छठ पूजा के कारण वे सब कुछ करीब से देखने वाले थे।
महल में प्रवेश करते ही उनके सिर पर मालाएँ और टीके लगे हुए थे। वासु ने महल के लैवेंडर के बगीचों और लटकते हुए लिली के गमलों को करीब से देखा। वहाँ मछलियों से भरे तालाब थे और अंगा की तुलना में सब कुछ इतना सुंदर और समृद्ध था।
इसकी तुलना में अंग प्रदेश एक गरीब आदमी के द्वीप जैसा प्रतीत होता था। वासु ने सोने से बना एक छोटा सा परिसर देखा, जिसमें चार मजबूत दीवारें थीं, जिनके चारों ओर दो-तीन पहरेदार तैनात थे और उन दीवारों के किनारे चेरी के पेड़ लगे हुए थे। यह परिसर बाकी जगहों से बिल्कुल अलग प्रतीत होता था। “यह क्या है?” वासु ने पूछा, क्योंकि उसके पिता यहाँ की अधिकांश जगहों से परिचित थे। यहाँ तक कि तीन साल का शॉन भी उत्साहित हो गया और अपनी माँ के दुलार से नज़रें उठाकर देखने लगा कि उसका भाई किस ओर इशारा कर रहा है। “मेरे पुत्र, यह महान राजसी अस्तबल है, जहाँ महाराजा का रथ विश्राम करता है।”
"एक वाहन के लिए इतनी सुरक्षा?"

“यह सिर्फ एक वाहन नहीं है। यह अरब सागर की गहराइयों में पाए जाने वाले मोतियों से बना है,” उनके पिता ने कहा। “मेरे, उसके और एक सफाईकर्मी के अलावा किसी को भी अंदर जाने की अनुमति नहीं है।”
“वाह!” वासु इस विचार से मुग्ध हो गया, क्योंकि यह वही रथ था जिस पर योद्धा सवार होते थे, बस फर्क इतना था कि धृतराष्ट्र चोर था, लेकिन इससे राजसी रथ की पवित्रता का महत्व कम नहीं होता था। “तो मैं देख नहीं सकता?”
“नहीं। गुस्सा मत करो,” अधिरथ ने उसे चुप कराया।
वासु निश्चित रूप से निराश था। लेकिन अपने विद्रोही स्वभाव के कारण उसने कुछ बड़ा कदम उठाने का फैसला किया।
फिर भी उसने इसे देखने का फैसला किया।

जैसे-जैसे रात भर काम चलता रहा और पूरा महल बंद रहा—
वासु ने पहल की।
और उसका तरीका बहुत सरल था। दबे पांव शाही अस्तबल की ओर बढ़ते हुए और बगीचों से गुज़रते हुए, वह झाड़ियों के अंदर छिप गया ताकि अपने सामने मौजूद पहरेदारों को देख सके। वे दीवार के किनारे चल रहे थे और उन सभी के हाथों में भाले थे।
उनके हाथों पकड़े जाना एक समस्या बन सकता था। और इससे उसके परिवार को बहुत शर्मिंदगी उठानी पड़ती। इसलिए उसे सावधान रहना था। वह बगीचे को पार करते हुए झुककर उन पेड़ों की ओर बढ़ा जो शाही अस्तबल की दीवारों के ठीक बगल में थे।
वासु ने एक चेरी का पेड़ देखा और उसे एहसास हुआ कि वह उस पर चढ़ सकता है। बिना ज्यादा सोचे-समझे उसने ऐसा ही किया। खुद को ऊपर खींचते हुए वह पेड़ की चोटी पर पहुंचा और उस लंबी शाखा से लटक गया जो दीवार के दूसरी तरफ एक औरत के झुर्रीदार हाथों की तरह टेढ़ी-मेढ़ी लटक रही थी।
उसके हाथों को दबाव महसूस हो रहा था, खुरदरी टहनियों को छूने से उसके हाथ लगभग लाल हो गए थे और उनकी त्वचा पर छोटे-छोटे निशान पड़ गए थे।
गश्त लगा रहा गार्ड उसके ठीक नीचे से गुजरा जब वह ऊपर से लटका हुआ था। वासु ने बस यही उम्मीद की कि डाल से किसी तरह की कोई आवाज न आए या उसके पसीने की

बूँदें जमीन पर न गिरें जिससे गार्ड सतर्क हो जाए, जो अपने पैरों के नीचे कुछ जाँचने में व्यस्त था।
वासु को अपने पैरों के पास कुछ महसूस हुआ और जब वह चीज उसकी धोती पर ऊपर की ओर बढ़ने लगी तो उसे और भी स्पष्ट रूप से इसका एहसास हुआ, तब उसे समझ आया कि वह क्या था: एक रैटलस्नेक।
उसने किसी तरह अपनी चीख रोक ली। क्योंकि अगर वह चीखता, तो उसे तुरंत अतिक्रमण के आरोप में पकड़ लिया जाता और इसके परिणाम बहुत बुरे होते। सांप धीरे-धीरे ऊपर की ओर बढ़ा और फुफकारते हुए उसकी ओर देखा।
चाचा सत्या ने हमेशा उसे सिखाया था कि किसी भी सांप को डराना नहीं चाहिए। उन्हें सुरक्षित और निश्चिंत महसूस करने दो, और वे बिना किसी खतरे के प्रतिक्रिया देंगे।
जब तक पहरेदार नीचे रहा, तब तक सांप भी उसके करीब ही रहा। वासु को यह बात समझ नहीं आ रही थी कि एक साधारण रथ को देखने के लिए उसे इतनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।
तभी सांप पीछे मुड़ गया। वासु ने राहत की सांस ली जब उसने देखा कि सांप के दांत बाहर निकल रहे हैं और उसका मुंह खुल रहा है...
वो मुझे काट लेगा!
उसने तुरंत अपना पैर झटका और सांप ने खुद को नीचे गिरा दिया, पहरेदार पर, जो अचंभित था और सांप से छुटकारा पाने के लिए संघर्ष कर रहा था।
मेरे पास ज्यादा समय नहीं है। ये लीजिए…
उसका दिल धड़क रहा था जब उसने हिम्मत जुटाकर छलांग लगाई, उसकी छाती ज़ोर से धड़क रही थी और उसका मुंह खुला हुआ था, हवा का झोंका उसे गदा की तरह लग रहा था।
वह दूसरी तरफ लुढ़क गया, इस प्रक्रिया में उसके पैरों में चोट के निशान पड़ गए और उसके घुटने जमीन से रगड़ खा गए।
जैसे ही उसे एहसास हुआ कि उस आवाज से पहरेदारों को उसकी आवाज सुनाई देगी, उसने एक हल्की सी चीख मारी और उसके कानों में खून दौड़ गया।
वह तुरंत सुनहरे, जगमगाते शेड के पास छिप गया, और पहरेदारों के आने का इंतज़ार करते हुए उसकी छाया में दुबका रहा। उसने गहरी साँस ली और अपनी धड़कन को शांत किया।
मुझे उम्मीद है कि यह प्रयास सार्थक होगा।

वासु को एहसास हुआ कि कोई भी उसकी खैरियत पूछने नहीं आ रहा है। विजयी मुस्कान के साथ, वह शेड में इधर-उधर घूमने लगा, उसकी निगाहें उस दरवाजे की तलाश में इधर-उधर भटक रही थीं जिससे वह अंदर जा सके। झुककर और दबे पांव चलते हुए, ताकि दीवारों के अंदर मौजूद पहरेदार उसे सुन या देख न सकें, वह दरवाजे तक पहुंचा और चुपके से अंदर घुस गया।
और जैसे ही उसने ऐसा किया, उसने एक पल के लिए सांस रोक ली जब उसने यह दृश्य देखा…
हे भगवान!
उसकी सांसें फिर से थम गईं और उसने विस्मय और आनंद से भरी सांस छोड़ी। आनंद इसलिए क्योंकि उसने सोने और कांसे से बने रथ को देखा, जिसकी सीटें मलमल की और लगाम हाथीदांत की थी। नीलम और माणिक्य उसकी चमक को और बढ़ा रहे थे। रथ विशाल था, उसमें लगभग पाँच से छह लोग बैठ सकते थे।
और उसमें एक अलग ही आभा थी।
जैसा कि उसके पिता ने उसे बताया था, मोती सजावटी तत्वों के रूप में किनारे पर एकदम सलीके से लगे हुए थे। निश्चित रूप से, जैसा कि उसके पिता ने कहा था, वे पानी से निकले थे। धृतराष्ट्र ने नागों से मदद ली होगी, जो मछुआरा समुदाय थे; वे अन्य जनजातियों, जैसे राक्षस या वानर, के विपरीत एकांत में काम करते थे।
वासु रथ के चारों ओर घूमे, उसकी सुंदरता को निहारते हुए उन्होंने आसन पर ध्यान केंद्रित किया। ओह, क्या आसन था! उन्होंने दुनिया की हर बात भुला दी और केवल उन युद्धों और लड़ाइयों पर ध्यान दिया जो राजा ने इस रथ पर लड़ी होंगी। उनके युग में युद्ध रथ ही युद्ध के मुख्य साधन थे, जिनका उपयोग महानतम पुरुषों और वीरों द्वारा किया जाता था। धृतराष्ट्र इस मामले में अपवाद थे, लेकिन फिर भी वह एक राजा थे, चाहे कुछ राज्यों के प्रति उनका व्यवहार कितना भी क्रूर क्यों न रहा हो।
चाचा सत्य ने उन्हें भगवान राम, भगवान परशुराम और भीष्म पितामह की महान गाथाएँ सुनाई थीं, जो स्वयं राजा के चाचा और एक जीवित किंवदंती थे। सभी वीर रथों का उपयोग करते थे और वीरता और कर्तव्य के लिए युद्ध लड़ते थे।
वासु के मन में अचानक यही इच्छा जागृत हुई। इसीलिए वह आया था। इसीलिए उसने अपने पिता के नियमों और महल के कानूनों को तोड़कर यहाँ आने का फैसला किया था।

ऐसा महसूस करना जो उसने अपने पूरे जीवन में कभी महसूस नहीं किया था।
एक राजा।
सिंहासन और रथ पर बैठना। और वह आसन, उस पर बैठकर उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे वह उन्हीं में से एक हो।
मैं वही बनूंगा। जल्द ही।
वासु ने खुद को संभाला और उस पर बैठ गया। एक पल के लिए, उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे उसके सामने सभी जीव और उसके दुश्मन मौजूद हों। वह कल्पना कर सकता था कि वह युद्ध के मैदान में है और उसके पास धनुष और बाण हैं जिन्हें वह हर तरह के दुश्मनों पर चला रहा है।
और वह ऐसा करता रहा, जब तक कि उसके सामने शेड का दरवाजा नहीं खुल गया और एक आवाज सुनाई दी...
“आखिरकार मुझे राजा से अनुमति मिल गई और मैं इसे एक दिन भी बर्बाद नहीं करूंगी। मुझे रथ देखना ही है।” यह एक लड़की का कथन था, जो उस समय अंदर आई जब वासु अस्थायी तीरंदाजी खेल रहा था।
उसके पीछे एक सिपाही था, जो उसका पीछा कर रहा था। “लेकिन राजकुमारी, उसने कहा है कि आप इसे जब चाहें देख सकती हैं और रात का समय इसके लिए सबसे अच्छा समय नहीं है…”
अंदर आने वाली लड़की वासु से छोटी थी और उसने वासु की ओर अत्यंत प्रसन्नता और भय के भाव से देखा।
वासु ने पीछे मुड़कर उसे देखा।
उसका मुंह खुला रह गया था। उसका भी।
लेकिन तभी उसने देखा कि वह कितनी जीवंत और सुंदर थी। उसकी भूरी आँखें थीं और गोरी, मासूम त्वचा थी, काजल लगी पलकों के नीचे हल्के-हल्के धब्बे थे।
उसने सिर पर एक मुकुट और हीरे-क्रिस्टल का हार पहना हुआ था।
उसकी खूबसूरती के आगे मानो समय थम सा गया था…
वहां एक अजीब सी खामोशी छा गई और जब सैनिक ने वासु को देखा तो स्थिति और बिगड़ गई।
“राजकुमारी पांचाली,” सिपाही ने कहा, “मुझे लगता है कि हमारे यहाँ कोई घुसपैठिया है।”

21

यदि उन्हें यह बताया जाता कि महान भीष्म पितामह उनसे मिलना चाहते हैं, तो वे प्रसन्न हो जाते…
लेकिन सामान्य परिस्थितियों में, बेशक।
यह कोई साधारण बात नहीं थी। यह भयावह था। यह एक ऐसी परिस्थिति थी जहाँ वह एक घुसपैठिया, एक विद्रोही और एक अवज्ञाकारी था, अंग प्रदेश के शाही परिवार का काला भेड़ा था।
वासु, सेनापति और राजा के सुरक्षा प्रमुख भीष्म के कक्ष में चुपचाप खड़ा रहा। लेकिन वह व्यक्ति वहाँ नहीं था।
वासु प्रतीक्षा करता रहा, उसके विचार पंचली की ओर भटक रहे थे। उसने यह नाम अपने चाचा से सुना था; वह पंचाल की राजकुमारी थी, जो सुंदर, दयालु और सौम्य थी। राजकुमारी होने के कारण उसे रथ देखने की अनुमति दी गई थी, जबकि वासु को उसके पिता ने सिरे से अस्वीकार कर दिया था क्योंकि...
वह इस बारे में अपने पिता से सवाल करना चाहता था।
वह वासु के बगल में खड़ा था, हमेशा की तरह भावहीन, उसके चेहरे पर शर्मिंदगी का भाव था। उसने वासु से बात नहीं की। और यह चिल्लाने से भी बदतर था। यह तब होता था जब आपके माता-पिता आपसे उम्मीद छोड़ देते थे।
उनके पीछे कक्ष के दरवाजे खुल गए, और वासु ने सामने खड़ी आकृति के बड़े कदमों की गूंज सुनी, जो वहां खड़ी होने से पहले उनके चारों ओर घूमी और फिर तकिये पर बैठ गई।
पीछे एक लाल पर्दा था, दो लटकते गमले और एक जलता हुआ दीपक था। एक छोटी मेज थी जिस पर पीले रंग के दस्तावेज़ बिखरे पड़े थे।
वासु ने देखा कि वह व्यक्ति विशालकाय था। लगभग सात फीट से भी अधिक लंबा। पहलवान की तरह चौड़ा और गठीला शरीर, जिसकी मांसपेशियां उभरी हुई और नसें साफ दिखाई दे रही थीं। उसकी आंखें क्रिस्टल जैसी नीली थीं, ठीक उसी गंगा नदी की तरह जिसके पास उसका जन्म हुआ था। उसका नाम गंगापुत्र था। उसके बाल

सफेद और बर्फीले थे, पीछे की ओर बंधे हुए, घने बाल उसके कवच के पास तक लहराते हुए फैले हुए थे।
वह देवव्रत थे, जिन्हें भीष्म भी कहा जाता था—वह व्यक्ति जिन्होंने अपने पिता शांतनु के सिंहासन की रक्षा करने की प्रतिज्ञा ली थी।
लेकिन उसकी आंखें कठोर और लाल थीं।
“Pranaam, Commander Bhishma,” Adhirath bowed.
वासु ने ऐसा नहीं किया, क्योंकि वह अपने सामने खड़े व्यक्ति से बहुत प्रभावित था।
“क्या तुम्हें तमीज़ नहीं है, बालक?” भीष्म ने पूछा।
तब वासु को अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने भी सिर झुकाया।
“मुझे लगता है तुम विद्रोही हो,” भीष्म ने फलों की टोकरी से अंगूर उठाते हुए कहा। “तुम नियमों को तोड़ते हो, जबकि तुम अनुमति मांग सकते थे।”
वासु ने कुछ नहीं कहा। उसका सिर झुका हुआ था और हाथ उसकी पीठ पर थे।
क्या आप क्षमा चाहते हैं?
“हां,” वासु ने गंभीरता से सिर हिलाया।
"तो मुझे समझाओ कि तुमने ऐसा क्यों किया।"
वासु शर्मीला था। उसे खुद नहीं पता था कि उसने ऐसा क्यों किया, लेकिन यह सब जिज्ञासा, रथ की प्रकृति और उसके महत्व के बारे में था। "मैं देखना चाहता था कि मेरे पिता महाराज के लिए किस रथ पर सवार होते हैं।"
और फिर उसने वह आवाज़ सुनी। कमरे में कुछ कदमों की आहट सुनाई दी, लेकिन वह पीछे नहीं मुड़ा। कदमों की आहट खिड़कियों के पास आकर रुक गई। अपनी तिरछी नज़र से वासु को एहसास हुआ कि वहाँ कोई और भी है।
“यह तो बस एक रथ है,” भीष्म ने आह भरी।
"तुम्हारे लिए तो ठीक है," उसने अपनी भौंहें ऊपर उठाते हुए कहा, "लेकिन मेरे लिए इससे मुझे और ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है।"
“काम? हेह…” वह रूखेपन से हँसा, “किसलिए काम?”
"अंग का उत्तराधिकारी बनना, राजा बनना, निःसंदेह, भगवान भीष्म ही होंगे।" “महाराज, मैं समझ गया,” भीष्म खड़े हो गए और उन्नीस वर्षीय वासु के चारों ओर घूमने लगे। हालाँकि वासु भीष्म से कद में छोटे थे, फिर भी उनका शरीर बलवान था। वे छह फुट पाँच इंच लंबे और तगड़े थे। “तुम्हें क्या लगता है कि

तुम राजा बन सकते हो? राजा तो नियमों का पालन करता है, उन्हें तोड़ता नहीं।”
“नहीं, महाराज,” वासु ने अपने चाचा सत्या की सिखाई हुई बातें याद करते हुए गंगापुत्र की बर्फीली निगाहों से आँखें मिलाईं। “राजा वह होता है जिसे अपने राज्य की भलाई के लिए नियमों को तोड़ना पड़ता है। वास्तव में, वही एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो ऐसा कर सकता है, और साथ ही यह भ्रम भी पैदा कर सकता है कि वह नियमों का पालन करने वाला है।”
“सच में? कौन सा राजा ऐसा करता है?”
उसके शरीर का हर अणु इस जवाब को नकार रहा था, लेकिन उसकी अंतरात्मा ने उसे यही जवाब मानने को कहा:
“हे भगवान भीष्म, वही लोग हम पर शासन करते हैं।”
“अधिरथ!” भीष्म ने गुस्से से कहा, और वासु के पिता तुरंत भीष्म के घुटनों पर गिर पड़े। “तुम्हारा बेटा तो बड़ा ही अकड़ू है। क्या वो ऐसे अशुभ शब्द बोलकर तुम्हारे राजा का अपमान करता है?”
“कमांडर,” अधिरथ ने सिसकते हुए कहा और वासु के खून और रगों में क्रोध उमड़ आया, “वह बच्चा है। कृपया उसे क्षमा कर दीजिए। उसे पता नहीं है कि वह क्या बोल रहा है।”
“यहीं तो तुम गलत हो, ड्राइवर,” भीष्म हँसते हुए बोले और ड्राइवर शब्द वासु के दिल को चुभ गया। “उसे बहुत कुछ पता है।” उसके चेहरे पर एक शरारती, उपहासपूर्ण मुस्कान आ गई।
“वह कोई सारथी नहीं है, महाराज,” वासु ने दांत पीसते हुए कहा। उसकी माँ ने बचपन से ही उसे यही बताया था, और यही बात उसे उसकी वास्तविक स्थिति का एहसास करा रही थी, न कि उस स्थिति का जो उन पर थोपी गई थी। “वह अंगा का असली राजा है।”
“पुत्र, तेरा पिता तो बस एक सारथी है,” भीष्म ने निर्मल चेहरे से कहा। “और अगर तुझे लगता है कि तू बड़ा होकर उससे राज्य छीन लेगा, तो तू गलत है। तुझमें इतनी शक्ति नहीं होगी, क्योंकि तू तो एक सूतपुत्र है, एक सारथी का पुत्र, एक सारथी का पुत्र। और राजा केवल क्षत्रिय ही हो सकता है। न अधिक, न कम। केवल क्षत्रिय ही राज्य पर शासन करता है और जो क्षत्रिय नहीं होते, वे युद्ध में मारे जाते हैं।” उन्होंने अपने चरणों में बैठे व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए कहा, “पुत्र, अपने पिता को देख। वह सूतपुत्र था और इसीलिए

जरासंध से हार गया। सूतपुत्र कुछ नहीं जानता। सूतपुत्र तो बस…कीड़ा- मकोड़ा होता है। तू राजा नहीं बन सकता। वास्तव में, तू राजा के आस-पास भी नहीं पहुँच सकता।”
वासु के दिमाग में बहुत सारी बातें चल रही थीं, लेकिन उस समय वह केवल इतना ही कह सका: "देखो... मैं... कोशिश करता हूँ।"
और यह देखकर भीष्म चौंक गए। अधिरथ अपने पैरों पर खड़े हो गए और उन्होंने आदरणीय भीष्म पितामह के प्रति इतनी शत्रुतापूर्ण भाषा बोलने के लिए अपने पुत्र के सिर पर थप्पड़ मारना शुरू कर दिया।
बूढ़े सेनापति ने पीछे हटकर आदेश दिया: “अधीरथ! तुम्हारा बेटा… वह तो मुसीबत है। तुमने महाराज की कुछ समय तक सेवा की है और इसके लिए मैं उसे केवल छठ पूजा के दिन ही कैद करने को तैयार हूँ। उसे सूर्यदेव के इस भव्य और सुंदर उत्सव को देखने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।”
“कैद? मेरे स्वामी, वह दुश्मन नहीं है…वह…वह…” अधिरथ कांपने लगा।
वह अतिक्रमणकारी है।
वासु ने सिर हिलाकर अपने पिता से कहा, “मैं दंड भुगतने के लिए तैयार हूँ। भगवान भीष्म, आपकी क्षमाशीलता के लिए धन्यवाद।”
और जैसे ही सैनिक उसे पकड़ने आए, वह मुड़ गया। तभी वासु की नज़र खिड़की के पास खड़े उस व्यक्ति पर पड़ी जो बैठक की शुरुआत में कमरे के अंदर घुस आया था।
उसने उलझे हुए बाल, सफ़ेद दाढ़ी, टेढ़े मुँह और झुके हुए शरीर वाले व्यक्ति को देखा। उसके हाथ में एक छड़ी थी और चेहरे पर मुस्कान थी। उसने केसरिया अंगवस्त्रम और केसरिया धोती पहनी हुई थी।
वासु उसे पहचान नहीं पाया, इसलिए वह अधिरथ को अपने साथ लेकर चला गया। कमरे से निकलते समय उसने आखिरी शब्द यही सुने:
“देवव्रत, उसके जैसे युवा लड़के में इतना साहस देखना बहुत दुर्लभ है,” उस रहस्यमय व्यक्ति की आवाज सुनाई दी। “शायद वह मैदान पर भी यही साहस दिखा सके।”
“ऐसी हिम्मत जिसे बढ़ावा नहीं देना चाहिए,” भीष्म ने आह भरते हुए अंत में उस रहस्यमय व्यक्ति का नाम बताया, “द्रोण।”

22

छठ पूजा सूर्यास्त के समय अत्यंत धूमधाम से मनाई गई। पर्वतीय देवियाँ, जिनमें अधिकतर महिलाएँ थीं, उपवास रखे हुए थीं, यहाँ तक कि पानी भी नहीं पिया था और गंगा नदी के भव्य तट पर एकत्रित हुई थीं। वहाँ कुंती, पांचाली, गांधारी, अन्य राज्यों की पत्नियाँ और पुत्रियाँ भी थीं। उनके पीछे उनके मित्र और परिवार के सदस्य उन्हें देख रहे थे। महिलाओं ने सूप की टोकरियों में अर्घ्य रखा था, जिसमें मिठाई, खीर, ठेकुआ, गन्ना, नींबू और केला जैसे फल थे, जो डूबते सूरज को अर्पित किए जाते थे। सितार और बांसुरी पर लोकगीत बजाए जा रहे थे। ढोल बजाए जा रहे थे।
महाराजा अन्य राजाओं, अपने सेनापतियों और सेनापतियों के साथ खड़े थे। दुनिया भर से आए सर्वश्रेष्ठ रसोइयों द्वारा भोजन पकाया जा रहा था, लेकिन वह केवल शाकाहारी भोजन था।
लेकिन वासु का कहीं कोई अता-पता नहीं था। वह इस बात से निराश था कि वह प्रतिष्ठित छठ पूजा समारोह का हिस्सा नहीं बन सका और यह बात उसे परेशान कर रही थी।
उसे एक छोटी सी कोठरी में बंद कर दिया गया था और उसके माता-पिता अपने बेटे को ऐसी हालत में देखकर लगभग रो पड़े थे। लेकिन उसे ज़रा भी बुरा नहीं लगा। उसने अपने पिता के सामने अपने अधिकार के लिए आवाज़ उठाई थी, जबकि उसके पिता ने ऐसा करने से इनकार कर दिया था। उसने 'ड्राइवर का बेटा' कहलाने का विरोध किया था। वह इससे कहीं बढ़कर था।
वासु को अहसास हुआ कि भीष्म एक निर्मम और क्रूर व्यक्ति थे। वे अपने पोतों — कौरवों और पांडवों—के लिए तो पितामह थे, लेकिन बाकी किसी के लिए नहीं। वे एक निर्मम योद्धा थे और वासु उनका तब तक सम्मान करते रहे जब तक उन्होंने भीष्म का अपमान नहीं किया।
जैसे ही रात हुई और चाँद उसका साथी बन गया, कोठरी की खिड़की की लोहे की जाली से चाँदनी की कुछ बूँदें अंदर आईं। वासु ने अंधेरे से एक आकृति को निकलते देखा।

वह शर्मिंदा था और उसने अपनी आँखें मलकर देखा तो सामने की आकृति केसरिया रंग में चमक रही थी। आकृति के सिर पर एक मुकुट था, गले में एक सुंदर आभूषण लटका हुआ था और एक चमकती हुई चुन्नी थी।
उसे एहसास हो गया कि वह कौन था।
Panchali.
जैसे ही वासु ग्रिल के पास पहुंची, उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई; उसके हाथ में एक थाली थी।
“क्या तुम यहाँ हो, अधिरथ के पुत्र?” उसने पूछा। “मुझे बताया गया था कि तुम यहाँ हो।”
“हां,” वासु ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया, अपने पैरों पर खड़ा होते हुए और चांदनी में खुद को दिखाते हुए।
दोनों एक-दूसरे को घूरते रहे, तभी उसने अपनी चुप्पी तोड़ी: "मैं... दरअसल, मैं चुपके से आपको यह देने आई थी।" उसने थाली दिखाई।
“चुपके से अंदर घुस आए?” वासु उत्सुक था।
“मेरी दासी जीवगर्भ से बात करने में व्यस्त है,” उसने कोठरी के पुलिस अधिकारी के बारे में कहा, “वह बात करने में बहुत माहिर है, इसलिए…”
“तो तुम यहाँ आकर मुझे दे सकते हो…” उसने मिठाइयों, लड्डुओं और खीर की ओर देखा। “मिठाइयाँ?”
उसने सिर हिलाया। वासु ने गौर किया कि उसकी आँखें गोल और भूरी थीं, जैसे किसी पेड़ की छाल। लेकिन वे सामान्य भूरी नहीं थीं। वे बादामी रंग की और शहद जैसी गाढ़ी थीं। हाँ, शहद ही उसकी आँखों की सुंदरता के लिए सही शब्द था। और वासु का ध्यान खींचने वाली एकमात्र दूसरी आँखें सुप्रिया की ही थीं।
उसके ख्याल मात्र से ही उसका सीना भारी हो गया और उसके मन में अतीत की घिनौनी यादें ताजा होने लगीं।
इससे वह बहुत दुखी हो गया। बहुत ज्यादा दुखी…
वासु ने वर्तमान को देखने के लिए कंधे उचकाए। और आश्चर्यजनक रूप से, यह सुंदर था।
“मैं कोई बहुत असभ्य व्यक्ति नहीं हूँ और यह मेरी असभ्यता थी…,” उसने क्षमाप्रार्थी स्वर में कहना शुरू किया, “आपको ऐसी स्थिति में डालना जहाँ

आपको बंद करना पड़ा। मैं ऐसा नहीं करना चाहती थी। मैंने सचमुच सोचा था कि आप घुसपैठिए हैं, न कि…”
“एक राजकुमार?”
“वैसे तो लोग कहते हैं कि तुम एक ड्राइवर के बेटे हो,” उसने उत्सुकता से कहा। “ये दोनों बातें कैसे काम करती हैं?”
इसे समझाना बहुत जटिल है।
"मुझे आजमाओ?"
"शायद बाद में।"
उसने सिर हिलाया; भावहीन भाव से, मानो वह हर शब्द को समझ रही हो, मानो वह इसका विरोध या खंडन नहीं करना चाहती हो। "मुझे लगता है कि आप हमेशा दूसरों के कार्यों का खामियाजा भुगतने वाले व्यक्ति हैं।"
वासु हां कहना चाहता था, लेकिन खुद पर तरस खाने का क्या फायदा? "तो आप मेरे लिए प्रसाद लाए। यह आपकी बहुत बड़ी मेहरबानी है।"
“बेशक, क्योंकि आप पूजा में नहीं आ सके और माँ हमेशा कहती हैं कि आपको हर उस व्यक्ति को प्रसाद देना चाहिए जो आपको महत्वपूर्ण और अच्छा लगे, और हर नेक स्वभाव वाले व्यक्ति को। लीजिए…” वह एक सोने का चम्मच लाई और उसे खीर में डुबोकर उन्हें दे दिया।
वासु ने उसे ले लिया। उसे खाते ही उसके मुँह में मीठा स्वाद फैल गया। फिर वह मुस्कुराया, और वह भी मुस्कुराई। "क्या मैं अच्छे स्वभाव का हूँ?" "लगता तो ऐसा ही है," उसने मुस्कुराते हुए कहा।
“आप हस्तिनापुर में कितने दिन रुकने की योजना बना रहे हैं?”
“ओह, मैं पाँच दिन से भी कम समय में अहिच्छत्र के लिए रवाना हो रही हूँ।” उनका इशारा पंचाल की राजधानी की ओर था, जो राज्य के उत्तरी भाग में हिमालय की तलहटी के रूप में स्थित थी। “क्या आप उससे पहले निकल पाएँगी?”
वासु ने सिर हिलाया। "हाँ, कल।"
“हमें मिलना ही होगा!” उसने उत्साह से कहा। “इससे बेहतर परिस्थितियों में,” वह थोड़ी देर रुकी।
वासु उसकी तारीफ करना चाहता था और उसे बताना चाहता था कि वह कितनी सुंदर है। वह उससे और भी अच्छी बातें कहना चाहता था, लेकिन वह बस इतना ही कह पाया: "प्रसाद लाने के लिए धन्यवाद।"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

23

एक दिन बाद जब वह लॉक-अप से बाहर निकला, तो उसके मन में सिर्फ एक ही बात थी: द्रोणा।
माता की डांट और पिता की चुप्पी सुनकर वासु ने पाण्डेश्वर मंदिर जाने का निश्चय किया, जहाँ द्रोणाचार्य को अंतिम बार देखा गया था। उसकी माता ने उसे बताया था कि द्रोणाचार्य ने ग्रीष्म ऋतु में शुरू होने वाले वर्तमान सत्र के लिए अपने गुरुकुल में विद्यार्थियों का प्रवेश शुरू कर दिया है। उसकी माता को यह जानकारी तब मिली जब एक अन्य रानी ने बताया कि उनके बच्चे को द्रोणाचार्य ने प्रवेश दे दिया है।
वासु को लगभग अलग-थलग महसूस हो रहा था। उसे पता ही नहीं था कि चयन प्रक्रिया पहले ही शुरू हो चुकी है। और उसके भीतर एक अजीब सी बेचैनी थी जो उसके गले तक पहुँच गई और उसे घुटन महसूस होने लगी।
“जाओ! जाओ! शायद अभी भी समय है,” उसकी माँ ने कहा था। “उसे मनाओ!”
वासु दौड़ पड़ा, उसका सीना जोश से फूल रहा था। और जब आखिरकार वह मंदिर परिसर में पहुँचा, तो उसने खुद को गोलाकार संरचना के भीतर पाया और उसके हाथ उसकी पीठ के पीछे बंधे हुए थे।
और वहाँ कोई नहीं था। मंदिर परिसर खाली था। वह बगीचे में इधर-उधर घूमने लगा, शायद किसी को ढूंढने की उम्मीद में, शायद द्रोण को। वह अपनी योग्यता साबित करना चाहता था; यह दिखाना चाहता था कि वह अपनी जाति से कहीं बढ़कर है। लेकिन वहाँ कोई नहीं था।
Instead, he found Panchali.
उनके साथ एक छोटा लड़का भी था जिसने उसे बांहों से पकड़ रखा था और उसे तीर चलाना सिखा रहा था। उनके सामने एक पेड़ की टूटी हुई छाल पर एक प्याला रखा था। पांचाली खिलखिला रही थी और वासु देख सकता था कि वे दोनों एक-दूसरे से छेड़छाड़ कर रहे थे।
उसे एक अजीब सी बेचैनी महसूस हुई; ईर्ष्या की बेचैनी।
“तुम यहाँ क्या कर रहे हो, सुतापुत्र?” उसके पीछे से एक आवाज़ आई।

वासु ने तुरंत मुड़कर देखा तो उसे एक दुबला-पतला, लंबा आदमी हाथ में छड़ी लिए हुए, जिस पर वह टिका हुआ था, और टेढ़े मुंह में पान के पत्ते चबाता हुआ दिखाई दिया।
“प्रणाम आचार्य जी,” उन्होंने हाथ जोड़कर प्रणाम किया, “मैं आपसे मिलना चाहता/चाहती हूँ। मैंने सुना है कि आप इस ग्रीष्मकालीन सत्र के लिए छात्रों की तलाश कर रहे हैं। मैं प्रवेश लेना चाहता/चाहती हूँ।”
उसने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। "आह। और ऐसा क्यों है?"
"शक्तिशाली बनने और योद्धा बनने के लिए।"
“क्या सच में राजा बनना है?” वह वासु के चारों ओर चक्कर लगाने लगा, उसके शब्दों में झूठ ढूंढने की कोशिश कर रहा था।
वासु झूठ नहीं बोलना चाहता था। "हाँ।"
"लेकिन आपको ऐसा क्यों लगता है कि मैं आपको चुनूंगा?"
मैं एक अच्छा तीरंदाज हूँ।
“और मेरे द्वारा अभी-अभी स्वीकार किए गए अन्य सौ छात्र भी ऐसे ही हैं!” वह चिल्लाया। “किसी चीज़ में अच्छा होना साधारण बात है। आपको महान होना होगा। सर्वश्रेष्ठ! मैंने इस सत्र के लिए अपने अधिकांश छात्रों को स्वयं चुना है और दुर्भाग्य से मेरे पास अब कोई स्थान नहीं बचा है, खासकर एक सुतापुत्र के लिए। आप देर से आए हैं।”
लेकिन मुझे पता ही नहीं था कि यह शुरू भी हो चुका है…
“तुम्हें क्या पता है या क्या नहीं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। तुम्हें पता होना चाहिए था,” उसने कहा। “अगर तुम इतने ही महान होते, तो मुझे तुम्हारे बारे में पता होता और मैं तुम्हें ले लेता। तुम तो बस औसत दर्जे के हो।”
“तुमने मुझे देखा तक नहीं! तुमने मुझे मौका तक नहीं दिया!” वासु ने विरोध जताया।
"एक सच्चा नेता अवसर की तलाश तब करता है जब कोई अवसर मौजूद न हो, वह अवसर के आने का इंतजार नहीं करता।"
उसी क्षण वासु को एहसास हुआ कि पांचाली और उसके बगल में बैठा लड़का उनकी बातों पर ध्यान दे रहे थे। उसे शर्मिंदगी महसूस हुई।
“तुममें ऐसी क्या खास बात है?” उसने पूछा।
“मैं आपको दिखा सकता हूँ, आचार्यजी।”

"मैं हूँ…"
फिर वह वासु के सामने, उससे कुछ ही इंच की दूरी पर आकर खड़ा हो गया; उसकी आँखें तूफ़ानी बादलों की तरह धूसर थीं। “भीष्म ने कमरे में जो कहा था, वह सही था। तुम क्षत्रिय नहीं हो, सूतपुत्र। इसलिए अपने दिवास्वप्न देखना बंद करो। चालक बनो या शायद मंत्री बनो। लेकिन राजा… छी! यह तो एक सूतपुत्र का सपना नहीं होना चाहिए।”
और इतना कहकर वह मंदिर की ओर चलने लगा।
वासु ने अपनी मुट्ठी भींच ली। वह गुस्से से भरा हुआ था; भयभीत भी। वह ज़मीन पर हाथ पटकना चाहता था और आसमान को ज़मीन पर गिरा देना चाहता था। लेकिन सबसे ज़्यादा, वह उस बूढ़े आदमी को घूंसा मारना चाहता था।
वासु को असहनीय क्रोध आ रहा था। वह रोना चाहता था। उसे अपने आप पर तरस आ रहा था। वह जानता था कि द्रोण यह सब सिर्फ इसलिए कर रहे हैं क्योंकि वह सूतपुत्र हैं। इसके पीछे कोई और कारण नहीं था।
और फिर उसने अकल्पनीय काम कर दिखाया।
वह पंचाली और लड़के की ओर गुस्से से बढ़ा।
पांचाली ने पूछा, “क्या हुआ? आप गुरु द्रोण से क्यों झगड़ रहे थे?”
लेकिन वासु उस सवाल का जवाब नहीं देना चाहता था।
उसके पास बहुत कम समय था।
“मुझे एक तीर और एक धनुष दो,” उसने उसके बगल में खड़े लड़के से कहा।
“ये कौन है, पांचाली?” लड़के ने पूछा।
“बस मुझे दे दो!” उसने लड़के को आदेश दिया।
“यह मेरा धनुष है।”
“उसे दे दो,” पांचाली ने ताना मारा। “यह तो बस एक धनुष है।”
“नहीं, मैं तुम्हें सिखा रहा था,” लड़के ने कहा। “उसकी हिम्मत कैसे हुई अचानक कहीं से आने की… मुझे तो पता भी नहीं…”
वासु ने इंतजार नहीं किया। उसने लड़के को आगे धकेल दिया और इस प्रक्रिया में उसका तरकश और धनुष छीन लिया। उसने द्रोण की ओर देखा, जो मंदिर के द्वार की ओर लड़खड़ाते हुए बढ़ रहा था।
लड़के ने पलटवार किया और जवाबी कार्रवाई की, लेकिन आगे नहीं आया, क्योंकि वासु के पास हथियार था।
उसने धनुष पर पांच बाण बांधे और द्रोण की ओर निशाना साधा।

“तुम ये क्या कर रहे हो…” पांचाली चीखने ही वाली थी। “क्या तुम उसे मार डालोगे?”
वासु ने गहरी सांस ली।
और उसने पाँचों तीर चलाए।
पांचाली ने अपनी आंखें बंद कर लीं। उसके बगल में बैठा लड़का भी ऐसा ही कर रहा था।
वासु ने ऐसा नहीं किया। वास्तव में, उसने देखा कि उसके इस कृत्य ने द्रोण को अपनी जगह पर ही रोक दिया। वह आश्चर्य से जम गया था।
मंदिर के द्वार पर, जहाँ द्रोण गुरु द्रोण प्रवेश करने वाले थे, तीर दरवाजे के कोनों के चारों ओर इस तरह से संरेखित हो गए थे कि वे गुरु द्रोण को एक बार भी नहीं लगे।
इसी सटीकता को देखकर द्रोणा आश्चर्य और प्रसन्नता से मुड़ गए।
वासु मुस्कुराया।
पांचाली ने यह देखा और तुरंत उसकी वीरता पर ताली बजाने लगी। द्रोण दंग रह गए और पांचाली के बगल में बैठा लड़का गुस्से से भौंहें चढ़ा रहा था।
“वासु, तुम तो कमाल हो!” उसने कहा और मुंह फुलाए लड़के की ओर मुड़ी। “अच्छा अर्जुन—मुझे लगता है कि आखिरकार तुम्हें अपना मुकाबला मिल ही गया।”

24

हालांकि वह दिन काफी रोमांचक था और उसे द्रोण जैसे गुरु को अपमानित करने का पछतावा था, वासु ने ऐसे विचारों को नजरअंदाज कर दिया और अब ध्यान केंद्रित किया।
यहां। उसके साथ।
हाँ। वह।
वह ठीक उसके सामने बैठी थी, जब वे एक छोटे से तालाब में नाव चला रहे थे जहाँ हंस तैर रहे थे। उनके चारों ओर जंगल था और घास चरते हुए खरगोश दिखाई दे रहे थे।
यहां आने का विचार पांचाली का ही था।
एक दिन सुबह-सुबह वह उसके कमरे में आई और दरवाजा खटखटाया। उसे अपने साथ चलने के लिए किसी की ज़रूरत थी। वासु तुरंत मान गया, लेकिन वह यह भी जानता था कि द्रोण के साथ जो कुछ हुआ था, उसके बाद पांचाली ने उसे बुलाया था।
वह सरकंडे की छड़ी से नाव को तालाब में चला रहा था और चुपचाप उसे देख रहा था। उसके पैरों में पायल थी जिससे छन-छन की आवाज़ आ रही थी और उसके झुमके कंधे तक लटक रहे थे। उसके बाल कसकर गुंथे हुए थे। उसके होंठों पर चेरी रंग का लिपस्टिक लगा था ताकि वे और भी चमकदार दिखें।
वासु पांचाली की सुंदरता की प्रशंसा करता रहा, तभी पांचाली ने कहा: "मुझे दो बातों के लिए आपका आभारी होना है।"
"क्या?"
"सबसे पहले तो तुमने मुझे माफ कर दिया... तुम्हें पता है... तुम्हें जेल में डालने के लिए।"
"दूसरा?"
"उस अहंकारी गुरु द्रोण को यह दिखाने के लिए कि तुम वास्तव में क्या कर सकते हो," उसने मुस्कुराते हुए कहा।
वासु मुस्कुराए बिना नहीं रह सका, हालाँकि उसके बाद से द्रोण ने उससे कोई संपर्क नहीं किया था। वासु के किए पर द्रोण स्तब्ध रह गए और चले गए। उसके

बाद कोई खबर नहीं मिली। वासु सोच रहा था कि क्या उसे अस्वीकार कर दिया गया है और अगर ऐसा है तो कोई बात नहीं। चाचा सत्या उसे सिखा सकते थे। वह द्रोण से बार-बार भीख नहीं माँग सकता था।
मुझे लगता है कि आप उसे पसंद नहीं करते।
“कोई नहीं करता। वह घमंडी और बदतमीज़ है। वह मुझे अपने सबसे होनहार शिष्य अर्जुन के साथ समय बिताने के खिलाफ था। हालाँकि तीरंदाजी में तुम उससे कहीं बेहतर हो।”
“क्या तुम उसे पसंद करती हो?” उसने धीमी आवाज़ में पूछा।
"कौन?
उन्होंने पांडवों का जिक्र किया। अर्जुन के बारे में उन्हें बहुत कम जानकारी थी, क्योंकि उन्हें अपने गुरु पर तीर-कमान चलाने का मौका मिला था। वासु जानते थे कि उन्होंने हस्तिनापुर में बहुतों को नाराज कर दिया था। दरअसल, अर्जुन एक शिष्य थे। उन्होंने बचपन से ही तीर-कमान चलाना सीख लिया था और वे एकाग्रचित्त बालक थे। वे पूर्व राजा पांडु के पुत्र थे, संन्यासी बनने से पहले और वनवास में उनकी मृत्यु हो गई थी। उनकी माता कुंती अपने पांच पुत्रों - पांडवों - के साथ आई थीं और धृतराष्ट्र से महल में ठहरने का अनुरोध किया था। धृतराष्ट्र मान गए - वासु को आश्चर्य हुआ, क्योंकि वे अंततः एक निर्मम व्यक्ति थे।
शायद वासु को उसके बारे में जितनी जानकारी थी, उससे कहीं अधिक बातें उसके व्यक्तित्व में निहित थीं।
“अर्जुन?” उसने पूछा और तभी वासु ने देखा कि वह शरमा गई थी। “अरे नहीं, वह… वह प्रतिभाशाली और बुद्धिमान तो है, लेकिन थोड़ा घमंडी है क्योंकि उसके आसपास बहुत सारे प्रशंसक हैं जो उसकी तारीफ करते रहते हैं।”
"शायद वह इतना अच्छा हो सकता है।"
“हाँ, वो है, लेकिन एक बात याद रखना, अहंकार बड़े से बड़े नायकों को भी गिरा देता है,” उसने मुस्कुराते हुए कहा। “क्या तुम्हें लगता है कि तुम अहंकारी हो, वासु?”
वासु को खुद भी नहीं पता था कि वह अच्छा है या नहीं। वह जानता था कि वह तीरंदाजी में अच्छा है, लेकिन उसे इस बात का घमंड नहीं था। "मुझे नहीं लगता।"

“यह तो अच्छी बात है। मुझे कुछ-कुछ पता था। आप…आप एक अच्छे इंसान लगते हैं।”
“लगता है?” उसने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।
वह खिलखिलाकर हंस पड़ी। “मुझे खुशी है कि तुमने उस द्रोण को सबक सिखा दिया। तुम्हें पता है, मेरे पिता और द्रोण…बचपन में बहुत अच्छे दोस्त थे। उस समय द्रोण एक गरीब ब्राह्मण बालक थे, जिन्हें भीष्म ने हस्तिनापुर का राजगुरु बनने के लिए गोद लिया था, सिर्फ इसलिए कि उनके गुरु एक ही थे: भगवान परशुराम।”
“इससे पहले कि आप आगे बढ़ें, मैं पूछना चाहता था: क्या वह सचमुच अमर है? क्या उसका अस्तित्व है?” वासु को हमेशा इस बात की जिज्ञासा रहती थी।
“वह विष्णु का अवतार है। बेशक है। हालांकि मैंने उसे कभी देखा नहीं है।” वासु जवाब से संतुष्ट नहीं था। यह सब कुछ बहुत धार्मिक था और उसे बिल्कुल भी व्यावहारिक नहीं लगा, लेकिन वह चुप रहा, क्योंकि वह द्रोण और अपने पिता के बारे में अपनी कहानी सुनाती रही।
“मेरे पिता ने बचपन में द्रोण से एक वादा किया था: बड़े होने पर वे अपनी सारी संपत्ति आधी-आधी बाँट लेंगे। तो, मेरे पिता आगे चलकर पंचाल के राजा बन जाते हैं, जबकि द्रोण गरीब होते जाते हैं और उनका एक बेटा अश्वत्थामा भी हो जाता है। द्रोण को जब पता चलता है कि उनका दोस्त राजा बन गया है, तो वे वहाँ जाकर अपने राज्य का आधा हिस्सा माँगते हैं। मेरे पिता उन्हें समझाने की कोशिश करते हैं कि जब उन्होंने बचपन में उनसे यह वादा किया था, तब वे भोले थे, उन्हें कुछ पता नहीं था। द्रोण बहुत क्रोधित हो जाते हैं… बेहद क्रोधित। और वे बदला लेने की कसम खाते हैं।” उसने आँखें घुमाईं। “कहानी नाटकीय लगती है, लेकिन यह अपना उद्देश्य पूरा करती है: यह दिखाना कि द्रोण कितने अवसरवादी थे।”
वासु चुप था। बचपन में किए गए वादे अक्सर गंभीरता से नहीं लिए जाते थे। लेकिन फिर... यह तो कहानी का सिर्फ एक पहलू था।
“इसीलिए वो तुम्हें पसंद नहीं करता?”
“हाँ,” पांचाली ने सिर हिलाया। “और इसलिए भी क्योंकि जाहिर तौर पर मैं अर्जुन का ध्यान भटकाती हूँ। मैं उसका ध्यान क्यों भटकाऊँगी? उफ़!” वह गुस्से से घूरने लगी, फिर उसकी नज़र तालाब पर पड़ी और वह बड़ा हो गया। “भगवान विष्णु की कृपा से, वासु! देखो!”

उसने मुड़कर देखा तो एक चमकती हुई मछली उनकी नाव के आसपास तैर रही थी।
“यह एक ड्रैगनफिश है,” उसने मुस्कुराते हुए कहा। “देखो, यह बायोल्यूमिनेसेंट है।”
वासु को विश्वास नहीं हो रहा था कि दुनिया में इस तरह की मछली भी मौजूद है, जो उसके सामने पानी के अंदर चमक रही थी और पूरे तालाब को रोशन कर रही थी।
“क्या हम इसे छू सकते हैं?” उसने उलझन में पूछा।
वासु को पता नहीं था कि उन्हें ऐसा करना चाहिए या नहीं, लेकिन उसने अपना हाथ तालाब में डाला और धीरे से मछली की ओर बढ़ा, बस उसे हल्के से थपथपाया।
मछली चिपचिपी और बहुत संवेदनशील थी।
“हां, आप कर सकते हैं। मुझे लगता है कि इसे यह पसंद है।”
"ओह, ओह," उसने हाथ नीचे करते हुए मुस्कुराते हुए कहा, लेकिन वह घबरा रही थी।
वासु ने अपना हाथ उसके हाथ के पास लाकर पूछा: "क्या मैं कर सकता हूँ?"
उसने सिर हिलाया; उसकी निगाहें अभी भी मछली पर टिकी हुई थीं। वासु ने उसका हाथ पकड़ा और उसे पानी में डुबोया और दोनों ने मछली को महसूस किया। लेकिन वासु ने मछली की तरफ नहीं देखा। वह उसे देख रहा था और मुस्कुरा रहा था। किसी कारणवश, चमकती हुई मछली पांचाली की मुस्कान की चमक के सामने थोड़ी फीकी सी लग रही थी।
“मुझे हस्तिनापुर बहुत पसंद है,” उसने ऊपर देखा और पृष्ठभूमि में, वासु के साथ, उसने क्षितिज पर हाथियों के सुंदर शहर को देखा। “मैं यहीं रहना चाहती हूँ। पंचाला तो हस्तिनापुर की आधी सुंदरता है।”
क्योंकि उन्होंने दूसरों से कमाए पैसों से इसे सजाया-संवारा है—वासु कहना चाहता था। लेकिन फिर वह चुप रहा।

जैसे ही वे तालाब के किनारे पहुँचे, वासु ने एक परिचित आकृति को देखा, जो भावहीन होकर उनका इंतज़ार कर रही थी। उसके कान लाल थे और गाल गुलाबी।
द्रोण की तरह उसकी तूफानी धूसर आँखें क्रोध से भरी वासु को घूर रही थीं।
वह अर्जुन था।

वासु ने नाव को किनारे से बांध दिया, तभी पांचाली ने अर्जुन का अभिवादन करते हुए कहा: "अच्छा, लीजिए आप यहाँ हैं!"
“तुम उसके साथ क्या कर रहे हो?” अर्जुन ने शरारती बच्चे की तरह पूछा। “खैर, तुम्हारे गुरु को यह बात पसंद नहीं है कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, इसलिए,” उसने वासु के हाथ में अपना हाथ डालते हुए कहा, “मैंने सोचा कि मैं वासु के साथ कुछ समय बिताऊँगी।”
“वह तो सूतपुत्र है!” अर्जुन कराह उठा; बिल्कुल अपने गुरु की तरह बोलते हुए।
वासु ने गौर किया कि वह उससे थोड़ा छोटा था और उसके मासूम चेहरे पर हमेशा एक उदास भाव बना रहता था।
“सुतापुत्र, तुमने मेरे धनुष और बाण चुराकर मेरा अपमान किया है,” अर्जुन ने अपनी नाक फुलाते हुए कहा, “तुमने मेरे गुरु का भी अपमान किया है।” “अपने बचाव में,” वासु ने शरारती मुस्कान के साथ कहा, “मैंने आपसे विनम्रता से पूछा था।”
“तुम दूसरे धनुर्धर का धनुष इस्तेमाल नहीं करते। और तुम खुद को मुझसे श्रेष्ठ दिखाकर मेरा अपमान करते हो।” अर्जुन ने सिर हिलाया। “तुम नहीं हो।” वह वासु के करीब आया, लेकिन उसकी लंबाई वासु की आधी भी नहीं थी। वासु उससे कहीं लंबा था। “गुरु द्रोण कहते हैं कि मैंने अब तक जितने भी धनुर्धर देखे हैं, उनमें मैं सर्वश्रेष्ठ हूँ।”
“मुझे यकीन है कि तुम हो,” वासु ने हंसते हुए कहा।
“तुम्हें यकीन नहीं होगा,” अर्जुन ने आह भरी। “अच्छा, पांचाली को सबक सिखाने और अपने मन को शांत करने के लिए, क्यों न हम एक… एक प्रतियोगिता करें?”
“मुझे तुम्हारी इंद्रियों की परवाह नहीं है, बच्चे,” वासु ने मुंह बनाते हुए कहा। “मैं किसी को यह साबित नहीं करना चाहता कि मैं कितना अच्छा या कितना बुरा हूँ।”
और जब वह पांचाली के साथ जाने लगा, तभी अर्जुन ने कहा: "अच्छा, मैं तुम्हें गुरुकुल में प्रवेश दिलाने में मदद कर सकता हूँ।"
वासु थम गया। एकदम जम गया। उसने अपना सिर घुमाकर देखा तो अर्जुन मुस्कुरा रहा था, मानो उसने वासु के दिल की धड़कन को छू लिया हो।

“जी हाँ। मैंने गुरुजी से पूछा कि आपको उनसे क्या चाहिए,” वह थोड़ा रुका और शरारती अंदाज़ में हँस पड़ा। “मेरी सिफ़ारिश आपके लिए काफ़ी फ़ायदेमंद साबित हो सकती है। अगर आप जीत जाते हैं, तो ज़ाहिर है, आप गुरुकुल में होंगे। और आप हमारे साथ उज्जैनक जाएँगे और मार्शल आर्ट और आधुनिक युद्ध कला सीखेंगे।”
वासु ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। वह उस नन्हे बदमाश को दिखा सकता था कि वह अर्जुन से बेहतर है। लेकिन फिर... "अगर मैं हार गया तो?" उसने पूछा। उसे अपनी संभावनाओं का पता लगाना था।
“अच्छा, सूतपुत्र। तुम एक सारथी के पुत्र हो। तो फिर…” उसने कंधे उचकाए, मानो यह दिखा रहा हो कि वह सोच रहा है जबकि वह पहले ही सोच चुका था, “अच्छा, मैं क्या कहूँ? उम्म… तुम मुझे और पांचाली को हस्तिनापुर की सड़कों पर मेरे रथ पर बिठाकर ले जाओगे ताकि सबको दिखा सको कि तुममें सिर्फ़ अकड़ और अहंकार है और मैंने अपनी कुशलता से तुम्हें तुम्हारी औकात दिखा दी।” पांचाली चीख पड़ी, “अर्जुन! ये सब बकवास है। तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। मैंने तुम्हें कितनी बार कहा है कि अपने अहंकार का इस तरह इस्तेमाल मत करो।”
अर्जुन अप्रभावित प्रतीत हो रहा था। वह बस मुस्कुरा रहा था मानो इस पल का आनंद ले रहा हो। वासु भी अविचलित रहा; उसने अपने जबड़े कसकर भींच लिए और कुछ देर अर्जुन को देखता रहा, फिर उसने पांचाली की ओर देखा।
“तुम्हें यह सब करने की ज़रूरत नहीं है,” पांचाली ने कहा। “ऐसा मत करो। सच में। तुम इस प्रतिस्पर्धा के चक्कर में बहुत ऊपर हो।”
वासु गुरुकुल में प्रवेश लेना चाहता था।
और वह अगले दिन अंगा वापस जाने वाला था। यही उसका एकमात्र अवसर था।
“ठीक है,” वासु ने कहा, और अर्जुन को खुशी से आह भरने का मौका दिया। “चलो एक प्रतियोगिता करते हैं।”

25

वासु जानता था कि अर्जुन बेहतर प्रशिक्षित था।
उन्हें बचपन से ही द्रोण गुरु मिले थे, जबकि वासु के गुरु स्वयं और चाचा सत्या थे। और फिर भी, वह यहाँ प्रतिस्पर्धा कर रहे थे।
क्या मैं मूर्ख हूँ? शायद।
वे जंगल में थे। वासु ने सबसे पहले देखा कि जहाँ अर्जुन उसे ले जा रहा था, वहाँ एक पुराना बलूत का पेड़ था जिसकी एक टहनी से सोने से भरी एक पतली बोरी लटक रही थी। उसके साथ उसका घोड़ा भी था, जिस पर सोने की और भी बोरियाँ लदी हुई थीं।
अर्जुन पहले से ही पूरी तैयारी के साथ आया था।
वासु और पांचाली एक साथ खड़े थे, जबकि अर्जुन अपने धनुष और बाण के साथ प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने मुड़कर कहा, "योजना यह है कि... बोरी में से एक सिक्का बाहर निकाल दिया जाए।"
“एक सिक्का?”
“हाँ, बिल्कुल। एक सिक्का।” वह बोरी के पास गया। बोरी छोटी थी। मुट्ठी भर, कह सकते हैं। अर्जुन ने उसे और कसकर पकड़ा, यह दिखाने के लिए कि उसमें सिक्के हैं। “तुम्हें इसे इस तरह से मारना है, और मुझे नहीं पता तुम यह कैसे करोगे, कि इसमें से सिर्फ एक सिक्का निकले। न ज़्यादा, न कम।”
यह असंभव है।
वासु रणनीति बनाने लगा। अगर वह इस तरह से भी बिछुआ पीटता, तो भी इस बात की संभावना थी कि बिछुआ में इतना बड़ा छेद हो जाए कि एक से अधिक सिक्के बाहर निकल सकें।
अर्जुन यह कैसे कर पाएगा?
“क्या तुम पहले जाना चाहोगे?” अर्जुन ने अपने मोटे होठों पर मुस्कान लिए पूछा।

वासु ऐसा नहीं करना चाहता था। हमेशा पहले यह देखना बेहतर होता है कि आपका प्रतिद्वंदी कितना मजबूत है। "चूंकि आपने ही हमारे बीच यह प्रतियोगिता होने दी है, तो आप क्यों नहीं करते?"
अर्जुन एक पल के लिए थम गया, मानो उसे उम्मीद थी कि वासु अपने अहंकार के आगे झुक जाएगा और उस पर अमल करेगा।
“ठीक है,” अर्जुन ने कंधे उचकाते हुए कहा। “मुझे खुशी होगी। याद रखना…” उसने अपने धनुष पर तीर चढ़ाना शुरू किया। “अगर मैं जीत गया, तो तुम्हें मुझे घुमाना पड़ेगा।”
वासु ने दांत पीस लिए। वह इस तरह अपमानित नहीं होना चाहता था।
“और अगर मैच ड्रॉ हो जाए तो?” उसने पूछा। “अगर तुम करोगे, तो मैं भी करूँगा?”
“तो हम फिर से कोशिश करेंगे। और फिर से। जब तक कोई हार न जाए,” अर्जुन ने कहा। “लेकिन यह असंभव है। जैसा कि आप देख रहे हैं, ऐसा होना बहुत ही दुर्लभ घटना है, यह कोई साधारण प्रतियोगिता नहीं है।”
वासु ने सिर हिलाया।
वह अर्जुन की तकनीक देखना चाहता था, यह सोचकर कि वह यह कैसे करेगा; बोरी से एक सिक्का कैसे निकालेगा।
अर्जुन तैयार हो गया। वासु ने उसे गहरी सांस लेते हुए और इस काम में सहयोग के लिए इंद्रदेव को पुकारते हुए सुना। और उसने धीमी आवाज़ में कहा कि कैसे तूफान और हवाएँ उसकी मदद करेंगी।
वासु ने देखा कि अर्जुन ने लगभग अपनी आँखें बंद कर ली थीं और उसका पूरा ध्यान बाण पर केंद्रित था। बस यही बात थी। वासु को ऐसी ही एकाग्रता की चाह थी। इस समय, उसे इस बात से ईर्ष्या हो रही थी कि अर्जुन इतनी कम समय में इतनी एकाग्रता कैसे प्राप्त कर लेता है। वह जानना चाहता था कि वह यह कैसे करता है। आखिर इसका रहस्य क्या है?
और फिर उसने गोली चला दी।
यह अप्रत्याशित था। यह अचानक हुआ। वासु अचंभित रह गया।
और फिर उसने सुना।
बोरी के खड़कने की आवाज।
और एक सिक्के से आवाज आ रही थी।
बस जमीन पर गिरना और लुढ़क जाना।

वासु की आंखें यह देखकर दंग रह गईं कि केवल एक ही सिक्का निकला था। तीर ने बोरी में छेद करने के बजाय उसके कोने से फिसलते हुए सिक्के को बाहर निकलने का मौका दे दिया। और फिर तीर सूंड से जा टकराया।
एक पल के लिए वासु को यकीन नहीं हुआ कि ऐसा हो गया है। उसने एक गहरी साँस ली और बोरी की ओर चल पड़ा, अर्जुन के बाण से बने घाव को देखने के लिए। दूर से भी वह घाव इतना सटीक था। वह बोरी से लगभग पंद्रह गज दूर था।
“यह…” वासु ने कहना शुरू किया।
“प्रतिभाशाली? मुझे पता है,” उसने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। “अब तुम्हारी बारी है।”
वासु भयभीत हो गया; एकदम सहम गया। अचानक उसे पछतावा हुआ कि उसने एक प्रशिक्षित धनुर्धर की चुनौती स्वीकार कर ली थी। लेकिन फिर, वह शांत भाव से अर्जुन के पास गया और धनुष से एक बाण उठा लिया।
पांचाली की आवाज सुनकर उसने उसे ठीक किया:
“वासु, तुम्हें ऐसा करने की जरूरत नहीं है।”
दरअसल, मुझे यही करना होगा।
वासु ने अर्जुन द्वारा अभी-अभी टहनी पर टांगे गए नए बोरे के कोने पर निशाना साधा। उसकी निगाहें बोरे के मुड़े हुए कोने पर टिकी हुई थीं।
मुझे उसे मारना होगा।
लेकिन ऐसा करने की संभावना बिल्कुल असंभव थी। और अर्जुन ने यह कारनामा कर दिखाया था। इतने घमंडी और अभिमानी स्वभाव के बावजूद, अर्जुन वाकई एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे।
मैं वैसा नहीं कर सकता। मुझे इसे अलग तरीके से करना होगा।
उसने रणनीति बनाना शुरू कर दिया।
“जब भी भीड़ हो, अपने आस-पास की चीजों का हमेशा इस्तेमाल करना, बेटा,” सत्य ने उसे बहुत समय पहले कहा था।
आस-पास? वासु को एहसास हुआ कि कोई रास्ता है। उसके होठों पर मुस्कान आ गई। उसने अपनी आँखें भी बंद कर लीं। उसने हवा की हल्की-हल्की खुशबू को महसूस किया। उसने डैफ़ोडिल और ऑर्किड की महक को अपनी नाक में समाने दिया। उसने अपने आस-पास की प्रकृति के हर तत्व को महसूस करने की पूरी कोशिश की और अंत में तीर को महसूस करने का प्रयास किया। और जल्द ही, तीर उसका एक हिस्सा बन गया। वह वही बन गया।

और फिर उसने गोली चला दी।
उसके दिल में एक अजीब सी बेचैनी थी, उसकी घबराहट चरम पर पहुंच गई थी।
वह हार नहीं सकता था। वह इस तरह शर्मिंदा नहीं हो सकता था।
“ये क्या…” उसे अर्जुन की हांफने की आवाज सुनाई दी।
वासु ने यह देखने के लिए अपनी आंखें खोलीं कि उसने कहाँ मारा था।
तीर टहनी पर लगा था, बोरी पर नहीं। जब एक धड़कता हुआ तीर टहनी पर लगा, तो वह टूट गई और बोरी ज़मीन पर गिर पड़ी। वासु ने अनुमान लगाया था कि बोरी इतनी ऊँची नहीं थी कि इतनी ज़ोर से गिरे और इतने सारे सिक्के बिखर जाएँ। साथ ही, उसने यह भी देखा था कि बोरी ऊपर से थोड़ी सी ही बंद थी, इसलिए ज़्यादा सिक्के बाहर नहीं निकल सकते थे। मुश्किल से सिर्फ़ एक ही सिक्का निकल सकता था।
वासु, पांचाली और अर्जुन ने देखा कि एक सिक्का थैली से गिरकर उससे कुछ मीटर दूर पड़ा हुआ था।
“तुमने कर दिखाया!” पांचाली ने मुस्कुराते हुए वासु को बगल से गले लगा लिया।
अर्जुन क्रोधित होकर चारों ओर घूमा—जांच करने के लिए। और फिर उसने कहा, “सुतापुत्र! मेरा मानना है कि तुम्हें यहाँ आकर इसे देखना चाहिए।” पांचाली के साथ चलते हुए वासु ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं और देखा कि अर्जुन किस ओर इशारा कर रहा था: थैली से एक और सिक्का सचमुच फिसल गया, लेकिन केवल आंशिक रूप से।
लेकिन यह जमीन को छू रहा था। धरती को।
नहीं।
“अर्जुन, तुम इसे नहीं गिन सकते,” पांचाली ने विरोध किया। “यह जायज़ है।” “उसे इसका जवाब देने दो,” अर्जुन मुस्कुराया। “सुतापुत्र, मुझे बताओ, क्या एक अनुभवी धनुर्धारी इतनी छोटी सी गलती भी बर्दाश्त करेगा या वह पूर्णता की तलाश करेगा? यह मैं तुम पर छोड़ता हूँ।”
वासु ने अपने जबड़े भींच लिए। वह जानता था कि अर्जुन सही कह रहा था। गुरुकुल में साधारणता के लिए कोई जगह नहीं थी और वासु ने अभी-अभी साबित किया था कि वह साधारण है। वह यह कहना नहीं चाहता था और वह जानता था कि उसके शरीर का हर कण उस बात को नकार रहा था जो वह कहने वाला था: "तुम्हारा रथ कहाँ है?"

“मुझे यह पसंद नहीं है,” पांचाली ने विरोध जताया।
“लेकिन यह तो शर्त थी,” अर्जुन ने कहा। “ड्राइवर! कृपया इसे आगे बढ़ाएं।” और सूर्यास्त के नारंगी रंग के आकाश में, वासु ने रथ पर सवार होकर अपने घोड़ों की लगाम ढीली की और हस्तिनापुर की गलियों में घूमने लगे। शहर का हर व्यक्ति उन्हें देख रहा था। कुछ लोग अचंभित रह गए, कुछ मुस्कुराए।
भारी मन और नम आँखों से वासु रथ को महल की ओर जाने वाले टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर ले गया और जैसे ही वह महल के अंदर पहुँचा—
उसने अधिरथ और उसकी माँ को देखा, जो यह सब देखने के लिए बाहर आई थीं। वहाँ अर्जुन के भाई भी थे, जो अर्जुन की तरह ही उपहासपूर्वक हँस रहे थे, जबकि अर्जुन इस बात से खुश था कि उसने खुद को बेहतर साबित कर दिया था।
महल के सबसे दूर कोने में द्रोण को अपनी छड़ी पर झुके हुए और वासु को टकटकी लगाए हुए देखकर उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।
उसे एक और भी तीव्र पीड़ा महसूस हुई। उसने पहले कभी इतना नीचा महसूस नहीं किया था। उसने कभी ऐसा महसूस नहीं किया था कि हस्तिनापुर के हाथियों ने उसकी आशाओं, उसके सपनों को कुचल दिया हो। वह महसूस कर सकता था कि उसका हृदय सागर की गहराइयों में डूब रहा है और उसकी सारी ऊर्जा समाप्त हो रही है। लेकिन चाहे वह कैसा भी महसूस करे, उसे एहसास हुआ कि वह काफी अच्छा नहीं है। उसे एहसास हुआ कि वह बस एक और...
और फिर उसने उसे देखा। सफेद कवच और बर्फीली दाढ़ी वाला आदमी। वह तमाशा देखने आया था।
भीष्म।
जिस व्यक्ति को वासु ने चुनौती दी थी कि वह यह साबित करेगा कि वह राजा बन सकता है।
और अब…वह एक सारथी था। महज एक ड्राइवर।
यही उसका भाग्य था।
अर्जुन ने उसे उसका अंजाम दिखा दिया।

भीष्म बीच में आकर इस बकवास को रोक सकते थे, लेकिन वे मन ही मन मुस्कुरा रहे थे। वासु भीष्म के चेहरे के भाव समझ गए: यह तो हद से ज़्यादा होशियारी दिखाने का नतीजा था।
और फिर वह चला गया।
“बस करो, वासु! अब तुम्हें यह सब करने की ज़रूरत नहीं है। अर्जुन,” पांचाली ने कर्कश स्वर में कहा, “तुमने उसे बहुत अपमानित कर दिया है।”
और जैसे ही वासु ने रथ रोका, पांचाली दौड़कर बाहर निकल गई और अर्जुन को अकेला छोड़ दिया।
लेकिन अर्जुन अप्रभावित रहे, वे रथ से उतरे और वासु को देखने के लिए आगे आए।
उसने बोरी में से वही सिक्का जमीन पर उछाला और कहा: "ये लो तुम्हारी टिप, ड्राइवर।"
वासु ने उसे उठाया नहीं। वह चुपचाप सिर झुकाए बैठा रहा, ताकि रोना किसी को दिखाई न दे। वासु जानता था कि वह हस्तिनापुर नहीं आएगा। वह तीरंदाजी छोड़ देगा। और वह यह भी जानता था कि वह इन चीजों में अच्छा नहीं है।
और फिर वह थोड़ी देर बाद रुककर आगे बढ़ गया।
“फिर भी,” अर्जुन ने कहा, “तुम एक प्रतिभाशाली धनुर्धर हो। गुरुजी को तुम्हें अपने साथ ले लेना चाहिए। भले ही मैंने तुम्हें शर्मिंदा किया हो, जैसे तुमने मुझे तब शर्मिंदा किया था जब मैं पांचाली को पसंद करता था और उसके करीब जाने की कोशिश कर रहा था, फिर भी मैं तुम्हारे लिए उनसे बात करूंगा।” उसकी आवाज़ में एक अलग ही कोमलता थी, मानो उसका रवैया पूरी तरह बदल गया हो।
और फिर वह चला गया।

जब उसका परिवार अंगा जाने के लिए सामान पैक कर रहा था, वासु वहीं बैठा रहा: अपने कमरे में, खिड़की की रेलिंग से टेक लगाकर, महल के शीर्ष से दिखने वाले दृश्य को देखता हुआ, उसके हाथ में एक चर्मपत्र था।
उसे इसे पढ़ना था। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। अभी नहीं, उसने सोचा। थोड़ी देर में, उसने इस पर विचार किया।

हस्तिनापुर का पूरा इलाका दिखाई दे रहा था, साथ ही आकाश में उड़ते हुए गिद्ध और चील भी। सूरज इस समय लाल चमक रहा था, उसकी तेज रोशनी उसके शरीर पर पड़ रही थी, तभी उसे कुछ सुनाई दिया।
वे कदमों की आहट थी।
उसने मुड़कर देखा तो सामने उसका तोंददार पिता अधिरथ था, जिसकी घनी मूंछें थीं, सिर पर पगड़ी थी और उसने नारंगी रंग का अंगवस्त्रम पहना हुआ था।
वासु ने आह भरी और फिर मुंह फेर लिया।
“क्या तुम मुझे यह बताने आए हो कि अर्जुन से प्रतिस्पर्धा करना मेरी गलती थी, ठीक वैसे ही जैसे तुमने मुझे भीष्म से क्रूरता से बात न करने के लिए कहा था?” वासु ने पूछा।
“तुम्हारे साथ ऐसा नहीं होना चाहिए था,” उसने कहा। “अर्जुन का व्यवहार अच्छा नहीं था।”
वासु ने सिर हिलाया। “इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अब हर कोई जानता है कि मैं कौन हूँ। हर कोई जानता है कि तुम मुझे क्या बनाना चाहते थे।”
“मैं तुमसे साफ-साफ कहूंगा, बेटे। मैं भी चाहता हूं कि अंगा पर तुम्हारा, मेरे बेटे का शासन हो, लेकिन राज्य की राजनीति हमारे पक्ष में नहीं है।” "फिर हम इसे अपने पक्ष में कर लेते हैं।"
"यह इतना आसान नहीं है।"
वासु ने सिर हिलाया। “आप कायर हैं, और मैं नहीं।” उसने दांत पीसते हुए कहा, “लेकिन आपकी जाति, आपके पेशे की वजह से मुझे यह कलंक जीवन भर ढोना पड़ेगा और कोई भी मुझे इससे आगे नहीं देखेगा।” उसने अपने पिता के निराश, उदास चेहरे को दृढ़ता से देखा। “मत भूलिए, पिताजी। आपकी वजह से ही मैं अपनी पहचान से ऊपर नहीं उठ पाऊंगा। आशा है आप यह बात समझेंगे।”
अधिरथ ने अपना सिर झुकाया और द्वार की ओर बढ़ने लगा, फिर रुक गया। “मैंने द्रोणाचार्य से बात की है। उन्होंने मेरे कहने पर आपको अपने यहाँ रखने की सहमति दे दी है। धृतराष्ट्र ने भी उन्हें मना लिया है। आप ग्रीष्मकाल में अपना कार्यकाल शुरू कर सकते हैं।”
एक पल के लिए वासु को अपने पिता से इतनी बुरी बातें कहने पर पछतावा हुआ, जिन्होंने उसे दाखिला दिलवाया था। लेकिन फिर उसने अपने अहंकार को बीच में आने दिया और अहंकार ने उसे अपने पिता के सामने झुकने नहीं दिया। अहंकार ने

उसे और भी कठोर शब्द बोलने पर मजबूर कर दिया, जिनका उसे मन ही मन पछतावा हुआ, लेकिन ज़ाहिर तौर पर उसे बोलना ही पड़ा; सिर्फ़ बदले की भावना से। वासु ने उपहास उड़ाते हुए कहा, “इस अपमान के बाद, आपको लगता है कि मैं गुरुकुल जाऊंगा? कभी नहीं। मुझमें इतना आत्मसम्मान है।”
उसने सिर हिलाया। उसके पिता ने आगे कोई बहस नहीं की। वे चले गए।
वासु की सांसें तेज़ चल रही थीं। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि उसके अंदर कितना गुस्सा भरा हुआ है। और उसे निकालने की कोई जगह भी नहीं मिल रही थी। लेकिन तभी उसने वह चर्मपत्र देखा जिसे वह पकड़े हुए था।
यह पांचाली की ओर से था और उसे उसी दिन पहले एक नौकर ने दिया था...
उसने उसे खोलकर पढ़ा:
वासु,
जो कुछ हुआ वह दुर्भाग्यपूर्ण है और इसके लिए मैं कुछ हद तक जिम्मेदार हूँ। मुझे और अधिक विरोध करना चाहिए था। मुझे कुछ कहना चाहिए था। लेकिन मैंने नहीं कहा। मैं इसके लिए खुद को कभी माफ नहीं कर पाऊँगी। लेकिन मैं बस इतना कह सकती हूँ कि इन दिनों आपसे मिलकर बहुत अच्छा लगा। मैं आपको विश्वास दिला सकती हूँ कि मुझे आपमें एक ऐसा दोस्त मिला है जिसके बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था। अगर आप कभी पंचाला के आसपास हों, तो कृपया मुझसे मिलें। मैं आपसे दोबारा मिलना चाहूँगी।
Panchali
“मैं भी,” उसने मुस्कुराते हुए कहा, उसका गुस्सा थोड़ा कम हो गया, “मैं भी, पांचाली।”

26

रथों को तैयार करने की प्रक्रिया में एक खामोश गुनगुनाहट सुनाई दे रही थी, वासु आंगन के कोने में बैठा अपनी उंगलियों से खेल रहा था।
वह अब भी उदास था और पंचाली का पत्र उसके लिए एक उम्मीद की किरण थी, हालांकि इतना भी नहीं कि उसके चेहरे पर एक बड़ी मुस्कान आ जाए। उसे अपने पिता की याद आ रही थी, जिनसे वह बात नहीं कर रहा था। उनके बीच एक तरह का शीत युद्ध चल रहा था और उसे यह पसंद नहीं था।
और जब रथ अंगा के लिए रवाना होने ही वाला था, तभी उसने एक परिचित आकृति को अपनी ओर आते देखा।
चलते समय आवाज करती हुई छड़ी लिए वासु ने उन्हें देखा: गुरु द्रोण।
उसके चेहरे पर वही घिनौनी मुस्कान थी जो हमेशा रहती थी; वासु तुरंत घुटनों के बल बैठ गया और उसके पैर छू लिए।
“गुरुजी।”
“इतना सम्मान? मुझे लगता है कि जब हम पहली बार मिले थे तब आपने मुझे इतना सम्मान नहीं दिया था,” द्रोणा ने हंसते हुए कहा।
लेकिन क्या मैंने सेनापति भीष्म के प्रति अवज्ञा नहीं की थी?
हम मंदिर के बाहर मिले थे।
“नहीं, गुरुजी, हमारी मुलाकात कमरे में हुई थी और आप अंधेरे में थे। मैंने आपकी छड़ी देखी थी।”
यह सुनकर द्रोणा मुस्कुराए। “और इसीलिए तो मैं यहाँ हूँ, पुत्र। सीधे खड़े हो जाओ।”
वासु ने ऐसा ही किया और द्रोण ने उसे कंधों से पकड़ लिया। “राजा चाहते हैं कि मैं तुम्हें अपने साथ ले जाऊं क्योंकि तुम्हारे पिता ने उनसे विनती की है, लेकिन मैं व्यक्तिगत रूप से मानता हूं कि मैं तुम्हें उनके कहने पर अपने साथ नहीं ले जाऊंगा। मुझे किसी की परवाह नहीं है। मैं अपनी इच्छा के अनुसार चुनाव करता हूं और मुझे तुममें कुछ खास नजर आता है।”

आशा की एक किरण जगी। वासु को विश्वास नहीं हो रहा था कि द्रोण उससे ऐसा कह रहे हैं और वह सच में ईमानदार और वास्तविक थे।
“मुझे पूरा विश्वास है कि तुम गुरुकुल में बिल्कुल फिट बैठोगे और तुम्हारे पिता ने मुझे बताया कि तुम अभी नहीं जाना चाहते क्योंकि कल तुम्हारा अपमान हुआ था। सुनो बेटे, अर्जुन नाम का बालक तो जन्म से ही धनुर्विद्या का धनी होता है, लेकिन तुम नहीं थे, फिर भी तुम इसमें माहिर थे। इससे पता चलता है कि अगर मैं तुम्हें उचित शिक्षा दूं तो तुम क्या-क्या हासिल कर सकते हो। अब तुम या तो अपमानित होने और तुच्छ समझे जाने पर रोते- बिलखते रहो, या मेरे गुरुकुल में आकर नाम कमाओ। सफलता और असफलता के बीच बहुत बारीक अंतर होता है। और वह अंतर है लगातार असफल होने, फिर उठ खड़े होने और दोबारा असफल होने की तुम्हारी क्षमता। यह चक्र चलता रहता है,” वे रुके। “अहंकार मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। गुरुकुल में प्रवेश करने के अपने निर्णय में इसे बाधा न बनने दो। तुमसे वहीं मिलेंगे।”
इतना कहकर वह चला गया।
वासु दंग रह गया। इतने सरल लेकिन प्रभावशाली शब्दों से द्रोण ने उसे मना लिया था। उन्होंने वासु से यह नहीं पूछा कि वह आएगा या नहीं। उन्होंने उससे कहा कि उसे वहाँ होना ही होगा। उनके भाषण में प्रभुत्व और विश्वास झलक रहा था।
वह कुछ बनना चाहता था और उसे पता था कि द्रोणा के मार्गदर्शन में वह ऐसा कर लेगा।
अगर द्रोण जैसे महान गुरु मुझ पर विश्वास कर सकते हैं, तो मैं भी कर सकता हूं।
और वह अपने पिता की ओर मुड़ा, जिन्होंने द्रोण से बात की थी, और यद्यपि वासु जानता था कि वह कुछ समय तक अपने पिता से बात नहीं करेगा, क्योंकि वह एक मूर्ख, क्रोधित बच्चे के रूप में असहज और शर्मिंदा महसूस कर रहा था - फिर भी वह जानता था कि वह उनके प्रति आभारी था।
जब उसने अपने पिता से नजरें मिलाईं तो उसके चेहरे पर एक आश्वस्त करने वाली मुस्कान आ गई, पिता ने भी दृढ़ विश्वास के साथ उसकी ओर देखा।
देखते हैं मेरा जीवन कैसे बदलता है।

27

आज के समय में…
कर्ण के हाथ में कुछ कंकड़ थे, जब वह पांचाली की खिड़की के नीचे पहुँचा। खिड़की पहली मंजिल पर थी, जो घनी हरी लताओं और आपस में गुंथे हुए रसीले गुलाबों से जगमगा रही थी। चाँदी जैसी चाँदनी कांच पर पड़ रही थी, तभी कर्ण ने एक कंकड़ उठाया और हल्के से सटीक प्रहार किया।
उसने इंतजार किया। कोई जवाब नहीं आया।
उसने फिर वही किया। वह भीड़ में, सेबों से लदे विलो पेड़ के पास खड़ा था। उसने ढीली कमीज़ पहनी हुई थी, जिससे उसकी मांसपेशियों की उभारें दिख रही थीं, साथ में धोती और केसरिया चप्पलें, और उसके कानों में कुंडल चमक रहे थे। ये कुंडलियाँ उसने जन्म से पहनी हुई थीं, और उसकी माँ ने उसे बताया था कि ये उसके साथ टोकरी में आई थीं। पहले तो उसे ये सोचकर दुख हुआ कि किसी ने उसे छोड़ दिया है, लेकिन धीरे-धीरे उसे एहसास हुआ कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। उसकी एक माँ थी और उसका नाम राधा था। और कोई नहीं।
एक और छोटा पत्थर। एक झनझनाहट की आवाज़। और जैसे ही वह टकराया, खिड़की खुल गई।
एक पल के लिए वह मुस्कुराया, लेकिन फिर उसकी मुस्कान गायब हो गई जब उसने देखा कि वह एक निर्मम नग्न व्यक्ति था, जिसकी छाती पर बाल थे और उसने एक लंगोटी पहनी हुई थी जिससे इतनी त्वचा दिख रही थी कि उसे घृणा होने लगी। “क्या कर रहे हो बेवकूफ?” उस आदमी ने गुस्से से अपने अंडकोष खुजाते हुए कहा।
"ओह सॉरी, मैं..."
गलत विंडो! गलत विंडो!
फिर उसे खिलखिलाहट सुनाई दी। उसने दूसरी खिड़की की ओर देखा। क्या आवाज़ वहीं से आई थी? वह मुड़ा और उसे देखा, रात की तरह चमकती हुई, तारों की रोशनी में दमकती हुई, मानो किसी सुपरनोवा की मुस्कान हो। उसने नाइटगाउन पहना हुआ

था, शॉल ओढ़े हुए और बाल खुले हुए थे। उसने कोई गहना नहीं पहना था और वह हमेशा की तरह खूबसूरत लग रही थी, बल्कि पहले से भी कहीं ज़्यादा।
उसे उससे मिले कई साल हो गए थे, और उसके लिए उसके मन में जो लालसा थी, उसे शब्दों में बयां करना बहुत मुश्किल था।
“तुम यहाँ क्या कर रहे हो?” उसने अविश्वास से पूछा। उसके बाल सरकंडे की डोरी से पोनीटेल में बंधे हुए थे।
मैं आपसे भी यही सवाल पूछ सकता हूँ।
"मैं... असल में, मुझे लगा कि यह आपकी खिड़की है।"
उसने सिर हिलाया। “मैं तुमसे मिलने आ रही थी। मैंने अपने पिता और भाई के सोने का इंतज़ार किया और फिर आधी रात को आई, इस उम्मीद में कि तुम अभी भी दावत में मौजूद होगे, भले ही वहाँ मुट्ठी भर शराबी ही बचे थे।”
कर्ण मुस्कुराया, यह महसूस करते हुए कि वह भी उससे मिलने आई थी और यह बात उसे अविश्वसनीय लग रही थी। इतने सालों बाद भी... उसे परवाह थी।
"हाँ, मैं भी उनमें से एक था।"
“तुम शराब नहीं पीते। मुझे पता है।”
और वे चलने लगे। टहलना कहना ज़्यादा सही होगा, क्योंकि वे ट्यूलिप के बगीचे से गुज़र रहे थे, वही बगीचा जहाँ कर्ण शाही अस्तबल में कूदा था और पहली बार पांचाली से मिला था।
“आप कैसी हैं?” उसकी आवाज कोमल थी।
मैं…ठीक है…सबसे अच्छा नहीं रहा हूँ।
"आखिरकार तुम उत्तर की ओर गए और ब्रह्मास्त्र का रहस्य सीख लिया, मुझे ऐसा लगता है?"
"हाँ मैंने किया।"
और यह क्या है?
मैं निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता, लेकिन यह वैसा नहीं है जैसा मैंने उम्मीद की थी।
“तुमने और क्या सीखा?” उसकी आवाज़ में उत्साह तो था, लेकिन साथ ही परिपक्वता भी। उसकी आवाज़ अब पहले जैसी बचकानी नहीं थी।
“मैंने सीखा कि नागस्त्र क्या होता है। मतलब, पहले तो मुझे लगा कि इसमें बस एक लहूलुहान सांप को बांधकर तीर चलाना होता है, लेकिन नहीं, इसमें सांप के जहर में ब्लेड को डुबोकर…”

वह हंस रही थी।
“क्या?” उसने उलझन में पूछा।
"जब तुम इसके बारे में बात करते हो, तो तुम्हारी आँखों में चमक आ जाती है।" वे शाही अस्तबल तक पहुँच चुके थे और करीब से देखने पर वह पहले जैसा ही लग रहा था, लेकिन बाहर खड़े सैनिक बदल गए थे और शायद अंदर भी बहुत सी चीजें बदल गई होंगी।
“रथ का अब कोई महत्व नहीं रह गया है,” उसने कहा।
"आपका क्या मतलब है?"
“पहले यह रथ राजा का युद्ध में जाने का वाहन हुआ करता था, लेकिन राजा स्वयं पिछले कई वर्षों से अपने राज्य से बाहर नहीं गए हैं। अब तो यह रथ जंग खाकर एक भूली हुई स्मृति मात्र रह गया है।” वह पहरेदारों की ओर चलीं, जो जरा भी विचलित नहीं हुए और शाही अस्तबल में ऐसे प्रवेश कर गए मानो यह अब कोई बड़ी बात ही न हो, जैसा पहले हुआ करती थी।
समय बीतने के साथ-साथ कभी प्रिय मानी जाने वाली चीजें भी धीरे-धीरे नष्ट हो जाती हैं।
वे अस्तबल के अंदर चले गए और रथ की चमक गायब हो गई।
“अगर राजा को कहीं जाना होता है, तो वह दूसरे वाहन से जाते हैं,” पांचाली ने कहा। “राज्य में, अपनी प्रजा से मिलने के लिए, लेकिन वह युद्ध वाहन नहीं है। यह कभी युद्ध वाहन हुआ करता था।”
कर्ण जानता था कि काफी समय बीत चुका है, लेकिन रथ टूट चुका था।
“क्या हम ऐसे हो गए हैं?” उसने उससे पूछा।
“तुम्हारा क्या मतलब है?” वह रथ के चारों ओर चक्कर लगा रही थी।
“यह चीज़। इस तरह, समय ने हमें जंग लगा दिया है।”
“मुझे लगता है भौतिकवाद तो मिट जाता है, लेकिन भावनाएँ नहीं। वे शाश्वत हैं,” वह मुस्कुराई और उसके करीब आकर उसे घूरते हुए बोली, “हम आखिरी बार कब मिले थे?”
"जब तुम्हारे राज्य में आग लगाई गई थी," उसने उस घटना को याद करते हुए कहा। वह रात याद रखने लायक कोई सुखद रात नहीं थी।
“नहीं, यह बाद में हुआ था। जब आपने गुरुकुल छोड़ा और हिमालय की ओर जा रहे थे, तब आप पंचाला में रुके और हमारी मुलाकात हुई।”
उसने अपनी भौंहें उठाईं। फिर नज़रें नीचे झुका लीं। उसे याद आ गया।

शायद वह ऐसा नहीं चाहती थी। और शायद इसीलिए उसने इसका ज़िक्र नहीं किया।
लेकिन उसने किया। उसकी आँखों में झुर्रियाँ थीं, होंठ कसे हुए थे और आँखें एकदम खाली थीं।
“तीन साल,” उसने सिर हिलाते हुए कहा, “उस रात को तीन साल हो गए हैं।”
“क्या तुम्हें मेरी याद आई?” कर्ण ने मुस्कुराते हुए कहा।
उसे कुछ कहने की ज़रूरत नहीं थी। उसे उसकी तरफ देखने की भी ज़रूरत नहीं थी।
उसका शरीर ढीला और कमज़ोर था। वह अब एक बच्चे जैसी लग रही थी, बिल्कुल असहाय, और वह अपनी आँखें बंद करके सोच रही थी। शायद उस रात के बारे में। “क्या मैं तुम्हें चूम सकता हूँ?” उसने आगे झुकते हुए, उसके होठों से कुछ ही इंच की दूरी पर, उससे पूछा।
और उसने अपनी आँखें खोलीं। वे घास के ढेर पर खड़े थे, घोड़ों के हिनहिनाने की आवाज़ पृष्ठभूमि में सुनाई दे रही थी, जबकि धातु और घास की गंध हवा में फैली हुई थी। यह माहौल अच्छा नहीं था, लेकिन उन्हें इसकी परवाह नहीं थी। “तीन साल में बहुत कुछ बदल गया है, वासु।” उसने उसे उसके जन्म के नाम से पुकारा। कुछ ही लोगों को ऐसा करने की अनुमति थी। कुछ ही लोग यह बात जानते थे।
लेकिन तुमने मुझसे कहा था कि भावनाएं कभी खत्म नहीं होतीं।
“वे ऐसा नहीं करते। लेकिन परिस्थितियाँ ऐसा करती हैं।”
“तुम क्या कहना चाह रहे हो?” वह भौंहें चढ़ाते हुए पीछे हट गया।
“मेरे पिता… वो चाहते हैं कि अर्जुन मेरा दूल्हा बने,” उसने हिचकी लेते हुए और थोड़ा रुककर कहा। उसने उसकी तरफ देखा तक नहीं।
कर्ण एक पल के लिए स्तब्ध रह गया। असमंजस में पड़ गया। "लेकिन क्या वह...क्या वह...क्या आपके पिता पागल नहीं हैं, अगर आपको बुरा न लगे तो मैं पूछ सकता हूँ?"
वह ताकत को प्राथमिकता देता है। बलवान शरीर को।
“लेकिन अर्जुन…” वह कुछ कड़वी बातें कहना चाहता था। “और मैंने सही किया। उसने जो किया… वह तो बिलकुल उल्टा था।”
“मुझे पता है, मुझे पता है,” वह उसे शांत करने की कोशिश कर रही थी, लेकिन उसने उसे धक्का देकर दूर कर दिया। “उसे बस इतना लगता है, भले ही उसने जो किया वह गलत था… कि मुझे उसके साथ अपना जीवन बिताना चाहिए क्योंकि वह मेरी रक्षा करेगा और वह हस्तिनापुर का सच्चा रत्न और धनुर्धर है। अगर वह

राजा नहीं बनेगा तो युधिष्ठिर बनेगा और मैं हस्तिनापुर के राजपरिवार का हिस्सा बनूंगी।”
उसने इसे ऐसे कहा जैसे यह कोई प्रतिष्ठित बात हो और उसे याद आया कि वह हमेशा इस दिखावे में डूबे रहना चाहती थी।
“मैं तुम्हें वह तो नहीं दे सकता, लेकिन अब मैं राजा हूँ। अंगा। यह हस्तिनापुर जितना सुंदर नहीं है…”
“ऐसा मत कहो। क्या तुम्हें लगता है कि मैं अर्जुन से शादी करना चाहती हूँ? नहीं। मुझे अब हस्तिनापुर की कोई परवाह नहीं है। मैं…” वह रुक गई। हालांकि वे शारीरिक रूप से एक-दूसरे से दूर नहीं थे, फिर भी उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे उनके बीच मीलों की दूरी हो। वे एक-दूसरे को गले लगाना चाहते थे, लेकिन उन्हें किसी चीज़ ने रोक रखा था... जिसका कारण वे खुद भी नहीं जानते थे।
क्या हमारे बीच कोई संभावना है...?
वह असमंजस में थी। “मुझे नहीं पता। मैं…मुझे कुछ नहीं पता। मैं अपने पिता की बात नहीं मान सकती, लेकिन साथ ही…मुझे नहीं पता,” उसकी छाती तेजी से ऊपर-नीचे हो रही थी।
अंत में कर्ण ने अपनी नाक फुलाते हुए कहा, "तुम्हारा बाप एक मूर्ख है।" पांचाली ने अपने जबड़े भींच लिए। "और तुम भी बेवकूफ हो। अकेले हिमालय जाने के लिए..."
“मैं तुम्हें नहीं ले जा सकता था,” उसने गुर्राते हुए कहा। “वह एक खतरनाक जगह थी।”
"और मैं एक खतरनाक लड़की हूँ," वह पास आकर बोली, उसके शरीर से पुदीने की खुशबू आ रही थी।
उसने इंतज़ार नहीं किया। वह कर ही नहीं सकता था। उसने उसके बाल पकड़कर उसे रथ के दरवाज़े से सटा दिया और अपने होंठ उसके होंठों से लगा दिए। वह विरोध करती रही, उसे धक्का देने की कोशिश करती रही, आखिरकार अंत में उसने हार मान ली और खुद को उसके स्पर्श, उसके प्यार और उसके आलिंगन में फिर से समा जाने दिया। उसकी बाहें उसकी गर्दन के चारों ओर लिपट गईं।
कर्ण ने उसका शॉल हटाया और भूसे पर लेटते हुए उसकी गर्दन, कॉलरबोन और छाती पर चुंबन किया।

और हंसते हुए उसने कहा, "पहरेदार सोचेंगे कि हम इतनी रात को यहां क्यों हैं। हमें..."
लेकिन कर्ण को कोई परवाह नहीं थी। वह उसे चूमता रहा। उसकी नाभि पर, फिर उसकी जांघों पर, और अंत में उसने अपना कुर्ता उतार दिया। जब उसने कर्ण की छाती को छुआ और अपनी उंगलियों को उसके घावों पर फेरा, तो उसके चेहरे पर आनंद और आशा का मिलाजुला भाव उभर आया।
"पहले आपके पास इतने सारे नहीं थे।"
कर्ण ने सिर हिलाया। उसने हिमालय में बहुत कुछ झेला था। लेकिन अभी के लिए, यह मायने नहीं रखता था, क्योंकि वह उसके होठों की ओर बढ़ा, और वे प्रेम, परमानंद और नश्वरलोक में अमरता प्राप्त करने के इस भावुक सागर में डूब गए। उनकी त्वचा एक-दूसरे से रगड़ खाकर जल रही थी, उन्हें पसीना आ रहा था और वे तेज़ी से, जल्दबाज़ी में, लेकिन भोलेपन से भी आगे बढ़ रहे थे। उन्हें नहीं पता था कि वे क्या कर रहे हैं, कैसे कर रहे हैं, बस इतना जानते थे कि वे अपने भीतर पूर्णता का अनुभव करना चाहते हैं, वे महसूस करना चाहते थे कि दुनिया रुक गई है, समय का देवता उन पर मेहरबान हो गया है और सब कुछ उनके अनुसार चल रहा है। उनकी आँखें मिलीं, उनके पैर आपस में उलझ गए और जकड़ गए, नग्न अवस्था में, जब उसने उसे धीरे से चूमा, यह जानते हुए कि अगर वह ज़्यादा कठोर हुआ तो वह उसे तोड़ देगा, और उसने भी उसे वापस चूमा और उसकी ओर देखा। उसकी सुनहरी आँखें उसे उस सुबह के सूरज की याद दिला रही थीं जिसके लिए वह जागने लगी थी, जब से उसे उससे प्यार हुआ था।
कर्ण ने कहा, "मुझे नहीं पता कि कल का समय होगा या नहीं, लेकिन आज रात का समय है और मैं इसका भरपूर फायदा उठाना चाहता हूं।"
वह मुस्कुराई। उसकी आँखों में उदासी झलक रही थी, और उसने नज़रें फेर लीं। वे दोनों वहाँ नग्न अवस्था में लेटे रहे, और उन्हें कुछ भी बेहतर महसूस नहीं हुआ...
जो घोड़े पहले हिनहिना रहे थे, वे अब चुप थे।

अर्जुन स्तब्ध रह गया।

चांदी जैसी रोशनी में उसकी आँखें चमक रही थीं और ऐसा लग रहा था जैसे उसकी आँखों से मोती टपक रहे हों। वह अस्तबल के बाहर निष्क्रिय खड़ा था। उसने उन्हें देखा था। उसने पांचाली और कर्ण को अंदर आते देखा था। लेकिन बाहर जाते नहीं। कुछ देर तक नहीं।
और वह बस यही सोचता रहा कि अंदर क्या चल रहा होगा। लेकिन उसे कुछ पता नहीं था—वे बहुत करीब थे। उसे इस बात का एहसास नहीं था।
मेरे साथ ऐसा नहीं हो सकता। दोबारा नहीं।
अर्जुन ने अपनी निगाहें नीचे कर लीं और अपने जबड़े कस लिए। उसके पास ट्यूलिप का गुलदस्ता था जिसे उसने जड़ों से तोड़कर उसे स्नेह के प्रतीक के रूप में भेंट करने की कोशिश की थी, लेकिन उसने उसे अपने हाथों में मसल दिया और वापस चला गया।
अपना सिर दोबारा न घुमाने के लिए।
इस रात को पूरी तरह से भुला देना।

सुबह होते ही वह भ्रमित सा दिखने लगा।
आँखें खोलते ही उसने खुद को अस्तबल में पाया। मुस्कुराते हुए उसे याद आया कि वह रात कितनी जोश और प्यार से भरी थी। वह मुस्कुरा रहा था और उसका हाथ उस तरफ गया जहाँ पांचाली थी, लेकिन उसके हाथ में भूसे का एक गट्ठा था और वहाँ कुछ नहीं था। उसने मुड़कर देखा तो वह वहाँ से जा चुकी थी।
और उसे एहसास हुआ कि भले ही वह उसके साथ थी, लेकिन वह उसकी नहीं थी। उसकी सगाई किसी और से होने वाली थी और यह गहरा दुख उसे घेरने लगा।
कल का दिन एक सपना था। और आज सुबह की हकीकत सामने आ गई।
यह एक ऐसी वास्तविकता थी जिसे उसे स्वीकार करना ही था।
हालात और भी बदतर होने वाले थे।
उन्हें अंगा के लिए रवाना होना पड़ा। कर्तव्य ने पुकारा।
वह अपने उद्देश्य को भलीभांति जानता था—जरासंध को हराना।

28

दिन जल्दी बीत गया।
कर्ण अंगा की यात्रा की तैयारी में व्यस्त था और तीन घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले रथ पर सवार होकर वहाँ पहुँचने में उसे पाँच दिन लगते। उसने पाँचाली को नहीं देखा था और वह उसके पास जाकर उसे और अधिक उलझन में नहीं डालना चाहता था। अगर वह उसके साथ रहना चाहती, तो वह रहती। और यह उसका अपना निर्णय होता, किसी मजबूरी से नहीं।
राजा ने कृपा करके उसे एक रथ दे दिया, और जब सुयोधन को इस बात का पता चला, तो वह दौड़कर आंगन में आया, जहां कर्ण अपने पीठ और पीठ के थैलों को सरकंडे के थैलों से भर रहा था।
“तुम बिना सैनिकों के जा रहे हो,” सुयोधन ने कहा, और कर्ण ने देखा कि उसने सोने की धोती पहनी हुई थी और कुछ नहीं। उसके सीने पर बस एक डोरी लिपटी हुई थी और उसकी दाढ़ी पहले से ज़्यादा घनी थी। ऐसा लग रहा था जैसे उसने अभी-अभी स्नान किया हो।
“मैं हूँ,” कर्ण ने अपना सामान अंदर धकेला और अपने घोड़े को थपथपाया। क्या तुम पागल हो?
"क्यों?"
“पिताजी ने अंगा और अन्य सभी को राज फरमान भेज दिया है। जरासंध को पता चल जाएगा कि तुम बिना दल-बस्ती के आओगे। उसे एक रात के सोने के बराबर भी खर्च नहीं आएगा हत्यारों के एक समूह को किराए पर लेकर तुम्हें रास्ते में ही मार डालने में।”
कर्ण ने कंधे उचकाते हुए कहा, "मैं अपना बचाव कर सकता हूँ।"
“तुम कर सकते हो, जब तुम तैयार होगे। जब तुम…” और क्षणिक क्रोध में आकर सुयोधन ने जमीन से उठाया हुआ एक पत्थर कर्ण की ओर फेंक दिया।
कर्ण ने बिना मुड़े तुरंत उसे पकड़ लिया और मुस्कुराते हुए सुयोधन की ओर देखा। "मैं हमेशा तैयार रहता हूँ।"
सुयोधन ने कंधे उचकाते हुए कहा, "दिखावा कर रहा है।"

"हमेशा।"
आपकी योजना क्या है?
"और आप इसमें रुचि क्यों रखते हैं?"
“तुम्हारे कार्यों से मेरी प्रतिष्ठा पर असर पड़ेगा।” सुयोधन कर्ण के पास आया और दोनों ही कद-काठी में ऊंचे खड़े थे, हालांकि कर्ण उनसे काफी लंबा था। “मेरे पिता ने तुम पर भरोसा जताया है। युद्ध अगले कुछ दिनों में शुरू होने वाला है। क्या तुमने कोई योजना बनाई है?”
"उसे मुझे एक सेना देनी चाहिए थी।"
“देवी के नेतृत्व में हज़ार सैनिक आपका इंतज़ार कर रहे हैं। वे आपके अपने लोग हैं।”
"जरासंध की तीन हजार सेनाओं के विरुद्ध।"
“विद्रोही भी हैं, जिन्होंने देवी के नेतृत्व वाली सेना में शामिल नहीं हुए। उनसे बात करो। उन्हें मनाओ।”
यही विचार था।
“हो सकता है वे आपकी बात सुन लें। आप उनकी ही धरती पर पैदा हुए हैं।”
कर्ण ने सिर हिलाया। फिर वह रुका, अपने साथी की ओर मुड़ा और बोला: "सबके सामने यह घोषणा करने के लिए धन्यवाद कि मैं राजा हूँ।"
सुयोधन ने सिर हिलाया। अपने कठोर बाहरी रूप के बावजूद, उसके चेहरे पर कोमल भाव थे और एक ऐसे नाविक की तरह सौम्य नज़र थी जो समुद्री मछली का इंतज़ार कर रहा हो। "मैंने तुमसे कहा था कि मैं कोशिश करूँगा।"
कर्ण ने मुस्कुराकर सुयोधन को विदा किया।
सामान समेटने के बाद, उसने महल की ओर मुड़कर देखा, इस उम्मीद में कि उसके पिता उसे विदाई देने आएंगे। लेकिन वे नहीं दिखे। और वह निश्चित रूप से निराश हुआ। उसे हताशा भी महसूस हुई।
उसने लगाम खींची और घोड़ों को चलने का इशारा किया, लकड़ी के पहिए घूमने लगे, और वह महल के लोहे की जाली वाले फाटकों से अंदर जाने लगा...
जब उसने एक आवाज सुनी।
"इंतज़ार।"
वह मुड़ा और रुक गया, तभी उसे एक अप्रत्याशित चेहरा विदाई देते हुए दिखाई दिया। वह अर्जुन की माँ कुंती थी।

वह पसीने से तरबतर थी और उसके हाथ में एक छोटा सा घड़ा था, जिसे वह अपने साथ लिए घूम रही थी। वह तुरंत रथ से नीचे उतरा और घड़ा ले लिया ताकि वह सांस ले सके। वह झुंझलाहट के बावजूद उसकी ओर मुस्कुरा रही थी।
“राजमाता कुंती, आपको ऐसा नहीं करना चाहिए था,” उसने घड़ा रथ के अंदर रख दिया। “क्या मैं आपके लिए थोड़ा पानी लाऊं?”
“नहीं, नहीं, बस…” उसने सिर हिलाया, उसके बाल बिखरे हुए थे और वह पीली दिख रही थी। “आपकी यात्रा मंगलमय हो।”
आपको आने की जरूरत नहीं थी।
“मैं बस…उम…” वह सावधानी से शब्द बोल रही थी, “मैं बस आभारी हूँ कि आपने कल द्वंद्वयुद्ध छोड़ दिया। यह आपकी मेहरबानी थी।”
“बिल्कुल। जार में क्या है?”
खुबानी से बना जूस। मुझे लगा कि आपको यह पसंद आएगा।
"ओह।"
वे चुपचाप खड़े रहे। एक-दूसरे को देखते हुए। कर्ण इस बात से हैरान था कि कुंती मां उसे विदा करने आई थीं और साथ ही साथ आभारी भी महसूस कर रहा था। "अह, तो... मैं बस इतना कहना चाहती थी कि आपके झुमके बहुत सुंदर हैं।"
“जी हां,” कर्ण ने कुंडलों को छूते हुए मुस्कुराते हुए कहा। “यह मेरी मां का दिया हुआ उपहार है।”
“माँ? उसे यह कहाँ से मिला?”
कर्ण कहना चाहता था कि उसे वह टोकरी में मिला, जिसमें वह मिला था, लेकिन कुंती माँ को इतनी सारी बातें जानने की ज़रूरत नहीं थी। ज़्यादा बताने का कोई फ़ायदा नहीं था। "उसे वह कहीं से मिला है, मुझे नहीं पता कहाँ से।" “हाँ।” उसने एक घूँट निगला, उसका चेहरा पीला पड़ गया, मानो उसे कर्ण का झूठ समझ आ गया हो, मानो उसे पता चल गया हो कि कर्ण कुछ छुपा रहा है। “मैं एक ऐसे आदमी को जानती थी जिसकी आँखें बिल्कुल तुम्हारी जैसी थीं।”
मुझे उम्मीद है कि वह एक अच्छा आदमी था।
“हाँ, बिल्कुल था,” कुंती माँ ने अपनी निगाहें नीचे करते हुए अपनी उंगलियों से खेलना शुरू किया।
"मुझे जाना चाहिए।"
जी हां, कृपया ऐसा ही करें। आपको इंतजार कराने के लिए क्षमा करें।
नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं।

मुस्कुराते हुए कर्ण ने अपने हुड की छाया से एक अलंकृत चांदी और सोने की छड़ी निकाली, जो एक बड़ी बेंत निकली।
रथ पर सवार होते हुए उसने छड़ी देखी और उसे देखकर उसे हंसी आ गई, वह सोच रहा था कि उसने पंचाली से मिलने से पहले आधी रात को इसे कैसे चुराया था।
मुझे उम्मीद है कि आप इसके बिना रह सकते हैं, बूढ़े आदमी। क्योंकि आप इसे दोबारा नहीं देख पाएंगे।

29

सूर्य अस्त हो गया।
दोनों लड़के जंगल में पालथी मारकर बैठे थे। चिकने-चुपड़े। उनके मुंह सामने बैठी महिला की तरह ही गंदे थे। उन्होंने मुश्किल से ही पत्तों से ढके हुए कपड़े पहने थे और उन्हें घूर रहे थे।
उसकी आंखें पन्ना रंग की थीं, या उससे भी गहरे रंग की। कुछ-कुछ ग्रीक अग्नि रत्नों जैसी।
दोनों लड़के अपनी माँ की तरह ही थे। वे अपनी माँ से बहुत प्यार करते थे। उनकी माँ ने ही उन्हें सब कुछ सिखाया था। उन्हें अपनी उम्र से कहीं अधिक ज्ञान था।
उनमें से एक ने पूछा था: "आपको इतनी जानकारी कैसे है?"
और उसने कहा: “मैं एक राजा की दरबारी थी। एक शक्तिशाली राजा। रावण के वंशज, अंतिम राक्षस स्वामियों में से एक। और उन्होंने मुझे सब कुछ सिखाया।” दोनों लड़कों के लिए इतिहास बेहद दिलचस्प था और वे हमेशा यही मानते थे कि जब भगवान राम और उनके सैनिकों ने राक्षसों को हराया था, तब उनका अस्तित्व समाप्त हो गया था। लेकिन यह सच नहीं था। कुछ राक्षस बच गए थे। उनमें से कुछ में शिव के उपासक रावण का दिव्य रक्त था और उन्होंने कुछ समय तक विंध्य पर्वत श्रृंखला पर शासन किया। वे कबीले की तरह थे, पशुओं की पूजा करते थे और उन्हें मारते-पीटते थे, तथा मानव मांस खाते थे क्योंकि उनका मानना था कि सच्ची शक्ति शत्रु के धड़कते हृदय से आती है।
“हम यहाँ क्यों हैं?” समझदार व्यक्ति ने पूछा।
दूसरा लड़का सुस्त था। कुपोषण के कारण वह कमज़ोर था। उसकी जीभ हमेशा मुंह से बाहर निकली रहती थी। वह थोड़ा नासमझ भी था। समझदार लड़के को हमेशा उसके साथ रहना पड़ता था; यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह कोई मूर्खतापूर्ण काम न कर दे।
“क्योंकि आपका प्रशिक्षण पूरा हो चुका है और आप दुनिया में जाने के लिए तैयार हैं। बाहर।”

“नहीं,” समझदार व्यक्ति ने कहा। “हम आपको छोड़कर नहीं जाना चाहते।”
“ऐसा नहीं होगा। मैं तुम्हारे दिल में रहूंगी।”
वह असमंजस में दिख रहा था। "लेकिन अगर आपको हमें छोड़कर जाना ही था, तो आपने हमें पढ़ाया ही क्यों?"
“किसी के मन में अपनी छाप छोड़ने के लिए। विदा लेने के लिए। मेरे पास ज्यादा दिन नहीं बचे हैं, लेकिन आपके पास हैं। आपके सामने पूरी जिंदगी पड़ी है,” उसने कहा।
उसके होंठ काले थे और उसका दिल और उसकी त्वचा चाक जैसी सफेद थी, लेकिन फिर वह अपने चेहरे पर एक अजीब सा पाउडर लगाती थी, जिसे उस पौधे से निकाला जाता था जिससे वह अपना चेहरा पोंछती थी।
"लेकिन आपको अभी एक आखिरी काम करना बाकी है," उसने कहा।
“क्या?” समझदार व्यक्ति ने पूछा।
“यह दुनिया एक दर्दनाक जगह है और तुम्हारे पिता ने तुम्हारे भाई की वजह से तुम्हें घर से निकाल दिया।” और उसने चाकू सामने रख दिया। “उसे मार डालो और आज़ाद हो जाओ।”

जरासंध रथ की खिड़कियों से देख रहा था, उसके मन में मगध के अंधेरे, नम वर्षावन में बिताए बचपन के विचार उमड़ रहे थे।
“महाराज, आप क्या सोच रहे हैं?” गोनांडा ने पूछा। वह उनके बगल में बैठा था। जरा ने अपने होंठ दबाए। उसके बाद मैंने क्या किया, यह कोई नहीं जानता। “कुछ नहीं। बस मथुरा की स्थिति को लेकर चिंतित था।”
गोनंदा ने एक गहरी आह भरी; एक दर्दनाक, दिल दहला देने वाली आह। धृतराष्ट्र के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करने के कुछ ही दिन बाद उन्हें एक और समस्या के पनपने की खबर मिली। मथुरा में, जिस पर उनके दामाद कंस का शासन था।
उसकी हत्या कर दी गई।
बेरहमी से। गर्दन मरोड़ दी गई। शरीर को विकृत कर दिया गया। जब शव को जरासंध के सामने लाया गया, तो वह समझ गया कि ऐसा केवल एक क्रूर व्यक्ति ही कर सकता है।
और उन्हें बताया गया: “यह एक लड़का है। आदमी नहीं। इसका नाम कृष्ण है।”

“महाराज, इसने अभी तक हमारे दो आदमियों को मार डाला है। हमें इसे जंजीरों में जकड़ना पड़ा।” उसकी आँखों में भय स्पष्ट झलक रहा था।
“ठीक है, समझ में आ गया।” उसने गहरी सांस ली और दरवाजे की ओर चल पड़ा।
चलिए काल से मिलते हैं।

जब जरा झोपड़ी में दाखिल हुआ, तो सबसे पहले उसने एक गंजे आदमी को देखा, जो अपनी पीठ दिखाते हुए जमीन पर बैठा एक मूर्ति की पूजा कर रहा था। वह एक अजीब सी मूर्ति थी और जरा समझ गया कि वह क्या है।
यह देवी काली की मूर्ति थी, जिसमें उनकी जीभ बाहर निकली हुई थी और वे चाट रही थीं और चाबुक चला रही थीं। चारों ओर चित्र रखे हुए थे, या यूं कहें कि जिन पर उन्होंने चित्र बनाए थे। काल को तरह-तरह के रंगों से तरह-तरह के डिज़ाइन बनाने का शौक था और उन्होंने कई रचनाएँ की थीं...
मृत्यु। विनाश। तबाही। अराजकता।
खून ही खून था। औरतें क्षत-विक्षत हो गईं और मर्द मारे गए। बच्चे जल गए और कोई उम्मीद नहीं बची थी।
काल को इस बात पर विश्वास था।
उसकी पीठ की त्वचा बुरी तरह फटी हुई थी, मानो किसी ने उसे चीर दिया हो, और उस पर टांके लगे हुए थे। उसके सिर पर जलने का निशान था, वह कमरे के अंधेरे में बैठा था, बस एक दीपक की हल्की रोशनी उसके सिर और उसके ढीले कुर्ते और चिथड़ों पर पड़ रही थी।
गोनांडा उसके पक्ष में था और वह कोने में ही रुका रहा—इस डर से कि कहीं वह हमला न कर दे।
जरा ने पुकारा, “काल, तुम कैसे हो?”
कोई जवाब नहीं मिला।
जरा दीवार से टिकते हुए बोला, “काल, हमें तुम्हारी मदद चाहिए। मथुरा में मेरी सेना का नेतृत्व करने के लिए हमें किसी की ज़रूरत है। यह एक लंबा सफर है…” उसकी नज़र हथकड़ियों पर पड़ी, “आशा है तुम अच्छा व्यवहार करोगे।”

सामने खड़ा आदमी कुछ नहीं बोला। इसके बजाय, वह एक तरफ गया और ऐसा लगा जैसे वह कुछ ले रहा हो। वह कागज का एक टुकड़ा था। किसी तरह का चर्मपत्र, जिसे उसने जारा की ओर सरका दिया।
जारा असमंजस में था। उसने उसे उठाया। उस पर लिखा था:
भगवान काल,
मुझे आप सभी को यह सूचित करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि एक महत्वपूर्ण समाचार है। अंधे राजा ने एक सूतपुत्र को अपना सेनापति और अंग का अंतरिम राजा नियुक्त किया है। उसका नाम कर्ण है और वह तीरंदाजी में काफी निपुण है, कम से कम रंगभूमि पर मैंने यही देखा। हमें उससे सावधान रहना होगा। क्या आपको बंदरगाह पर हुआ हमला याद है? यह वही हो सकता है क्योंकि इतनी निपुण तीरंदाजी या तो अर्जुन कर सकता है या कर्ण और जहाँ तक मुझे पता है… अर्जुन लंबे समय से हस्तिनापुर में था।
और उस चर्मपत्र के भीतर एक और था। जरा ने आगे पढ़ते हुए अपनी भौहें ऊपर उठाईं:
भगवान काल,
चंपा से लौटने के बाद से ही देवी और उसकी टुकड़ियाँ रसद के लिए हमारे अलग-अलग किलों पर हमला कर रही हैं। उसे लगता है कि वह सुरक्षित है। मुझे लगता है कि उसे मारने और घात लगाने का यही सही समय है। तब कोई शासक नहीं रहेगा। सम्मान…
जारा यह देखकर दंग रह गया कि काल ने देश के विभिन्न कोनों में अपने जासूस तैनात करके ही इतनी सारी जानकारी जुटा ली थी। उसने सामने खड़े योद्धा की ओर देखा, जो अपने पैरों पर खड़ा हुआ, हथकड़ियों की खड़खड़ाहट से शोर मच रहा था; उसके हाथों में कुछ था। एक लोहे का मुखौटा। उसके सिर के आकार का बना हुआ। और उसने उसे हेलमेट की तरह पहन लिया, जिससे उसकी आंखें और नाक को छोड़कर उसका पूरा चेहरा ढका हुआ था।
और वह मुड़ गया।
मुखौटा एकदम शांत था, और यही बात सबसे डरावनी थी। भावहीन। मानो उसके अंदर कोई राक्षस छिपा हो।
उसकी आंखें गहरे लाल रंग की थीं और जारा की ओर देख रही थीं।
“तुम्हें यह सब पता था और इसीलिए…अह…” जरा समझ गया, “इसीलिए तुमने मेरे आदमियों को मार डाला। क्योंकि तुम इस कर्ण को ढूंढना चाहते थे,” वह रुका।

“लेकिन मैं नहीं चाहता कि तुम बाहर जाकर इस कर्ण को ढूंढो। हमें नहीं पता कि वह क्या कर सकता है। मैं चाहता हूं कि तुम मथुरा में रहो।”
काल आगे बढ़ा और जरा ने देखा कि वह उससे लंबा था, काफी लंबा था।
और फिर… उसने अपना सिर हिलाया। नहीं।
"क्यों?"
काल ने कुछ नहीं कहा। उसे कहने की ज़रूरत भी नहीं थी। क्योंकि मथुरा तो बस प्रतिशोध का प्रतीक था। व्यापारिक दृष्टि से इसका कोई महत्व नहीं था, सिवाय एक अच्छे बंदरगाह होने के। लेकिन अंग ही भविष्य था। धृतराष्ट्र के हिस्से के साथ, उसके पास दोगुने जहाज़ हो जाएँगे, जिनका उपयोग करके वह विदेशी आक्रमण कर सकता था, क्योंकि भारत में सभी कुरु वंश के सहयोगी थे। “ठीक है। जैसा तुम चाहो वैसा करो। लेकिन एक बात याद रखना, अगर तुम इस कर्ण या देवी को नहीं मार पाए…तो मैं तुम्हें मथुरा भेज दूंगा और तुम कृष्ण से निपट लेना।”
काल ने कुछ नहीं कहा, बस सिर हिलाया। और उसने वह कागज़ छीन लिया जिसमें देवी के सामान की आपूर्ति के बारे में जानकारी थी।

“महाराज, सम्मानपूर्वक कहें तो, मथुरा पर आक्रमण कौन करेगा?” गोनांडा ने हताशा से पूछा, जब वे झोपड़ी से बाहर निकलकर अपने रथ की ओर चल रहे थे। "तुम," जारा ने कंधे उचकाते हुए कहा।
“मैं? लेकिन…”
“हम मथुरा पर एक साथ हमला नहीं करेंगे। हम धीरे-धीरे हमला करेंगे। कई चरणों में। हर चरण पिछले चरण से बड़ा होगा। तुम छोटे चरण से शुरुआत करो और जब तक काल और मैं अंगा पर अपना काम खत्म कर लेंगे, मैं काल को तुम्हारी तरफ भेजूंगा और फिर खुद आऊंगा,” जरा ने समझाया। “अंगा का काम जल्द ही खत्म हो जाएगा। अगर काल ने ठान लिया है, तो वह मुझे यह जमीन दिला देगा। मैंने उसे इतना दृढ़ निश्चयी कभी नहीं देखा। मथुरा पर कब्जा करने में समय लगेगा।” गोनांडा ने कुछ नहीं कहा। वह असमंजस में था; चिंतित भी।

जरा ने अभी-अभी यह रणनीति बनाई थी और अब वह जानता था कि वह चूहे के राजकुमार कर्ण से कैसे निपटेगा। उसे पता नहीं था कि कर्ण कौन है, लेकिन वह अपने काम में माहिर था।
"क्या हमें अंगा में शाही सेना की किसी गतिविधि की कोई रिपोर्ट नहीं मिली है?"
“जासूसों का कहना है कि किसी ने कुछ नहीं सुना। मुझे आज सुबह ही खबर मिली है। मुझे आश्चर्य है कि क्या काल की रिपोर्ट सही थीं।”
“हाँ, बिल्कुल। इसका मतलब है कि हमारा प्यारा कर्ण चतुर है।” जरा इस रणनीति को जानता था। म्लेच्छों का यही तरीका होता था। वे कभी झुंड में नहीं चलते थे। इससे ध्यान आकर्षित होता था। वे जोड़े में चलते थे, कम संख्या में। लेकिन उसने यह म्लेच्छों से कैसे सीखा? क्या वह खुद उन्हीं में से एक था? “मुझे बस यह जानना है कि वह आगे क्या सोच रहा है।”
जहां काल शारीरिक बल का प्रतीक होगा, वहीं जरा अंगा के विरुद्ध लड़ने के लिए बुद्धि का प्रतीक होगा।
देखते हैं दो की शक्ति के साथ यह कर्ण कब तक टिकता है।

30

मालिनीपुर पहुंचने से पहले कर्ण ने दो अलग-अलग रास्ते अपनाए।
अतीत के किसी व्यक्ति से मिलने का मौका...
और एक और बात, वह कहीं अधिक महत्वपूर्ण थी।
कर्ण ने बारिश और हवाओं का सामना किया, संकरे रास्तों और विशाल मैदानों से होते हुए अपने रथ पर सवार होकर जंगलों और वीरान शिविरों को पार किया। उसने हर जगह लाशें देखीं; कुछ भेड़ियों द्वारा नोची गई थीं, कुछ डाकुओं द्वारा कुचली गई थीं। अंग की धरती, जहाँ उसने प्रवेश किया था, विचित्र हो गई थी। हवा में चांदी और गंधक की गंध थी, जलती हुई लकड़ियों का धुआँ उसके मुँह में एक अजीब धातु जैसा स्वाद छोड़ रहा था। दोनों पक्षों, विजेताओं द्वारा लकड़ी का उपयोग किए जाने के कारण बड़े पैमाने पर वनों की कटाई हुई थी। इसी कारण उसने खरगोशों और पक्षियों को भूख और प्यास से मरते देखा। आकाश में तूफान था, जबकि क्षितिज पर जलती हुई लकड़ियों से निकलने वाले घने प्रदूषण से सूर्य ढका हुआ था।
और अंत में, वह उस घुमावदार घाटी तक पहुंचा, जो कभी पवित्र नदी गंगा हुआ करती थी, लेकिन अब महज एक अन्य जल निकाय बनकर रह गई थी।
वह अपने रथ से उतरा और पानी को छूकर उसमें हाथ डुबोए। उसमें तरह-तरह का कूड़ा-कचरा बिखरा हुआ था।
और उनका हृदय गहरे संकट में डूब गया।
अंगा का यह भाग, गंगा का यह भाग, उनके लिए महत्वपूर्ण था।
बहुत ज़रूरी।
क्योंकि वह यहीं पर मिला था।

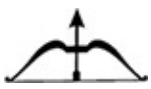

तीस साल पहले…
जरासंध के साथ युद्ध के कुछ महीनों बाद…

राधा जानती थी कि उसे यह पसंद नहीं आएगा। लेकिन फिर भी वह उसके साथ चली गई।
अधिरथ काफी व्यावहारिक स्वभाव की थीं, लेकिन साथ ही धार्मिक भी। और आज सुबह-सुबह जब सूरज अभी-अभी निकला था, तब वह गंगा के किनारे थीं।
पानी निर्बाध रूप से बह रहा था, हल्की, कोमल लहरें थीं और चारों ओर पौधों की घनी झाड़ियाँ उगी हुई थीं।
राधा जानती थी कि अधिरथ रात को तीन बजे तक कविताएँ लिखता है और फिर कुछ देर के लिए गहरी नींद में सो जाता है। इसलिए, वह अपने सैनिकों के साथ चुपके से निकल गई, जिन्होंने उसके साथ जाने की ज़िद की थी।
"महामहिम, आपको प्रसन्नता नहीं होगी, लेकिन मैं फिर भी आपके साथ रहना चाहता हूँ। जहाँ आप अतिक्रमण करते हैं, वह हमारी सुरक्षा से परे का क्षेत्र है, और हमें आपकी रक्षा के लिए पुरुषों की आवश्यकता है।" मालिनीपुर के बाहरी इलाके में गंगा नदी बहती थी और राधा के लिए वही एकमात्र सहारा थी। मालिनीपुर उसके लिए घर जैसा बिल्कुल नहीं था। यहाँ तक कि जिस महल में वह रहती थी, वह भी बर्फीला ठंडा लगता था। उसका पति घंटों घर पर बैठा रहता था और काम नहीं करता था क्योंकि करने को कुछ नहीं था, जबकि शहर की सारी शक्ति धृतराष्ट्र के लिए काम करने वाले सेनापति विजय के हाथों में थी।
उनके पति राजा को घुमाने के लिए बुलाए जाने पर ही अपने काम पर जाते थे, बस इतना ही। यहाँ तक कि महान सेनापति सत्य भी राधा और अधिरथ के लिए एक नौकर और निजी अंगरक्षक मात्र बनकर रह गए थे। वे मध्यम कद के थे, उनकी दाढ़ी बर्फ़ जैसी सफ़ेद थी, आँखें गहरी और काली थीं, और बाल सिर से छोटे कटे हुए थे। एक सम्मानित व्यक्ति, जो जाति व्यवस्था की गहराई से उठकर शाही सेना के सेवक बने थे।
एक वर्ष बीत गया था और कुछ भी नहीं बदला था। जरासंध अभी भी चंपा पर शासन कर रहे थे और धृतराष्ट्र मालिनीपुर पर। संधि की घोषणा के बाद से, जो संयोगवश शीघ्र ही हो गई थी, दोनों क्षेत्रों में शांति स्थापित हो गई थी। अब वे दोनों शासन कर रहे थे और अंग से प्राप्त धन का आनंद ले रहे थे।
लेकिन यद्यपि यह अपरिहार्य था, राधा जानती थी कि वह कम से कम गंगा से एक उत्तराधिकारी देने के लिए कह सकती है।
और आज सुबह वह नदी किनारे प्रार्थना करने और अपने पिछले कर्मों के पापों को धोने के लिए गई थी।

मुझे लगता है कि यह सब इसलिए हुआ क्योंकि पिछले जन्म में मैं एक निर्दयी युद्धप्रिय रही होंगी, उसने सोचा।
उसने अपने हाथ नदी में डाले और ठंड महसूस की, लेकिन उसे इसे सहन करना ही था। वह खड़ी हुई और अपने पैर की उंगलियों को पानी में डाला, धीरे-धीरे अपने शरीर के निचले हिस्से को डुबोते हुए नदी के बीच में चली गई। लहरें तेज़ होती गईं, लेकिन पानी के छींटे उसके शरीर पर ठंडे पड़ रहे थे, जिससे उसका शरीर सुन्न हो रहा था।
सत्या अपने सैनिकों के साथ नदी के दूसरे किनारे पर, उसकी नजरों से दूर, उसका इंतजार कर रहा था, क्योंकि वह अकेले में पश्चाताप करना चाहती थी। एकांत में।
और अगर अधिरथ को पता चल गया, तो वह उसे इतनी मूर्ख होने और यह मानने के लिए कोस देगा कि जिस पानी का इस्तेमाल मसाले और खनिज बनाने के लिए किया जाता था, उसका इस्तेमाल संतान पैदा करने के लिए भी किया जाता था।
लेकिन मुझे विश्वास है।
और इसी के साथ, उसने डुबकी लगाई, अपना मुँह और चुन्नी पूरी तरह से पानी में डुबो दी। जब वह ऊपर उठी, तो उसने अपने अंदर एक ऊर्जा का प्रवाह महसूस किया, सूरज की किरणों की चादर में लिपटी हुई, जिसने उसे अपार गर्माहट का आनंद दिया।
उसने एक और डुबकी लगाई। आँखें बंद करके, दो उंगलियों से नाक ढककर, उसने नदी देवी से प्रार्थना की कि वह उसके पाप धो दे और उसे नई आशा प्रदान करे...
जब उसने यह सुना।
यह एक हल्की सी गुर्राहट भरी चीख थी।
वह पानी से बाहर निकली और उसने महसूस किया कि रोने की आवाज़ अब पहले जैसी तेज़ नहीं थी, बल्कि पहले से कहीं ज़्यादा जीवंत थी। पानी की लहरों को चीरते हुए वह उपजाऊ ज़मीन पर चली और रोने-बिलखने की आवाज़ की ओर बढ़ी।
क्या यह सब सचमुच हो रहा है? उसने खुद से पूछा।
उसकी निगाहें आसपास के वातावरण का जायजा लेती रहीं, जब तक कि उसे कोने में घने बांस के पौधों का एक झुंड नहीं दिख गया। उनके बीच में, शैवाल के ऊपर तैरती हुई एक सरकंडे की टोकरी फंसी हुई थी।

वह उन पौधों के बीच से गुजरी, टोकरी को पकड़ा और उसमें देखने लगी। एक कीमती रेशमी शॉल से ढका हुआ एक छोटा शिशु था, जिसके सीने पर बच्चे के आकार का कवच और कुंडल बने हुए थे।
उसने कवच को उठाकर उसकी जांच की, यह जानने के लिए कि वह कहाँ से आया होगा, और उसने देखा कि वह किसी किशोरी के लिए बना था। यहाँ तक कि कुंडल भी किसी किशोरी के ही रहे होंगे, क्योंकि वे छोटे कानों के लिए बने थे।
"किसी ने तुम्हें छोड़ दिया था," उसने टोकरी को अपनी छाती से लगाते हुए कहा, क्योंकि बच्चा अब रो नहीं रहा था।
क्या वह किसी अविवाहित महिला का बच्चा हो सकता है? इससे यह बात समझ में आती है कि उसे क्यों छोड़ दिया गया था।
वह टोकरी को किनारे की ओर धकेलने लगी, तभी उसने देखा कि टोकरी हिल नहीं रही है। वह कहीं अटक गई थी और कारण जानने के लिए उसकी नज़रें इधर-उधर भटकने लगीं, तभी उसने देखा कि उसके साथ क्या खिंच रहा है—
एक मगरमच्छ।
उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा और चेहरे का रंग उड़ गया। मगरमच्छ बाँस के पौधों के बीच छिपा हुआ था, इसलिए वह उसे पहले देख नहीं पाई थी। उसके दाँतेदार दांत टोकरी के दूसरे हैंडल को जकड़े हुए थे।
वह तुरंत उसे झटक कर दूर करना चाहती थी और जमीन की ओर भागना चाहती थी, लेकिन वह जानती थी कि मगरमच्छ उसे पकड़ लेगा।
मुझे बच्चे को बचाना ही होगा। मुझे बचाना ही होगा…
उसने धीरे-धीरे मगरमच्छ की पकड़ ढीली करने की कोशिश की, जिसके जवाब में मगरमच्छ गुर्राया, लेकिन उसे छोड़ने के लिए तैयार था। उसने यह काम धीरे- धीरे किया, ताकि जानवर घबरा न जाए...
मगरमच्छ ने तुरंत टोकरी के एक हिस्से को कुतरना और चबाना शुरू कर दिया। शिशु रोने लगा और मगरमच्छ ने अपना विशाल मुंह खोल दिया, मानो वह बच्चे को खाने के लिए तैयार हो।
“नहीं!” राधा चीखी, उसकी आवाज पूरे इलाके में गूंज उठी।
उसने आधी टूटी हुई टोकरी को अपनी ओर खींचा और जैसे ही उसने ऐसा किया, मगरमच्छ उस पर और शिशु पर झपटा।

उन पर एक साया पड़ा और राधा ने सत्य को कहीं से प्रकट होते हुए देखा, जिसने मगरमच्छ को उसके मुंह से पकड़ लिया। सत्य किनारे से कूदकर मगरमच्छ पर आ गिरा था और अब उसकी तलवार छीनने की कोशिश कर रहा था।
राधा ने टोकरी को सीने से कसकर पकड़ लिया और लड़खड़ाते हुए किनारे की ओर बढ़ी, उसकी साँसें अनियमित थीं। ठंड से कंपकंपी के साथ-साथ उसे डर भी सता रहा था। वह चाहती थी कि सत्या जीते; वह काँप रही थी।
मगरमच्छ ने अपनी पीठ हिलाई और सत्य को दूसरी तरफ फेंक दिया, जिसने पानी के ऊपर संतुलन बनाए रखने की कोशिश की। और जैसे ही उसने संतुलन बनाए रखा, मगरमच्छ उस पर झपटा।
सत्या तुरंत दूसरी तरफ चला गया और अपनी तलवार बाहर निकाल ली, जिससे पानी की बूंदें टपक रही थीं।
मगरमच्छ ने अपना मुंह खोला और तेजी से पानी को चीरते हुए, हवा में सत्य की ओर बढ़ने लगा, तभी...
राधा ने एक पत्थर फेंका।
उसने पत्थर को नदी के किनारे से उठाया था, जहाँ अब वह और बच्चा आराम कर रहे थे। पत्थर तीर की गति से सटीक रूप से गया और मगरमच्छ की एक आँख पर जा लगा। और उसी क्षण सत्य ने तलवार को मगरमच्छ के मुंह में गहराई तक घुसा दिया।
जानवर गुर्राया, लुढ़क गया और नदी के पानी में बह गया, जिसका रंग अब नीला नहीं रहा था।
तीरंदाजी और निशानेबाजी में सटीकता के लिए वर्षों के प्रशिक्षण के बाद, राधा को इस बात की खुशी थी कि उसकी मेहनत व्यर्थ नहीं गई थी।

"महाराज, आशा है आप ठीक होंगे?" सत्य ने लड़ाई में लगे अपने घावों को सहलाते हुए एक बार फिर पूछा।
वे अपने रथ में लौट रहे थे, जहां पानी से भीगी हुई राधा अपनी बाहों में टोकरी को थामे हुए थी।
“जी हां, मैं हूं, सत्या।” उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई। “जी हां, मैं हूं।” “आप खुश हैं, महाराज। ऐसा बिल्कुल नहीं लगता कि आप पर किसी सरीसृप ने हमला किया हो,” वह हंसते हुए बोला।

राधा उस भयानक अनुभव को लगभग भूल चुकी थी। वह बस बच्चे और चमकते कुंडलों को देख रही थी और मुस्कुराए बिना नहीं रह सकी।
"मुझे लगता है कि तुम उसके माता-पिता की तलाश नहीं करोगे," उसने बच्चे की ओर इशारा करते हुए कहा।
“यह मुझे देवी गंगा ने उपहार में दिया है। मैं क्यों लूं? मेरे कर्म धुल चुके हैं और अब जब यह मेरे जीवन में आ गया है, तो सारे दुख दूर हो जाएंगे।” उसने शिशु की नाक से खेलते हुए कहा।
वह जानती थी कि उसे अधिरथ को बहुत कुछ समझाना पड़ेगा, लेकिन वह यह भी जानती थी कि वह खुश होगा।
उनके परिवार में एक नया सदस्य आने वाला था…
“मैंने एक नाम सोच लिया है, सत्या। क्या आप मुझे बता सकते हैं कि वह नाम कैसा है?”
सेनानी ने सिर हिलाया और प्रतीक्षा करने लगा। वह भी मुस्कुरा रहा था, क्योंकि उसकी रानी प्रसन्न थी और उसके चेहरे पर खुशी झलक रही थी, ऐसा नजारा उसने अपने लंबे सेवाकाल में कभी नहीं देखा था।
“इतिहास में वह पहला परित्यक्त बच्चा है जिसे सोने और धन-दौलत से सजाया गया है, इसलिए मैंने उसके लिए एकदम सही नाम सोचा,” उसने मुस्कुराते हुए कहा। “वासुसेना, धन-दौलत में जन्मा लड़का।”

आज के समय में…
कर्ण अपने पैरों पर खड़ा हुआ और रथ की ओर वापस चला गया, उस पर बैठकर वह चिंतन करते हुए अतीत के बारे में सोचने लगा।
अगला पड़ाव अपने दोस्त से मिलना था।
हालांकि, वह उनके गुरु की तरह ज्यादा थे।
समय के साथ मुरझाया हुआ एक व्यक्ति, तब तक गुमशुदा रहा जब तक कर्ण को अपनी यात्रा के दौरान उसके बारे में पता नहीं चला। यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह कौन है, वह उससे मिलने गया और उसने देखा कि निषादों ने उसे पकड़कर ले जा रहे हैं।

क्यों, बेशक, वह उनके पुराने गुरु और उनके पिता अधिरथ के सेनापति - चाचा सत्य थे।

31

23 साल पहले…
वासु आठ साल का था और अपने गुरु के साथ तीरंदाजी का अभ्यास कर रहा था। “ऐसे नहीं!” चाचा सत्या ने उसे डांटते हुए कहा, हाथ सीधा रखते हुए और पैर थोड़े मोड़ते हुए। “हम इस बारे में पहले भी बात कर चुके हैं, बेटा।”
उसने धीमी सी आह भरी। उसका ध्यान कहीं और भटक रहा था। सूरज आसमान में काफी ऊपर था, और हल्की हवा उसके चेहरे को छूते हुए उसके झुमकों की ओर बह रही थी, जो किरणों में झिलमिला रहे थे। उसके घुंघराले बाल गर्दन तक पीछे की ओर लहरा रहे थे।
"अगर आप अपनी मां को प्रभावित करना चाहते हैं, तो आपको अपने बैठने के तरीके पर काम करना शुरू करना होगा।"
वासु को वह दिन याद आ गया जब उसने अपनी माँ का संदूक तीरंदाजी के उपकरणों से भरा देखा था और उसने चाचा सत्य से इसके बारे में पूछा था, जिन्होंने जवाब में बताया कि शादी से पहले राधा तीरंदाजी में अपने कौशल का प्रदर्शन करती थी। लेकिन शादी के बाद उसने तीरंदाजी छोड़ दी। ऐसा नहीं था कि उसके पति ने उसे मना किया था, बल्कि उसे बस लगा कि अब उसमें वह रुचि नहीं रही। और इस प्रकार, वासु यह दिखाना चाहता था कि वह उसके पदचिन्हों पर चल रहा है, और उसकी तरह ही एक महान धनुर्धर बनना चाहता है।
लेकिन वह दिन अलग था और अब वह सिर्फ अपने दोस्तों के साथ खेलना चाहता था।
“मुझे नहीं लगता कि मैं कभी अच्छा तीरंदाज बन पाऊंगा,” वासु ने आह भरी।
“ध्यान दो, बेटा!” चाचा सत्या ने पलटकर जवाब दिया।
वासु तुरंत सीधा खड़ा हो गया और अपनी एक आंख बंद कर ली, जबकि तीर धनुष पर चढ़ा हुआ था और उसके सामने लकड़ी के पक्षी की ओर इशारा कर रहा था।
“तुम्हें क्या दिख रहा है?” उसने पूछा।
वासु असमंजस में था। उसने दालचीनी की लकड़ी से बनी एक चिड़िया देखी, लेकिन वह जानता था कि यह एक चालबाजी वाला सवाल है। "मैं देखता हूँ उम...उम...एर्म..."

“तुम्हारा अंतरात्मा क्या कहती है?”
“मुझे एक पक्षी दिख रहा है?” उसने तुरंत कहा और चाचा सत्या द्वारा उसे छड़ी से मारने का इंतजार करने लगा, लेकिन उसने कुछ नहीं किया।
“गोली चलाओ,” उसने शांत भाव से वासु को आदेश दिया।
और उसने ऐसा ही किया, एक ही मंद तीर से—तीर सीधे हवा में गया और…
उस शाखा पर प्रहार करें जिस पर लकड़ी का पक्षी खड़ा था।
“धत् तेरे की!” वासु ने धीमी आवाज़ में बड़बड़ाया। “मेरा निशाना क्यों चूक गया?”
“क्योंकि तुम देख नहीं रहे थे!” उसने उससे धनुष छीन लिया। “तुम्हें उस चीज़ पर ध्यान केंद्रित करना होगा जिसे तुम निशाना बनाना चाहते हो। सोचो, एक दिन ऐसा आएगा जब कोई दुश्मन आएगा और तुम अपना बचाव कैसे करोगे?” “मैं…” वासु ने इसके बारे में सोचा ही नहीं था। वह तो बस शहर की गलियों में मौज-मस्ती और खेल-कूद का आनंद लेने के लिए उत्सुक था।
चाचा सत्य ने सिर हिलाया। उनकी दाढ़ी घनी और समझदार थी और महल में रहने के दौरान वे वासु के शिक्षक, मार्गदर्शक और गुरु थे। “तुम्हें हमेशा बाण को महसूस करना चाहिए। बाण और धनुष तुम्हारा ही हिस्सा हैं। जब तुम इसे महसूस करोगे, तो तुम बाण के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ोगे। तुम वर्तमान में रहोगे। ठीक है, बेटा?”
वासु ने अपना सिर खुजाया। उसे बिल्कुल भी समझ नहीं आ रहा था कि बूढ़ा आदमी क्या कह रहा है।
“सर्वकालिक महानतम तीरंदाज कौन है?” वासु ने पूछा। “शायद, वह मुझे बेहतर सिखा सकता है।”
चाचा सत्या घुटनों के बल बैठते हुए मुस्कुराए। “भीष्म पितामह हैं, जो कहते हैं कि उन्होंने सर्वकालिक महानतम शस्त्र ब्रह्मास्त्र में महारत हासिल कर ली है; और द्रोणाचार्य हैं, जो युद्ध कला के गुरु हैं। सुनो बेटा, जब तुम बड़े हो जाओगे, तो तुम्हें द्रोणाचार्य से मिलना चाहिए और उनसे सीखना चाहिए, अगर तुम अपनी माँ को प्रभावित करना चाहते हो।” वासु ने प्रसिद्ध आचार्य के बारे में सुना था, जो असाधारण प्रतिभा के धनी गुरु थे और जिन्होंने भगवान विष्णु के छठे अवतार परशुराम के साथ रहकर युद्ध कला और उन्नत सैन्य कलाओं का ज्ञान प्राप्त किया था। माना जाता है कि वे अभी भी जीवित हैं और हिमालय की गहराइयों में छिपे हुए हैं।

"क्या आपने भी उनसे कुछ सीखा?"
“काश ऐसा होता! उनकी एक चयन प्रक्रिया है,” चाचा सत्या ने कहा। “और वे केवल राजपरिवार के लोगों को ही प्रशिक्षण देते हैं, और आप तो राजपरिवार से हैं, अंगा के राजकुमार।”
वासु का सीना गर्व से भर गया और वह मुस्कुरा उठा, उसके गोल-मटोल गालों पर दो डिंपल पड़ गए। "जी हां, मैं हूं।"
चाचा सत्या की चांदी जैसी आंखों में नरमी आ गई। "मुझे पता है कि उस दिन तुम मेरे पास तीरंदाजी सीखने इसलिए आए थे क्योंकि तुम्हें अभी-अभी पता चला था कि तुम्हें गोद लिया गया है।"
वासु उस दिन को याद नहीं करना चाहता था। कुछ ही महीने पहले की बात थी और जब उसे इसके बारे में पता चला, तो उसने अपनी माँ को लगभग एक अजनबी की तरह देखा। उसे यह स्वीकार करने में समय लगा कि उसे प्यार किया जाता है और वह उनका बच्चा है, लेकिन फिर भी, उसे घर में खुद को पराया सा लगता था।
और वह जानता था कि उन्हें, विशेषकर उसकी माँ को, उसे स्वीकार करने का एकमात्र तरीका उन्हें प्रभावित करना था—चाहे अपनी तीरंदाजी से हो या अपनी कविता से, यह दिखाना कि वह उन्हीं की तरह है। यह दिखाना कि वह उनका बेटा है, भले ही वह खून का रिश्ता न हो।
“लेकिन अगर तुम तीरंदाज या कवि नहीं बन पाओगे, और भगवान के लिए, कवि मत बनना,” चाचा सत्या ने हंसते हुए आगे कहा, “वे फिर भी तुमसे प्यार करेंगे। वे तुमसे इसलिए प्यार करते हैं क्योंकि तुम जैसे हो वैसे ही हो, वासु।” “अजीब सा लग रहा है,” उसने अपनी कोहनियों को रगड़ते हुए कहा।
मुझे पता है। मैं इस बात के खिलाफ थी कि उसे तुम्हें यह बताना पड़ा। लेकिन उसे लगा कि तुम्हें जानना ही चाहिए। तुम्हें यह जानना ही है, वरना वह तुमसे यह विकल्प छीन लेगी।
"पसंद?"
“बड़े होकर अपनी असली माँ को ढूंढने का विकल्प। मुझे यकीन है कि एक दिन तुम ऐसा कर लोगे।” अंकल सत्या ने उसके बालों को सहलाते हुए पूछा, “तुम्हें ये खूबसूरत झुमके और तुम्हारे कमरे में रखा कवच किसने दिया?”
उसने कभी अपने आरामदायक घर से बाहर निकलकर उस महिला को खोजने के बारे में नहीं सोचा था जिसने उसे छोड़ दिया था।
और वह ऐसा नहीं करना चाहता था। कम से कम, अभी तो नहीं।

“[illegible] [illegible] [illegible] [

32

आज के समय में…
ताताका वन, आधुनिक दक्षिण पश्चिम बिहार…
अगर किसी एक समुदाय में जाने की हिम्मत नहीं करनी चाहिए, तो वह है निषाद समुदाय। सबसे प्राचीन हथियारों से लैस और पीपल या मैंग्रोव के सबसे ऊंचे पेड़ों पर बने घरों में रहने वाले ये आदिवासी आपस में इशारों से बात करते थे। चीखने से लेकर ताली बजाने तक, वे संवाद करने के लिए तरह-तरह की आवाज़ें निकालते थे।
और निषाद, जिसका शाब्दिक अर्थ है वनवासी, झोपड़ियों से लेकर वृक्ष-आश्रय तक और छोटे-छोटे साम्राज्यों तक, काफी विकसित हो चुके थे। उनका पूरा जीवन जंगलों और पेड़ों की शाखाओं और लताओं पर ही व्यतीत होता था। लेकिन वे उतने असभ्य नहीं थे जितना उन्हें समझा जाता है। वे काफी बुद्धिमान थे और कुशल शिकारी और मछुआरे थे। वे अपना ठिकाना समुद्र या नदियों के पास बनाते थे, ताकि उन्हें वहाँ से भोजन मिल सके।
और जबकि अधिकांश निषाद जनजातियाँ शांतिप्रिय थीं और सबसे अलग-थलग रहती थीं, वह जनजाति जिससे कर्ण मिलने जा रहा था और जिसमें सत्य को बंदी बनाया गया था—वह सबसे खतरनाक थी।
क्रोध और आक्रोश से प्रेरित, न्याय की भावना से ग्रस्त, निषाद समुदाय शांतिप्रिय नहीं था, बल्कि उन्होंने धृतराष्ट्र और यहां तक कि जरासंध के सैनिकों के खिलाफ विद्रोह किया।
और इसीलिए कर्ण उनसे मिलकर बेहद प्रसन्न हुआ।
और वे भी तैयार थे... एक शर्त पर।
जैसे ही कर्ण घने जंगल में पहुंचा, उसे सीटियों और तालियों की आवाजें सुनाई देने लगीं।
ये आ गए।
कर्ण ने शांत भाव से अपने रथ पर सवार होकर अपना हाथ आगे बढ़ाया। उसके पास न कवच था और न ही कोई हथियार। वह उन्हें यह दिखाना चाहता था कि वह किसी के

लिए खतरा नहीं है और जंगल में मौजूद हरियाली, समुद्री पक्षियों और कभी- कभार दिखने वाले बबून और लेमूर के अलावा उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।
जब तक वे नहीं आए।
एक धक्के के साथ।
उसके गले के पिछले हिस्से के पास एक भाला चुभा हुआ था, जो एक साधारण, नुकीली छाल से बना था। निषादों की आदत थी कि वे धातु, लोहा या उन्नत तकनीकों से जुड़ी किसी भी चीज का इस्तेमाल नहीं करते थे। यह सब उन्हें पसंद नहीं था।
"अच्छा, आपसे मिलकर भी खुशी हुई।"

आगे धकेले जाने पर कर्ण के चारों ओर दर्जनों भाले थे, जबकि उसके हाथ बांस की कठोर रस्सी से बंधे हुए थे। उसे आगे चलने के लिए कहा गया, जब तक कि वह एक छोटे से खुले मैदान में नहीं पहुँच गया, जहाँ एक नीले रंग का तालाब था, और वहाँ बांस के पुलों से जुड़े हुए वृक्ष-घर थे। वहाँ निषादों द्वारा पूजे जाने वाले देवताओं के प्रतीक रखे हुए थे और एक छोटी सी झोपड़ी थी जहाँ राक्षस रावण की मूर्ति स्थापित थी; निषादों के अनुसार, वह उनका धर्मगुरु था। दुष्ट नहीं।
देखने से तो ऐसा लगता था कि ये लोग काफी आदिम थे और उनका पहनावा भी वैसा ही था। वे यूनानियों और मिस्रियों से आयातित कोई भी वस्त्र नहीं पहनते थे, जो राजपरिवार पहनते थे। वास्तव में, वे पत्तों और लंगोट जैसे साधारण वस्त्रों में ही शरीर के आवश्यक अंगों को ढके रहते थे। कुछ पुरुष और महिलाएं, यहाँ तक कि बच्चे भी, नग्न अवस्था में घूमते थे, उनके शरीर खुरदुरे, गहरे रंग की त्वचा वाले और बाल कोयले जैसे काले थे।
मछली और मुर्गे की गंध हवा में फैल रही थी और एक बकरी के सिर काटे जाने की चीख सुनाई दे रही थी, तभी उसे धक्का देकर उस सीढ़ी पर चढ़ाया गया जो वृक्षगृह के सबसे ऊपरी हिस्से तक जाती थी, आसमान में, जहाँ बादल महसूस किए जा सकते थे और हवा ठंडी थी। लोग कर्ण के पास से गुज़र रहे थे, एक सभ्य व्यक्ति को कुर्ता पहने देखकर, उसे ध्यान से देख रहे थे मानो वह कोई अजनबी हो।

कर्ण ने उनमें से कुछ को अपने हथियार और सरकंडे के धनुष तेज करते हुए भी देखा, जो निश्चित रूप से उसके धनुष से छोटे थे, लेकिन साथ ही साथ खंजर भी थे, जो धातु के नहीं बल्कि लकड़ी के बने थे।
निषादों का एक लंबा इतिहास रहा है—कहा जाता है कि उनके महान पूर्वज राजा वेना थे, जो इतने दुष्ट और क्रूर थे कि देवी भूमिदेवी को धरती पर आकर गाय का रूप धारण करना पड़ा और छिपना पड़ा, क्योंकि वेना अपने अत्याचारों से धरती को क्षति पहुंचा रहा था। ऋषियों के एक समूह ने मिलकर वेना को मार डाला और भूमिदेवी की सहायता की।
जबकि आधुनिक निषादों को अतीत की परवाह नहीं है, कर्ण के लिए यह देखना दिलचस्प था कि वे घृणा, लोभ और बुराई से कैसे पैदा हुए थे।
आगे बढ़ते ही वह एक झोपड़ी में दाखिल हुआ और खुद को एक अच्छी रोशनी वाले कमरे में पाया, जहाँ एक आदमी बैठा था। वह कर्ण से थोड़ा बड़ा लग रहा था, उसकी मुस्कान बनावटी थी, उसके सिर पर फूलों से सजा लकड़ी का मुकुट था और उसका शरीर झुलसा हुआ और घावों से भरा था। उसकी एक आँख नहीं थी, दूसरी संगमरमर की बनी थी, और उसके स्तनों, कानों और नाक में छेद थे।
"अगर यह मेरा पुराना दोस्त नहीं है, तो इसे खोल दो," उनके मुखिया ने कहा। और कर्ण को लाने वाले लोग तुरंत ऐसा करने लगे, उन्हें इस बात का एहसास नहीं था कि वह सरदार का मित्र था।
"तुम्हें सच में मेरी तस्वीर यहाँ बनानी चाहिए और उसे चिपका देना चाहिए ताकि उन्हें पता चले कि मैं तुम्हें जानता हूँ," कर्ण ने अपनी चोटिल कलाई को सहलाते हुए कहा।
“उनकी बातों पर ध्यान मत दो। क्या तुम उसे ले आए हो?” सरदार की आँखों में लालच झलक रहा था।
“बिल्कुल, जैसा कि मैंने आपसे पहले वादा किया था,” कर्ण ने आगे बढ़ते हुए कहा और सरदार को पेश किया, जो कद में छोटा और आम सरदारों की तुलना में अधिक विनम्र था। “यह रहा।”
उसने द्रोणाचार्य की छड़ी कर्ण को सौंप दी। कर्ण ने उसे अपने वस्त्र के नीचे छिपा रखा था।
सरदार ने उसे झट से पकड़ लिया और लालच भरी निगाहों से उसे निहारने लगा। “यह कितना सुंदर है, है ना? अगर पिता हिरण्यधनु आज जीवित होते तो उन्हें कितना गर्व होता। आखिर उस गुरु ने तो मुझे मूर्ख बना दिया था। मैं कल्पना कर सकता

हूँ कि अब वह गलियारों में मूर्ख की तरह लंगड़ाते घूम रहे होंगे।” वह रुका और प्रसन्नता से अपने आदमियों को आदेश दिया, “इसे इनाम दिलाओ।”
वे लोग मान गए और पीछे से अंदर चले गए, तभी उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति को बाहर निकाला जो चारों तरफ से बंधा हुआ था, कमजोर था और उसके बाल उसके चेहरे पर बिखरे हुए थे। वह किसी साधु जैसा दिख रहा था, न कि उस ऋषि और गुरु जैसा जो वह कभी हुआ करता था।
कर्ण ने चाचा सत्या को देखा और उसके मन में उनके लिए दुख का भाव जागा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह इस स्थिति में कैसे पहुँच गए। किस वजह से ऐसा हुआ, लेकिन उसे पता था कि उसे जल्द ही अपने सवाल का जवाब मिल जाएगा।
“तुम्हारे चाचा सत्या ने हमारी ज़मीन के साथ बहुत बुरा बर्ताव किया है। अगर तुम मुझसे मिलने नहीं आते तो उनका सिर कुल्हाड़ी से काटकर कीचड़ में घसीट दिया जाता। अब यहाँ से चले जाओ,” सरदार ने आदेश दिया।
कर्ण ने कहा, "मेरे पास एक प्रस्ताव है।"
सरदार ने अपनी भौंहें उठाईं। "जी हां, तुमने ऐसा किया है। सुना है तुम वन अतिक्रमणकारी धृतराष्ट्र के पास गए थे और उनसे मुकुट की भीख मांगी थी।" मैंने भीख नहीं मांगी। उन्होंने मुझे यह दिया।
“लेकिन उन्होंने तुम्हें सेना तो नहीं दी। वे चाहते हैं कि तुम हार जाओ, है ना?” सरदार हँसते हुए बोला।
“तुम मेरी मदद कर सकते हो इसे बदलने में।” कर्ण जानता था कि निषाद समुदाय का समर्थन हासिल करना बुद्धिमानी होगी। जब सुयोधन ने कहा कि उसे सेना की व्यवस्था करनी है, तो उसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि वह गैर-परंपरागत लोगों का इस्तेमाल कर सकता है, न कि उन लोगों का जिन्हें आमतौर पर चुना जाता है।
“ओह, क्या मैं कर सकता हूँ?” वह खड़ा हुआ, चलने लगा और अपना बिना अंगूठे वाला हाथ कर्ण के कंधे पर रख दिया। “यह कैसा प्रस्ताव है?”
कर्ण ने मुखिया की ओर देखा।
बेशक, वह उस कमीने को जानता था। उसकी मुलाकात द्रोण के गुरुकुल में हुई थी। लेकिन यह व्यक्ति कभी गुरुकुल के करीब नहीं पहुंच पाया। उसे उसकी जाति के कारण कभी प्रवेश नहीं दिया गया।
इस प्रकार उसने छिपकर द्रोणाचार्य की सारी शिक्षाएँ ग्रहण कर लीं, फिर वह उस महान वृद्ध गुरु के पास जाकर उन्हें बताया कि उसने उनसे गुप्त रूप से

शिक्षा प्राप्त की है। द्रोणाचार्य क्रोधित हुए, परन्तु वे जानते थे कि यह सरदार धनुर्विद्या में निपुण है, इसलिए दक्षिणा के रूप में उन्होंने उससे अपना अंगूठा काटने को कहा।
बेशक, कर्ण निषाद प्रमुख और राजा के सामने खड़ा हो गया—
Eklavya.

33

वह आदमी बदल गया था।
वह अब वह व्यक्ति नहीं रहा जिसे वह जानता था; बल्कि एक दुष्ट प्राणी बन गया था।
क्या जरासंध के विरुद्ध सेना में उसे शामिल करना एक गलती थी?
वह एक संपत्ति चाहता था, लेकिन क्या उसे बदले में एक देनदारी मिल गई?
वे दोनों एकलव्य द्वारा दी गई एक झोपड़ी में रात बिताने के लिए रुके थे, क्योंकि वे अगले दिन मालिनीपुर के लिए रवाना होने वाले थे और देवी से मिलने वाले थे।
एक डरे हुए पिल्ले की तरह, सत्या कोने में बैठा अपने नाखूनों को आपस में रगड़ रहा था और अपने दांतों को किटकिटा रहा था।
कर्ण को एकलव्य से बात करने के लिए बाहर जाना पड़ा। चाँदी जैसी रोशनी हो चुकी थी और स्थानीय लोगों की बांसुरी की मधुर ध्वनि सुनाई दे रही थी, साथ ही पके हुए चिकन, केकड़े और सैल्मन की खुशबू भी आ रही थी। ये लोग बिना किसी कारण के जश्न मना रहे थे और यही एक निषाद का जीवन था। चाहे दुनिया आग में जल जाए, वे नहीं।
“क्या तुम्हें मैं याद हूँ?” कर्ण ने सत्य से पूछा।
उस आदमी ने कोई जवाब नहीं दिया। उसका चेहरा नीचे झुका हुआ था और उसके घने बाल एक हुड की तरह लग रहे थे। वह लगातार पलकें झपका रहा था।
“मैं वासु हूँ,” उसने कहा। “मुझे याद है? मैं द्रोणाचार्य के गुरुकुल गया था, वही गुरुकुल जिसका सुझाव आपने दिया था। हे भगवान, आपको क्या हो गया है?”
सत्या ने ऊपर देखा। उसकी आँखें पहले की तरह ही चाँदी जैसी थीं। "लड़के," एक कर्कश, भारी आवाज़ आई, "तुमने मुझे क्यों बचाया?"
वह बोलता है।
क्योंकि मुझे आपकी मदद चाहिए।

“मैं क्या मदद कर सकता हूँ? मैं किसी काम का नहीं हूँ। आपने गलत फैसला लिया है,” सत्या ने कहा।
कर्ण ने सिर हिलाया। "शायद, या शायद नहीं। तो क्या तुम भागने की योजना बना रहे हो?"
“जल्द ही, मैं इस खाई से बाहर निकल जाऊंगा। लेकिन तुमने मेरी मदद क्यों की?”
“क्या तुम्हें मैं याद नहीं?” उसने झुंझलाहट भरे लहजे में कहा।
“मेरा पिछला जीवन मायने नहीं रखता। वह एक सपना था।”
“मेरी माँ राधा थीं। आपकी रानी। आप सेनापति थे, जिन्होंने मुझे सबसे पहले योद्धा बनना सिखाया। आपने मुझे तीरंदाजी सिखाई…क्या आपने…?”
और उसने तिरस्कार भरी नज़र से देखा। “राधा…” उसने कहा, “राजमाता राधा। हाँ। मुझे उनका चेहरा दिख रहा है, लेकिन धुंधला सा। मुझे याद है…वासु…ओह, सब धुंधला सा है। बहुत कुछ धुंधला ही है।”
मैं वासु हूँ।
"तुम हो?"
कर्ण ने अपने कुंडल दिखाए। "याद है?"
“अरे हाँ, वो बालियाँ,” वो याद करने की पूरी कोशिश कर रहा था, “हाँ, हाँ, मुझे याद है। लेकिन काम खत्म होते ही मैं चला जाता हूँ।”
“तुमने ऐसा क्या किया जिससे एकलव्य के हृदय में घृणा उत्पन्न हुई?”
वह रुका। वह उस बारे में भी सोच रहा था। “मुझे राधा याद है।” उसने जवाब दिया, मानो कर्ण का सवाल महत्वपूर्ण ही न हो। “हाँ, मुझे याद है। वह बीमार थी और हम चिंतित थे। और फिर वह मुरझा गई, कई साल पहले की बात है, ऐसा लगता है जैसे मैं कोई और ही जीवन जी रहा था। एक बूढ़ी औरत की तरह, लेकिन वह बूढ़ी नहीं थी। उसे किसी तरह का बुखार था जिससे उसकी मौत हो गई। ओह, कितना दुखद दिन था।”
कर्ण रुका और अपने होंठ सिकोड़ लिए। "उसके बाद तुम्हारा क्या हुआ?" “वासु…वासु…” उसकी आँखें सिकुड़ गईं। “तुम वही लड़के हो जिसने हमें सड़ने के लिए छोड़ दिया।”
मैं गुरुकुल में था।
“तुम अपनी माँ को लेने आ सकते थे।” सत्या अपने पैरों पर खड़ा हुआ, उसके शरीर से मवाद, मल और गंदगी की बदबू आ रही थी। “इसीलिए।”

“क्या, क्यों?”
अब वह करीब आ गया था और थोड़ा झुककर बैठा था, मानो किसी नशे में चूर हो; उसकी आँखें लाल थीं और मुँह से लार टपक रही थी। "इसीलिए मुझे तुम याद नहीं हो," वह रुका। "तुम एक बुरी याद थे।"

"मुझे तुम्हें कुछ दिखाना है," एकलव्य ने कहा और निषादों के शिविर से निकलकर एक सुनसान रास्ते पर चल पड़ा।
और देश के अधिकांश सरदारों या वरिष्ठ स्वामियों के विपरीत, वह अकेले ही चलते थे। कर्ण के अलावा उनके साथ कोई अंगरक्षक नहीं था।
मुझे तुम्हारे आदमी दिखाई नहीं दे रहे हैं।
“आप यहां हैं। मुझे किसी और की जरूरत नहीं है,” एकलव्य ने कहा, और वह उस गुरु की छड़ी लेकर चलने लगा जिससे वह नफरत करता था।
फिर भी, उसने छड़ी का इस्तेमाल किया। कर्ण जानता था कि एकलव्य चाहे द्रोण के प्रति कितना भी तिरस्कार दिखाए, वह फिर भी उसका सम्मान करता था। बादलों से छनकर चांदनी चमक रही थी। और घने जंगल में कोहरा सांप की तरह लहरा रहा था।
कर्ण सत्य की कही बातों को लेकर अब भी असमंजस में था। वह आदमी पागलों जैसा लग रहा था और उसकी मदद लेने की उम्मीद लगभग खत्म हो चुकी थी। मुझे उसे बाहर निकालने के लिए इतनी कोशिश नहीं करनी चाहिए थी। लेकिन वह फिर भी कोशिश करेगा। उसने हिमालय में यही सीखा था कि किसी पर भी हार नहीं माननी चाहिए। “क्या यह सच है कि आप भगवान परशुराम से मिले थे?” एकलव्य ने पूछा।
कर्ण जानता था कि परशुराम के साथ हुए समझौते का हिस्सा होने और उनसे शिक्षा प्राप्त करने के कारण वह सत्य का खुलासा नहीं कर सकता था और न ही ऐसा कोई विचार व्यक्त कर सकता था जिससे भगवान परशुराम के विरुद्ध कुछ भी प्रचलित हो। "आप ऐसा कह सकते हैं।"
“और उसने तुम्हें भी देश निकाला दे दिया?”
"हाँ।"

“तुम्हें गुरुकुलों से क्या लगाव है?” एकलव्य मुड़ा, उसकी सांवली त्वचा चांदनी में चमक रही थी। “हर बार अंदर जाते ही तुम्हें बाहर क्यों निकाल दिया जाता है?”
कर्ण ने कंधे उचकाते हुए कहा, "मुझे अपने आप में कोई समस्या नहीं दिखती।" "क्योंकि तुम अहंकार से भरे हुए हो, इसीलिए।"
"देखिए, मुझे अंधेरे में की जाने वाली अपमानजनक टिप्पणियां पसंद हैं और मैं वास्तव में दिन में उनका इंतजार करता हूं, लेकिन मैं यह जानना चाहूंगा कि क्या यही एकमात्र कारण है कि हम यहां हैं।"
उसकी माणिक की अंगूठी चमकी और फिर उसने पौधों और झाड़ियों के पास किसी चीज की ओर इशारा करते हुए कहा, "मैं आपको यह दिखाने के लिए यहां हूं।"
कर्ण घुटनों के बल बैठ गया और उस ओर देखने लगा जिस ओर इशारा किया जा रहा था — तभी उसे एहसास हुआ…
यह एक हाथ था।
एक इंसान का हाथ!
कर्ण के गले में भय का एक झटका सा लगा, पित्त अटक गया था जिसे वह निगल नहीं पा रहा था। "यह क्या है?"
"आपको क्या लगता है वो क्या है?"
"मेरा मतलब है, आप मुझे यह क्यों दिखाना चाहते हैं? यह बिल्कुल भी रोमांटिक नहीं है, आप जानते हैं।"
एकलव्य ने आंखें घुमाईं। “तुम्हारे इस तीखे रवैये से मुझे कुछ हासिल नहीं होगा। मैं तुम्हें यह इसलिए दिखा रहा हूं क्योंकि अगर तुम चाहते हो कि मेरी सेना जरासंध के खिलाफ लड़े, तो तुम्हें मेरा एक काम करना होगा।” कर्ण ने आह भरी। मैं कुछ नहीं कर रहा, उसने सोचा। उसे शब्दों का सहारा लेकर इस स्थिति से निकलने का रास्ता खोजना होगा और कुछ लाभ भी प्राप्त करना होगा। "क्या तुम्हें यह एहसास है कि जरासंध को मारकर, कोई भी तुम्हारी आजीविका पर हमला नहीं करेगा?"
“लेकिन वो औरत फिर भी ऐसा करेगी। उसका नाम क्या है? देवी। जी हाँ। तुमने धृतराष्ट्र के साथ साझेदारी कर ली है और वो मेरे लिए और भी बड़ी समस्या है।”
मैं राजा हूँ। मैं उसे ऐसा नहीं करने दूँगा…”

“मेरे लिए तो यह सब अनिश्चित है। मुझे कैसे पता चलेगा? इसकी क्या गारंटी है? मैं अनुबंधों और दस्तावेजों में विश्वास नहीं करता। आखिर मैं एक जंगली ही तो हूँ, है ना?” उसने व्यंग्य किया, यह वही शब्द था जिससे तथाकथित सभ्य लोग अक्सर उसे पुकारते थे। “मैं बस इतना जानता हूँ कि अगर मैं तुम्हारे युद्ध में कुछ सौ आदमी भेजता हूँ, तो मुझे यह पता होना चाहिए कि मैंने उन्हें किसी ऐसे व्यक्ति को दिया है जिसने मुझ पर एहसान किया है। वरना, ऐसा लगेगा कि मैं यह मुफ्त में कर रहा हूँ और मैं कुछ भी मुफ्त में नहीं करता।”
“मैं तुम्हें युद्ध में लूटी गई सारी संपत्ति दे दूंगा। पचास प्रतिशत?” कर्ण ने हताशा से पूछा।
“युद्ध में लूटी गई चीज़ों का मैं क्या करूँ? सोना? चाँदी? हमारा समुदाय आपकी मुद्रा में लेन-देन नहीं करता। हम वस्तु विनिमय करते हैं। हम साझा करते हैं। और हम प्रेम करते हैं। मुझे यकीन है कि आपके लोग ऐसा नहीं करते।” बहुत खूब। और भी उपहास।
कर्ण ने दांत पीसते हुए आह भरी।
एकलव्य ने आगे कहा, “मेरे आदमी काम आ सकते हैं। वे ऐसे साँप हैं जो रात में आकर जरासंध को पीछे से, हर तरफ से, हर तरफ से नष्ट कर देंगे। वे संख्या में कम होंगे, लेकिन असरदार होंगे। चतुर। और यकीन मानिए, मैं यह एहसान सिर्फ इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि मैं आपको जानता हूँ। आप अपने वचन के पक्के हैं, इस छड़ी की तरह। मुझे पता है आप एक अच्छे राजा बनेंगे, लेकिन इसके लिए आपको मेरी मदद करनी होगी।”
कर्ण ने बिना कुछ बोले या विरोध किए उस हाथ को उठा लिया। उसने हाथ की जांच की और पाया कि उस पर बेरहमी से काटा गया था। "मैं यह क्या देख रहा हूँ?" “एक हत्या। किसी दूसरी दुनिया के प्राणी द्वारा।”
कृपया अपनी बात से शुरुआत न करें…
“इन्हें वेयरटाइगर कहते हैं,” एकलव्य ने झल्लाकर कहा और कर्ण ने आँखें घुमाईं, तभी उन्हें पंखों की फड़फड़ाहट और कौवे की कांव-कांव सुनाई दी। “आधा इंसान, आधा बाघ। भयानक जानवर।”
“कैसे…” वह इस मूर्खता को पचा नहीं पा रहा था। कर्ण जानता था कि निषादों में अलौकिक शक्तियों पर विश्वास करने की आदत थी, इसीलिए उन्होंने एक जादूगरनी का पद भी रखा था जो उनके लिए अनुष्ठान करता था। उनका मानना था कि

बीमारियाँ भूतों के वश में होने के कारण होती हैं, या उनकी भाषा में कहें तो प्रेत के कारण। यह सब उसके लिए बहुत ज़्यादा था और वह बस अपनी पलकें झपका सकता था, लेकिन फिर भी यह किसी का विश्वास था, इसलिए उसने कुछ नहीं सोचा। “ठीक है, ठीक है। तो यह एक वेयरटाइगर है। यह तुम्हारे आदमियों को मार रहा है।”
“वह मेरे सबसे अच्छे साथियों में से एक था। मैंने उसे यहीं छोड़ दिया, क्योंकि मुझे उससे बहुत डर लगता था। उसके शरीर का बाकी हिस्सा—वह गायब हो गया। हमेशा के लिए खत्म। उसे वेयरटाइगर खा गया।”
कर्ण अपने पैरों पर खड़ा हुआ, कटा हुआ, चबाया हुआ हाथ अभी भी उसके हाथ में था। "मैं समझ गया। और यह शेरबाज़ तुम्हारे आदमियों को क्यों मार रहा है?" "शायद इसलिए क्योंकि उसे भूख लगी है। वेयरटाइगर रात में अपना रूप बदलते हैं और मांस का शिकार करते हैं।"
"लेकिन आपकी बस्ती के इतने करीब क्यों?"
उसने घबराकर होंठ चबाते हुए सिर हिलाया। “दरअसल, वह हममें से ही एक था। मेरा एक सिपाही, जो एक बीमारी से बीमार पड़ गया था। उसके चेहरे पर लाल-लाल फोड़े निकल आए थे। हम उसे तांत्रिक के पास ले गए और उसने उसे कुछ दवा दी। उसने उसे सम्मोहित किया, उस पर जादू किया, या कुछ और, मुझे नहीं पता। जब वह जागा, तो उसके फोड़े तो चले गए थे, लेकिन वह बदल गया था। उसे मांस खाने की तीव्र इच्छा हो रही थी और क्योंकि वह हममें से ही एक था, हमने उसे छोड़ दिया, भगा दिया, लेकिन वह यहाँ आया और उसने हत्याएं शुरू कर दीं। मेरे किसी भी सैनिक ने उसे मारने की हिम्मत नहीं की क्योंकि वह हममें से ही एक था। हम अपने ही हाथों से अपने ही किसी साथी का शिकार नहीं करते। और इसलिए मुझे आश्चर्य होता है, आपको मदद की ज़रूरत है और आप भारत के सबसे प्रतिभाशाली धनुर्धर हैं। इस प्राणी को हराने के लिए आपसे बेहतर कौन हो सकता है?”
तो क्या तुम अंगा के राजा को ऐसा करने के लिए कहोगे?
एकलव्य पास आया और एक पल के लिए कर्ण ने उसकी आँखों में उत्साह और बचपन की वही मासूमियत देखी - बचपन में वह छोटा और जीवन से भरपूर था, जब तक कि उसका अंगूठा कट नहीं गया और वह अपना सबसे प्रिय काम, तीरंदाजी, करने में असमर्थ हो गया। "क्या राजा का काम अपनी प्रजा को खुश रखना नहीं है? हम इस हत्यारे, राजा कर्ण से दुखी हैं।" उसने ये शब्द खुशी से थूकते हुए कहे। "क्या तुम ऐसा करोगे?"

क्या मेरे पास कोई विकल्प है?
"आपका यहाँ कोई काम नहीं है।"
लेकिन मुझे तुम्हारे आदमियों की जरूरत है।
“और मुझे उस प्राणी का सिर चाहिए। हम सबकी अपनी-अपनी इच्छाएँ होती हैं,” उसने मुस्कुराते हुए कहा।
कर्ण ने सिर हिलाया। "ठीक है, मैं करूँगा। मैं सुबह उसकी तलाश करूँगा।" “स्मार्ट। रात में वो…”
जंगल से एक दहाड़ सुनाई दी। जैसे कोई बाघ दहाड़ रहा हो।
“अच्छा, वो जाग गया है। हमें वापस चलना चाहिए।”
कर्ण तैयार नहीं था। उसके पास हथियार और कवच नहीं थे। उसे अपने कमरे में वापस जाना पड़ा और शायद... शायद वह सत्य को भी अपने साथ ले जाए। शायद सत्य के साथ अधिक समय बिताने से उसके प्रति सत्य का व्यवहार बदल जाए, हालांकि कर्ण को इस बात का गहरा अपराधबोध था कि वह अपनी माँ के पास नहीं लौटा। अपनी मरती हुई माँ के पास, और इसके लिए वह हमेशा खुद को कोसता रहेगा।
“मैं आपसे कुछ पूछना चाहता था,” कर्ण ने कहा।
"हाँ?"
"सत्या ने ऐसा क्या किया था कि तुम्हें उसे गुलाम बनाना पड़ा?"
एकलव्य रुक गया। “तुम्हें नहीं पता। आह।” उसने सिर हिलाया। “तुम्हारा तथाकथित गुरु, जो तुम्हारे बचपन का गुरु था, नशीले पदार्थों का धंधा करता है। वह सोमालाता पौधे का अर्क बेचता है और उसका व्यापार भी करता है। सबसे ज़्यादा बोली लगाने वाले को बेचता है और बीच में थोड़ा-बहुत पैसा कमाता है।”
सोमालाटा? उसने इस पौधे के बारे में सुना था। ये उत्तर में उगते हैं और अधिक मात्रा में सेवन करने पर अत्यधिक विषैले हो सकते हैं, जबकि सीमित मात्रा में सेवन करने पर ये बेहतरीन साइकेडेलिक अनुभव प्रदान कर सकते हैं। लेकिन कई लोगों ने इसके सेवन के प्रयास में अपनी जान गंवाई है। सोमालाटा का उपयोग प्राचीन देवताओं द्वारा किया जाता था, जैसे इंद्र, जो इसकी विषाक्तता को भी सहन कर सकते थे, लेकिन आधुनिक मनुष्य नहीं। और अब यह हर जगह प्रतिबंधित है।
“तो आप उसे सोमास बेचने के आरोप में गिरफ्तार करते हैं? इसमें ऐसी क्या खास बात है?”

[illegible] [illegible] [illegible] “[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

34

22 साल पहले…
वासु अंततः इसे प्रदर्शित कर सका।
यह उसका समय था। पूरे एक साल से वह अपनी मां को तीरंदाजी का हुनर दिखाने के लिए अभ्यास कर रहा था।
उसके माता-पिता और छोटा भाई उसका इंतज़ार कर रहे थे, जबकि वह हाथ में धनुष लिए सामने रखे लक्ष्य पर नज़र गड़ाए बैठा था। लक्ष्य एक सेब था; उसके पीछे उसे चाचा सत्या की उपस्थिति का अहसास हो रहा था।
राधा उत्साह से ताली बजा रही थी और उसके लिए जयकार कर रही थी, लेकिन वासु की हालत बिल्कुल भी सामान्य नहीं थी।
वह घबराया हुआ था। इसलिए नहीं कि वह लक्ष्य भेद नहीं पाएगा। अगर वह लक्ष्य भेद नहीं पाता तो भी कोई बात नहीं, पर फिर वह असफल हो जाता। और असफलता के विचार ने उसे बुरी तरह जकड़ लिया था। पिछली रात उसे घुटन हो रही थी और घबराहट भी हो रही थी; ऐसा लग रहा था जैसे उसकी सांसें रुक-रुक कर आ रही हों और उसे कड़ाके की ठंड लग रही हो; उसका पूरा शरीर दलदली ज़मीन में धंस रहा था। लेकिन अब वह बेहतर महसूस कर रहा था। चाचा सत्या ने उसे अपनी सांसों पर ध्यान केंद्रित करने और असफलता पर नहीं, बल्कि केवल सफलता पर ध्यान देने के लिए कहा था।
अगर आप ठान लेंगे तो जरूर सफल होंगे।
लेकिन क्या यह इतना आसान था? बस अपना मन लगा देना ही काफी था?
उसने एक बार फिर गहरी सांस ली और तीर को कमान पर बांधकर लक्ष्य की ओर निशाना साधा—तभी उसे एहसास हुआ कि उसके गले में घबराहट और निराशा की एक गांठ सी बन गई है।
मैं असफल हो जाऊँगा। मैं असफल हो जाऊँगा। नहीं।
वासु को गोद लिया गया था।
वह था…

मैं एक त्यागा हुआ बच्चा हूँ। अपनी माँ को गौरवान्वित न करने पर मुझे फिर से त्याग दिया जाएगा। मेरा बधियाकरण कर दिया जाएगा। वे मुझसे प्यार नहीं करेंगे।
वह बहुत ज्यादा सोच रहा था और इसका उस पर इतना ज्यादा असर पड़ रहा था कि उसकी उंगलियों के सिरे ठंडे पड़ गए थे और उसका सिर दर्द करने लगा था।
अभी नहीं। मैं अनिश्चितता को ऐसा करने नहीं दे सकता।
तुम गोद ली हुई हो! तुम्हारी असली माँ ने तुम्हें नदी में फेंक दिया था, तुम किसी काम की नहीं हो...
उसने अपनी आँखें बंद कर लीं—विचारों में खो जाने के कारण वह ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा था। उसने अपनी माँ को प्रभावित करने के लिए तीरंदाजी का अभ्यास शुरू किया था और उसने फिर से अपनी माँ की ओर देखा… वह उलझन में लग रही थी, लेकिन फिर भी बेहद खुश थी। उसकी आँखों में आशा थी कि उसका बेटा एक तीरंदाज बनेगा। एक महान तीरंदाज, जैसा वह खुद नहीं बन पाई थी। और फिर उसने तीर चलाया।
बिना सोचे-समझे। बिना धैर्य के।
और वह सेब से काफी दूर जाकर गिरा। काफी दूर।
वासु के आसपास सन्नाटा छा गया था, और उसे बहरेपन का अहसास हो रहा था, जहाँ उसे केवल घोड़ों के खुरों की तेज आवाज सुनाई दे रही थी—तभी वह जमीन पर गिर पड़ा।
मैं उसे निराश कर दिया है।
वह अपनी चिंता को खुद पर हावी होने दे रहा था, तभी उसने अपनी माँ की परछाई को अपने ऊपर मंडराते हुए देखा, और वह उसे पुकारने की कोशिश कर रही थी। वह चिंतित थी।
माँ, मुझे माफ़ कर दो। तुम्हारा बेटा न बन पाने के लिए।

आज के समय में…
"तुम मुझे क्यों ले जा रहे हो?" सत्य ने पीछे से आवाज़ लगाई।
कर्ण ने सत्य को अपने नियंत्रण में रखा हुआ था और वह अपने पुराने गुरु को अपने पीछे खींच रहा था। ऐसा करना उसके लिए असहज था, क्योंकि सत्य भले ही

सोमा का आदी और व्यापारी बन चुका था, फिर भी कर्ण उसका बहुत सम्मान करता था।
“इसीलिए तुम मुझे याद नहीं रख पा रहे हो,” कर्ण ने कुचली हुई ज़मीन पर पैर पटकते हुए कहा, क्योंकि वह तथाकथित वेयरटाइगर के परिचित इलाके में लौट आया था। “तुम बहुत नशे में हो।”
“या शायद, मैं तुम्हें याद नहीं करना चाहता,” सत्या ने ज़मीन पर थूकते हुए कहा। “मुझे कुछ पैसे चाहिए। मुझे पैसे दो। काफी समय हो गया है…”
“चुप रहो,” कर्ण रुक गया।
“चुप रहो? कौन है ये…”
तब तक कर्ण ने अपनी आँखें बंद कर ली थीं और गहरी साँसें लीं, फिर वह ध्यान लगाने लगा। आसपास का वातावरण, गौरैयों की चहचाहट और हवा की सरसराहट। वह कुछ महसूस करना चाहता था... कोई जीव...
और फिर उसने वह आवाज़ सुनी। वह किसी चीज़ के हड्डी और दांतेदार सतह को चबाने की आवाज़ थी।
“इधर।” कर्ण ने सत्या के गले से पट्टा खींचा और वे झाड़ियों के बीचोंबीच आगे बढ़ गए, जहाँ छोटे-छोटे पौधे उग रहे थे।
“लेकिन मुझे तुम याद हो,” सत्या ने मुंह बनाते हुए हंसते हुए कहा। “तुम वही हो जिसे असफलता से डर लगता था, है ना? एक लड़का, एक डरपोक।” वह हंस रहा था। “तुम्हें तो बहुत घबराहट होती थी, है ना?”
“चुप रहो,” कर्ण ने आह भरी। उसे सत्य को यहाँ लाने का पहले से ही पछतावा हो रहा था।
“अब तुम कैसे हो, बेटा? क्या तुमने उस डर पर काबू पा लिया है?”
कर्ण ने कोई जवाब नहीं दिया। शायद, वह डर अब भी उसके अंदर था। शायद, उसने उस पर काबू पा लिया था। डर की यही खासियत होती है। आपको पता नहीं होता कि कब वह आपको जकड़ लेगा।
"हम आखिर किस चीज का शिकार कर रहे हैं?" सत्या ने ऊबते हुए आह भरी।
“एक बाघ।” कर्ण ने यही सोचा होगा। यह आधा मनुष्य, आधा बाघ नहीं हो सकता।
उसे कटे हुए हाथ याद आए, जिस तरह से उन्हें काटा गया था, उससे निश्चित रूप से किसी जानवर के काटने का निशान था और निषाद ने सोचा था कि यह किसी दूसरी दुनिया का प्राणी है।

“एक बाघ? छी! कितना गंदा जानवर है!” और वह कर्ण को खींचकर ले जाने लगा। “मैं वापस जाना चाहता हूँ। सुन रहे हो ना, लड़के? मैं वापस जाकर थोड़ा सा हरा- भरा खाना चाहता हूँ।”
कर्ण का हाथ चमड़े की रस्सी के दूसरे छोर पर था और उसने अपने गुरु की ओर निराशा से देखा। "आप कहीं नहीं जा रहे हैं।"
"आपको यह कहने का अधिकार किसने दिया?"
मैंने तुम्हें बचा लिया है।
सत्या आगे आया और कर्ण के बगल में खड़ा हो गया; वह उससे कद में छोटा था, लेकिन उसकी निगाहें अभी भी लोहे जैसी थीं और उसके मुंह से चूहों के सड़ने जैसी घिनौनी बदबू आ रही थी।
“तुम्हारा क्या हुआ?” कर्ण घृणा से भर उठा और उसने अपने चेहरे पर दयनीय भाव लाते हुए भौंहें चढ़ा लीं।
सत्या ने गुस्से से कहा, “मैं वही बन गया जो दुनिया ने मुझे बनाया। एक ऐसा आदमी जिसे प्यारी राधा ने सेनापति बनाया, लेकिन जब उसके चारों ओर खून और अराजकता फैली हुई थी, तब वह अंधकार में डूब गया। हे बालक, मैं वही बन गया जो मेरी जाति के अनुसार होना चाहिए था। मैं योद्धा बनना चाहता था, लेकिन मैं एक मोची का बेटा था। और जब सेनापति के कर्तव्यों से मुक्त हुआ, तो मुझे कोई नौकरी नहीं मिली, इसलिए मैंने हरियाली का सहारा लिया। हरियाली एक पलायन है और इसीलिए देवताओं ने इसका उपयोग किया।”
कर्ण ने उस बेचारे आदमी को भावहीन होकर देखा, जिसने उसके झूठ पर विश्वास कर लिया था, हालांकि एक सवाल अब भी उसे परेशान कर रहा था। "मां की मृत्यु के बाद मेरे पिता ने तुम्हें घर से क्यों निकाल दिया?"
“पिताजी…मुझे याद नहीं आ रहा…” उसने अपना सिर सहलाते हुए कहा। “Adhirath,” Karna reminded him.
“हां, हां… उस आदमी ने हार मान ली थी। हां। उसे मेरी ज़रूरत नहीं थी। इसलिए उसने मुझे जाने दिया, हालांकि मैं जाना नहीं चाहता था। उसने कहा कि वह हस्तिनापुर वापस जा रहा है। अब वह कहां है?”
कर्ण ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी; उसने अपना सिर हिलाया। उसके पिता को सत्य को नहीं छोड़ना चाहिए था। और वह उसे और खींचने लगा, तभी सत्य ने उसे रोक दिया। "मैं नहीं जाऊंगा, बेटा!"

“ठीक है!” कर्ण ने कहा। “अगर तुम मेरी मदद करोगे, तो मैं तुम्हें वो हरा पैसा दिला दूंगा।”
सत्या ने अपनी निगाहें सिकोड़ीं और अपने पतले होंठों को चाटा। "हाँ, तुम ऐसा करोगे, लड़के। और तुम मुझे एक सिंहासन और कुछ वेश्याएँ भी दिलाओगे जो मेरे अंडकोष चाटें, है ना? मुझे बेवकूफ बनाना बंद करो।"
“तुम बच्चों को बेच रहे थे!” कर्ण चिल्लाया। “बच्चे! वे मर सकते हैं, सत्य। उस पदार्थ से उनकी जान जा सकती है। तुमने ऐसा क्यों किया?”
उसने कंधे उचकाते हुए कहा, "शायद, अपनी रोजी-रोटी कमाने के लिए, बेटा? या फिर इतनी सारी सुख-सुविधाओं के चलते तुम यह बात भूल गए हो?"
“क्या मैं चांदी के चम्मच के साथ पैदा हुआ था? मैं एक ऐसे राजा का पुत्र था जो कठपुतली बन गया। मैं अकेला और उपेक्षित महसूस करते हुए बड़ा हुआ, असफलता के डर से इतना भयभीत था कि इसका असर मेरे स्वास्थ्य पर भी पड़ा। अंत में, मैं एक गुरुकुल पहुँचा जहाँ से मुझे निकाल दिया गया, फिर दूसरे गुरुकुल गया और वहाँ से भी निकाल दिया गया। मेरी जाति के कारण हर कोई मुझसे नफरत करता था और जिस स्त्री से मैं प्रेम करता था, उसे उस व्यक्ति से शादी करने के लिए मजबूर किया गया जिससे मैं सबसे ज्यादा नफरत करता हूँ। इसलिए नहीं, मैं चांदी के चम्मच के साथ पैदा नहीं हुआ था,” कर्ण की आँखों में क्रोध की आग भड़क उठी।
“खैर, किसी ने ये नहीं कहा था कि ज़िंदगी परिपूर्ण होती है। हम बस इतना ही कर सकते हैं कि इसके बारे में अफसोस करना बंद कर दें।”
यह स्पष्ट रूप से एक ताना था।
लेकिन इस बार जब कर्ण ने खींचा, तो उसने पीछे नहीं धकेला। बल्कि, वह उसके साथ चलने लगा। और वे तब तक चलते रहे जब तक उन्हें चीख, गुर्राहट और दहाड़ की पीड़ा सुनाई नहीं दी। यह कई चीजों का मिश्रण था और कर्ण ने तुरंत अपने सूर्य की तरह चमकते कवच के साथ धनुष और बाण निकाल लिए, और आकाश तथा आसपास के ऊंचे पेड़ों की ओर देखने लगा।
सत्य ने पूछा, "अगर यह बाघ है तो तुम ऊपर क्यों देख रहे हो?"
फिर कर्ण ने एक परछाई देखी। बहुत ऊपर, डालियों पर बैठी हुई। लेकिन वह उसे ठीक से देख नहीं पाया।
हालांकि, उसे सिर्फ उसे देखकर ही एक बात पता चल गई थी।

कर्ण ने यह महसूस करते हुए कहा, "क्योंकि, एकलव्य शुरू से ही सही था, यह बाघ नहीं है।"

35

कर्ण ने गेंद को नहीं मारा।
और वह चल पड़ा। उतनी ही तेज़ी से जितनी तेज़ी से वह आया था।
वह प्राणी रुका नहीं।
लेकिन वह उन्हें देख रहा था। और उसने हमला नहीं किया। उसमें जंगली प्रवृत्ति नहीं है।
कर्ण ने अपनी भौहें ऊपर उठाईं, आश्चर्य से यह समझने की कोशिश करते हुए कि वह किस चीज से निपट रहा है।
“ये बाघ नहीं है, लड़के। ये कुछ और है। तुमने मुझे किस मुसीबत में फंसा दिया है? क्या तुम मुझे मरवा दोगे?”
कर्ण ने स्वयं को याद दिलाया, "मुझे निषाद का साथ चाहिए। असफलता की कोई गुंजाइश नहीं है।"
परछाई का जितना हिस्सा वह देख सका, उससे उसने पाया कि उस प्राणी की त्वचा सख्त थी और पूरे शरीर पर बाल थे, तथा उसका चेहरा बाघ जैसा दिखता था। लेकिन वह दो पैरों पर चलता था क्योंकि वह एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूदता हुआ भाग निकला।
कर्ण ने कहा, "हमें इसे फंसाना होगा। इसे पता है कि हम इसका शिकार करने आए हैं, इसलिए यह सावधान रहेगा।"
एक पल के लिए सत्य चुप रहा। फिर उसने ऐसी आवाज़ में कहा जो नशे की लत से ग्रस्त व्यक्ति की नहीं, बल्कि एक मजबूत, शक्तिशाली और आत्मविश्वास से भरी हुई थी: "क्या योजना है, लड़के?"

जाल।

उन्होंने गुरुकुल में द्रोणाचार्य के साथ रहते हुए यह सीखा था कि किसी शत्रु को हराने के लिए न केवल सर्वशक्तिमान और दृढ़ होना आवश्यक है, बल्कि बुद्धिमान होना भी जरूरी है।
कर्ण जानता था कि सुबह उसके पक्ष में है, लेकिन उसे रात भी गुजारनी थी, इसलिए उसने खुद को और सत्या को काम पर लगा दिया।
वे दोनों पेड़ से शाखाएँ और बाँस की छड़ें काटने लगे। कर्ण ने सत्य को एक चाकू दिया और वे दोनों छड़ियों की पतली-पतली पट्टियाँ बनाने और उन्हें तेज करने लगे।
और जब वे ऐसा कर रहे थे, सत्या ने पूछा: "आपको कैसे पता चलेगा कि वह प्राणी इसमें फंस जाएगा?"
"क्योंकि हम उसे इसमें फंसा लेंगे।"
शाम तक वे लगभग पचास नुकीली छड़ें बनाने में कामयाब हो गए जो जानलेवा हो सकती थीं।
उन्होंने एक ऐसी जगह की तलाश शुरू की जो कमोबेश कीचड़युक्त और दलदली हो, जहां लकड़ियों को रखा जा सके।
उन्होंने डंडियों को ज़मीन में गाड़ दिया, फिर उन्हें छिपाने के लिए घास और पौधों के पैच से ढक दिया। काम पूरा होने पर कर्ण मुस्कुराया कि आखिरकार वे कांटों का एक घेरा बनाने में कामयाब हो गए हैं, जिस पर अगर वह प्राणी कदम रखेगा तो उसे तुरंत चोट लगेगी और वह गिर जाएगा।
“यह तो बहुत होशियार है, बेटा। और मुझे उम्मीद है कि वह प्राणी इससे भी ज्यादा होशियार न हो।”
"अगर वह प्राणी है, तो उसे यह दिखाई नहीं देगा।"
अगर…
यह एक पुरुष भी हो सकता है।
"अब क्या करें?"
"चाँद के निकलने का इंतज़ार करो," कर्ण ने कहा, क्योंकि सूरज डूब रहा था और दिन का उसका पसंदीदा हिस्सा खत्म हो रहा था।

घना कोहरा छाया हुआ था, और कांटों के घेरे के बीच चुपचाप इंतज़ार करते हुए उन्होंने अपने हथियार तैयार रखे थे। सत्या के पास उसका चाकू था और वह वहाँ होने से अनिच्छुक लग रहा था, मन ही मन बड़बड़ा रहा था। कर्ण शांत था। उसकी आँखें बंद थीं और वह खुद को काबू में रखने के लिए अपनी साँसों पर ध्यान दे रहा था।
मुझे सफल होना ही है।
मुझे असफलता से लड़ना होगा।
कर्ण ने कुछ देखा—झाड़ियों में कुछ था, और उसने तुरंत अपना तीर निकाला और उसकी ओर निशाना साधा।
एक कौआ कांव-कांव करते हुए उसमें से निकला और आकाश की ओर उड़ गया।
“काश मैं कुल्हाड़ी से खुद को मार लेता। आराम से और बिना दर्द के। और उस जानवर के हाथों न मरता जिसका हम शिकार कर रहे हैं,” सत्या रोते हुए बोला। “मैं मरने के लिए बहुत छोटा हूँ।” झुर्रियों वाले, सफ़ेद दाढ़ी वाले, सफ़ेद बालों वाले उस आदमी ने कहा।
"हाँ, बिल्कुल।"
“मेरी याददाश्त धीरे-धीरे वापस आ रही है…” उसने कहा, “…और मुझे याद नहीं आता कि जब मैं तुम्हें जानता था तब तुम इतने मजाकिया हुआ करते थे।”
"खैर, चार साल मेरे लिए कुछ हद तक फायदेमंद साबित हुए।"
सत्या अपनी हंसी नहीं रोक पाई। "चार साल? चार साल तो बहुत लंबा समय होता है।"
"संक्षिप्त रहें, यदि आपके जीवन का उद्देश्य अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है।" और ऐसा ही हुआ। उसे अपना वादा निभाना था।
"तुम वापस क्यों नहीं लौटे?" सत्य ने इस बार अपनी आवाज में स्नेह के साथ पूछा।
"अगर मैंने ऐसा किया होता, तो मैं वह काम नहीं कर पाता जो मुझे करना चाहिए था।"
और वह क्या है?
कर्ण ने कोई जवाब नहीं दिया। काम पूरा होने तक वह किसी को कुछ नहीं बताएगा। “ठीक है। लेकिन तुम अपनी माँ के पास आकर वापस जा सकते थे?”
“शायद, या शायद मैं हार मानकर अंगा में ही रुक जाती। पूरी जिंदगी ऐसे ही बिता देती और अपना वादा नहीं निभाती। या शायद मैं शोक से टूट जाती। मुझे

पता था, दूर रहने से… मुझे अपनी माँ की मृत्यु के दुख से उबरने में मदद मिली।”
"अगर राधा अभी ये शब्द सुन पाती तो वह तुमसे नफरत करती।"
कर्ण ने अपना सिर हिलाया। वह मृतकों के बारे में बात नहीं करना चाहता था। उनकी आत्माएं अब शांति में थीं।
और जब वे यहाँ थे, तब वे ऐसा नहीं कर रहे थे।
बातचीत में बाधा उत्पन्न हुई, क्योंकि वह परछाई, कोड़े की तरह फुर्ती से चलने लगी, दो पैरों पर लेकिन मनुष्य से भी तेज, जब तक कि वह रुक नहीं गई... परछाई ने जाल की ओर अपना सिर घुमाया और उसे सूंघा।
सत्य ने कहा, "इसे पता है। इसे पता है कि हमने जाल बिछाया है। ओह, हम तो गए काम से।"
और फिर वह गुर्राया।
कर्ण के बाण प्रहार करने के लिए तैयार थे।
लेकिन परछाई ने जाल पर अपने पैर नहीं रखे।
इसके बजाय, यह दहाड़ने लगा और लड़खड़ाने लगा।
शरीर हवा में लटका हुआ हिलने लगा, और कर्ण तुरंत लुढ़क गया, यह महसूस करते हुए कि वह सत्य पर पहुँचने में कामयाब हो गया था।
कर्ण ने अपने स्वामी को उस रस्सी से खींचकर अपनी ओर खींच लिया जिससे वह खुद बंधा हुआ था, हालांकि वह उस प्राणी की बलिष्ठ भुजाओं से बच गया। सत्य जमीन पर गिर पड़ा, तभी कर्ण ने एक तीर चलाया।
वह वार उस प्राणी की पीठ पर लगा, जिसने केवल दहाड़ मारी और तलवार बाहर निकाल ली।
सत्य कर्ण के पक्ष में आ गया, क्योंकि कर्ण ने बाणों का एक और जत्था निकाला, इस बार तीन बाण थे और वह तैयार था। सामान्य से भी अधिक तैयार। लेकिन उनके चारों ओर घना कोहरा सांप की तरह रेंग रहा था, जिससे उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। इसलिए उसने अपनी आँखें फिर से बंद कर लीं और तीसरे कदमों की आहट सुनने लगा, तभी उसने सत्या से कहा: “हिलो मत। मैं सुन रहा हूँ।”
और जैसा उसे बताया गया था, सत्य रुक गया और उसे केवल एक ही पदचाप सुनाई दी। चलती हुई। सोच-विचार करती हुई।

उसने गहरी सांस ली और कर्ण ने कोहरे में उस दिशा में तीर का इशारा किया जिसे वह देख नहीं सकता था, लेकिन वह जानता था कि वह सही दिशा थी।
तुम मुझे मिल गए।
कोहरे के बीच से वह प्राणी छलांग लगाकर निकला। चारों ओर फैले कोहरे और बादलों को चीरते हुए, उसका मुंह खुला। उसके हाथ और पैर कर्ण की ओर इशारा कर रहे थे।
और उसने गोली चला दी।
तीनों तीर उस प्राणी की छाती में जा लगे, जिससे वह पीछे की ओर जोर से गिरा और गुर्राने लगा।
कर्ण आगे बढ़ा, उसकी निगाहें उस पर टिकी थीं जिसे उसने अभी-अभी मारा था।
और उसे एहसास हुआ कि यह वैसा नहीं था जैसा उसने उम्मीद की थी।
वह एक इंसान था। वह एक पुरुष था। लेकिन उसने अपने पूरे शरीर पर बाघ की खाल ओढ़ रखी थी, मानो वह उसी का हिस्सा हो, और उसकी आँखें खून की तरह लाल थीं, उसकी त्वचा अब मुरझा रही थी और उसके पूरे शरीर पर फोड़े-फुंसी थे।
सत्या कर्ण के पक्ष में आ गया और दोनों ने बाघ राजा की तरह कपड़े पहने उस व्यक्ति को दर्द से कराहते हुए देखा।
"यह किसी दूसरी दुनिया का प्राणी नहीं है।"
“नहीं, लेकिन वह किसी की तरह दिखता है,” कर्ण ने अपनी निगाहें सिकोड़ते हुए कहा।
और इससे पहले कि वह कुछ कर पाता, वह आदमी जमीन से उछलकर सत्या की ओर बढ़ा और वे दोनों कंटीले जालों की ओर लुढ़क गए।
कर्ण का हाथ पट्टे पर कसकर जकड़ा हुआ था और वह खिंचने लगा, जिसके कारण वह फिसलकर गिर गया।
सत्या ने उस आदमी को घूंसा मारा और लुढ़क गया, क्योंकि वे कांटों और जमीन में गाड़े गए नुकीले ब्लेड के करीब आने की कोशिश कर रहे थे।
कर्ण अपना धनुष-बाण खो चुका था और वह खुद को वापस खींचने की कोशिश कर रहा था, लेकिन सत्य पहले ही द्वंद्वयुद्ध में शामिल हो चुका था और हर झटके के साथ उसके पैर में तेज दर्द हो रहा था, जिससे वह कराह रहा था। कर्ण अपने भीतर तनाव और बेचैनी को बढ़ता हुआ महसूस कर रहा था, और उसने अपने गुरु से चिल्लाकर कहा: "उसे ले चलो..."

और इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, एक तेज, गरजती हुई तलवार की आवाज आई, जो कई गांठों को चीरते हुए मांस को गहराई से भेद गई, और बस यहीं पर उसकी मृत्यु हो गई। अंधेरा छा गया और उसे एहसास हुआ, सत्या मारा गया था...
या फिर क्या वह ऐसा था?
उसके सामने, उसने बाघ-मानव का शव कांटों पर फैला हुआ देखा। उसने यह भी देखा कि सत्य किसी तरह कांटों से बच निकला था और अपने ही बनाए जाल से खुद को बचा लिया था।
दोनों ने एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराया।
तथाकथित वेयरटाइगर मर चुका था, और जब कर्ण स्वयं उस प्राणी को देखने के लिए आगे बढ़ा, तो उसने उस प्राणी द्वारा पहनी हुई अंगूठी देखी।
वह रूबी रंग का था।
और निषाद रीति-रिवाजों के बारे में उन्हें बस इतना ही पता था कि परिवार के सभी सदस्य एक ही अंगूठी और गहने पहनते हैं।
जाहिर तौर पर माणिक…
कर्ण ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। मामला और भी पेचीदा हो गया।
सत्य ने कहा, "मुझे लगता है अब काम हो गया है।" उसने कर्ण की पीठ थपथपाते हुए कहा, "वाह! बहुत बढ़िया काम किया।"
"हां, लेकिन मुझे एकलव्य से एक और बात पूछनी है।"
और वह क्या होगा?
कर्ण ने अपने गुरु की ओर देखकर कहा, "एक पुत्र अपने ही पिता को क्यों मारना चाहेगा?"

36

कर्ण ने शव को स्थानीय लोगों के सामने गिरा दिया।
सभी लोग शव के चारों ओर जमा हो गए और उसे विस्मय से देखने लगे—कुछ लोग उसे कुरेद रहे थे, जबकि अन्य फुसफुसाते हुए कह रहे थे कि यह कोई राक्षस नहीं है। यह तो इंसान है।
फिर कर्ण ने ऊपर की ओर देखा जहाँ वृक्षों पर बने घर कतार में लगे थे और उसने एकलव्य को रेलिंग के पास खड़े होकर उसे घातक निगाहों से घूरते हुए देखा।
कर्ण और सत्य चलने लगे, और चलते-चलते कर्ण ने अपने चाकू से उनके बीच के बंधन को तोड़ दिया।
कर्ण ने सत्य से कहा, "आप जाने के लिए स्वतंत्र हैं," और बूढ़ा व्यक्ति असमंजस में पड़ गया।
"ऐसे ही?"
“मैं जरासंध को रोकने के अपने मिशन में किसी को भी जबरदस्ती शामिल नहीं कर सकता। अगर आपको लगता है कि आपमें यह क्षमता है, तो मेरे साथ जुड़ें, लेकिन संयम बरतें। अब आप इस तरह का व्यवहार नहीं कर सकते। लेकिन अगर आप ऐसा नहीं कर सकते, तो एकलव्य की कुटिया से बाहर निकलने के बाद मैं आपसे दोबारा नहीं मिलना चाहता।”
बारिश की बूँदें पड़ने लगी थीं और स्थानीय लोग अपने सिर को विशाल पत्तियों से ढककर इधर-उधर भागने लगे।
सत्या पूरी तरह भीगा हुआ था और असमंजस में था। "जरासंध का सामना करने की सोचकर तुम बहुत बड़ी गलती कर रहे हो।"
"ऐसा क्यों?"
“वह सचमुच एक चालाक दुश्मन है, लड़के।” अब वह व्यक्ति स्पष्ट रूप से बोल रहा था, शायद इसलिए कि वह अब नशे में नहीं था।
“लेकिन आप उससे लड़ने में मेरी मदद कर सकते हैं। आप इस भूमि के लोगों को किसी और से बेहतर जानते हैं। जब मैं पूरे भारत में घूम रहा था, तब आप यहीं

रुके रहे और मुझे यह जानने के लिए आपके अनुभव की आवश्यकता है कि हमारा सहयोगी कौन है और कौन नहीं,” कर्ण ने कहा।
“मैं तो बस एक मामूली इंसान हूँ,” उसने कंधे उचकाते हुए कहा।
“तो ठीक है,” कर्ण ने अपने गुरु को प्रणाम करते हुए आह भरी। “आपके साथ फिर से समय बिताना अच्छा लगा। मुझे पुरानी यादें ताजा हो गईं। आपका दिन शुभ हो।”
और वह अपने गुरु, अपने उस्ताद को पीछे छोड़कर एकलव्य की ओर चल पड़ा, उससे कुछ बहुत कठिन प्रश्न पूछने के लिए तैयार।

कर्ण कुटिया में दाखिल हुआ और वह थका हुआ था। वह इतना कमजोर महसूस कर रहा था मानो किसी ने उसे बुरी तरह पीटा हो। वह यात्रा कर रहा था और उसे चैन की नींद नहीं आई थी। अब उसने एक पागल से लड़ाई लड़ी थी और उसे चोटें और घाव लगे थे। लेकिन एकलव्य को घबराया हुआ और अपने सिंहासन पर बैठा देखकर कर्ण के चेहरे पर मुस्कान आ गई।
“तुम्हें मेरे पाँच सौ आदमी मिलेंगे। ये सबसे अच्छे तो नहीं हैं, लेकिन कारगर हैं। इन्हें ले जाओ और सुनिश्चित करो कि ये अपने परिवारों के पास सुरक्षित लौट आएं,” एकलव्य ने कहा और अपने आदमियों को आवश्यक कार्य करने का आदेश दिया।
पांच सौ कम होते, लेकिन कर्ण जानता था कि निषादों का प्रयोग सीधे मैदानी युद्ध में नहीं किया जाता। उनका प्रयोग रणनीति और सोच-समझकर किया जाता है। कर्ण ने कहा, "तुम इस बात से खुश नहीं हो कि मैंने उसे मार डाला।"
“बेशक मैं हूँ,” एकलव्य ने हताश चेहरे से कहा। उसके चेहरे पर पछतावा और निराशा के भाव थे। “जब मैंने तुम्हें काम पर रखा था, तब मुझे पता था कि तुम उसे मार डालोगे। ऐसा करना ही था…” उसने धीरे से मन ही मन कहा, “ऐसा करना ही था।”
“जी हां।” कर्ण ने एकलव्य के चारों ओर तैनात पहरेदारों की ओर देखा। इतनी छोटी सी झोपड़ी में लगभग पांच पहरेदार थे। “क्या मैं उनके सामने पूछूं या आप उन्हें जाने के लिए कहेंगे?”

एकलव्य कुछ देर रुका; उसने अपने जबड़े भींचे और फिर अपनी छड़ी ज़ोर से पटकी, और वे लोग तुरंत चले गए। वह पीछे झुककर बोला, "जो कहना है कह लो।" "क्यों?"
"बस कि?"
"हाँ।"
“मैं…” उसने सिर हिलाते हुए कहा, “इसे समझाना मुश्किल है।”
"मुझे आजमाओ।"
“खैर,” उसने सिर हिलाते हुए कहा, “मेरे पिता एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति थे, किसी आदिवासी की तरह जीवन जीने वाले से कहीं अधिक महत्वाकांक्षी। मेरी तरह। जैसा कि आप आस-पास देखते हैं। सिवाय मेरे, उनमें से कोई भी इतना शिक्षित नहीं है। मैं था, क्योंकि मैं छुपकर बातें सुनता था। खैर, मुद्दे पर वापस आते हैं। मेरे पिता महत्वाकांक्षी थे और वे चाहते थे कि मुझे राजपरिवार के गुरु से शिक्षा मिले। वे चाहते थे कि मैं जल्द ही राजा बनूँ और उन्होंने मेरे राज्य की नींव रखना शुरू कर दिया था, सुदूर पूर्व में जहाँ की भूमि निर्जन थी और हम अपने लिए एक नई दुनिया बना सकते थे। खैर, वे चाहते थे कि मैं द्रोण को प्रभावित करूँ, और उन्हें यह महसूस कराऊँ कि मैं सर्वश्रेष्ठ हूँ और मैं सर्वश्रेष्ठ था, आपके और अर्जुन के बराबर। वे चाहते थे कि मैं सेनाओं में लड़ूँ, राजपरिवार के लिए राज्यों पर शासन करूँ और उनके देहांत के बाद वापस आकर इस राज्य पर शासन करूँ।”
और फिर द्रोणा ने अकल्पनीय काम कर दिखाया।
“सचमुच,” उसकी आँखों से आँसू बहने लगे, “और मैंने अपनी तीरंदाजी खो दी और मेरा प्रशिक्षण भी अधूरा रह गया। तीरंदाजी के बिना मैं एक मूर्ख के सिवा कुछ नहीं था। मैंने अपनी पहचान खो दी थी। लेकिन मुझे पता था कि मैं इसे वापस पा लूँगा, अपने पिता के विपरीत, जिन्होंने अपने प्रतिभाशाली बेटे को वह चीज़ खोते हुए देखा जिसमें उन्हें पता था कि वह सबसे अच्छा होगा। उनके सपने चकनाचूर हो गए थे। अब मैं उनका… खैर… साधारण बच्चा था। और वह द्रोण से नाराज़ थे, लेकिन मुझे गुरु के पास भेजने के लिए खुद पर ज़्यादा नाराज़ थे। उन्होंने उस अपराधबोध को अपने ऊपर हावी होने दिया। यह बीमारी, यह मानसिक विकार, धीरे-धीरे शुरू हुआ और उन्हें तब तक खोखला करता रहा जब तक कि हम उन्हें एक तांत्रिक के पास नहीं ले गए, जिसने उन्हें ऐसी दवाएँ देकर

उनकी हालत और बिगाड़ दी जिससे वे क्रोध से जल उठते थे, नरभक्षी बन जाते थे। उसने उन्हें यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि वे एक बाघ हैं।”
उसने अपना सिर हिलाया। “मुझे एहसास हुआ कि वह मेरी सत्ता हथियाने के लिए ऐसा कर रही थी, मेरे पिता को एक खतरे के रूप में, किसी प्रेतबाधित व्यक्ति के रूप में पेश करके; और सबको यह जताने के लिए कि मैं भी कबीले का वही हाल करूँगा। आप जानते हैं कि हमारे लोग कैसे होते हैं। वे किसी भी बकवास पर विश्वास कर लेते हैं, बशर्ते वह उनकी सामान्य सोच से परे हो। उसने अपने बेटे को जन्म देने के लिए ऐसा किया, इसलिए मैंने उसे इससे पहले ही पकड़ लिया और उसे मार डाला। और उसके बेटे को भी।” उसकी आँखों में क्रोध था और वह अब एक दुखी, बेचारा नहीं, बल्कि एक प्रतिशोधी, क्रूर व्यक्ति बन गया था। “और इससे पहले कि कोई जान पाता कि यह मेरे पिता हैं, मैंने घोषणा कर दी कि उनका निधन हो गया है, और मैंने उस प्राणी को, जो कभी मेरे पिता हुआ करता था, निर्वासित कर दिया। जल्द ही, मेरे पिता ने मेरे आदमियों को मारना शुरू कर दिया और मुझे पता था कि मुझे इसके बारे में कुछ करना होगा। मैं किसी को भी नहीं भेज सकता था क्योंकि वे जान जाते कि यह मेरे पिता हैं… जब तक कि मैंने अभी-अभी उनका वर्तमान रूप नहीं देखा। उन्हें पहचानना नामुमकिन था।” वह मन ही मन उदास होकर हँसा। मुझे अपने कुछ आदमियों को उसे मारने देना चाहिए था, बेहतर होता कि मैं उस उपकार को किसी और समय के लिए बचा लेता और अपने पांच सौ आदमियों को बचा लेता।
कर्ण ने आश्वासन देते हुए कहा, "वे मरेंगे नहीं। वे अपने राष्ट्र के लिए सही काम कर रहे हैं।"
हम राष्ट्रों की अवधारणा में विश्वास नहीं करते।
“तुम एक ही आधार पर खड़े हो। इसलिए इस बात को मानो,” कर्ण रुका। “और मुझे तुम्हारे नुकसान का खेद है। तुमने सही किया और मुझे आशा है कि द्रोण एक दिन अपने कर्मों के परिणामों को समझेंगे—वे समय और स्थान से परे हैं।” एकलव्य ने सिर हिलाया। "धन्यवाद। आप जानते हैं, आप बुरे आदमी नहीं हैं।" "आपको ऐसा क्यों लगा कि मैं ऐसा था?"
“क्योंकि,” एकलव्य अपने पैरों पर खड़ा हुआ और कर्ण की ओर बढ़ा, “कर्ण, तुम बहुत खतरनाक आदमी हो। मेरा मानना है कि खतरनाक आदमियों के आदर्श भी खतरनाक होते हैं।”
मेरा आदर्श बिल्कुल भी ऐसा नहीं है…

एकलव्य ने उसकी बात काटते हुए कहा, "उम्मीद करते हैं। उम्मीद करते हैं कि अपनी मनचाही चीज पाने की प्रक्रिया में तुम्हें सब कुछ खोना न पड़े।" "अगर मेरा उद्देश्य ही सब कुछ है तो मैं सब कुछ कैसे खो सकता हूँ?"
एकलव्य ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं और मुस्कुराते हुए कंधे उचका दिए।
“ओह, और हां,” कर्ण ने जाने से पहले कहा, “मुझे उस दवा का खाका भी चाहिए, वही दवा जो उस जादूगर ने बनाई थी और जिसके कारण तुम्हारे पिता नरभक्षी बन गए थे।”
"क्यों?"
कर्ण मुस्कुराया। "मुझे अभी-अभी एक विचार आया है।"

कर्ण जब अपने मन में विचारों का सैलाब लिए तम्बू से बाहर आया, तो उसने नीचे देखा तो बस्ती का खाली, बारिश से भीगा हुआ मैदान दिखाई दिया, और वहाँ कोई नहीं था, शायद मौसम के कारण।
लेकिन उसने किसी को देखा। जिसने अपने आप को एक पत्ते से ढका हुआ था।
वह सत्या था।
वह नहीं गया।
कर्ण मुस्कुराया।
खैर, मुझे लगता है कि यहाँ आना उतना बुरा भी नहीं था।

37

देवी जानती थी कि वह पुरुषों की दुनिया में रहती है।
लेकिन उसने किसी न किसी तरह से उसमें काफी अच्छी जगह बना ली।
वह लंबी, चौड़ी और बादामी रंग की त्वचा वाली एक दमकती हुई महिला थी। उसके एक तरफ के बाल बिखरे हुए थे, जबकि दूसरी तरफ चोटी और डिज़ाइन बने हुए थे। उसकी आँखों में गहरा काजल लगा हुआ था, और उसके पूरे शरीर पर रंगीन सुइयों से बिंदीदार डिज़ाइन बने हुए थे।
चंपा जाने वाली सड़कें वीरान और सुनसान थीं। चारों ओर खुले मैदान थे और एकांत और अकेलेपन का एहसास था। रात में, उसके लगभग सौ आदमी आपूर्ति लाने के लिए चंपा के पास के एक गाँव पर छापा मारते थे—वह जानती थी कि वह खुद इसके लिए बहुत बूढ़ी हो चुकी है।
हालांकि वह युवावस्था में थी, लगभग तीस वर्ष की आयु के आसपास, फिर भी वह रक्तपात से थक चुकी थी।
लेकिन वह जानती थी कि उसके साहसिक कार्य के दिन मजबूरी से नहीं, बल्कि उसकी अपनी पसंद से समाप्त हुए थे। उसे संघर्ष, अनिश्चितता और युद्ध पसंद थे।
वे गांव पहुंचे और पहुंचते ही मशालें और तीर-कमान लिए हुए सैनिकों के साथ अंदर घुस गए, घात लगाकर हमला करने के लिए तैयार थे, लेकिन वहां खेत में बिखरी लाशों के अलावा कुछ नहीं था।
यह चंपा का एक और गाँव था, जो जरासंध द्वारा फैलाई गई हिंसा से ग्रस्त था।
और अब तक, वह इसकी आदी हो चुकी थी। पहले की आपूर्ति यात्राओं के दौरान उसे जो सुन्नता महसूस होती थी, वह अब गायब हो चुकी थी।
“क्या हम जरासंध से भी बदतर नहीं हैं?” एक तरफ से आवाज आई।
और एक घोड़ी प्रकट हुई, जो एक सुंदर, अनोखी मुस्कान वाली, संकीर्ण और चमकती आँखों वाली और लंबी गर्दन तक सँवारे हुए बालों वाली एक युवती को पकड़े हुए थी।
“किस तरह से?” उसने मनवी से पूछा।
"मृतकों से चोरी करके।"

“जो कुछ हम चुराते हैं, वह जीवित लोगों को दे देते हैं।” उन्होंने मालिनीपुर में स्थित अपने राज्य का जिक्र किया—जो पाँच सौ एकड़ में फैला एक किला था, जिसमें विशाल स्टेडियम, किले, महल और निगरानी मीनारें थीं। “हमारे लोग दिन-रात मेहनत करते हैं और मेरा मानना है कि जरासंध ने जो कुछ छोड़ा है, वही हम अपनी प्रजा को दे सकते हैं।”
“हम भिखारी हैं,” मनवी ने कहा। वह देवी की अधीनस्थ थी, हालाँकि एक महिला होने के नाते उस पर हमेशा सवाल उठाए जाते थे। “गंदी लाशें बीनने वाले।” लेकिन इससे देवी को कोई दुख नहीं हुआ। वह जानती थी कि मनवी ने ये शब्द अच्छे इरादे से कहे हैं, क्योंकि मनवी एक अच्छी महिला थी, सोने के दिल वाली और निस्वार्थ, जो देवी के निर्मम व्यवहार के बिल्कुल विपरीत थी।
देवी का तर्क था कि अगर मानवी स्त्री है, तो वह भी स्त्री है, लेकिन देवी पारंपरिक स्त्री जैसी नहीं दिखती थी। उसने परिषद से कहा था, 'तुम पारंपरिक पुरुषों जैसे नहीं, बल्कि निकम्मे दिखते हो।' वे बूढ़े और चिड़चिड़े थे और आपस में लड़ते रहते थे, लेकिन देवी को धृतराष्ट्र का आशीर्वाद प्राप्त था, इसलिए वह झंडे उठाती थी, यहाँ तक कि अपने घोड़े की पीठ पर भी; लोहे का खंभा जिस पर हाथी का चित्र बना हुआ भगवा झंडा लहरा रहा था।
“यह किस गांव के लिए है?” मनवी ने पूछा।
“यह जहाज निर्माण और व्यापार से संबंधित कंपनी थी। वैसे, इससे क्या फर्क पड़ता है?”
“उसने उन सभी को क्यों मार डाला?”
“इसलिए कोई यह नहीं बता सकता कि उन्होंने अपने जहाज कैसे बनाए और उनमें क्या-क्या चीजें इस्तेमाल हुईं। इसका कोई सबूत नहीं बचा है।”
मानवी का चेहरा घबराहट भरी शिकन से भर गया। "तो फिर उसे चंपा से शासन नहीं करना चाहिए था।"
“उसने ऐसा इसलिए किया, क्योंकि वह उस क्षेत्र में नहीं रह सकता था जहाँ उसके दुश्मन थे, उसी भूभाग पर। इससे रणनीतिक रूप से उसे बहुत बड़ा नुकसान हो सकता था।”
मनवी ने सिर हिलाया। और वे आगे बढ़ गए, उसके आदमी जगहों, झोपड़ियों की तलाशी ले रहे थे और दरवाजे तोड़ रहे थे।
देवी ने चारों ओर देखा, उसे यहाँ सुरक्षित महसूस हो रहा था। "हम यहीं डेरा डालते हैं," उसने आदेश दिया। "और हम मृतकों को सम्मानपूर्वक दफनाते हैं।"

देवी ने अपने आदमियों को शवों को गांव से दूर जलाने के लिए कहा था ताकि वे किसी ऐसे व्यक्ति का अनावश्यक ध्यान आकर्षित न करें जिससे वे ऐसा नहीं चाहते थे।
और उन्होंने वैसा ही किया। कुछ लोग शवों का अंतिम संस्कार करने गए, जबकि कुछ लोग रात भर शिकार करने गए और खाना पकाने के लिए अलाव जलाया।
देवी कुछ देर तक मनवी के साथ बैठी रहीं, फिर वह अपने लिए साफ की गई झोपड़ी में गईं और घड़े के पानी से खुद को धोया। सोने के लिए एक छोटा सा कालीन बिछाया गया था। पट्टियों के नीचे उनके हाथ-पैर चोट के निशानों से ढके हुए थे। उनके पूरे शरीर पर तेंदुए की खाल और घुटनों व कोहनियों पर भालू की फर की पट्टियाँ थीं, जबकि जानवरों की चर्बी से बना एक बड़ा सा लबादा उनके ऊपर एक चोगे की तरह था।
उसने दरवाजा नीचे खींचा और अपने पीछे दरवाजे बंद कर दिए, तभी मनवी अंदर आया।
देवी अपनी कुर्सी पर बैठ गई और आह भरी। "मुझे अच्छा नहीं लग रहा है।"
“ऐसा क्यों?” मनवी ने पूछा।
“शायद इसलिए क्योंकि कोई कमीनी मेरी जगह लेने आ रही है,” देवी ने धीमी आवाज़ में कहा। मालिनीपुर पर उसका काफी समय से कब्ज़ा था।
After Senapati Vijaya had died.
“क्या वह राजकुमार नहीं है?”
“एक अपदस्थ राजकुमार जिसे किसी तरह राजा का स्नेह प्राप्त हो गया,” देवी लड़खड़ाते हुए बोली, शराब का गिलास उसकी उंगलियों से फिसल रहा था। “राजनीति मेरे बस की बात नहीं है, बेटी।”
“मुझे पता है। तुम तो ज़्यादा तगड़ी हो,” मनवी खिलखिलाकर हंस पड़ी और देवी की गोद में आकर बैठ गई, उसके गाल पर और फिर उसके नशे में धुत्त होंठों पर चुंबन किया। “तुम्हारी खुशबू चेरी जैसी है।”
“पुरुष देख लेंगे।”
उन्हें नज़ारा देखने दो।
वे राजा को बता देंगे।

उसे यहाँ आकर नज़ारा देखने दो।
"छोटी सी होकर भी तुम काफी जुझारू हो, महिला," देवी ने मुस्कुराते हुए कहा।
वो और मनवी काफी समय से प्रेमी-प्रेमिका थे। शायद एक साल हो गया था जब उन्होंने एक-दूसरे के प्रति आकर्षण की भावनाएँ व्यक्त की थीं और शारीरिक संबंध बनाए थे। उनके बीच उत्साह और आशा का एक अजीब सा सैलाब उमड़ रहा था।
“वह तुम्हें अपने महल का सेनानी बना देगा,” मनवी ने कहा।
"अगर वो ऐसा नहीं करता तो क्या होगा? अगर वो मुझे बाहर निकाल देता है तो क्या होगा?"
“यानी…अगर वह जरासंध के खिलाफ जीत जाता है,” उसने आँख मारते हुए कहा। “राजनीति? आपका मतलब है कि मुझे उसे मरने देना चाहिए और धर्मयुद्ध को वैसे ही जारी रखना चाहिए?”
"उसका एक्सीडेंट हो सकता है," मनवी ने मुस्कुराते हुए कहा।
देवी ने अपने जबड़े भींच लिए। उसे समझ नहीं आ रहा था कि किसी को बेरहमी से मारना उसे कैसा लग रहा है। आखिर उसने सैकड़ों हत्याएं की थीं, लेकिन केवल दोषियों को ही मारा था, अपने पक्ष के किसी को नहीं। किसी राजा को मारना बहुत जोखिम भरा काम होगा। उसने अपनी भौहें उठाईं और सिर हिलाया। "कुछ बातें हैं जिनके बारे में मैं पूरी तरह आश्वस्त हूँ, और उनमें से एक यह है कि मैं अपने नैतिक मूल्यों से समझौता नहीं कर सकती।"
लेकिन क्या आपने पहले से ही ऐसा नहीं किया था?
वह अतीत की बातें कर रही थी।
"यह सिर्फ एक बार हुआ था।"
“हाँ, बिल्कुल,” मनवी ने कहा और उसने पूरी दृढ़ता और जोश के साथ मनवी के होंठों को चूमा। देवी ने भी ऐसा ही किया, अपनी जांघों को मनवी से दबाते हुए और अपनी बाहों को मनवी के चारों ओर लपेटते हुए। “या…” वह पीछे हटी, “तुम इससे भी बेहतर कर सकती हो।”
और वह क्या है?
“Asamaka,” she said.
मनवी वहीं से थी। दक्षिणी राज्य बिखरे हुए भूभाग थे और उत्तर की तरह उनके पास स्वायत्तता नहीं थी।
“चलो वहाँ चलते हैं,” उसने कहा।
“और क्या करें?” देवी ने पूछा।

“शांति से जियो। इससे दूर रहो।”
"क्या आपका मतलब है कि मुझे वह काम छोड़ देना चाहिए जिसमें मैं माहिर हूँ?" “हम अच्छा जीवन जिएंगे। मुझे एक जगह पता है। यह एक आश्रम है। हम वहां शरण ले सकते हैं, एक झोपड़ी बना सकते हैं और खेती कर सकते हैं। जल्द ही हमारा जीवन बेहतर हो जाएगा।”
किस काम का? किस अर्थ का?
देवी ने खुद से सवाल किया और उसे इसका जवाब नहीं पता था। लेकिन शायद मनवी सही थी। शायद, इस सब अराजकता और खून-खराबे से परे भी एक जीवन हो सकता है। "हम इस बारे में सोच सकते हैं," उसने मुस्कुराते हुए कहा।
मनवी मुस्कुराया। "सचमुच?"
"हाँ।"
"तुम कमाल हो," और फिर मनवी ने उसकी गर्दन पकड़कर उसे खींच लिया और उसे चूमने लगी।
और उन्होंने काफी देर तक चुंबन किया, इतना कि उन्हें बिस्तर पर जाने के लिए पर्याप्त अच्छा महसूस हुआ, बाहर की अफरा-तफरी, बाहर से आ रही आवाज़ें और बज रहे तुरही की आवाज़ें सब भूल गए। देवी होश खो बैठी थी और यही वजह थी कि ऐसा हुआ...
लोहे का मुखौटा पहने एक आकृति के प्रवेश करते ही दीवारें फट गईं और टूट गईं। उसके प्रवेश से ईंटें चकनाचूर हो गईं और उसने पलक झपकते ही मनवी की गर्दन पकड़कर उसे मरोड़ दिया।
यह सब इतनी तेजी से हुआ कि देवी पहले तो इसे समझ ही नहीं पाई।
उसने लोहे का मुखौटा पहने उस आकृति को देखा जो मानवी को टूटी गर्दन वाले हंस की तरह पकड़े हुए थी, और उसकी आँखों में आँसू भर आए। उसके पीछे, जहाँ से वह आया था, उसने अपने आदमियों को मरते हुए देखा।
यह एक खूनी घात लगाकर किया गया हमला था।
लोहे का मुखौटा पहने उस आदमी ने मनवी को एक कोने में धकेल दिया—वह उसके ऊपर खड़ा था और मनवी ने उसका चेहरा देखा। वह चेहरा शांत था। लोहे के मुखौटे की तरह, उस पर भी कोई भाव नहीं था।
देवी अपने आदमियों को मरते हुए सुन सकती थी और कोने में मनवी का बेजान शरीर पड़ा देख सकती थी, मानो उसका कोई महत्व ही न हो...
यह इतनी जल्दी खत्म नहीं हो सकता।

देवी के पास उसका हथियार नहीं था और उसने उस विशालकाय आदमी को लात मारने की कोशिश की, लेकिन वह उसकी गर्दन पर हमला करने के लिए आगे बढ़ रहा था और उसकी लातों का उस पर कोई असर नहीं हो रहा था।
फिर उसने लात मारकर उसका हाथ हटा दिया, जिससे वह क्रोधित हो गया और उसने देवी पर अपना हाथ उठाया, लेकिन देवी ने वार से खुद को बचा लिया...
और उसने झोपड़ी की एक और दीवार तोड़ दी। छत गिरने लगी थी।
उसके पास बहुत अधिक ताकत है।
उसने अपना हाथ बाहर निकाला, और ऐसा करते समय देवी भाग निकली।
जितनी जल्दी हो सके, झोपड़ी से भागते हुए और रात के अंधेरे में आगे बढ़ते हुए, उसने देखा कि उसके आदमी इस कस्बे के नए शिकार बन चुके थे। जो लोग नहीं मरे थे, वे या तो मरने वाले थे या भाग रहे थे।
उसने देखा कि एक आदमी दूसरे से जूझ रहा था, और काले कपड़े पहने दूसरा आदमी उसके ऊपर तलवार चला रहा था। वह जानती थी कि जब वह कुछ कर सकती है तो वह अपने किसी सैनिक को मरने नहीं दे सकती।
और शोकग्रस्त हृदय से, वह दौड़ी, चिल्लाई और गुस्से से भरी निगाहों से दुश्मन को धक्का देकर जमीन पर गिरा दिया, जबकि वह उस आदमी की मदद कर रही थी।
"वहां से निकल जाओ और मृतकों को दफनाने गए लोगों को चेतावनी दे दो।"
उस आदमी ने सिर हिलाया और जल्दी से चला गया।
जब उसने देखा कि एक विशालकाय व्यक्ति उसके पीछे खड़ा है, तो उसने वहां से जाने का फैसला किया। तभी उसने एक कुल्हाड़ी निकाली और उसे उसके बगल में ले आया, लेकिन सौभाग्य से वह उससे बच गई।
उसके सैनिक और भी कमजोर पड़ रहे थे और उसके पास कोई बैकअप नहीं था, इसलिए वह लड़खड़ाकर गिर पड़ी। आग भयंकर रूप से भड़क उठी थी, नारंगी लपटें करीब आ रही थीं और वह देख सकती थी कि कुल्हाड़ी उसके धड़कते दिल के बिल्कुल करीब आ रही है...
जब उसने उस आकृति के गुप्तांग पर लात मारी, तो वह दर्द से चीख उठा और घुटनों के बल बैठ गया, कुल्हाड़ी उसके हाथ से छूट गई। उसने कुल्हाड़ी उठाई और उसके सिर की ओर बढ़ गई।
“यह मनवी के लिए है।”

और लोहे का मुखौटा पहने उस आदमी ने ऊपर देखा, जब देवी ने कुल्हाड़ी उसकी लोहे की खोपड़ी पर मारी। एक पल के लिए, देवी को लगा कि वह आदमी मर गया है, लेकिन फिर उसने कुल्हाड़ी खींची और उसे ऐसे देखा जैसे कुछ हुआ ही न हो। मुझे अब जाना चाहिए।
यहां तक कि जरासंध के सैनिक भी अपने अर्धचंद्राकार काले झंडे लिए अब उसकी ओर बढ़ रहे थे।
उसका पीछा किया जा रहा था, उसके पैर दुख रहे थे, उसकी सांसें कांप रही थीं, जब तक कि उसे अपनी एक घोड़ी नहीं मिल गई। वह घोड़ी मनवी की थी और उसने उसे पकड़कर आगे की सड़कों की ओर दौड़ पड़ी।
वह घोड़े पर सवार हुई और दोनों घोड़े उसके पीछे-पीछे चले, जबकि लोहे का मुखौटा पहने वह आदमी वहीं रुका रहा। उसने घोड़े का इस्तेमाल नहीं किया। वह घोड़े के लिए बहुत बड़ा था।
इसलिए उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा। वह पसीने से तरबतर थी, रो रही थी और उसके साथ उसका कोई भी साथी नहीं था।
क्या उन्होंने अभी-अभी मेरे लोगों पर हमला किया?
लेकिन मनवी… वो तो मर चुकी है…
उसकी छाती में दर्द हो रहा था और उसे ऐसा दर्द महसूस हो रहा था जैसा उसने पहले कभी महसूस नहीं किया था। उसे एहसास हुआ कि अब उसके पीछे किसी के खुरों की आहट नहीं सुनाई दे रही थी और लोहे का मुखौटा पहने वह निर्दयी आदमी अब धुंधलाता हुआ सा दिखाई दे रहा था।
लेकिन उनकी उपस्थिति का महत्व अब भी बहुत अधिक बना रहा।

38

बीस साल पहले…
In Girviraj, Magadha, modern day Bihar…
जारा ने सोमा का सेवन करके नशा कर लिया।
वह काफी समय से इसका सेवन कर रहा था। और अब वह इसे उस तरह से नहीं रोक पा रहा था, जैसा उसकी पत्नी उषा चाहती थी। उसने कोशिश की थी, लेकिन तीन साल पहले जब उसकी बेटियाँ उसे छोड़कर चली गईं, तो उसे अपनी इस लत को छोड़ने का कोई मतलब नहीं दिख रहा था।
जब वह सोमा का सेवन करता था, तो उसे दृश्य दिखाई देने लगते थे और ऊर्जा का संचार होने लगता था और उसका दिमाग एक समाधि जैसी अवस्था में चला जाता था।
लेकिन आज उसने इसे एक खास वजह से लिया था।
यानी, अपने सामने मौजूद दुश्मन से लड़ना।
उस पर दहाड़ता हुआ, घने, भूरे बालों और सुनहरे, गर्जनापूर्ण शरीर वाला—वह एक शेर था। और एक विशाल शेर।
जरा के सभी मंत्री, उसके सैनिक, उसकी प्रजा उस भयंकर और खतरनाक लड़ाई के घेरे में थे जो होने ही वाली थी।
जरा के आदमियों द्वारा शेर को पीछे खींचा जा रहा था।
जारा ने अपने आदमियों को शेर को छोड़ने का इशारा किया। और उन्होंने वैसा ही किया, हथकड़ियाँ टूट गईं, जंजीरें बिखर गईं और शेर जारा की ओर दौड़ने लगा। वह एक खाली, रेतीला मैदान था जहाँ नागरिक और दर्शक एक ऊँचे मंच से देख रहे थे, इसलिए वे शेर का शिकार नहीं बने।
यह मनोरंजन के लिए होना चाहिए था। यह उसके मनोरंजन के लिए होना चाहिए था। सोमास का असर शुरू हो चुका था और वह महसूस कर सकता था कि गुस्सा, भावनाएं— सब कुछ घुल रहा है और उसे और अधिक मजबूत और फुर्तीला बना रहा है।
उसके पास कवच, दस्ताने, घुटनों पर बांधने वाले पैड और हेलमेट था। लेकिन उसके हाथ में जो चाबुक था, वही उसका हथियार और सहारा बनने वाला था।
जिस क्षण शेर सरपट दौड़ता हुआ उसकी ओर झपटा…

जरा दूसरी तरफ लुढ़क गई। शेर चौंक गया और फिर दहाड़ा। दोनों ने एक-दूसरे को आदरपूर्वक देखा और एक-दूसरे के चारों ओर चक्कर लगाने लगे—उनकी आँखें एक-दूसरे से मिली हुई थीं, चेहरे भावहीन थे। जरा शेर के हमले का इंतजार कर रही थी, और शेर ने हमला कर दिया।
वह उसकी दहाड़ सुन सकता था।
जारा ने इंतज़ार नहीं किया। उसमें सब्र नहीं था। और जैसे ही वह आगे कूदा... उसे ऐसा लगा जैसे वह रेगिस्तान में पहुँच गया हो। और उसके सामने शेर खड़ा था, लेकिन उसका धड़ और शरीर मनुष्य जैसा था, पर सिर शेर का था।
"श्री विष्णु अवतार," जारा मुस्कुराई। "महादेव के महाभक्त से मिलें। ओम नमः शिवाय!"
उसकी समाधि उसे यह दिखा रही थी कि वह किसी और ही चीज से लड़ रहा है।
वह शेर-आदमी के पास पहुँचा और अपने पंजे से उस पर हमला कर दिया। शेर-आदमी ने अपने पंजों से हमले को रोक दिया, जरा का गला पकड़ लिया और उसे ज़मीन पर पटक दिया।
मुंह फुलाते हुए, जारा बच निकला, उसकी धड़कन तेज़ हो गई और उसने खुद को संभालते हुए पीछे से शेर-आदमी पर हमला कर दिया। संकर प्राणी पीछे धकेल दिया गया, और जारा ने अपनी रस्सी उसकी गर्दन पर कसकर पकड़ ली और उसे गला घोंटने लगा।
शेर जैसे दिखने वाले उस आदमी ने दर्द से चीख मारी, फिर अपने पंजों के बल खड़ा हुआ और चूहे की तरह रेंगता हुआ दूर चला गया।
वह जरा पर झपटा और उसके कवच को कुतरने लगा... वह कांसे और उस पर बने चंद्रवंशी हाथी के प्रतीक को चबाने लगा।
जारा लड़खड़ाते हुए पीछे हट गया, नुकीले दांतों से बचने की कोशिश कर रहा था। वह फिर से रेगिस्तान में लुढ़क गया और उसने देखा कि उसकी छाती में चोट लगी है।
लेकिन उसे कोई दर्द महसूस नहीं हुआ। सोमा का यही असर था। इससे शरीर किसी भी तरह के दर्द के प्रति सुन्न हो जाता है।
शेर-मानव आगे बढ़ा, उसके पंजे चमक रहे थे, उसकी छाती दमक रही थी जब...
जारा ने अपनी रस्सी छोड़ दी और शेर की छाती पर जोर से मुक्का मारा।
उस मुक्के की ताकत इतनी अधिक थी कि शेर जैसा दिखने वाला वह आदमी जमीन पर गिर पड़ा, रेत दो हिस्सों में बंट गई; धूल का एक अनोखा बवंडर सा छा गया।

जारा ने पलकें झपकाईं। और हर पलक झपकने के साथ, उसे एहसास हुआ कि वह वास्तविकता में लौट आया है। वह उदास, निराशाजनक वास्तविकता जहाँ शेर मुक्के के बाद बेहोश पड़ा था और उसके सभी लोग खुशी से चिल्ला रहे थे। उसकी छाती से खून बह रहा था, लेकिन उसे इसकी परवाह नहीं थी।
बोलते समय उन्होंने अपने हाथ ऊपर उठाए, हालांकि उनकी आवाज़ लड़खड़ा रही थी: “हमने मनोरंजन का एक नया रूप शुरू किया है। हम दुनिया भर से सर्वश्रेष्ठ योद्धाओं और पहलवानों को बुलाएंगे और वे न केवल मनुष्यों से बल्कि जानवरों से भी लड़ेंगे—भालुओं से लेकर हाथियों तक… और इस तरह की प्रथा हमें खुशी और एकता प्रदान करेगी और मगध साम्राज्य की उस वीरता को प्रदर्शित करेगी जिसके लिए वह प्रसिद्ध है। और शेर के साथ यह लड़ाई तो बस खून की एक झलक थी, आगे तो और भी बहुत कुछ होने वाला है।” वह मुस्कुराए। असल में, वह मनोरंजन कर लगाना चाहते थे और उन मंत्रियों से पैसे लूटना चाहते थे जो गुपचुप तरीके से पैसा कमा रहे थे।
वह जानता था कि मनोरंजन के इस रूप—जुआ—के माध्यम से एक और बाजार मौजूद है। कई अमीर लोग अपनी दौलत दांव पर लगा देते थे और वह इससे मुनाफा कमा सकता था।
उसने अपने साथी, आयोनिया के कल्यावन (यूनानियों का प्राचीन नाम) की ओर रुख किया। वह सांवले रंग का व्यक्ति था और उग्रता से ताली बजा रहा था, उसकी आँखों में लालच और क्रूरता स्पष्ट रूप से झलक रही थी।
“यूनानी साम्राज्य के राजा कल्यावन एस्सोस द्वीप से अपने सर्वश्रेष्ठ योद्धा को हमारे लिए लाए हैं,” उन्होंने यवन का परिचय देते हुए कहा, जो यूनानियों का भारतीयकृत नाम है, “जो मनोरंजन के इस भव्य उत्सव की शुरुआत पहले मुकाबले से करेंगे। आप उन पर दांव लगाना शुरू कर सकते हैं कि वे जीतेंगे या नहीं।”
कल्यावन आगे बढ़ा। वह क्रूर दिख रहा था। शहद जैसे रंग की आंखें, पतला मुंह और दुबला-पतला शरीर। उसने बहुरंगी वस्त्र पहन रखे थे और वह आठ फुट लंबे, कमर पर लंगोटी बांधे, विशालकाय चेहरे वाले योद्धा के साथ मैदान के बीच में प्रवेश किया। तब तक बेहोश शेर को मैदान से घसीट कर ले जाया जा चुका था। “यह यूनानियों और भारतीयों के लिए हाथ मिलाने का अवसर है,” कल्यावान मुस्कुराया। “मेरे पिता यहीं के थे, लेकिन उन्होंने एक विदेशी से शादी की। तब से मैं पूर्वी द्वीपों में रहता हूँ और मुझे अपनी मातृभूमि की याद आती

है। लेकिन…” उसने जरा की पीठ थपथपाते हुए कहा, “मगध के राजा जरासंध ने मुझे यहाँ घर देने का वादा किया है और यूनानियों और भारतीयों के एक साथ आने की रुचि दिखाने का कुश्ती जैसे खेल से बेहतर तरीका और क्या हो सकता है।” वह रुका। “राजा जरासंध ने शक्तिशाली शेर के सामने अपनी कुश्ती की कला का प्रदर्शन करके बहुत ही दयालुता दिखाई और मेरी माँ के देश के हेराक्लेस की तरह, उन्होंने उसे चींटी की तरह हरा दिया।”
मगध के मंत्री, सरदार और अन्य सहयोगी राजा वहाँ उपस्थित थे। यहाँ तक कि बाण भी वहाँ था, चबूतरे पर बैठा सेब खा रहा था और मुस्कुरा रहा था। मथुरा से कंस को अपनी पुत्रियों के साथ यहाँ आना था, लेकिन वह बीमार पड़ गया था और जरा को इस बात का पता चल गया था।
“ब्रूटस, तुम्हारा स्वागत है,” कल्यावान ने अपने पहले योद्धा का परिचय कराते हुए कहा, जिसने अपने हाथ ऊपर उठाए। “वह उत्तर के खूंखार भालू से लड़ेगा।”
जारा ने देखा कि रईस और राजा लोग नाम लिख रहे थे कि क्या ब्रूटस उस जानवर के खिलाफ जीत हासिल करेगा या नहीं। और वे सिक्के उछाल रहे थे।
जरा ने कल्यावन के साथ एक नजर साझा की।
आसानी से कमाया जाने वाला धन।
लेकिन तभी उसकी नजर कुश्ती के अखाड़े के सबसे दूर वाले कोने पर पड़ी—और वह वहीं थी। उसकी पत्नी। उषा।
और वह खुश नहीं दिख रही थी।

“चिंता मत करो!” जरा ने कहा, जब वे अपने निजी कक्ष में दाखिल हुए और उसने बेसिन से पानी लेकर हाथ धोए। “यह तो बस यूनानियों के साथ गठबंधन बनाने का एक तरीका है।”
“क्या अब जुआ खेलना शुरू करोगे?” उषा बिस्तर के किनारे बैठी थी। “अब आगे क्या, जरा? हत्याएं? अपहरण?”
उसने अपने जबड़े भींच लिए। "तुम बहुत ज़्यादा भावुक हो रही हो।" “यूनानियों का जीवनयापन घुमंतू शैली का है। हमारा ऐसा नहीं है। कल्यावन तुम्हारे पास सिर्फ इसलिए आया क्योंकि तुम इस तथाकथित कुश्ती खेल में हाथ

गंदे करने के लिए तैयार हो गए थे, बेचारे जानवर।” उसने अपनी भौंहें उठाईं। “और फिर उसने तुम्हें शेर से लड़ने के लिए मना लिया, ताकि यह दिखाया जा सके कि राजा खुलेआम इस खेल को बढ़ावा दे रहा है।”
जारा ने कंधे उचकाते हुए कहा, "मैंने स्वेच्छा से भाग लिया था।"
और तुमने वो घटिया सोमा दवा ले ली।
जारा ने अपनी पत्नी की बर्फीली निगाहों को देखा। "हाँ, मैंने लिया था। मैं इसे कुछ समय से ले रहा हूँ।"
मुझे लगता है कि हमारी बेटियों के जन्म के समय आपने जो वादा किया था, उसकी आपको बिल्कुल भी परवाह नहीं है।
“हाँ, मुझे पता है। लेकिन वे सुरक्षित हाथों में हैं। अब हमें इससे कोई फर्क नहीं पड़ना चाहिए। जहाँ तक मेरी बात है, मैं आज़ाद हूँ,” जरा मुस्कुराई। “चलो, मेरी प्यारी, यहाँ चिंता की कोई बात नहीं है। मैं सोमा के नियंत्रण में हूँ।”
उसने उसके करीब आने की कोशिश की और उसे जबरदस्ती गले लगा लिया, जबकि वह उसे दूर धकेलने की कोशिश कर रही थी। लेकिन फिर वह मान गई।
“यह अच्छी बात है,” वह मुस्कुराया।
“तुम हमेशा कहते हो कि सब कुछ तुम्हारे नियंत्रण में है। लेकिन ऐसा नहीं है,” उसने कहा। “पिछली बार भी ऐसा ही हुआ था जब तुमने मुझे चोट पहुंचाई थी…”
जारा ने बाकी बातें नहीं सुनीं। वह नशे की हालत में किए गए अपने कामों को याद नहीं करना चाहता था। यह वैसा ही था जैसे सोमा के नशे में, वह बाहरी दुनिया या बाहरी समस्याओं से परेशान नहीं होना चाहता था। उसने शिकायत की थी; उस पर चिल्लाई थी। जारा एक सख्त आदमी था। वह बस उसे धक्का देना चाहता था। लेकिन उस धक्के का नतीजा इतना ज़ोरदार धक्का था कि वह दीवार से जा टकराई। उसने उसे उठाने की कोशिश की, लेकिन तभी उसने उसके चेहरे पर थप्पड़ मार दिया। वह बहुत गुस्से में आ गया और उसके भाई की छवि उसके सामने आ गई और उसने भी उसे थप्पड़ मार दिया। फिर उसका गला इतनी ज़ोर से दबाने लगा कि... जारा ने आह भरी। पुरानी यादें लौट आई थीं।
मैं ऐसा दोबारा नहीं करूंगा, मैं वादा करता हूं।
“मैं यहां नहीं रह सकती,” उसने कहा।

“क्या?” उसने यह देखने के लिए पीछे हटकर पूछा कि क्या वह सच कह रही है या नहीं।
“मैं यहाँ नहीं रह सकती, जरा। मैं…उह…मैं रुद्र वीणा के लिए एक शिक्षण केंद्र बना रही हूँ और बच्चों को इसे बजाना सिखाऊँगी,” उन्होंने अपने पसंदीदा वाद्य यंत्र का जिक्र करते हुए कहा, जिसे वह परेशान होने पर या फिर समय बिताने के लिए बजाना पसंद करती थीं।
"कहाँ?"
“चंपा,” उसने ऊपर देखते हुए कहा। “वहाँ एक अच्छी जगह है। मुझे वहाँ खुशी मिल सकती है।”
"कितनी देर के लिए?"
“कल्यावन के साथ तुम्हारा मामला और सोमा के साथ तुम्हारी लगातार की मुलाक़ातें खत्म होने तक।” वह खड़ी हो गई, उससे नज़रें नहीं मिलाते हुए बोली, “उम्मीद है मुझे इजाज़त मिल जाएगी।”
जारा जानता था कि उसे उसकी अनुमति की ज़रूरत नहीं थी, फिर भी उसने अनुमति माँगी। जारा को कुछ कहने की ज़रूरत नहीं थी, बस सिर हिलाना था। वह कल्यावान के साथ व्यापारिक सौदे यूँ ही नहीं तोड़ सकता था। वह यह सुनिश्चित कर रहा था कि यूनानियों की सेना उसके समर्थन में रहे, ताकि कुरु द्वारा उनके विरुद्ध किसी बड़े हमले की योजना बनाने पर वह ज़रूरत पड़ने पर उनका उपयोग कर सके।
जब वह जाने लगी, तो जारा ने कहा: "अपना ख्याल रखना।"
“नहीं,” उसने सिर हिलाते हुए कहा, “जरा, तुम अपना ख्याल रखो। मैं उस आदमी के साथ रहना चाहती हूँ जो सबसे पहले मेरी बालकनी में आया था और जब तक मैंने उसका विवाह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया, तब तक हर दिन एक गुलाब फेंकता था। मैं उस आदमी के साथ रहना चाहती हूँ जिसने महादेव के प्रति अपना प्रेम दिखाने के लिए अपने राज्य के हर हिस्से में शिवमूर्तियाँ बनवाईं। मैं उस आदमी के साथ रहना चाहती हूँ जो जानवरों के प्रति दयालु था और पक्षियों के लिए आश्रम बनाए। मैं एक संत के साथ रहना चाहती हूँ, न कि किसी हत्यारे और वधकार के साथ।”
"मैं एक राजा हूँ, उषा," उसने उसे समझाने और अपने सभी कार्यों को उचित ठहराने के लिए कहा।
"इसका मतलब यह नहीं है कि तुम्हें एक घटिया इंसान बनना है, जारा।"

□□ □□□ □□ □□□ □□□
□□□□ □□□ □□ □□□-□□□□

39

जारा को वह दिन याद था।
यह वह दिन था जब उसने खुद को खो दिया था। यह वह दिन था जब वह उसके जीवन से चली गई थी।
उसे यह नहीं पता था कि यह आखिरी बार होगा जब वह उसे देखेगा।
मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। यह मेरी गलती है।
जरा को सोमा छोड़ देना चाहिए था। नशा उसके लिए उषा से ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं था।
और कल्यावन…
यूनानियों के जरा के साथ अभी भी संबंध थे, लेकिन जरा ने जानवरों की भयंकर लड़ाइयों को रोक दिया था। उसने अपना वचन निभाया और उषा से सहमत हो गया। सुबह-सुबह, जब उसकी त्वचा अभी भी संवेदनशील थी और रोशनी तेज़ थी, उसने खिड़की से बाहर देखा। उसने महल को युद्ध की तैयारी करते हुए देखा। हाथियों ने कवच पहन रखे थे, और हजारों सैनिक भी तैयार थे। भाले और तलवारें पत्थर पर तराशी जा रही थीं, जबकि पुजारी भगवान शिव का आशीर्वाद देने आए थे।
Om Namah Shivaye…
उन्होंने आँखें मूँद लीं।
उन्होंने जीवन भर अपने राष्ट्र और अपने राज्य के हित में सर्वोत्तम कार्य करने का प्रयास किया।
और इसकी कीमत क्या होगी?
सब कुछ।
उसने खेद और पीड़ा से अपना सिर हिलाया।
मैं तुम्हें बचा सकता था, उषा।
लेकिन कोई नहीं।
उन्होंने अपनी पत्नी की मृत्यु के पीछे का सच कभी नहीं बताया था। उन्होंने किसी को भी नहीं बताया था, यहाँ तक कि अपनी बेटियों को भी नहीं, जिन्होंने

उनसे बार-बार गुहार लगाई थी। उन्हें बस इतना पता था कि यह मृत्यु उनके लिए व्यक्तिगत थी और यह उनकी अपनी गलती थी।
"जारा," उसने एक हल्की सी सीटी की आवाज सुनी, जो उसके कानों को संगीत जैसी लगी।
उसने मुड़कर उसे देखा।
वह अंधेरे में थी और वह उसकी परछाई देख सकता था। वह रो रही थी; सिसक रही थी।
“तुम यहाँ हो,” उसने मुस्कुराते हुए कहा।
“जारा,” उसने फिर कहा, उसकी आवाज में दर्द था।
“मुझे पता था कि तुम आओगे। जब भी मैं पीता हूँ…” उसने अपने खाली गिलास की ओर देखा जिसमें नीलम रंग का सोमा तरल अपने सबसे शुद्ध, मादक रूप में था। “मैं तुम्हें देखता हूँ। प्रिय, मैं क्षमा चाहता हूँ। तुम्हारे साथ न होने के लिए मैं क्षमा चाहता हूँ। मैं तुमसे प्यार करता हूँ। मैं मरने तक पीता रहना चाहता हूँ और फिर तुमसे मिलना चाहता हूँ। मैं उस समय तुम्हारे साथ न होने की भरपाई करना चाहता हूँ जब तुम्हें मेरी ज़रूरत थी।”
“जारा…” उसने फिर कहा, परछाई से बाहर आते हुए और अपने गले में फंदे के निशान दिखाते हुए। “तुमने ही मुझे मारा है।”

देवी अपने कमरे में हताश होकर बैठी थी।
वह ठंड से कांप रही थी और उसने अपने चारों ओर शॉल लपेटा हुआ था। उसके सैनिक बड़ी संख्या में जवाबी कार्रवाई के लिए शिविर में वापस चले गए थे, लेकिन खबरें आई थीं कि वहां उसके सैनिकों के शवों के अलावा कोई मौजूद नहीं था। मानवी की मृत्यु हो गई है…
उसने आंसू रोकने की बहुत कोशिश की, लेकिन तीसरी बार फिर फूट-फूटकर रोने लगी। उसके गाल चिपचिपे थे, मुंह खट्टा था और उसके पास अंगूर की शराब पीने का विकल्प था, लेकिन उसने नहीं पी। उसका मूड नहीं था।
जब वह अपने विचारों में डूबी हुई थी, उसके सैनिक आगे के निर्देशों का इंतज़ार कर रहे थे—वह जानती थी कि सबसे अच्छा तरीका क्या है। और वह यह था कि…

निर्माण कार्य चल रहा है। उन्होंने चंपा नदी से पचास मील दूर स्थित एक पुराने निगरानी बुर्ज पर कब्जा कर लिया है। वे अभी उस पर काम कर रहे हैं। उसे तैयार कर रहे हैं। लेकिन हम भी कुछ कर सकते हैं। जब कुछ ही सैनिक शिविर बनाने के लिए पहुंचे हों, तभी हमला कर दें। हम उनके संसाधनों को भी लूट सकते हैं…”
और किले के दरवाजे खुलने की आवाज के साथ ही उसके शब्द अधूरे रह गए।
देवी और उसके सभी आदमी, जो अंदर रह रहे थे, दरवाजे की ओर नीचे देखने लगे। “वह आ गया!” द्वारपालों ने जोर से चिल्लाकर कहा। “वह आ गया!”
देवी ने आह भरी और पुरुषों को दरवाजे खोलने की अनुमति दी।
मेरी किस्मत ही खराब है।
"उसके पास लोगों का एक बेड़ा है, जनरल।"
लोगों का काफिला? उसे आखिरी संदेश यही मिला था कि वह पकड़े जाने से बचने के लिए अकेले आ रहा है।
वह क्या कर रहे है?
“क्या वे हथियारबंद हैं?” देवी ने द्वारपाल पर चिल्लाते हुए पूछा।
“वे सिर्फ हथियारबंद ही नहीं हैं। वे निषाद हैं।”
यह शब्द सुनते ही सब लोग चौंक गए।
उनके कट्टर दुश्मन!
जब से देवी ने भूभाग पर अपना अधिकार जमाया था, तब से वह पेड़ों की कटाई कर रही थी, लेकिन निषादों को यह बात पसंद नहीं थी कि उनकी भूमि का उपयोग लालच और लाभ के लिए किया जा रहा था।
“अपनी भुजाओं को स्थिर रखें। मेरा मानना है कि हमारे राजकुमार ने यहां आने से पहले ही दुश्मनों का साथ दे दिया है।”

कर्ण जानता था कि निषादों को शहर के किले के द्वार तक लाना एक बड़ी समस्या थी। लेकिन वह यह भी जानता था कि वह उन्हें इसका कारण समझा सकता है।
शहर में प्रवेश करना भी एक समस्या थी, लेकिन उन्होंने शहर के द्वार पर धृतराष्ट्र का ग्रंथ दिखाया और उन्हें अंदर जाने दिया गया। वे अपने साथ

सभी निषादों को नहीं लाए थे। कुछ निषादों ने शहर के बाहर डेरा डाला और उन्हें चुप रहने और आवश्यकता पड़ने पर ही बोलने के लिए कहा गया।
लेकिन वह कुछ सैनिकों को इसलिए लाया ताकि देवी को दिखा सके कि वह इसी तरह युद्ध जीतने वाला है। अगर वह उन सभी को ले आता, तो उन्हें खतरा समझा जाता और वे हमला कर देते। लेकिन कम संख्या में सैनिकों से वैसी दहशत नहीं फैलती।
दो दुश्मनों को एक साथ मिलाओ।
“बस इतना कहना चाहता हूँ,” सत्य ने कहा, जैसे ही द्वार खुलने लगे और कर्ण का दिल ज़ोर से धड़कने लगा, “यह एक बहुत बुरा निर्णय है।”
“गुरुजी, आप क्या सुझाव देते?”
"शायद उन्हें न बताकर निषादों का इस्तेमाल गुप्त रूप से किया जाए।"
“अगर सैनिकों को यह पता चल गया, तो वे मेरा अनुसरण नहीं करेंगे। वे मुझे झूठा राजा करार देंगे। क्या आप यही चाहते हैं?”
"यह एक बहुत बड़ा 'अगर' है और उन्हें इसके बारे में पता नहीं होता।"
कर्ण ने अपना सिर हिलाया। वह एक न्यायप्रिय व्यक्ति था। और उसे अपने लोगों, अपनी आंगण सेना के प्रति न्यायसंगत रहना ही था।
उसने सिर घुमाया तो देखा कि एक लंबी, चौड़ी महिला कर्ण और सत्या को देखने के लिए द्वार से बाहर निकली। सत्या ने मुस्कुराते हुए और नखरे दिखाते हुए उसे हाथ हिलाया, वहीं वह निषादों को पत्तों की धोती, पारंपरिक रंगों और पोशाक में, बांस के धनुष और लकड़ी के बाण लिए हुए देख रही थी।
“मुझे विश्वास है कि आप देवी हैं,” कर्ण ने कहा और घोड़े से उतर गया। “मैं कर्ण हूँ, अंग का राजा। या अंतरिम राजा। आप इसे जैसे चाहें देख सकते हैं।” महिला ने कुछ नहीं कहा। वह दुखी लग रही थी, मानो उसने हाल ही में किसी बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति को खो दिया हो। "आप इन्हें क्यों लाए हैं?"
“क्योंकि मैंने जरासंध से लड़ने के लिए एकलव्य के साथ गठबंधन किया था।” “यह सबसे मूर्खतापूर्ण काम था। जरासंध की सेना में तो बस अनुभवी योद्धा ही हैं। उन्हें ठीक से प्रशिक्षण भी नहीं मिला है,” उसने उसके पीछे खड़े आदिवासियों की ओर इशारा करते हुए कहा।
“इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे भूभाग की लड़ाई में उनकी जरूरत नहीं है।” “यह एक बुरा विचार है। उनके यहां होने से मेरे जवानों में दुर्भावना पैदा हो सकती है,” देवी ने कहा।

“तुम्हारा मतलब मेरे आदमियों से है,” कर्ण ने उसे सुधारते हुए कहा।
उसने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, "बेशक, महाराज।" उसने व्यंग्यपूर्वक कहा। “तो फिर मुझे लगता है कि आपको मेरे फैसले पर सवाल नहीं उठाना चाहिए,” कर्ण ने कहा। “मैं यहाँ जो भी आवश्यक है, उसे करने आया हूँ, चाहे जैसे भी हो, और मेरे आदमियों को इसके अनुरूप ढलना होगा।”
उसने एकलव्य द्वारा भेजे गए समूह के निषाद मुखिया ब्रज को पुकारा। वह अपने मुखिया की तरह कद में छोटा था और उसके गालों पर बाल थे लेकिन ठुड्डी पर नहीं।
“मैं उसे इसलिए लाया हूँ क्योंकि मैं चाहता हूँ कि मेरे आदमी और ब्रज फिर से दोस्त बन जाएँ। यह एक विवादास्पद मुद्दा है, लेकिन यह करना ही होगा।” देवी ने अनिच्छा से सिर हिलाया। "ठीक है, उन्हें अंदर ले आओ और... मुझे लगता है कि तुम सैनिकों से खुद बात कर लोगे।"
"बिल्कुल।"
तो कृपया आइए।
उसने ताली बजाई और द्वार पूरी तरह खुल गए।
कर्ण ने अपने लोगों को देखा; अपने आदमियों को। उनके झंडों पर सफेद हाथी बने हुए थे, लेकिन उन पर लगा हुआ आंगन का सूर्य चिन्ह गायब था, जिसे वे पहले धारण करते थे, क्योंकि अधिरथ के पूर्वज सूर्यदेव के उपासक थे। फिर भी वह ब्रज और सत्य के साथ अंदर दाखिल हुआ।
यह जानते हुए भी कि इसका परिणाम उसके लिए बहुत बुरा हो सकता है।

40

कर्ण के ऊपर जाकर शायद एक गिलास शराब पीने से पहले ही लड़ाई शुरू हो गई थी। देवी द्वारा प्रणाम करने और परिचय देने के बाद, जिसमें उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि अब उन्होंने कर्ण को कमान सौंप दी है, सैनिकों ने सहमति जताई और उनका मनोबल बढ़ गया। लेकिन जल्द ही समस्या तब उत्पन्न हुई जब कर्ण देवी और सत्य से एकांत में बात करने के लिए सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे। ब्रज और उनके सैनिक आपस में झगड़ने लगे। यह झगड़ा सैनिकों के बीच लड़ाई में तब्दील हो गया और जल्द ही सबको पता चल गया। कर्ण ने उन्हें अलग रहने के लिए मजबूर किया। इस प्रकार, ब्रज को किले के एक कोने में रहने के लिए कहा गया, जहाँ उन्हें सैनिकों द्वारा नस्लीय आधार पर परेशान या प्रताड़ित नहीं किया जाएगा, जो आमतौर पर उन्हें जंगल के मूल निवासी या बंदर जैसे आदिम कहकर पुकारते थे।
जब सब समाप्त हुआ, कर्ण देवी के उस कमरे में गया जो अंततः उसका होने वाला था, और बैठ गया। उसने नौकरों द्वारा दी गई शराब पी और कुछ भोजन किया। वह बहुत भूखा था। उसने नौकरों से ब्रज और उसके आदमियों को भी खिलाने के लिए कहा, लेकिन कटे और चिकने किए हुए कटहल।
यह सब सुनकर देवी ने नाक सिकोड़ी और रक्षात्मक मुद्रा में अपनी बाहों को अपनी छाती पर लपेट लिया।
“मैंने सुना है कि आप खुश नहीं हैं,” कर्ण ने कहा।
"जिन लोगों के लिए हम इतने लंबे समय से लड़ रहे हैं, उन्हें खाना खिलाना वाकई अजीब लगता है।"
“निषाद हमारे शत्रु नहीं हैं। उन्होंने इसलिए प्रतिशोध लिया क्योंकि आपने उनकी भूमि छीन ली थी। यदि आप उनकी जगह होते, तो क्या आप भी ऐसा ही करते?”
देवी ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, बल्कि एक बार फिर घुरघुराहट की आवाज निकाली।

“महाराज, आपको समझना होगा कि मेरा इरादा आपकी जगह लेने का नहीं है,” कर्ण ने अपनी चारपाई पर पीछे झुकते हुए कहा। कमरा मंद रोशनी से जगमगा रहा था और उसमें लैवेंडर की अगरबत्ती की खुशबू फैली हुई थी, जहाँ अलग-अलग कोनों में अगरबत्ती जल रही थी। “आप इन लोगों के साथ रहे हैं और मुझे यह अच्छा लगा। मैं बाहर बस आपको चिढ़ा रहा था। लेकिन मुझे आपका सहयोग चाहिए। मैं चाहता हूँ कि आपके आदमी निषादों का साथ दें।”
“वे निषादों को अपने साथ लेकर नहीं लड़ेंगे। वे उन पर भरोसा नहीं करेंगे।” “मुझे पता है वे नहीं मानेंगे। लेकिन आपको उन्हें मनाना होगा,” कर्ण ने कहा।
देवी ने सिर हिलाया।
“अब आपको मुझे बताना होगा…” उसने गिलास नीचे रखा और अपने दोनों हाथों को गुस्से से रगड़ते हुए पूछा, “…अभी स्थिति क्या है?”

और उसने ऐसा किया।
उसे यह समझाने में घंटों लग गए कि वह किस चीज़ में सवार हुई थी, वहाँ और क्या-क्या था, उसने अपने सहायक अधिकारी को कैसे खो दिया, साथ ही लोहे के मुखौटे वाले उस व्यक्ति के बारे में भी बताया जो दुश्मन का गुप्त हथियार हो सकता था। उसने उसके सामने एक नक्शा भी दिखाया, जिससे पता चलता है कि जारा अपना युद्ध शिविर कहाँ स्थापित करने की योजना बना रहा था और उसने उन्हें आगे बढ़ने का रास्ता भी बताया।
यह सब सुनने के बाद सत्या ने ही कहा: "जरा ने चंपा नदी को इसलिए चुना है क्योंकि स्पष्ट रूप से वह किसी न किसी तरह से इसका इस्तेमाल हमले के लिए करेगा।"
“वह कौन है?” देवी ने पूछा।
"मेरा द्वितीय-कमांड," कर्ण ने मुस्कुराते हुए कहा।
"आपसे मिलकर अच्छा लगा, महोदया," सत्या ने उसे आँख मारते हुए कहा।
"उससे बदबू आ रही है," देवी गुर्राई।
"हां, यही तो मेरा कामोत्तेजक है, जान," सत्या हंसते हुए बोली, लेकिन असल में वह हंसी नहीं।

“असल मुद्दे पर आते हैं, आप गलत हैं, बूढ़े आदमी,” देवी ने कहा। “वह वहाँ से हमला नहीं करेगा क्योंकि चंपा में ज्वार-भाटे भरोसेमंद नहीं होते। देखिए, उसने युद्ध के लिए जो ज़मीन चुनी है, उसमें वास्तव में बहुत सारा इलाका भी शामिल है…” उसने नक्शे पर उस जगह की ओर इशारा किया जहाँ नीला रंग कम था और भूरा रंग ज़्यादा था। “साथ ही, जरासंध युद्ध में नावों का इस्तेमाल करना पसंद नहीं करता।”
"लेकिन अगर हम अपने शिविर चंपा के करीब स्थापित करते हैं, तो क्या हमें नदी की दिशा से आने वाले गुरिल्ला हमले का खतरा हो सकता है, अगर वह ऐसा करता है?" कर्ण ने पूछा।
“यह एक परिकल्पना है,” उसने उत्तर दिया, “लेकिन मैंने अपने पिछले प्रयासों में जरासंध के बारे में जो सीखा है, वह यह है कि वह गुरिल्ला युद्ध के बड़े समर्थक नहीं हैं। वह भव्य तरीके से आते हैं, क्योंकि वह सर्वशक्तिमान हैं और वह इसे प्रदर्शित करना चाहते हैं, इसलिए हम चंपा को शिविर के आधार के रूप में उपयोग कर सकते हैं। यही मेरा सुझाव है।”
सत्या ने सिर हिलाते हुए इस बात का खंडन किया।
कर्ण ने सिर हिलाया। “ठीक है। आप जरासंध को बेहतर जानते हैं। मुझे उम्मीद है कि आप सही हैं। लेकिन एहतियात के तौर पर, हमें नदी से कुछ मील दूर डेरा डालना चाहिए ताकि हमले की स्थिति में भी नुकसान कम हो।”
कर्ण ने उसे हल्की सी मुस्कान देते हुए देखा। वह उसे तुरंत नाराज़ करने का जोखिम नहीं उठा सकता था, क्योंकि सैनिक उसी के अधीन थे, वह उन्हें और उनके नाम जानती थी। उनके लिए, वह फिलहाल एक अजनबी था। एक ऐसा राजा जिसके पास ताज नहीं था।
“चलिए एक और समस्या की ओर बढ़ते हैं। हमारे पास पर्याप्त सैनिक नहीं हैं,” कर्ण ने घोषणा की। “हम इसका समाधान कैसे करें?”
देवी ने कहा, "हमने कुछ और लोगों को भर्ती किया है, लेकिन कई लोग नहीं आ रहे हैं।"
सत्य ने कंधे उचकाते हुए कहा, "क्योंकि वे मरना नहीं चाहते। मेरे पास एक समाधान है, महाराज, अगर आप सुनना चाहें तो।"
Karna nodded.
सत्या ने खड़े होकर नाटकीय अंदाज़ में समझाते हुए कहा, “अपने काम के सिलसिले में यात्रा करते हुए, मुझे एक निगरानी मीनार मिली। वह पुरानी थी,

लेकिन काफी प्रभावी थी। वह छिपी हुई थी, उस झील के पास जहाँ मैं काम करता था…” वह रुका।
“किस बात से निपट रहे हैं?” देवी ने पूछा।
“इससे आपका कोई लेना-देना नहीं है, महोदया,” सत्य ने फिर आँख मारी। “लेकिन देखिए, मैं यही कर रहा था और तभी मेरी नज़र इन लोगों पर पड़ी। पहरेदार मीनार में एक हज़ार से ज़्यादा गुलाम काम कर रहे थे और उनके अधीन काम करने वाले जरासंध थे।”
“तो इसमें बड़ी बात क्या है?” देवी ने कंधे उचकाते हुए कहा।
“नहीं। दरअसल, वे गुलाम अंगन के पूर्व सैनिक थे। वे लोग जो मांस काटने के बजाय तलवारों से लकड़ी काटते थे। यह लकड़ी काटने का एक निगरानी बुर्ज है और यह छिपा रहता है। मैं वहां जरासंध के एक सैनिक से बात कर रहा था, इसलिए मेरी नज़र उस पर पड़ी और मेरी जिज्ञासा बढ़ गई।”
“यह कहाँ है?” कर्ण ने अपनी भौंहें उठाईं।
"चंपा के करीब, लेकिन उसके अंदर नहीं।"
“उन्होंने उन्हें मारा क्यों नहीं?” देवी ने पूछा।
“क्योंकि वे ईमानदार लोग हैं और इस काम को करने के लिए काफी ताकतवर हैं। और सच कहूँ तो, जरासंध नहीं चाहेगा कि किसी को इसके बारे में पता चले, क्योंकि यहीं से उसकी कमाई होती है,” सत्या ने कहा। “मुझे संयोग से पता चला। लेकिन हम इसका फायदा उठा सकते हैं।”
देवी को यकीन नहीं हुआ। यह बात सच होने के लिए बहुत अच्छी लग रही थी। लेकिन शायद, यह एक सुनहरा मौका था, जिसे हथियाने के लिए तैयार बैठा गया था। “क्या आपको लगता है कि अगर हम उन्हें रिहा कर दें तो वे हमारे साथ काम करेंगे?” कर्ण ने पूछा।
“मैं कोशिश कर सकता हूँ। आखिर, मैं भी कभी वही था जो अब देवी है,” सत्या मुस्कुराया। “मैंने बहुत ज्यादा बोल दिया है और अब मुझे अपने गले की खराश को शराब से ठीक करना होगा।”
और उसने ऐसा ही किया, जैसे ही उसकी बात समाप्त हुई, कर्ण ने देखा कि देवी घबरा रही है और उलझन में है। कर्ण को खुद भी नहीं पता था कि यह सही विचार है या नहीं, लेकिन कोशिश करने में कोई हर्ज नहीं था।
“यह सब करने के बजाय, मेरे पास एक बेहतर विचार है,” देवी ने कहा। “एक सप्ताह तक इंतजार क्यों करें? चलो अभी जो वे बना रहे हैं, उसी पर हमला करते हैं।”

“मेरे प्रिय,” सत्य ने उपहास उड़ाते हुए कहा, “यह जरासंध है। अगर तुम अभी उस पर हमला करोगे, तो वह और भी अधिक बलपूर्वक पलटवार करेगा। और वह रुकेगा नहीं। यद्यपि अंग का कोई ढाँचा या रूप नहीं है, फिर भी वह बहुत समय से इसी स्वरूप में है। इसलिए नहीं, जब तक हम पूरी तरह से तैयार नहीं हो जाते, तब तक कुछ भी करना मूर्खतापूर्ण प्रयास होगा।”
कर्ण ने सिर हिलाया। “मैं उससे सहमत हूँ।” वह खड़ा हुआ और सत्य के कंधे पर हाथ रखते हुए देवी को आदेश दिया: “सत्या ने जिस स्थान का निर्देश दिया है, वहाँ कुछ दूत भेजो। वे जो कुछ भी देखें, उसकी प्रत्यक्ष जानकारी मुझे दें। यदि जरासंध ने अपने लोगों को पहरेदार मीनार से वापस नहीं बुलाया है, तो हम उस पर शीघ्र और प्रभावी ढंग से हमला करेंगे।”
"अगर सैनिक तुम्हारा साथ न दें तो क्या होगा?" देवी ने अपने विचार के खारिज होने पर गुस्से से दांत पीसते हुए पूछा।
“तो मैं इस बात से संतुष्ट हो जाऊँगा कि मैंने पूर्व सैनिकों और अपने लोगों की जान बचाई है,” कर्ण ने आह भरी। “हम एक विशालकाय राक्षस से लड़ रहे हैं, जो मनुष्यों में एक दानव की तरह है। उसके पास बहुत सारे सैनिक हैं। मुझे पता है कि हम हार सकते हैं, लेकिन मैं यह भी जानता हूँ कि हारने की इस प्रक्रिया में, मैं उन बचे हुए लोगों की जान बचाना चाहता हूँ जिन्हें उसने मारना नहीं चाहा है।”
कर्ण ने देवी की आंखों में थोड़ी सी श्रद्धा की झलक देखी, लेकिन यह केवल एक क्षण के लिए ही रही और फिर गायब हो गई।
ठीक है। आपको सूचित और अपडेट कर दूंगा, महाराज। अब मैं आपको आपके… से मुक्त करता हूँ।
“नहीं, प्लीज़,” कर्ण ने अपने गांजे के पैकेट पकड़े और सत्या ने भी। “यह तुम्हारा कमरा है। मुझे यकीन है, मैं अपने लिए कोई और जगह ढूंढ लूंगा।” लेकिन यह सबसे बड़ा है।
“मुझे परवाह नहीं,” कर्ण ने कहा। “धन्यवाद।”
और वह भ्रमित देवी को वहीं छोड़कर चला गया, जो उसके उदार रवैये से थोड़ी अचंभित थी, लेकिन उसके निर्णय लेने के तरीके से निराश भी थी।

कर्ण बाहर निकल गया, जबकि सत्य शराबखाने में और शराब पीने के लिए नीचे चला गया। कर्ण ने बालकनी से अपने आदमियों को देखा और पुकार कर कहा: "मुझे आप सभी से बात करनी है।"
लगभग सौ सैनिक इकट्ठा हुए; जो लोग वहां मौजूद नहीं थे और अलग-अलग किलों में थे, उन्हें बाद में इन लोगों से इसके बारे में पता चलेगा और वे इसके बारे में सुनेंगे।
उसे अपने पीछे देवी के कदमों की आहट महसूस हो रही थी, जो सुन रही थी।
“मेरा नाम वासुसेना है। मेरा जन्म मालिनीपुर में हुआ था। यहीं पर। मैं यहीं पला-बढ़ा। मैंने यहीं से दुनिया देखी, जब तक कि मैं द्रोणाचार्य और फिर परशुराम से शिक्षा प्राप्त करने नहीं गया। मैं धनुर्धर हूँ, और राजशाही की परवाह नहीं करता। मैं आप में से एक हूँ। मैं आपके साथ लड़ता हूँ। मैं आपके साथ जीतता हूँ और आपके साथ हारता हूँ। बचपन में, जब इस शहर पर सत्ता हथियाने वालों ने कब्जा कर लिया था, तब मैंने खुद से वादा किया था कि मैं इस पर राज करूँगा और आज मैं वही करने आया हूँ। आप मेरी प्रजा हैं, मेरा खून हैं, और यह हमारी धरती है। हम चाहते हैं कि इन सत्ता हथियाने वालों का शासन समाप्त हो। अगर पूरी तरह नहीं…” उसने देवी की ओर देखा, “कम से कम आंशिक रूप से। और हमें खून के बदले खून से लड़ना चाहिए, क्योंकि हमारे लोगों ने चंपा में खून बहाया है। वह अब एक वीरान शहर है। और मैं वहाँ तब तक नहीं जाऊँगा जब तक कि मैं उन सभी आत्माओं का बदला उस व्यक्ति को मारकर न ले लूँ जिसने यह सब किया है। जरासंध का अंत होगा। मेरे हाथों नहीं, बल्कि हमारे हाथों,” कर्ण दहाड़ा, और सभी ने जयकारे लगाए और अपने हाथ ऊपर उठा लिए। वह देख सकता था कि सैनिक मुस्कुरा रहे थे, वे खुश थे। भाषण तो जोश भरा था, लेकिन अब उसे अमल में लाना जरूरी था।
यह अंत की शुरुआत है। या फिर एक नई शुरुआत की।
मुझे जल्द ही पता चल जाएगा।

41

सत्या में कोई बदलाव नहीं आया था।
उसे बस इतना पता था कि जब उसे उस छोटे लड़के का चेहरा याद आया, तो उसके सीने में एक अजीब सी अनुभूति हुई। यह एक गर्मजोशी भरी, पुरानी यादों से भरी भावना थी और उसे यकीन हो गया कि उसे उस लड़के के लिए कुछ करना ही होगा। जैसे-जैसे उसका दिमाग धुंधलापन से मुक्त होता गया, उसे और स्पष्टता मिली: उसे उस लड़के की मदद करनी थी। वही लड़का जिसे बचपन में पैनिक अटैक आते थे, क्योंकि वह दुनिया की उम्मीदों पर खरा नहीं उतर पा रहा था।
उसमें जबरदस्त बदलाव आ गया था।
दुर्भाग्यवश सत्या ने ऐसा नहीं किया था।
जैसे-जैसे रात ढलती गई, वह किले से निकलकर मालिनीपुर शहर की संकरी गलियों में आ गया, जो गरीबी, बीमारी और गंदगी से त्रस्त एक दुनिया जैसी लग रही थी।
लेकिन यह उसके लिए अच्छा ही था, क्योंकि उसे यहीं पर सुकून मिल जाएगा।
वह सिर पर हुड ओढ़े हुए इधर-उधर घूमता रहा और इजाज़त मांगता रहा। वह नहीं चाहता था कि किसी को पता चले कि राजा का दूसरा सबसे बड़ा अधिकारी इस तरह शहर की सड़कों पर घूम रहा है। और हालांकि किले के पहरेदारों ने उसके साथ चलने की इजाज़त मांगी, उसने उन्हें मना कर दिया।
रात में जुगनू टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर उड़ रहे थे और कौवे मेहराबदार इमारतों पर बैठे थे, जबकि पत्थर की गलियों की आवाज और नालियों से पानी टपकने की आवाज सुनाई दे रही थी।
एक समय था जब मालिनीपुर ऐसा नहीं था। चार साल पहले, हालात इतने भयावह नहीं थे।
अगर यह जगह इस हालत में होती, तो वह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि चंपा कैसी होती। धृतराष्ट्र और जरासंध जैसे सत्ता हथियाने वालों के आने से पहले, अंगा एक छोटा लेकिन सुंदर देश था, जहाँ चेरी और आंवले के पेड़ बहुतायत में उगते थे और यह अपनी खूबसूरत वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध था। दिन लंबे होते थे और रातें जल्दी बीत जाती थीं।

दुर्भाग्यवश, अब ऐसा नहीं है।
उसने घास के लिए इधर-उधर पूछताछ की, आखिरकार उसकी मुलाकात एक ऐसे आदमी से हुई जो उसे थोड़ी घास बेचने के लिए तैयार हो गया। वह आदमी बदबूदार था, लेकिन इससे कोई परेशानी नहीं हुई।
“मेरे साथ आओ।” वह टेढ़े-मेढ़े कदमों से चलने लगा और उन्हें अपने पीछे आने के लिए मजबूर कर दिया।
शहर के रक्षक अपने भाले और ढाल लिए हुए उनके चारों ओर जमा हो गए, जब वे एक छोटी सी गली में दाखिल हुए और फिर आगे बढ़े, जहाँ एक छोटा सा घर था जिसका दरवाजा खुला हुआ था।
सत्या अंदर दाखिल हुआ और उसे तुरंत मछली पकने की गंध महसूस हुई। उसने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा और एक बीमार महिला को देखा, शायद वह उस आदमी की पत्नी थी।
दूसरी ओर, उस आदमी ने उसे आगे आने को कहा, लेकिन पत्नी को देखकर सत्या के पेट में कुछ अजीब सी बेचैनी हुई। आखिरकार वह आदमी उसे एक कमरे में ले गया, जहाँ मुश्किल से आठ या नौ साल का एक छोटा लड़का उसके पास आया।
“उसे दे दो,” उस आदमी ने कहा।
लड़के ने सिर हिलाया और अपनी जेब से पत्ते निकालकर सत्या को दे दिए।
सत्या ने देखा कि लड़का अपनी माँ की तरह बीमार था, लेकिन उसकी आँखें भोली थीं। उसके लिए तो बस पत्ते थे, उसे नहीं पता था कि वे नशीले पदार्थ हैं।
सत्या के पेट में एक और मरोड़ उठी।
और उसने तय सीमा से अधिक सिक्के गिरा दिए।
उस आदमी ने गिड़गिड़ाते हुए कृतज्ञता व्यक्त की और उसे गले लगा लिया। सत्य ने सिर हिलाया।
और भारी मन से चली गई।

जब सत्या बाहर आ रहा था, तो दो गार्डों ने उसका स्वागत किया।
"आप यहां पर क्या कर रहे हैं?"
"आप कौन हैं?"

सत्या ने एक शब्द भी नहीं बोला। वह असमंजस में था। क्या उसे अपना चेहरा दिखाना चाहिए? या नहीं? लेकिन तभी उन्होंने उसे मौका दिए बिना ही पकड़ लिया और उसकी तलाशी लेने लगे। इसी दौरान उसका चेहरा दिखाई देने लगा।
और उनके चेहरे पीले पड़ गए।
“यह नए राजा का दूसरा सबसे बड़ा अधिकारी है,” एक गार्ड ने दूसरे से कहा, और उन्होंने तुरंत उसे जाने दिया। “माफ़ कीजिए, महाराज। हमें इसकी जानकारी नहीं थी। माफ़ कीजिए, महाराज।” उन्होंने उसके सामने सिर झुकाया।
सत्या के हाथों में पत्ते थे और वे दिखाई दे रहे थे। गार्डों ने उसके हाथों को देखा और वे उसे गिरफ्तार कर सकते थे, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। वे बस झुककर माफी मांगते रहे।
हालांकि उनकी आंखों में निराशा की एक झलक जरूर दिखाई दे रही थी।
कोई बात नहीं। अपना काम करते रहो।
और उन्होंने ऐसा ही किया, वे आपस में फुसफुसा रहे थे।
सत्या ने अपने हाथ में पकड़े पत्तों को देखा और गली की ओर पलटकर देखा। उसे ज़रा भी अपराधबोध नहीं हो रहा था। कुछ दिन पहले उसने ये पत्ते बच्चों को दिए थे और जब उसे होश आया तो उसे पहले से भी ज़्यादा बुरा लगा था।
अब उसके पास सब कुछ था। उसका रुतबा था। उसके पास पैसा था। उसके पास हथियार थे। लेकिन वह बूढ़ा था, हालांकि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था।
उसने पत्तियों को अपनी हथेली में मसल दिया और किले की ओर वापस चल दिया।
अब उसने अपना हुड नहीं पहना हुआ था।

42

23 साल पहले…
चंपा जाते समय जरा को कुछ महसूस हुआ।
कुछ भयानक।
दुनिया अपने तयशुदा तरीके से नहीं चल रही थी। अपशकुन बहुतायत में दिखाई दे रहे थे। सबसे पहले जरा ने कौवों को देखा। वे चारों ओर उड़ रहे थे। जरा जिस भी दिशा में जाता, वे उसके पीछे-पीछे मंडराते रहते। वे देवदार के पेड़ों पर बैठ गए और जरा और उसके आदमियों को चंपा की ओर बढ़ते हुए देखते रहे।
जरा अपने साथ पचास से अधिक सैनिक ले जा रहा था। जैसा कि किसी भी राजा को एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते समय करना चाहिए।
आकाश में मैगपाई पक्षी भी उड़ रहे थे। और कीचड़ भरी ज़मीन पर चूहे और कीड़े रेंगते हुए दिखाई दे रहे थे। तूफान थम चुका था, लेकिन आकाश में हलचल थी, ऊर्जा का विस्फोट हो रहा था।
और यही वो समय था, जब उन्होंने देखा—
एक घुड़सवार और उसका घोड़ा, दोनों जमीन पर लेटे हुए थे। उन्होंने हाथी के चिन्ह वाला कवच पहन रखा था। घुड़सवार की पीठ पर तीरों के कई निशान थे और उसका चेहरा कीचड़ से सना हुआ था। उसके पास एक लिखित पत्र पड़ा था।
जारा अपने रथ से उतरा और बड़ी सावधानी से यह सुनिश्चित किया कि उसका मुकुट गिर न जाए। वह शव के पास घुटनों के बल बैठा और पांडुलिपि उठा ली। उसका सेनानी पीछे से यह सब देख रहा था।
जारा ने वह पत्र खोला और उसमें लिखा था: हम पर हमला हुआ है! हमें बचाओ! उसने अपने जबड़े भींच लिए। “कमांडर, अपने घोड़ों को जल्दी चलाओ। हमें अपनी गति बढ़ानी होगी।” भारी मन से वह अपने रथ के बजाय घोड़े पर सवार हो गया और चल पड़ा। जितनी तेज़ी से हो सकता था। वह देरी नहीं करना चाहता था। उसे बस यही उम्मीद थी कि सब ठीक हो जाएगा। वह जानता था कि यह एक बुरा संकेत है, फिर भी आशा की एक किरण उसके दिल में सुलग रही थी।

चंपा के पास पहुँचते ही जरा ने शहर का विशाल किला देखा। यह हस्तिनापुर के लघु रूप जैसा बना हुआ था। इसके अंदर पहरेदार मीनारें और किले थे; बाज़ार चहल-पहल और जीवंतता से भरे हुए थे। लेकिन उसने कुछ अजीब देखा।
द्वार तोड़ दिए गए थे। उसके आदमी खून से लथपथ मृत पड़े थे। चारों ओर खून ही खून फैला था।
जैसे ही वह द्वार से अंदर दाखिल हुआ, सभी लोग, नागरिक जारा से छिप रहे थे; वह इस बात को लेकर असमंजस में था कि आखिर हुआ क्या था, उसके सैनिकों की मौत का असली कारण क्या था। हर गली में उनके शव सड़ रहे थे।
“इसीलिए वे हमारे पत्रों का जवाब नहीं दे रहे थे,” उनके सेनानी ने कहा। “मुझे लगा कि उन्हें डाक नहीं मिली या कुछ और हुआ होगा। लेकिन…हम पर हमला हुआ था। और संदेशवाहक भी समय पर नहीं आ सका।”
बाज़ार में कुछ ही लोग निकले थे, लेकिन वे डरे हुए थे। वे अपने प्रियजनों, अपने बच्चों को कसकर पकड़े हुए थे। वहाँ भिखारी भी थे और संत भी। वहाँ गुरु भी थे और साधु भी। वहाँ व्यापारी भी थे और सुनार भी। वे सब भयभीत थे।
जारा एक बच्चे के पास गई। उसके हाथ में एक छोटी टोकरी थी जिसमें रोटियाँ थीं, लेकिन उस पर खून के छींटे पड़े हुए थे।
“यहाँ क्या हुआ, लड़के?” उसने पूछा।
लड़का पलकें झपकाईं। वह घबराया हुआ लग रहा था; और उसे घबराना भी चाहिए था।
उसके स्थान पर कब्जा करने वाले ने अभी-अभी एक सवाल पूछा था।
“वे आए…वे रात में आए।”
"कौन?"
“जनता ने विद्रोह कर दिया!” उसने फुसफुसाते हुए कहा। उसके बाल बिखरे हुए थे; चेहरा धूल से सना हुआ था।
जारा ने गहरी सांस ली।
नहीं।
“महाराज,” उनके सेनानी ने कहा, जो एक अन्य काले घोड़े पर सवार थे।
“उन्होंने जवाबी कार्रवाई की, क्योंकि आप उन पर कर लगा रहे थे और उनसे काम करवा रहे थे।”
जारा ने इसकी मंजूरी दी थी।

लेकिन किसी कारणवश, उन्हें यह हमला प्रतिशोधात्मक नहीं लगा। यह एक रणनीतिक हमला था। बहुत ही सुनियोजित। रात में हुआ एक गुरिल्ला हमला।
जिसने सभी को चौंका दिया।
"क्या किसी को पता था कि उषा यहाँ रुकेगी?"
"हमने इसे गुप्त रखा, महाराज।"
जाहिर तौर पर यह पर्याप्त रूप से गोपनीय नहीं था।

जरा उस कुल की ओर घोड़े पर सवार होकर बढ़ा जहाँ विद्यालय था। उसका विद्यालय। चंपा से बचे हुए उसके आदमियों को देखभाल और पूछताछ के लिए ले जाया गया। उसकी सेनानी ने सब कुछ संभाला, यह पता लगाया कि चंपा में कितने सैनिक बचे हैं; जबकि जरा तेजी से विद्यालय की ओर बढ़ गया।
चंपा पर कोई क्रूर हमला नहीं हुआ था। केवल सैनिक ही मारे गए थे। दूसरी ओर, कई नागरिक अभी भी विद्रोह कर रहे थे, जबकि कुछ अन्य छिप गए थे।
जरा भाग्यशाली था कि वह समय पर आकर एक मजबूत गढ़ बनाने में सफल रहा और उसके सेनानी ने मगध में अतिरिक्त सेना लाने के लिए पहले ही कौवे भेज दिए थे। एक दिन और बीत जाता तो कुरु आकर चंपा पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेते। जारा को बस यही आश्चर्य होता रहा कि भाग्य कैसे काम करता है।
जैसे ही वह विद्यालय के पास पहुंचा, उसने देखा कि यह एक विशाल शाही भवन था जिसमें एक शाहबलूत की झोपड़ी और ठीक उसके बगल में एक देवदार का पेड़ था।
वह घोड़े से उतरा और विद्यालय की ओर बढ़ने लगा तभी उसकी नज़र एक पेड़ पर पड़ी। यह अजीब था। पेड़ की एक टहनी टेढ़ी-मेढ़ी दिशा में लटकी हुई थी और जैसे ही वह पास आया, उसने देखा कि वह टहनी नहीं थी।
वह एक व्यक्ति था—जो पेड़ की शाखा से लटका हुआ था।
और उस व्यक्ति के चारों ओर कई बच्चे थे, छोटे बच्चे जो उस व्यक्ति को पेड़ से नीचे उतारने की पूरी कोशिश कर रहे थे।
जारा आगे आया, ज़मीन पर घुटने टेककर चीखते हुए उसने चारों ओर गौर से देखा।
वह इस बात पर विचार भी नहीं कर पा रहा था कि क्या हुआ था या जो कुछ उसने अपने सामने देखा था, उसे देखकर उसकी आँखों में आंसू भी नहीं आ रहे थे—वह वहाँ थी।

लकड़ी के खिलौने की तरह लटका हुआ।
उषा का चेहरा पीला पड़ गया था। उसकी नसें उभरी हुई थीं। उसकी आँखें खुली हुई थीं। उसके गले में एक बाँस की रस्सी बंधी थी जिसे इन बदमाशों, इन पागलों ने पेड़ की सबसे ऊपरी शाखा से बाँध दिया था।
जारा को इस तस्वीर को देखकर विश्वास नहीं हो रहा था।
बच्चों ने उसकी ओर देखा और वे चुप हो गए।
“तुमने उसे क्यों नहीं हटाया?” उसने पूछा। “क्यों?” वह बच्चों पर चिल्लाया।
जिस शाखा से वह लटकी हुई थी, उसके शीर्ष पर और भी कौवे बैठे हुए थे।
“सर, हमने उषा आंटी की मदद करने की कोशिश की, लेकिन वो बहुत भारी हैं। हमारी लंबाई इतनी नहीं है। हमने मदद मांगी, लेकिन कोई मदद नहीं करना चाहता क्योंकि वो घर की रानी हैं और कोई भी खुद पर दोष नहीं लेना चाहता।” बच्चों में से एक बड़ा बच्चा आगे आया और बोला।
जारा सुन्न पड़ गया। और वह ज़मीन पर हाथ-पैर पटकने लगा, धूल उड़ने लगी। उसे दर्द हो रहा था। वह अलविदा भी नहीं कह पाया। वह उसे अपने दिल की बात नहीं बता पाया।
फिर उसने बच्चों की ओर देखा।
वह आप सबकी वजह से आई है।
वह इसलिए आई क्योंकि वह आपको प्रशिक्षित करना चाहती थी।
उसकी मौत का कारण तुम हो।

जारा इतना लंबा था कि उसने उसके शरीर को उठाकर अपने कंधों पर और फिर अपनी बाहों में भर लिया। वह ठंडी थी; बर्फ़ की तरह ठंडी। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। उसे नहीं पता था कि वह अपनी बेटियों से क्या कहेगा। उसे नहीं पता था कि कौन उसे सोमा पीना छोड़ने और एक बेहतर इंसान बनने के लिए कहेगा। उसे नहीं पता था कि कौन उससे फिर से "मैं तुमसे प्यार करता हूँ" कहेगा और दिल से कहेगा।
उसे अब कुछ भी पता नहीं था।

अब तक उसका सेनानी उसके काफी करीब पहुंच चुका था और जैसे ही दूसरों ने उसे देखा, उनके चेहरे पीले पड़ गए।
जरा के हाथों में पड़ी मृत रानी की वजह से नहीं।
लेकिन जरा द्वारा अभी-अभी मारे गए बच्चों के शवों के ढेर के कारण।
मक्खियाँ उन पर झुंड बनाकर मंडराने लगी थीं।
लेकिन जरा को इसकी परवाह नहीं थी। उसने उसे अपने घोड़े पर बिठाया और खुद उस पर सवार हो गया।
“महामहिम, राजमाता उषा…क्या लोगों ने उनकी हत्या की?” सेनानी ने पूछा।
जारा ने अपने जबड़े भींच लिए। फिर उसने उन सभी लोगों को देखा जिन्होंने उसके खिलाफ विद्रोह किया था और जिन्हें उसके आदमियों द्वारा बाहर निकाला जा रहा था। वे सभी बंधे हुए थे और उसके शासन और व्यापार के शोषण से क्रोधित और निराश थे।
“चंपा मेरा है!” जरा रोते हुए दहाड़ा। “इन सबको मार डालो।” उसने अपने आदमियों को आदेश दिया। “इनकी पत्नियों को मार डालो। इनके साथ बलात्कार करो, इनके बेटों की हत्या करो और इनकी छोटी बच्चियों को वेश्यालयों में बेच दो।”
और अंत में उसने विद्रोहियों की आंखों में भय की झलक देखी, जिन्हें यह एहसास हो गया था कि उनके कार्यों से उनके परिवार को नुकसान होगा।
“तुमने मेरी दयालुता देखी,” जारा ने घोषणा की। “अब तुम मेरा क्रोध देखोगे।”

43

आज के समय में…
जारा को अतीत के विचारों को दूर करके वर्तमान पर ध्यान केंद्रित करना था। वे चंपा नदी की ओर बढ़ते हुए सड़क के बीचोंबीच थे और गोनांडा अपने रथ में सवार थे। फिर उन्होंने डेरा डाला। यहाँ तीन हज़ार से अधिक सैनिक थे, जबकि लगभग पाँच हज़ार सैनिक गोनांडा के साथ मथुरा गए थे ताकि वहाँ से जल्दी ही राज्य पर कब्ज़ा कर सकें। यही नियम था।
जरा कर्ण से पीछा छुड़ाकर आगे बढ़ना चाहता था। वह खुशखबरी का इंतजार कर रहा था।
रात को उसने सोमा पीकर आराम किया। और सुबह उठते ही उसके मन में अपनी पत्नी के ख्याल आने लगे। उषा वहीं थी और उसे काशी में उसकी छवि याद आ गई, जब उसने उसे पहली बार देखा था—वह जीवंत लड़की, जिसने सोमा के कारण अपने भाई को खो दिया था। और अब, इससे पहले कि वह उसे दिखा पाता कि वह उससे बेहतर है, वह भ्रष्ट हो गया और फिर से उसी दलदल में फंस गया। विडंबना यह थी कि सोमा ही उसे उषा के पास ले आई।
लेकिन उसकी पत्नी की छवि उसके लिए भयावह थी। उसकी आँखें गुस्से से लाल हो जातीं और उसकी गर्दन पर लटके फंदे से वह व्याकुल हो जाता। विद्रोहियों ने उसकी हत्या कर दी थी और इसके जवाब में, चंपा छोड़ते ही उसने विद्रोहियों में से एक-एक को मार डाला। किसी को भी नहीं बख्शा, क्योंकि उसकी पत्नी का खून चंपा में बहा था।
उसने अपनी माँ के बारे में भी सोचा। वही माँ जिसने उसे अपने भाई को मारने और फिर खुद को मारने के लिए कहा था। यह एक अजीब अनुरोध था।
लेकिन उसने जो किया, वह हद से ज्यादा था।
वह दिन मां की काली जीभ की तरह काला था।
लेकिन उसने उसका नाम धारण किया।
और जब उसके मन में विचारों का सैलाब उमड़ रहा था, तभी उसने अपने तम्बू की छाया को बड़ा होते देखा और बाहर प्रकट हुआ व्यक्ति किसी दैत्य की तरह

विशालकाय था। फिर उसने तम्बू के पर्दे खुलते देखे और उसके पहरेदारों ने कुछ नहीं कहा, क्योंकि...
वज़न।
उसने एक जली हुई कमीज पहनी हुई थी, उसके शरीर पर जगह-जगह घाव थे, लेकिन उसे इसकी कोई परवाह नहीं थी। लोहे का मुखौटा अभी भी उसके चेहरे पर लगा हुआ था। “देवी पर हमला कुछ दिन पहले हुआ था। आप उस समय कहाँ थे?”
काल ने कुछ नहीं कहा।
“तुमसे किसी भी बात पर चर्चा करने का कोई फायदा है क्या? तुम एक शब्द भी नहीं बोलोगे,” जरा गुस्से से लाल आंखों के साथ बोली।
काल ने एक चर्मपत्र निकाला।
जिस पर यह लिखा था:
महाराज, मैंने पहरेदार मीनार के पास एक आदमी को देखा। मुझे लगता है कि नए राजा ने हम पर नज़र रखनी शुरू कर दी है। पता नहीं उसे हमारे बारे में कैसे पता चला। हमें आगे क्या करना चाहिए, बताइए?
वह निगरानी मीनार एक अनमोल, गुप्त स्थान था। वह उन्हें इसे लेने नहीं दे सकता था। लेकिन वे इसे क्यों चाहेंगे? जरा की जिज्ञासा बढ़ गई। यह वर्षावन में, शहर के शोरगुल से दूर, छिपा हुआ था। और यहीं वे लकड़ी काट रहे थे और उसे लाद रहे थे, जो भारी मात्रा में चंपा नदी के रास्ते नाव से मगध के क्षेत्र में पहुँचती थी। लेकिन खासियत यह थी कि वे अपने आदमियों का इस्तेमाल नहीं कर रहे थे, बल्कि मेहनती और अनुभवी सैनिकों से यह काम करवा रहे थे।
“लड़ाई शुरू भी नहीं हुई है और वे मेरे अड्डे पर हमला कर रहे हैं। लेकिन सवाल यह है कि उन्हें इसकी जानकारी कैसे हुई?” जरा ने खुद से पूछा और धातु के मुखौटे के नीचे काल की सांसें तेज हो गईं। “क्या तुम्हें लगता है कि हमारे बीच कोई जासूस है? लेकिन…नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता,” वह रुका। “तुम्हारे पास बिना एक शब्द बोले लोगों का इतना अच्छा नेटवर्क कैसे है, जबकि मैं यहाँ संघर्ष कर रहा हूँ?” वह मन ही मन हँसा।
और फिर काल ने भारी और धातु जैसी आवाज़ में पूछा, और कई वर्षों में पहली बार उसने कहा, "मैं वहाँ जा रहा हूँ।"
जरा हैरान था, लेकिन शायद वह इसलिए बोल रहा था क्योंकि वहाँ सिर्फ वह और काल ही थे। कोई और नहीं।

“□□□ □□,” □□□□ □□□ □□□□□ “□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□?”
□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□□□
□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□
□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□

44

जब कर्ण सौ आदमियों के साथ देवी और सत्या को लेकर पहरेदार मीनार पर पहुंचा, तो उन्हें पता चला कि वहां कोई गश्त नहीं थी।
वह घोड़े पर सवार था और उसने अपना सुनहरा कवच पहन रखा था, जो रात के अंधेरे में चमक रहा था। उसे सेबों और आमों की खुशबू आ रही थी, क्योंकि बहती हुई घाटी घने जंगलों में एक सांप की तरह रेंग रही थी।
“यहाँ एकदम शांति है। बहुत शांति,” सत्या ने कहा। उसने अपनी दाढ़ी और बाल संवारकर खुद को साफ-सुथरा कर लिया था। “अच्छा नहीं लग रहा।”
"हो सकता है उन्होंने लोगों पर लगाम कस ली हो," देवी ने सकारात्मक भाव से सुझाव दिया।
या फिर उन्हें पता है कि हम यहां हैं।
“वे ऐसा कैसे करेंगे?” देवी ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।
वे आगे बढ़ गए, जबकि उनके साथी पीछे रह गए।
कर्ण बिना किसी भाव के आगे की सड़कों को देख रहा था, लेकिन उसे आगे कोई गश्ती दल नहीं दिखाई दिया। जब वे रेत से बने उस विशाल और चौड़े किले के पास पहुँचे, तो कर्ण ने देखा कि मशालें बुझ चुकी थीं—किले से कोई रोशनी नहीं आ रही थी।
अजीब।
“क्या आपको यकीन है कि यही वह है?” कर्ण ने सत्य से पूछा, जो स्वयं भी असमंजस में था।
“जी हां, मैं हूं,” सत्य ने आह भरी। “मुझे लगता है जरासंध को पता है।”
कर्ण ने फिर भी अपने आदमियों को चारों ओर संदिग्धों की तलाशी लेने का आदेश दिया, जिसे उन्होंने पूरा किया। और जब तलाशी समाप्त हो गई, तो उसके सैनिक अपने घोड़ों के साथ आए और बोले: "महाराज, मुझे कोई दिखाई नहीं दे रहा है।" "किसी को भी नहीं?"
कर्ण को सिर हिलाकर नकारात्मक प्रतिक्रिया मिली। "तो यह एक खाली चौकी है? खैर, चलो देखते हैं।"

देवी और सत्य ने सिर हिलाया और जंगल से होते हुए झाड़ियों को पार करते हुए आगे बढ़े और उस निगरानी मीनार में प्रवेश किया जो उनके चारों ओर की हरियाली से जर्जर हो चुकी थी।
जैसे ही वे अंदर दाखिल हुए, कर्ण ने देखा कि वह स्थान खाली था। और उसे लगा कि वह काफी समय से खाली ही था। उसे यह भी महसूस हुआ कि देवी की चौकस, संदेह भरी निगाह सत्य की ओर थी, जो शायद सोच रही थी कि सत्य उन्हें मूर्ख बना रहा है और उन्हें सीधे एक जाल में फंसा रहा है।
लेकिन कर्ण को बेहतर पता था। वह बूढ़ा आदमी ऐसा कभी नहीं करेगा।
“सामान की तलाश करो, लेकिन फाटकों की रक्षा करो। हमें हर समय सतर्क रहना होगा,” कर्ण ने अपने आदमियों को आदेश दिया, जबकि देवी आदेश के पालन के लिए वहीं रुक गई।
चलिए खोजते हैं।

उसने धनुष को ऊपर उठाए हुए ही दरवाजे खोले, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कमरा खाली है।
लेकिन वह जगह सचमुच खाली थी। उसके आदमी यह देखने के लिए गत्ते, जार और बक्से खंगाल रहे थे कि कहीं कोई बचा भी है या नहीं। लेकिन कोई नहीं मिला।
"यह एक वीरान शहर है," उसने सत्या से कहा, जिसने उसकी बात से सहमति जताई। कर्ण को लगा कि अनगिनत दरवाजे खोलने के बाद भी यह सब व्यर्थ ही था, तभी उसकी नज़र एक आंशिक रूप से खुले दरवाजे पर पड़ी। और उसके अंदर से नारंगी रंग की रोशनी निकली।
उसने दरवाजा खोला और धीरे-धीरे नीचे की ओर चला गया, धनुष पर तीर बंधा हुआ था और सत्य उसके पीछे तलवार लिए चल रहा था।
और उसने दीवारों पर लटके हुए जले हुए लट्ठे देखे, जिनसे जगह रोशन हो रही थी, और बड़े-बड़े पिंजरे देखे जिनके अंदर उसे कई परछाइयाँ दिखाई दे रही थीं।
कर्ण पास आया और उसने महसूस किया कि उन परछाइयों का चेहरा था और वे थके- हारे, बेहाल आदमी थे, जिनके हाथ पीछे बंधे हुए थे और मुंह पर पट्टी बंधी थी,

इसलिए वे भाग नहीं सकते थे या हिल नहीं सकते थे। वहां सैकड़ों पिंजरे थे और हर पिंजरे में कई आदमी बंद थे।
सत्य ने कहा, “उन्होंने उन्हें यहीं रखा। यहीं छोड़ दिया।” “लेकिन क्यों?” "चलो इन्हें खोलकर पूछते हैं।"
कर्ण एक पिंजरे के पास गया और धातु के ताले को तोड़कर उसे खोला, जिससे अंदर फंसे लोग बाहर निकल आए। वे तुरंत बाहर भागे। कर्ण ने उनके मुंह पर बंधी पट्टी हटा दी।
"तुम्हारे साथ क्या हुआ?" उसने पूछा, जबकि सत्या अन्य पिंजरों को खोल रहा था और ऊपर से आदमियों को वहां आने और आगे मदद करने का आदेश दे रहा था। “धन्यवाद महोदय। वे दो दिन पहले आए थे और हम सभी के मुंह पर पट्टी बांध दी थी। बस इतना ही। हमें इससे ज्यादा कुछ नहीं पता।”
“क्या तुम्हें पता है कि वे सब तुम्हें यहाँ भूखा मरने के लिए छोड़कर चले गए?” कर्ण ने पूछा।
“कल हमने ऊपर से कदमों की आहट सुनी थी। वे अभी भी लकड़ी लाद रहे थे और अपना काम कर रहे थे। लेकिन उन्होंने हमें कई दिनों तक खाना नहीं दिया और…” वह आदमी कमजोर लग रहा था।
कर्ण ने उसकी बांह पर थपथपाते हुए कहा, "अब तुम्हारा ख्याल रखा जाएगा।" उसने सैकड़ों लोगों को रिहा होते और एक-दूसरे को गले लगाते देखा, और वह मुस्कुराए बिना नहीं रह सका।
इन्हें इस हालत में क्यों छोड़ दें?
क्या यही योजना थी? उन्हें भूखा रखकर बीमार करना, ताकि मैं उनका इस्तेमाल न कर सकूँ?
लेकिन फिर भी कई लोग काफी फिट दिखने में कामयाब रहे।
शायद मुझे जवाब न मिले।

और वह गलत था। बिलकुल गलत।
जैसे ही वह सीढ़ियों से ऊपर आया, देवी ने उसके पीछे पुरुषों का एक झुंड देखा, जो चूहों की तरह भागते हुए एक विशाल घेरे में इकट्ठा हो रहे थे। वे सभी खुश थे और देवी भी उन्हें देखकर प्रसन्न हो उठी।

“यह एक आसान मिशन था,” उसने कर्ण से कहा।
जो संतुष्ट नहीं थे।
“शायद,” उसने आह भरी। “लेकिन हमें अब निकलना चाहिए। इंतज़ार नहीं करना चाहिए…”
और उसकी निगाहें अंधेरे, तारों से रहित आकाश की ओर उठीं, जिसमें प्रकाश की एक किरण थी, जो बढ़ती जा रही थी।
और यह बढ़ता गया। और भी बढ़ता गया।
जब तक वह उसके करीब नहीं आ गया, जितना उसने सोचा था उससे कहीं ज्यादा करीब, तब तक उसे एहसास नहीं हुआ कि वह आग का एक बड़ा गोला था...
वह उनकी ओर बढ़ रहा था!

45

मुझे पहले ही अंदाजा लगा लेना चाहिए था, यह इतना आसान नहीं होगा।
कर्ण ने तुरंत देवी को एक तरफ धकेल दिया और खुद को और आगे धकेलते हुए कोने की ओर दौड़ पड़ा, तभी आग का गोला जमीन पर गिरा और इस प्रक्रिया में उसके कुछ साथी मारे गए। कुछ देर तक वह कुछ समझ नहीं पा रहा था और न ही बोल पा रहा था, उसका दिमाग अलग-अलग दिशाओं में भटक रहा था और उसकी धड़कन बहुत तेज़ हो गई थी।
क्या हो रहा है?
“पीछे हटो, पीछे हटो,” उसने देवी को अपने आदमियों को पुकारते हुए सुना… और फिर आग का एक और गोला आया। सीधा ज़मीन पर। वे रथ के पहिये से तीन गुना बड़े थे और उनसे अजीबोगरीब चीज़ों की गंध आ रही थी।
उसने गहरी सांसें लेते हुए आह भरी और भागने की तैयारी करने लगा, जबकि उसके आदमी उन गुलामों को लेकर निकल पड़े जिन्हें उन्होंने अभी-अभी बचाया था। और फिर एक और।
जब तक उसने यह नहीं देखा कि पहरेदार मीनार का पिछला द्वार बंद था और एकमात्र द्वार जो खुला था, उस पर सैकड़ों लोगों का एक समूह था, जिनके काले कवच पर अर्धचंद्र का चिन्ह बना हुआ था और वे उनकी ओर बढ़ रहे थे।
और ठीक सामने, उसने उस आदमी को देखा जिसका जिक्र देवी ने किया था।
लोहे का मुखौटा पहने वह आदमी। वह लंबा-लंबा खड़ा था और अपनी उंगली के एक जोरदार इशारे से उसने अपने आदमियों को तीर चलाने का आदेश दिया।
कर्ण ने अपने आदमियों से चिल्लाकर कहा, "ढालें निकालो!"
जैसे ही तीरों की बौछार उन पर बरसने लगी और उनकी लोहे की ढालों को भेदने लगी, उसने अपनी ढाल निकाली और उसे आकाश में उठा लिया। वह भागने लगा और सत्या की ओर चलने लगा, जो भी ऐसा ही कर रहा था, जबकि उसके आदमियों के शव चारों ओर पड़े थे और निहत्थे गुलाम अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भाग रहे थे।

“तुम्हें पिछला दरवाजा खोलने का कोई रास्ता ढूंढना होगा,” कर्ण ने सत्य को आदेश दिया।
लेकिन कैसे? अरे यार, ये तो लोहे का गेट है!
कर्ण यह जानता था। वह भयभीत था, तभी उसे अपने लोगों पर तीरों के बरसने की तेज आवाज सुनाई दी, जिनके गले छलनी हो रहे थे। लोहे का मुखौटा पहने वह व्यक्ति करीब आ रहा था, और वह पहुँचने में समय ले रहा था, मानो उसे पता हो कि कर्ण को पकड़ते ही वह उसे मार डालेगा।
“इसका इस्तेमाल करो…” उसने पास आते आग के गोलों की ओर देखा। “इन्हें पलट दो।”
"पलटने का क्या मतलब है?"
कर्ण ने कहा, “आसपास पड़े कपड़े के पन्ने उठाओ और उसे लुढ़काओ। यह रास्ता ढलान जैसा है और धक्का देने पर यह लुढ़ककर पिछले दरवाजे को तोड़ देगा।” सत्या को यह बात समझ आ गई। "यह तो बहुत अच्छा है।"
मुझे पता है। मैं उन्हें रोकने की कोशिश करूंगा, जबकि आप कोशिश करें। "शुभकामनाएं, लड़के।"
और सत्य व्यस्त हो गया, उसने दासों को कर्ण की योजना में उसकी मदद करने का आदेश दिया।
कर्ण ने अब लोहे का मुखौटा पहने हुए व्यक्ति पर ध्यान केंद्रित किया, और उसके सैनिक जो करीब आ रहे थे, देवी और उसके आदमियों के साथ युद्ध में उलझ गए। चारों ओर आग और क्रोध का माहौल था, और एक जोरदार आवाज सुनाई दे रही थी... कर्ण ने लंबे बाण निकाले और उन आदमियों पर निशाना साधा। वह फुर्तीला था और तेजी से आगे बढ़ते हुए उसने एक के बाद एक आदमी को मार गिराया।
वह लगभग अच्छी दौड़ लगा ही रहा था कि तभी उसे किसी ने हाथ से पकड़ लिया... और उसने अपनी गर्दन पर दबाव महसूस किया, जैसे उसे गले से पकड़कर हवा में लटका दिया गया हो, तब उसे एहसास हुआ कि उसे किसी और ने नहीं बल्कि...
लोहे का मुखौटा पहने हुए आदमी।
लोहे का मुखौटा पहने वह व्यक्ति अजीब और भावहीन था। उसने कर्ण को एक पल के लिए मजे से देखा, फिर उसे जमीन पर पटक दिया गया। चेहरे पर मुक्का मारते हुए उसने अपना हाथ हिलाया...
कर्ण ने सही समय पर तीर निकाला और बिना समय बर्बाद किए उस आदमी की आंख में वार कर दिया। धातु के मुखौटे के नीचे से वह आदमी दर्द से कराह उठा और पीछे

हट गया। जैसे ही वह कोने में लड़खड़ाकर गिरा, उसे अपने कवच पर तीरों की बौछार महसूस हुई, जो वहीं अटक गया, लेकिन उसे कोई चोट नहीं आई। एक और सैनिक प्रकट हुआ और उसे तलवार से मारने ही वाला था कि कर्ण ने उसके पैरों के बीच लात मारी और झट से तरकश से दूसरा तीर निकालकर उसके चेहरे पर मार दिया। कर्ण उठ खड़ा हुआ, यह सोचकर कि उसका बुरा सपना खत्म हो गया है, तभी उसने देखा कि सत्या ने अग्नि-गोलों से पिछले दरवाजों को तोड़ दिया है। दास सत्या के पीछे भाग रहे थे... और कर्ण ने मुड़कर देखा तो देवी अपने आदमियों के साथ अपने लंबे भाले से युद्ध कर रही थी।
पीछे हटो! चले जाओ!
देवी ने सिर हिलाया, तभी उनकी नज़र लोहे के मुखौटे वाले उस व्यक्ति पर पड़ी जो अभी भी अपनी घायल आँख से उबर रहा था। गुस्से से उनका चेहरा लाल हो गया। कर्ण के आदेशों को अनसुना करते हुए, अपने बाकी साथियों की तरह, वह आगे बढ़ीं और लोहे के मुखौटे वाले उस व्यक्ति के सिर और चेहरे पर भाले से बार-बार वार करने लगीं, जब तक कि उसने अपनी कुल्हाड़ी निकालकर एक झटके में उनकी कमर पर वार नहीं कर दिया।
“तू कमीना जानवर!” वह चिल्लाई।
वह पीछे गिर पड़ी और कराह उठी।
कर्ण चिल्लाया, उसने कई तीर निकाले और तेजी से अपने रास्ते में आने वाले सैनिकों पर और लोहे के मुखौटे वाले उस व्यक्ति पर तीर चलाने लगा, जो देवी को बिना किसी भावना के ऐसे उठा रहा था जैसे कोई खिलौना उठा रहा हो।
“उसे छोड़ दो!” कर्ण ने एक और तीर चलाया, और वह निशाने पर लगा, लोहे का मुखौटा पहने हुए आदमी की नाक पर जा लगा…
वह पीछे की ओर गिर गया और जमीन पर जा गिरा।
कर्ण ने खून से लथपथ देवी को पकड़ लिया और पूछा, "क्या आप ऐसा कर सकती हैं? क्या आप चल पाएंगी?"
वह एक पल के लिए पीली पड़ गई थी लेकिन फिर उसने सिर हिलाया।
तो चलिए चलते हैं।

देवी के धड़ से बुरी तरह खून बह रहा था और वह अपने घाव को पकड़े हुए थी, उम्मीद कर रही थी कि यह और खराब न हो जाए। उसके पास अपना हथियार, अपना भाला उठाने की भी ताकत नहीं थी। कर्ण उसकी मदद कर रहा था। वह उसे इतना दयालु देखकर हैरान थी, लेकिन उसने उसकी जगह ले ली, उसे छोटा महसूस कराया और... जैसे ही वे लड़खड़ाते हुए पिछले द्वार की ओर बढ़े, जहाँ उनके घोड़े इंतजार कर रहे थे, उसने पीछे मुड़कर देखा तो लोहे का मुखौटा पहने वह आदमी अपनी नाक से तीर निकाल रहा था और भयावह रूप से चुपचाप खड़ा होकर उनकी ओर बढ़ रहा था।
इसके अलावा, एक धनुर्धारी आ चुका था और कर्ण के सिर पर निशाना साध रहा था।
वह उसे चेतावनी देना चाहती थी। उसे ऐसा करना ही चाहिए था। यही सही काम था।
लेकिन अगर उसकी मौत हो जाती है, तो मुझे फायदा होगा।
मनवी ने उसे जो बताया था, वह बात उसके मन में आ गई।
उसे दुर्घटना हो सकती है।
तीरंदाज का निशाना सिर पर था।
और देवी ने सोचने में बहुत समय लगा दिया, जबकि उसने उसे बचाया था, जबकि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था। जबकि वह उसके साथ अच्छा व्यवहार कर रहा था... "तीर! बचो!" उसने सत्या को जोर से चिल्लाते हुए सुना।
और जैसे ही तीर छोड़ा गया, कर्ण ने निर्देशानुसार उससे बच निकला।
लेकिन उसे इस बात का एहसास नहीं था कि देवी को पहले से ही इसका अंदाजा था। “आओ,” उसने उसे घोड़े पर बिठाया, जबकि वह खुद दूसरे घोड़े पर बैठ गया। उनके अधिकांश सैनिक भाग निकले थे, और जो नहीं भाग सके, उन्हें जमीन पर पटक कर मार डाला गया था—वे मृत थे।
देवी लोहे का मुखौटा पहने उस व्यक्ति की ओर मुड़ी, जो अब उनके करीब आ चुका था।
“क्या वह मरता भी नहीं?” कर्ण ने पूछा। “क्या वह इंसान भी है?”
लोहे का मुखौटा पहने उस आदमी के हाथ में कुल्हाड़ी थी और उसके आदमी पीछे छूट गए थे, लेकिन कर्ण ने और तीर चलाए, और उनके घोड़े दौड़ पड़े। तीरों से उस आदमी को चोट तो नहीं लगी, लेकिन वे उसे इतना पीछे धकेलने के लिए काफी थे कि वह पहले की तरह एक बिंदु में बदल गया।
मैं उसे मार नहीं सका।
उसने अपनी भावनाओं को खुद पर हावी होने दिया, जो कि सामान्य बात नहीं थी, लेकिन उसने ऐसा किया। लेकिन उसे इस बात का पछतावा नहीं था। उसे इस बात का

पछतावा था कि वह सिर्फ इसलिए एक आदमी को मरवाने के लिए तैयार थी क्योंकि उसने उसकी जगह ले ली थी।
उसे अपराधबोध और पछतावा महसूस हुआ।
मैं ऐसा कैसे सोच सकता हूँ?
लेकिन फिर, उसने उसकी जगह ले ली। उसने अपने खून से लथपथ, घाव से बहते खून से सने हाथों को देखा और घोड़े पर आगे झुककर अपनी आँखें बंद कर लीं।
लेकिन अगर उनकी मृत्यु हो जाती, तो मैं उनकी जगह ले लेता।
क्या यह अच्छी बात होगी?

46

कर्ण ने विश्राम नहीं किया था, लेकिन उसके सैनिकों ने किया था।
आज रात उन्हें बहुत नुकसान हुआ था और सुबह हो चुकी थी। पानी और खाना परोसा गया। गुलामों को पहनने के लिए अलग कपड़े दिए गए और उन्हें अलाव के सामने बैठाया गया।
देवी की देखभाल भीक्षक कर रहा था, जो उसके कुल्हाड़ी के घाव पर टांके लगा रहा था।
And Karna…
उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे वे सालों से सोए ही न हों। वे अपने कमरे में जाकर पलंग पर लेट जाना चाहते थे, लेकिन उन्हें एक ज़रूरी बात पर चर्चा करनी थी। वे किले के मुख्य हॉल में थे, जो एक विशाल और खुला स्थान था, जहाँ एक हज़ार लोग आराम से बैठ सकते थे। खुली खिड़कियों से सूरज की रोशनी अंदर आ रही थी, और उन्हें खाना और शराब भी परोसी जा रही थी।
सूरज निकल चुका था और ज्यादातर लोग सो रहे थे। उसने उन्हें जगाते हुए कहा, “मुझे उम्मीद है कि आप सबने रात की नींद पूरी कर ली होगी। एक नया दिन शुरू हो गया है।” वहाँ सैकड़ों आदमी थे, सभी बुरी तरह पिटे हुए, ज़मीन पर बैठे थे।
सत्या वहां मौजूद था, और वह चिड़चिड़ा महसूस कर रहा था, अपने सामान्य स्वभाव से बिल्कुल अलग था, और कर्ण को यह महसूस हुए बिना नहीं रह सका कि उसे इस समय उस तरह के शुष्क हास्य की जरूरत है, जो उसे नहीं मिल रहा था। “मुझे कुछ कहना है,” कर्ण ने कहा, और सभी सैनिकों ने सिर हिलाया। वे सब या तो भौंहें चढ़ा रहे थे या मुस्कुरा रहे थे। यह उनके मिजाज पर निर्भर था। “आप सबकी रक्षा के लिए हमने कुछ सैनिक खो दिए। हमें पता चला था कि जरासंध के सैनिकों ने आपके साथ अन्याय किया था।”
और समूह के अधिकांश पुरुषों ने उसका नाम सुनते ही जमीन पर थूक दिया।
“वह दुष्ट है!” किसी ने चिल्लाकर कहा।

“मुझे पूरा यकीन है। वह जरूर होगा,” कर्ण ने कहा। “मुझे नहीं पता कि आप मुझे जानते हैं या नहीं, लेकिन मैं अंग का नया राजा हूँ। मुझे अभी-अभी ताज पहनाया गया है, लेकिन मैं इसे नहीं पहनता क्योंकि हम दुष्टों के खिलाफ जीत हासिल नहीं कर पाए हैं। और इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए मैं यहाँ आपका समर्थन मांगने आया हूँ।”
वे सब अनिश्चित थे। कुछ डरे हुए भी थे। और उनका डरना जायज़ था। कर्ण ने कल जो देखा था, वह अराजक हिंसा थी। जरासंध ने उन्हें छल में फंसाया था। लेकिन उसने उन्हें कम आंका और वे भाग निकलने में कामयाब रहे। और उसका हथियार... वह लोहे का मुखौटा पहने आदमी, अंधकार का अजेय प्राणी, उसी का एक संकर रूप था। फिर भी, कर्ण ने मदद मांगने का साहस दिखाया।
“आपकी संख्या सैकड़ों में है और मुझे आपकी मदद की जरूरत होगी। हमारे पास सैनिकों की कमी है। हमारे पास सैनिक नहीं हैं।”
फिर सन्नाटा छा गया। उनमें से कोई कुछ नहीं बोल रहा था। उसने अपनी निगाहें नीचे कर लीं, तभी एक व्यक्ति खड़ा हो गया।
"महाराज, मैं उनमें से कम से कम कुछ कमीनों की जमकर पिटाई करना चाहूंगा।" कर्ण मुस्कुराया। "धन्यवाद।"
"आपने मेरी जान बचाई और मैं आपका ऋणी हूँ, महाराज।"
और फिर एक और गुलाब।
जब वे उठ रहे थे, कर्ण गिनती कर रहा था और उसे एहसास हुआ कि कई दास उसके साथ जुड़ गए हैं। अंत में, उसके पास पर्याप्त संख्या में लोग थे, लेकिन कई लोग शामिल नहीं हुए। “जिन्होंने स्वेच्छा से भाग लिया है, उन्हें अच्छा खासा भुगतान और भोजन दिया जाएगा और उन्हें उनके परिवारों के पास भेज दिया जाएगा।”
“हमारा कोई परिवार नहीं है। हमारा एकमात्र परिवार हमारी मिट्टी है।”
“तो मेरा मानना है कि तुम्हें इसे चूमना चाहिए, इसकी पूजा करनी चाहिए,” कर्ण मुस्कुराया।
वे सब मुस्कुरा उठे।
कर्ण ने उन लोगों की ओर देखा जो शामिल होने को तैयार नहीं थे, और उनकी संख्या भी काफी अधिक थी। “मैं जानता हूँ कि मेरे लिए लड़ना आप सबके लिए एक और तरह की गुलामी हो सकती है, लेकिन ऐसा नहीं है। यह सम्मान की बात है।
हथकड़ियों के बदले आपको तलवारें और ढालें मिलेंगी। गालियों के बदले आपको

अंगा के उन गरीब किसानों और ग्रामीणों से सम्मान मिलेगा जिन्होंने हमारे यहाँ रहने के लिए दिन-रात मेहनत करके कर चुकाया। अगर हम उनके लिए नहीं लड़ेंगे, तो हम अपने दुश्मनों से भी बदतर होंगे। लेकिन मैं आपकी दुर्दशा समझता हूँ।”
किसी और ने जवाब नहीं दिया। वे अब भी अपनी बात पर अड़े हुए थे।
कर्ण ने सिर हिलाया। “आप सभी का धन्यवाद।” और जो लोग शामिल हुए, उन्होंने उन्हें प्रणाम किया। कर्ण के जाने के बाद सत्य उनके पीछे-पीछे चले गए। सत्य ने पूछा, “जो लोग भर्ती नहीं हुए, उनका क्या करें? उनकी संख्या काफी ज्यादा है।”
“हां, वे हैं,” कर्ण ने आह भरी। “मेरे पास एक विचार है।”
"और वह यह है कि?"
वे उन आम हॉलों से बहुत दूर थे जो एक बार फिर से गुलजार हो गए थे और अब लोग एक-दूसरे से बातें कर रहे थे।
“मैं चाहता हूं कि तुम उन्हें मना लो,” कर्ण ने मुस्कुराते हुए कहा।
और आप मुझसे यह कैसे करवाना चाहते हैं?
“खैर, हम उन्हें जबरदस्ती अपने साथ शामिल नहीं कर सकते। लेकिन हम चाल चल सकते हैं,” कर्ण ने कंधे उचकाते हुए अपनी धूर्तता दिखाई। “उन्हें आज़ाद कर दो, और हमारे आदमियों से उनका अपहरण करवाकर उन्हें कहीं ले जाओ, जब तक कि हमारे आदमियों का दूसरा दल जाकर उन्हें बचा न ले। तब वे एहसानमंद महसूस करेंगे और खुशी-खुशी हमारे साथ शामिल हो जाएंगे।”
सत्या ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। "क्या तुम सच में उन्हें बेवकूफ बनाना चाहते हो?"
कर्ण ने कहा, "हमें सबका साथ चाहिए। और इसके लिए मैं कुछ भी करने को तैयार हूं।"
सत्या खिलखिलाकर हँसा। "वाह!"
"हाँ।"
काश तुम्हारे पिता भी ऐसे होते।
"आपका क्या मतलब है?"
“चतुर। तुम बड़े चालाक हो, जबकि तुम्हारे पिता हमेशा ईमानदार थे, नियमों का पालन करने वाले, कभी न झुकने वाले व्यक्ति थे। आशा है तुम युद्ध जीतोगे।”

कर्ण ने बूढ़े व्यक्ति को देखकर मुस्कुराया। गुरु सत्य एक अद्वितीय व्यक्ति थे और उन्होंने उसे हमेशा से सम्माननीय रहना सिखाया था, लेकिन कर्ण इतना सफ़र कर चुका था कि वह जानता था कि सम्माननीय होना कभी-कभी जानलेवा भी हो सकता है। आप अच्छे हो सकते हैं, लेकिन दुनिया के साथ कदम मिलाकर चलने के लिए आपको बुरे काम भी करने पड़ सकते हैं।
सूरज निकल चुका था और उसे जाना ही था। उसने अभी तक सूर्यदेव के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित नहीं की थी और वहीं से उसे अपनी शक्ति और ऊर्जा प्राप्त होती थी।
उन्होंने कहा, "मुझे उम्मीद है कि आपके शब्द भविष्य की भविष्यवाणी साबित होंगे। मुझे पूरी उम्मीद है।"

देवी की नींद मानवी के चुंबनों से खुली, और तभी उसके सपने एक भयानक सपने में बदल गए। ज़ख्मी शरीर, टांके लगे धड़ और आयुर्वेदिक दवाइयों से सने चेहरे के साथ, उसने अपनी रुकी हुई साँस को फुफकारा। कुछ देर तक वह अपनी चारपाई पर लेटी रही, हताश होकर खिड़की की ओर देखती रही जहाँ से रोशनी आ रही थी, तभी उसे दस्तक सुनाई दी और उसने अपने सबसे नापसंद व्यक्ति को देखा। कर्ण।
वह वहाँ हाथ जोड़े खड़ा था, मासूमियत से भरा हुआ; यहाँ तक कि चिंतित भी। उसने उसके बारे में सोचा था, उसे न मारने या इसे एक दुर्घटना दिखाने के बारे में। वह उसे एक मौका दे सकती थी, खासकर इसलिए क्योंकि वह उसकी ऋणी थी।
लेकिन पिछली बार वह चुप हो गई थी, और उसकी ज़बान कुछ भी कहने से मजबूर हो गई थी। यह एक अजीब घटना थी। उसे अपराधबोध हो रहा था, और अब वह जानती थी कि वह ऐसा दोबारा नहीं करेगी।
"आप कैसे हैं?" उसने पूछा, और वह देखकर ऐसा नहीं लग रहा था कि वह किसी युद्ध से आया है।
“ठीक है,” उसने धीमी आवाज़ में कहा।
“तो फिर ठीक नहीं,” कर्ण ने आह भरी। “मैं तुमसे किसी बात पर चर्चा करना चाहता था।”
"और मुझे लगा कि तुम चिंतित हो," उसने व्यंग्यपूर्वक जवाब दिया।

उसने मुस्कुराया। वैसी मुस्कान जिसे वह नापसंद करती थी। उसका रवैया बिगड़े हुए लड़के जैसा था, फिर भी कभी-कभी वह ज़िम्मेदार भी साबित होता था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसके बारे में क्या सोचे—उसे पसंद करे, नफ़रत करे या सम्मान करे।
“मैं हूँ। और इसीलिए मैं यहाँ हूँ।”
"क्या यह व्याख्यान है?"
“हाँ,” उसने सीधे-सादे अंदाज़ में कहा, और पास आकर उसके पालने के बगल में बैठ गया। “पाँच।”
"पाँच?"
"हाँ।"
“पांच क्या?”
“पांच आदमी मारे गए,” उसने कहना शुरू किया, “क्योंकि हम पीछे नहीं हटे, क्योंकि तुमने अपने निजी प्रतिशोध के चलते उस लोहे के मुखौटे वाले आदमी पर हमला कर दिया था। तुम्हारी लापरवाही के कारण मैंने पांच आदमियों को खो दिया।”
देवी ने अपने जबड़े भींच लिए। तो बस यही था।
"क्या तुम मुझे इस बात का बुरा महसूस कराना चाहते हो?" उसने उससे नज़रें नहीं मिलाईं।
मैं चाहता हूं कि आप जिम्मेदारी महसूस करें।
वह गुर्राई। “महाराज, आप तो बड़े ही अजीब हैं। अभी-अभी यहाँ आए हैं और मुझे अपने सैनिकों की देखभाल के बारे में उपदेश दे रहे हैं। मैं विजया की मृत्यु के बाद से ही ऐसा कर रही हूँ।”
“मुझे पता है,” उसने सिर हिलाते हुए कहा। “आपके पति। दिल का दौरा पड़ने के बाद आपने कमान संभाली, यह वाकई बहुत बहादुरी का काम है।”
"हाँ वह था।"
“मुझे पता है, वो काफी बूढ़े थे,” कर्ण ने सिर हिलाते हुए कहा। “लेकिन जहाँ तक मैंने सुना है, उन्हें दिल की कोई बीमारी नहीं थी।” और उसने देवी की ओर तीखी निगाहों से देखते हुए कहा, “कोई भी सोच सकता है कि उनके साथ क्या हुआ होगा, लेकिन शायद किले के अनुभवी लोग कुछ स्पष्टीकरण दे सकें।”
"तुम्हें लगता है कि मैंने अपने पति की हत्या की है?" उसने दांत भींचते हुए कहा।

“अगर आपने ऐसा किया भी होता, तो कोई फर्क नहीं पड़ता,” उन्होंने कंधे उचकाते हुए कहा। “वह एक क्रूर आदमी था। मैं जानता हूँ क्योंकि जब उसने अंगा पर कब्ज़ा किया था तब मैं बच्चा था और वह छोटी बच्चियों को अपने कमरे में ले जाता था और उसके बाद वे कभी सड़कों पर वापस नहीं आती थीं। आप उन कुछ लोगों में से हैं जिन्होंने उसके हमलों का सामना किया और इसके लिए मैं आपका बहुत सम्मान करता हूँ।”
तो महाराज, अपना सम्मान अपने पास ही रखें।
उसने अपने गुस्से पर काबू पा लिया।
“पर मैं जानता हूँ कि तुम भावुक इंसान हो। मनवी तुम्हारे शासन की एक अहम कड़ी थी और उसकी मौत दुखद है। लेकिन तुम…और तुम ऐसा नहीं कर सकतीं…” उसने सीधे उसकी ओर देखा, उसकी आवाज़ थोड़ी और दृढ़ थी, “…अपने निजी अभियान के लिए मेरे आदमियों की जान जोखिम में नहीं डालोगी। समझी?”
देवी का मन कर रहा था कि वह चीख-चिल्लाकर उसका चेहरा नोच डाले। लेकिन वह चुप रही। और उसने जबरदस्ती मुस्कुराने की कोशिश की, एक बेमन की मुस्कान। कर्ण ने मुस्कुराकर जवाब दिया। यह बनावटी मुस्कान थी; उसे इस बात का ज़रा भी अफ़सोस नहीं था कि उसने अभी-अभी अपने सेनापति को धमकी दी थी।
और फिर वह चला गया।
देवी जानती थी कि उसे उसका ऋणी होना चाहिए।
लेकिन ये उसका नुकसान है, उसने मुझे बचाया। अब मैं ये सुनिश्चित करूँगी कि मेरे साथ भी वही हादसा हो, जैसा विजया के साथ हुआ था।

47

जरासंध इस संसार में बहुत से लोगों से घृणा करता था।
लेकिन वह वृष्णि से जितनी नफरत करता था, उतनी किसी और से नहीं करता था। चंपा नदी के तट की ओर यात्रा करते समय वे हर रात डेरा डालते थे। चूंकि समूह बड़ा था, इसलिए उन्हें चांद निकलने के समय ही डेरा डालना पड़ता था, और फिर भेड़ का मांस भूनकर पेय पदार्थ परोसे जाते थे। जरा जानता था कि सैनिकों के साथ यात्रा करना और युद्ध शिविर स्थापित करना अपने आप में एक चुनौती है और इसके लिए बहुत धन और समय की आवश्यकता होती है—और उसके पास इतना धन नहीं था।
और इसलिए, जब वह अपने एक शिविर में अपने कमांडरों और कप्तानों के साथ इस बात पर रणनीति बनाने में व्यस्त था कि वे दुश्मन से कैसे लड़ेंगे, तभी जारा से मिलने वह आई।
वह शिविर के प्रवेश द्वार पर आई थी और उसने एक लंबा गाउन पहना हुआ था, जिसके ऊपर उसने अपने बैंगनी होंठों और गहरे लाल रंग की आंखों को छिपाने के लिए एक हुड डाल रखा था।
जब उसने अपना नाम वृष्णि बताया, तो पहरेदारों ने जरा से पूछा, जिसे तुरंत ही एक ठंडी कंपकंपी महसूस हुई जो उसकी रीढ़ की हड्डी में दौड़ गई।
उसे कैसे पता चला?
उसने उसे अपने तम्बू की ओर आने की अनुमति दी और अपने आदमियों को तितर-बितर कर दिया ताकि वहाँ केवल वह और वह ही रह सकें।
उसने हुड हटाया और उसने एक खूबसूरत महिला को मोहक मुस्कान के साथ देखा, लेकिन वह जानता था कि वह एक क्रूर महिला है। उसके नाखून लंबे थे और उन पर लाल रंग लगा हुआ था।
“आप कैसे हैं?” उसने पूछा।
“तुम यहाँ क्या कर रहे हो?” जारा ने रूखेपन से पूछा। उसके बाल बिखरे हुए थे और दाढ़ी सामान्य से अधिक लंबी थी।
“मैंने अपने बेटे की गुहार सुनी,” उसने तीखे स्वर में कहा। “वह कहाँ है?”

“आजकल वह जो कुछ भी कर रहा है, उसमें वह पूरी तरह असफल रहा है,” जारा ने कहा। “वह मेरे दुश्मनों को पकड़ने में असमर्थ है और खुद को मूर्ख साबित कर रहा है।”
"शायद उसे अपने जैसा ही कोई मिल गया।"
“कर्ण? छी! मुझे संदेह है,” जरा ने कंधे उचकाते हुए कहा।
"मुझे मेरे बेटे के पास ले चलो," उसकी आवाज़ में निर्ममता थी।
“मैं राजा हूँ। तुम मुझे आदेश नहीं दे सकते,” जारा ने कहा।
"मेरी वजह से ही वो आज जो कुछ भी है, वो है।"
“तुमने उसे एक दरिंदा बना दिया है। वह हमेशा से ऐसा नहीं था।”
वह एक मेज के चारों ओर घूम रही थी जिस पर अंगूर, सेब और कुछ आम रखे थे। वहाँ एक प्याला और सोमा का एक जार भी था। उसने अपनी उंगली उसमें डुबोकर चखा। “सचमुच, तुम सोमा के व्यसन में डूब गए हो,” वह कुछ देर रुकी, सोच-विचार करते हुए बोली। “जानते हो, यह एपेड्रा सिनिका नामक पौधे से बनता है जो विदेशों में और यहाँ से उत्तर में भी उगता है…या जिसे हम आम तौर पर सोमलता पौधा कहते हैं। इस पेय को निकाला जाता है और कुछ लोग कहते हैं कि अगर इसे पवित्र हृदय से पिया जाए तो अमरता प्राप्त हो सकती है। तुम जो यहाँ पी रहे हो वह इस पौधे का मिलावटी रूप है क्योंकि भारतवासी हर प्राकृतिक चीज़ में मिलावट करने की प्रवृत्ति रखते हैं।”
और वह ऐसा इसलिए कहती थी क्योंकि वह एक विदेशी थी।
“क्या तुम मुझे यहाँ सबक देने आई हो?” जरा ने पूछा। “सोमा के इतिहास के बारे में?” वह जानता था कि उसे सोमा का अच्छा ज्ञान था। दरअसल, वह सोमा की अभ्यासी और विज्ञान की ज्ञाता थी, जिसे अक्सर स्थानीय लोग डायन समझते थे। वह जानती थी कि सोमा में क्या मिलाना चाहिए और क्या नहीं।
“मैं अपने बेटे की मदद करने आई हूँ,” वृष्णि ने दांत भींचते हुए कहा। “उसका एक आदमी मुझसे मिलने आया था।”
“उसके आदमी? वे मेरे आदमी हैं।”
वह मुस्कुराई। “जरा, उसके कार्यों और उसके अनुयायियों पर तुम्हारा कोई नियंत्रण नहीं है। वह अपनी ही दुनिया का आदमी है। वह तुम्हारी सेवा केवल इसलिए करता है क्योंकि वह तुम्हारी तरह कूटनीतिज्ञ नहीं है। यही बात तुम दोनों को हराना बेहद मुश्किल बनाती है। लेकिन मुझे लगता है कि यह कर्ण नाम का लड़का तुम्हारी योजना को बिगाड़ रहा है।”

जरा उसे गाली देना चाहता था, पर उसने खुद को रोक लिया। क्योंकि कुछ साल पहले, जब काल आज की तरह इतना शक्तिशाली नहीं था, तब वह एक बहुत कमजोर बच्चा था और जरा ने बड़ी मुश्किल से वृष्णि को पाया जो खुद भी युवा थी। उसने उसका इलाज किया और उसे एक पेय पिलाया, जिससे वह अजेय, ऊर्जावान हो गया और उसका दर्द कम हो गया। वह किसी भी चोट से अप्रभावित हो गया और वह सबसे बड़ा और चौड़ा हो गया। वह एक योद्धा बन गया। लेकिन यह देखकर जरा ने उसी पेय का प्रयोग दूसरों पर किया और उस पर कोई असर नहीं हुआ। वे पागल हो गए और उन्होंने या तो खुद को मार डाला या दूसरों को मार डाला। इसीलिए वृष्णि हमेशा काल के करीब रहती थी। वह उसका एकमात्र सफल प्रयोग था। शायद यह उसके रक्त या उसके शरीर की संरचना के कारण था... लेकिन पेय पीने के बाद वह अधिक लचीला और मजबूत हो गया।
“मैं तुम्हें उसके पास ले चलूंगा,” उसने कहा।

काल एक दूसरे तंबू में, एक चट्टान पर लेटा हुआ था। नग्न अवस्था में। उसका पूरा शरीर दिखाई दे रहा था, सिवाय उसके चेहरे के, जिस पर उसने अब भी लोहे का मुखौटा पहन रखा था। उसके पूरे शरीर पर घाव और चोट के निशान थे।
वह बेहोश था।
वृष्णि अंदर आई और चिंता और फिक्र से भरी हुई काल के घावों से भरे शरीर को छूने लगी, जबकि जरा कोने में खड़ी रही। फिर उसने ऊपर देखा।
"पिछली बार वह बुरी तरह घायल हो गया था," उसने टिप्पणी की।
"मुझे पता है।"
उसने आह भरी। फिर अपने बैग से उसने शीशियाँ और एक गिलास निकाला और कुछ चीज़ें मिलाने लगी।
"मैं भूल गया कि तुम क्या जोड़ती हो," जारा ने लापरवाही से उसकी ओर बढ़ते हुए कहा, उसके हाथ उसकी पीठ पर थे।
“सोमा, कुछ परजीवी…” उसने मुस्कुराते हुए कहा, “…यह मौत और घातकता का मिश्रण है। तुम क्यों पूछ रहे हो?”
क्योंकि मैं यही सोच रहा था…

“इसके बारे में सोचना भी मत,” उसने उसे बीच में ही रोकते हुए तीखे स्वर में कहा। “तुम भले ही राजा हो, लेकिन तुम्हारा खून काल जैसा नहीं है। वह…” उसने अपने बेटे की ओर देखा। “वह खास है। तुम नहीं।”
जारा ने उसे कंधे से पकड़कर उसकी त्वचा पर मुट्ठियाँ भींचते हुए अपनी निगाहें सिकोड़ीं। वह तुरंत कमजोर और दब्बू महसूस करने लगी। “तुम्हें मुझसे इस तरह बात करने की इजाजत नहीं है। मैं तुम्हारा राजा हूँ।”
वृष्णि उसके पास आई और उसकी आँखों में देखा। “क्या सोमा की वजह से तुम इतने क्रोधित हो रहे हो? अब क्यों पी रहे हो? क्योंकि तुम फिर से कमजोर हो गए हो। अपनी पत्नी के बारे में सोच रहे हो। अपने भाई के बारे में,” वह हँसी। “क्या तुम्हें वह समय याद आ रहा है जब तुम्हारी माँ ने तुम्हें अपने भाई को मारने के लिए कहा था? और तुमने मार डाला था। सचमुच मार डाला था।”
जरा ने उसे धक्का देकर दूर कर दिया। उसने ये सब बातें वृष्णि को कमजोरी के क्षण में बता दी थीं, और उसे इसका पछतावा था। “तुम मेरे भाई के बारे में कुछ नहीं जानतीं। तुम्हें नहीं पता मैंने क्या किया।”
मुझे पता है कि तुमने उसकी बेरहमी से हत्या की और फिर अपनी माँ की भी हत्या कर दी।
“मैंने उसे मार डाला,” जारा ने कहा। “लेकिन उस तरह से नहीं जैसा तुम सोच रहे हो।” यह उसका अपराधबोध था। यह उसे फिर से सता रहा था। उसने कई ऐसे काम किए थे जिन पर संदेह था। उसने बच्चों और महिलाओं की हत्या की थी और परिवारों को तबाह कर दिया था। वह हर मायने में दुष्ट था, फिर भी उसके पास अपने सभी कामों का औचित्य था।
"ठीक वैसे ही जैसे तुमने अपनी पत्नी की हत्या की थी?"
उसे ये सब बातें उसे नहीं बतानी चाहिए थीं, लेकिन उसने उसे सम्मोहित कर लिया था। उसने उससे कहा था कि सम्मोहन के ज़रिए वह खुद को सुधार सकता है, लेकिन ये एक धूर्त चाल थी ताकि वह अपने सबसे गहरे अपराध और अपने भीतर के सत्य को कबूल कर ले।
जब तक जरा ने प्याला तैयार नहीं कर लिया, तब तक वह कुछ नहीं बोली। वह काल के पास गई और जब वह उसका मुखौटा उतार रही थी, तभी जरा ने उसका हाथ पकड़ लिया।
“मास्क को छूने की हिम्मत मत करना। किसी को भी उसे देखने की इजाजत नहीं है।
मुझे भी नहीं।”
“वह कैसे पिएगा?” उसने पूछा।

जरा ने काल के कंधे पर उंगली मारी और फिर उसके चेहरे पर थपथपाया। उसे एक कराहने की आवाज सुनाई दी।
"अपना मास्क ऊपर करो," जारा ने आदेश दिया।
और काल ने ऐसा ही किया, जब जरा ने उसे आधा चेहरा दिखाते हुए सोमा दिया।
उसने प्याला खाली होने तक पी लिया। कराहें सामान्य थीं, और अब वह आराम करेगा।
जरा ने उसे थपथपाया। “तुम ठीक हो जाओगे।” और फिर वह वृष्णि की ओर मुड़ा।
“अब यहाँ से चले जाओ।”
"मैं यहीं रहने का इरादा रखती हूँ," उसने शरारती मुस्कान के साथ कहा। “कमीने…” और जरा को अपने ऊपर काल के हाथ महसूस हुए, जिसने उसकी कलाई पकड़ ली थी। जरा ने देखा तो काल की आँखें उसे घूर रही थीं। उसकी नाक और बाकी चेहरा टूटा हुआ था, लेकिन उसकी आँखों में अभी भी हल्की सी चमक बाकी थी। “ठीक है,” जरा ने आह भरी। उसे काल की बात माननी ही थी, वरना वह उसका हुक्म नहीं मानता।
"आप रह।"
फिर उसने काल की ओर देखा, जो उसे घूर रहा था। “तुम और तुम्हारे जासूस अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रहे हो, यार। और मैं इससे तंग आ चुका हूँ। दो बार। तुम दो बार हार चुके हो। अब इसे मैं तुम्हारे लिए संभाल लेता हूँ।”
“क्या तुम्हारे पास कोई योजना है?” वृष्णि ने सहज भाव से पूछा।
"तुम्हें यह जानने की ज़रूरत नहीं है," जारा ने अपने लहजे में ज़हर घोलते हुए जवाब दिया।
लेकिन हां।
उन्होंने किया।
उसके पास एक योजना थी।

48

कर्ण ने उसका सपना देखा।
वह उसे अपने पास महसूस कर सकता था। वह उसकी सांवली त्वचा, उसके भूरे बाल और बादाम जैसी आँखों को महसूस कर सकता था, लेकिन उससे आंवले की खुशबू आती थी और वह लोरी गाती थी। जब वह उसे छूती, तो उसे अपनी रीढ़ की हड्डी में एक झनझनाहट महसूस होती। वह उसके बारे में सपने देखता रहा, जब तक कि उसका मन विचलित होकर घूमने लगा, क्योंकि उसे लगने लगा कि वह वापस बर्फ में आ गया है। जहाँ से उसने सीखा था। लेकिन नहीं। यह बर्फ हिमालय की बर्फ नहीं थी, बल्कि नदी के उस पार की बर्फ थी, जहाँ वह उनसे मिला था।
वे ही थे, जानवरों की खाल से बने वस्त्र, पीली चमड़ी और सुनहरे बाल। वे एक विदेशी भाषा बोलते थे और उनका व्यवहार भी अलग था। उनके पास लोहे के बजाय कांसे से बनी उन्नत ढालें और तलवारें थीं। और वे बेहद मजबूत और खूबसूरत थे। उनकी आँखें भी नीली थीं।
वह अचानक झटके से जाग उठा, पसीने से तरबतर था, चेहरा पीला और पसीने से भीगा हुआ था।
किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। वह सुस्त और थका हुआ महसूस कर रहा था, फिर भी वह खड़ा हुआ और उसके बाल बिखरे हुए थे। वह दरवाज़े तक गया और उसे खोला तो सामने सत्य खड़ा था, जिसकी दाढ़ी गायब थी, बस एक घनी, झाड़ीदार मूंछ थी जो उसके होंठों के हर कोने पर लटक रही थी, हालांकि उसके बाल अभी भी उलझे हुए थे।
“हमारे यहाँ एक मेहमान आया है, बेटा,” उसने कहा।
“किस तरह का आगंतुक?”
"जाहिर है, वे आपको जानते हैं।"
कर्ण ने कंधे उचकाते हुए दरवाजा खोला और घड़े से पानी पीने के लिए वापस चला गया। "तो क्या हुआ? चूंकि मेरे पास ताज है, लोग मुझे जानते ही होंगे।" नहीं, बेटा। वे तुम्हें जानते हैं।

उसने पीना बंद कर दिया और जार को कसकर पकड़ लिया, फिर गहरी सांस लेकर अपना सिर घुमाया। "तुम्हारा क्या मतलब है?"
यह एक दूत है।
"से?"
“ये म्लेच्छा,” उसने कहा। “अब, लड़के, मैं जानना चाहता हूँ कि तुम इन खूंखार म्लेच्छाओं के साथ किस तरह का धंधा करते थे।”
क्या यह महज एक संयोग था कि उसने इसके बारे में सपना देखा?

तकनीकी रूप से, म्लेच्छ भारत के मूल निवासियों द्वारा "विदेशियों" के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द था। लेकिन ये वे विदेशी नहीं थे जो पर्यटन या व्यापार के लिए आते थे। नहीं। ये वे लोग थे जो यहीं बस गए और हर संभव तरीके से भारत के संसाधनों का शोषण करते रहे। वे बर्बर और खानाबदोश थे, राक्षसों की तरह। लेकिन वे सुंदर थे और उन्होंने अपना एक अलग पंथ बना लिया था। वे उत्तर में डेरा डालते थे, क्योंकि भारी हिमपात के कारण वहाँ कम राज्य थे।
कर्ण जानता था कि अब उससे किस तरह के विदेशी मिलने आएंगे, इसलिए वह बैठक कक्ष में घुटनों के बल बैठकर उनका इंतज़ार कर रहा था। कोने में संगीत ज़ोर से बज रहा था, और फिलहाल उसके पास उसका सिंहासन नहीं था। वह किले में बना ही नहीं था। वह उसे खुद बनवाना भी नहीं चाहता था, क्योंकि वह अभी तक एक योग्य राजा नहीं बना था। उसने खुद से वादा किया था कि राज्याभिषेक होने पर वह इन सब चीज़ों में लीन हो जाएगा और पंडित जी से स्मृतियों का पाठ करेगा, जिससे वह ऐसा राजा बन जाएगा जिसे कोई हटा नहीं सकता।
उसने देखा कि हॉल के दरवाजे खुल रहे हैं और उसके गार्ड दूत को लेकर आ रहे हैं, जो संयोगवश दो लोग थे।
एक महिला गहरे बालों वाली थी, जिसकी उम्र वहाँ मौजूद होने लायक भी नहीं थी, और दूसरा पुरुष सुनहरे बालों वाला था। दोनों की आँखें क्रिस्टल जैसी नीली थीं, जिनका रंग हल्का था और वे भारत के किसी भी निवासी से कहीं अधिक गोरे थे, लगभग चॉक जैसे सफेद।

कर्ण ने उस लड़की को देखा। वह उसे जानता था। उसे महसूस हुआ कि वह उसे जानता है, और जब वह मुस्कुराई, तो उसने उसके गालों के डिंपल देखे और उसकी आँखें चमक उठीं।
“शनाया,” वह मुस्कुराया, “तुम हो।”
उसके बालों की चोटी बनी हुई थी और उसने कवच पहना हुआ था, और वह… अलग दिख रही थी। वह एक युवा लड़की थी, कप्तान की बेटी।
“कैसे हो वासु?”
“खैर…मैं पहले से बेहतर हूं।”
कर्ण जानता था कि ये म्लेच्छ आयोनिया देश के आयोनियन थे, हालांकि भारतवर्ष में इन्हें यवन कहा जाता था। यह उन्हें यूनानी कहने का एक अलग तरीका था।
लेकिन उनमें भारतवर्ष का भी अंश था और कर्ण जानता था कि ऐसा क्यों था।
उदाहरण के लिए, शनाया एक यूनानी पिता और एक भारतवासी माता की पुत्री थी।
आयोनियनों को यहाँ बसाने का कारण कल्यावन था, जो जरासंध का सहयोगी था।
कल्यावन स्वयं आधा यूनानी और भारत का मूल निवासी था, और उसके आसपास ऐसे कई लोग थे।
लेकिन कल्यावन एक निर्दयी, पागल आदमी था जो अत्यधिक शक्ति से ओतप्रोत था और इस प्रकार उसके कई सेनापति अपनी-अपनी सेनाओं के साथ उसके चंगुल से बच निकले और खानाबदोश बन गए।
शनाया उन समूहों में से एक का हिस्सा थी क्योंकि उसके पिता कप्तान आर्किमिडीज थे, जो कल्यावन के एक आंख वाले सैनिक थे और जिनके पास दो हजार से अधिक लोग थे।
लेकिन वे यहाँ क्यों हैं?
“महामहिम, मेरा नाम रोड है,” सुनहरे बालों वाले उस बूढ़े व्यक्ति ने कहा, जिसके चेहरे पर अभी भी रंग लगा हुआ था। “और चूंकि आप शनाया को जानते हैं, इसलिए परिचय की कोई आवश्यकता नहीं है।”
“यहाँ आकर तुमने खुद को बहुत बड़े खतरे में डाल दिया है। म्लेच्छ लोग सबसे सम्मानित नहीं होते,” कर्ण ने शरारती मुस्कान के साथ चेतावनी दी और उसने देखा कि शनाया भी उसकी इस व्यंग्यपूर्ण बात पर मुस्कुरा रही थी। “लेकिन मेरे लोग क्षमाशील और भूलने वाले हैं। तो बताओ, मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ?”

“सचमुच, हमारा सम्मान इसलिए नहीं होता क्योंकि हम काले यूनानी के भगोड़े हैं और उसने हम पर इनाम रखा है। हमारे नाम गलत तरीके से गढ़े गए और हम यहाँ के लोगों के लिए परलोक के प्राणी बन गए,” रोड ने आह भरी। “खैर, भारत अब तक प्रकृति के मामले में हमारे प्रति दयालु रहा है, मनुष्यों के मामले में नहीं। सिवाय तुम्हारे। कैप्टन आर्किमिडीज तुम्हें याद करते हैं, और इसलिए, जब उन्हें पता चला कि तुम राजा बन गए हो, तो उन्होंने मुझे यहाँ भेज दिया।”
"किस लिए?"
"गठबंधन के लिए, निश्चित रूप से।"
कर्ण ने अपनी भौंहें उठाईं और हँसे बिना नहीं रह सका। "गठबंधन से तुम्हारा क्या मतलब है?"
शनाया ने उसे चिढ़ाते हुए कहा, “वासु, जिससे तुमने लड़ाई की, वह हमारा साझा शत्रु है। उसने काले यूनानी का साथ दिया है और काले यूनानी ने मथुरा के विरुद्ध सेना खड़ी कर रखी है। हम कृष्ण को भी अपना समर्थन दे रहे हैं, और हमने सोचा कि क्यों न तुम्हें भी।”
"दरअसल, यह शनाया का फैसला था," रोड ने आगे कहा और वह शरमा गई।
“ठीक है,” उसने कंधे उचकाते हुए कहा।
कर्ण को याद था कि जब वह शनाया से पहले मिला था, तब वह एक छोटी बच्ची थी। वह छोटी और शर्मीली थी और उसे अपने फूलों का संग्रह दिखाती थी। उसे फूल इकट्ठा करना बहुत पसंद था, कर्ण को याद आया, और उसे लगता था कि वह हमेशा से उसे पसंद करती थी, लेकिन तब वह बच्ची थी और उसने कभी उसकी भावनाओं को गंभीरता से नहीं लिया।
“दिलचस्प। तो आप मुझे यह बताने के लिए इतनी दूर से आए हैं?”
“और आपको कप्तान से मिलवाने के लिए,” रोड ने कहा। “वह उत्तर से यहाँ आए हैं और मालिनीपुर से कुछ मील दूर तैनात हैं। उन्हें याद है कि आप राजा बनने का सपना देखते थे और उन्हें आप पर गर्व है।”
यह इससे कहीं अधिक होना चाहिए। कुछ बहुत ही भयावह।
कर्ण जानता था कि आर्किमिडीज भले ही अच्छा आदमी हो, पर वह चालाक भी था। और अगर उसने शनाया और रोड को भेजा है, तो इसके पीछे कोई गुप्त मकसद जरूर होगा जिसके बारे में वह सोच भी नहीं सकता। “बदले में तुम्हें क्या चाहिए? पैसा? या मेरे बनाए राज्य की नागरिकता?”

“हम छोटी-मोटी बातों के लिए प्रयास नहीं करते,” रोड ने कहा। “और मैं तो बस एक दूत हूँ। मुझे यह तय करने का अधिकार नहीं है कि हमें क्या चाहिए। लेकिन मैं आपको विश्वास दिला सकता हूँ कि कैप्टन आर्किमिडीज इस एहसान के बदले आपसे कुछ माँगना चाहते हैं।”
"कृपादृष्टि?"
रोड ने अपने होंठ चाटे। उसकी आवाज़ बेहद घातक थी। “महाराज, यह कोई रहस्य नहीं है कि आपके पास बुनियादी ढांचे के साथ-साथ सेना की भी कमी है। क्या यह सच नहीं है कि युद्ध बस कुछ ही दिनों में होने वाला है और आपके सैनिकों की संख्या कम है? म्लेच्छों को भले ही दुष्ट समझा जाता हो, लेकिन वे योद्धा और बलवान हैं।”
कर्ण ने जो सुना उसका सार यह था: तुम्हें हमारी ज़रूरत है। हमें तुम्हारी ज़रूरत नहीं है।
“ठीक है। आप क्वार्टर में ही रहेंगे। मुझे थोड़ा सोचने दीजिए और मैं आपको शाम तक बता दूँगा।”
उसने शनाया से एक नज़र मिलाई, जिसने जवाब में सिर हिलाया। वह उसके लहजे से खुश नहीं थी, पर उसे होना भी नहीं चाहिए था। म्लेच्छों को सेना में, सबसे आगे रखना, कड़े शब्दों में कहें तो…शाही आत्महत्या के समान था। क्योंकि वे राजशाही आदेश के अनुसार अपराधी थे। उन्हें देखते ही जेल में डाल दिया जाना चाहिए था।
देवी कुछ कहने ही वाली थी…

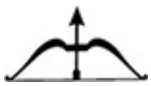

“नहीं,” वह घबराई हुई थी, उसका चेहरा गुस्से से लाल था। “महामहिम, आदरपूर्वक,” उसने दांत पीसते हुए कहा, “आपने पहले जंगल के डाकुओं को बुलाया, अब आप विदेशी डाकुओं को बुला रहे हैं। क्या आप सचमुच हमारे राष्ट्र द्वारा स्थापित हर नियम और परंपरा को तोड़कर इस युद्ध को जीतना चाहते हैं?”
वे कर्ण के कमरे में थे, और वह दीवार से टिका हुआ था, उसकी बाहें मुड़ी हुई थीं और उसकी मांसपेशियां कसी हुई थीं, जबकि दूसरी ओर सत्य अपने दांतों में फंसी हुई गंदगी को साफ कर रहा था।

“युद्ध के कोई नियम नहीं होते, सेनापति,” कर्ण ने कहा, उसे बचपन में किया गया अपना वादा याद आ रहा था और उसे हर हाल में उस वादे को पूरा करना था। “सच कहूँ तो, हमारे पास पर्याप्त सैनिक नहीं हैं। अभी भी नहीं हैं। जरासंध के लगभग तीन हज़ार योद्धा हमें नष्ट करने वाले हैं। हमें जीतने के लिए नियमों को थोड़ा-बहुत तोड़ना पड़ेगा।”
देवी ने सिर हिलाया। "महाराजा धृतराष्ट्र प्रसन्न नहीं होंगे।" उन्होंने मुझे अपनी इच्छानुसार कोई भी निर्णय लेने की स्वायत्तता दी है। “के दायरे में…”
कर्ण ने सिर हिलाया। “हमें आर्किमिडीज से मिलना है। मैं उन्हें जानता हूँ, देवी। वह बेशक एक शातिर आदमी हैं, लेकिन उन्होंने मुझे बहुत कुछ सिखाया है। और उन्होंने ही मुझे परशुराम से मिलने में मदद की। अगर वह न होते तो उत्तर में ठंड से जम कर मेरी जान चली जाती।”
उसने झुंझलाहट भरी आह भरी। "महाराज, आप अपने ही आदमियों को नाराज़ कर रहे हैं। उन्हें लग सकता है कि अपराधियों का साथ देने से आप भी अपराधी बन जाएंगे।"
“एक राजा को प्यार की ज़रूरत नहीं होती। उसे सम्मान की ज़रूरत होती है। अगर हम किसी भी तरह से युद्ध जीत भी जाते हैं, तो सैनिकों को इस बात से कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा कि हमने किसका साथ दिया। मैं जानता हूँ कि म्लेच्छ अपराधी हैं, लेकिन वे अपराधी इसलिए हैं क्योंकि उन्होंने उस साम्राज्य का साथ नहीं दिया जो हिंसा की लालसा में डूबा रहता था। कल्यावन एक पागल आदमी है और जरासंध की वजह से ही उसने भारत के एक हिस्से पर कब्ज़ा कर रखा है और उसे अपने सैनिकों को भगोड़ा कहने का अधिकार है—जो भी उसके हिंसा के मकसद में उसका साथ नहीं देता। इसलिए मेरी नज़र में हम अच्छे लोगों का साथ दे रहे हैं।”
कर्ण ने सिर हिलाया। उसे यह बात काफी समय पहले ही पता चल गई थी। "तो चलिए शुरू करते हैं," उसने कहा।
देवी संतुष्ट नहीं थीं। उनकी बातों को गंभीरता से न लिए जाने पर वे निराश दिख रही थीं। कर्ण आगे आए और उनके कंधे पर हाथ रखते हुए बोले, “अगर तुम चाहो तो जा सकती हो। तुम्हें इस सब में शामिल होने की ज़रूरत नहीं है। मैं समझ जाऊंगा। लेकिन अगर तुम मुझ पर राजा के रूप में विश्वास करती हो, तो यहीं रहो।”

देवी ने पलकें झपकाईं। वह नहीं जानता था कि वह क्या सोच रही है, लेकिन वह गहरे संघर्षपूर्ण विचार थे। "ठीक है। देखते हैं।"
सत्य ने ऊबते हुए कहा, "वाह, अब हम कर सकते हैं..."
उन्होंने दरवाजे पर किसी के दस्तक देने की आवाज सुनी।
कर्ण सहज भाव से दरवाजे तक गया और उसे खोला तो सामने एक युवक खड़ा था जिसने झुककर उसे एक पत्र दिया। कर्ण ने गौर किया कि वह अन्य सैनिकों से काफी छोटा था। उसकी उम्र मुश्किल से अठारह वर्ष होगी और उसकी नाक सूअर जैसी थी, जिसमें बड़े-बड़े नथुने थे। "तेरा नाम क्या है, बालक?"
“शांतनु, महोदय।”
“अहा,” कर्ण मुस्कुराया, “क्या आप जानते हैं कि शांतनु हस्तिनापुर के पूर्वज थे? एक समय वे यहाँ के राजा थे।”
"जी सर, मेरी माँ ने मेरा नाम उन्हीं के नाम पर रखा है।"
कर्ण को नहीं पता था कि आगे चलकर किसी सैनिक का नाम कर्ण के नाम पर रखा जाएगा या नहीं। लेकिन वह इसकी उम्मीद कर सकता था। "तुम्हें राहत मिली है।" शांतनु ने दोबारा प्रणाम किया और चले गए।
कर्ण ने पांडुलिपि खोली और उसे पढ़ा। सत्य और देवी किसी और बात पर झगड़ रहे थे, तभी उसने कहा: "हमारे सामने एक समस्या है।" उसका चेहरा पीला पड़ गया था।
“वह क्या होगा?” सत्या ने पूछा।
“Well…” Karna said. “Jarasandha wants to meet me.”

49

कर्ण सामान पैक कर रहा था और उसका रथ तैयार किया जा रहा था। उसने राजा के कर्तव्य फिलहाल देवी को सौंप दिए थे क्योंकि कर्ण और सत्य गुप्त यूनानी क्षेत्र में जाने वाले थे। हालांकि उसे अभी भी कुछ आशंकाएं थीं, लेकिन आगे चलकर उसे उन्हें दूर करना ही था।
उसने कवच पहन रखा था और धनुष कंधे पर लटका रखा था, पीठ पर तरकश लटका हुआ था, तभी उसे एक आवाज सुनाई दी:
मुझे हमेशा आश्चर्य होता था कि तुम्हारा नाम कर्ण क्यों रखा गया था।
यह एक धुंधली, जानी-पहचानी आवाज थी और उसने मुड़कर देखा तो शनाया अपनी नीली आंखों से मुस्कुरा रही थी। वह दरवाजे से टेक लगाकर खड़ी थी।
उन्होंने कहा, "इसका मतलब है 'आज्ञा मानना'।"
और क्या यह वासु से बेहतर है?
उसने कंधे उचकाते हुए कहा, "यह तो सिर्फ उन्हीं लोगों के लिए है जो मुझे अच्छी तरह जानते हैं।"
"तो तुम कह रहे हो कि मैं तुम्हें अच्छी तरह जानती हूँ?" वह उसे चिढ़ा रही थी।
“जी हां, बिल्कुल। आपके पिता ने मेरी बहुत मदद की थी,” कर्ण ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।
“आज्ञा मानने के लिए,” वह चंचल भाव से उसके पास गई। “क्या तुम आज्ञाकारी विद्यार्थी थे? मुझे पता है तुम्हारे यहाँ गुरुकुल हैं। क्या तुम वहाँ आज्ञाकारी थे?”
कर्ण सोचने लगी। क्या वह सच में ऐसा था? उसने कर्ण को स्पष्ट जवाब नहीं दिया। "कुछ हद तक, हाँ। लेकिन हर बात के लिए नहीं। अगर मुझसे हत्या करने को कहा जाए, तो मैं नहीं करूँगा। अगर मुझसे चोरी करने को कहा जाए, तो मैं नहीं करूँगा।"
तो क्या आप अपने नैतिक मूल्यों पर कायम हैं?
"हाँ।"

In Gurukul.

50

चार साल पहले…
उंगलियां...
यह उनका पहला साल था। एक भयानक साल, ऐसा कहा जा सकता है।
गुरुकुल का समय उनके जीवन का सबसे अच्छा समय था और उन्होंने वहां बहुत कुछ सीखा था, लेकिन उन्हें पांडवों के साथ-साथ कौरवों के साथ भी कई समस्याओं का सामना करना पड़ा था।
और वह अभ्यास और सीखने का एकमात्र समय सूर्यदेव को प्रणाम करने के बाद, सुबह-सुबह ही निकालता था। वह चट्टान पर प्रकाश को स्पर्श कर उसमें लीन था, तभी उसने अपने पीछे कदमों की आहट सुनी और तुरंत मुड़कर देखा तो सामने एक बूढ़ा आदमी छड़ी लेकर चल रहा था।
द्रोण मुस्कुरा रहे थे और जब वासु ने अपना धनुष नीचे किया और अपने गुरुजी को देखकर मुस्कुराए तो वे जरा भी विचलित नहीं हुए।
उन्होंने कहा, “तुम बहुत जल्दी सीखते हो। तुमने इस एक साल में मुझसे उतना सीखा है जितना कि ज्यादातर लोग नहीं सीख पाते।”
वासु ने विनम्रतापूर्वक सिर हिलाया। "गुरुजी, आप जो कहेंगे, मैं वही करूंगा।"
“मुझे यह वाक्यांश पसंद है,” वह मुस्कुराया। “आप जो भी कहें। आप जो कह रहे हैं वह बहुत गंभीर बात है।”
लेकिन क्या शिष्य ऐसा ही नहीं करता जब उसका गुरु दक्षिणा मांगता है? “हाँ,” द्रोण ने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा। “मुझे खुशी है कि तुमने मेरी बात सुनी और सुबह अभ्यास किया। सुबह का समय तुम्हारे लिए है और गर्जना अर्जुन के लिए। तुम दोनों इस दुनिया के सबसे महान धनुर्धर बनोगे, मेरी बात याद रखना।”
वासु मुस्कुराया। शब्द कठोर थे, लेकिन अपने प्रतिद्वंदी से तुलना किए जाने से उसके अंदर जोश भर गया।

“मैं तुम्हारा नाम बदलना चाहता हूँ। मैं तुम्हें कर्ण कहना चाहता हूँ। आज्ञाकारी। सुनने वाला। तुम हमेशा से ऐसे बालक रहे हो जो हर बात मानता आया है। तुमने पुण्य के बल पर सफलता प्राप्त की है,” द्रोण ने उसे गले लगाया। “कर्ण…” वासु ने मन ही मन यह नाम कहा। यह सुनने में अच्छा लगा। “लेकिन मेरा नाम तो मेरी माँ ने रखा था।”
“तुम भी राधेय हो, तुम्हारा नाम तुम्हारी माता के नाम पर रखा गया है। लेकिन नाम महत्वपूर्ण नहीं है, इसके पीछे का कारण महत्वपूर्ण है। तुम्हें यह नाम क्यों दिया गया है, यह कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। समझे, बच्चे?”
वासु ने सावधानीपूर्वक सिर हिलाया।
“अच्छा। साल खत्म हो रहा है, और आपका प्रशिक्षण पूरा हो गया है। क्या आपने सोचा है कि मैं आपसे दक्षिणा के रूप में क्या मांगूं?”
उसने उसके सिर को हिलाकर रख दिया।
“इस बारे में सोचो। और एकलव्य की तरह मत बनो।”
वासु ने पूछा, "तुमने उसका अंगूठा क्यों कटवाया?"
“क्योंकि वह छुपकर बातें सुनता था। अगर वह आकर मुझसे शिक्षा मांगता, तो मैं सहर्ष अनुमति दे देता, लेकिन उसने छुपकर सब कुछ सुना। मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह निषाद था या नहीं, बशर्ते वह अपने काम में निपुण हो, लेकिन आचार्य से चोरी करना देवताओं के प्रति अपराध है,” द्रोण ने समझाया।
वासु ने सिर हिलाया। वह जानता था कि द्रोण यह सब क्यों कह रहे हैं। उसे इस बात से गहरा दुख हो रहा था कि सब उसे 'साज', 'सारथी' और 'सुता' कहकर पुकारते थे। ये शब्द अपमानजनक थे और उसे बहुत आहत करते थे। केवल द्रोण ही उसके प्रति दयालु थे और उसे इन शब्दों के विरुद्ध खड़े होने के लिए प्रेरित करते थे। द्रोण ने उससे किसी देवता से जुड़ने और उनका भरपूर आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए भी कहा था। सूर्यदेव कर्ण की पसंद नहीं थे, लेकिन जन्म से ही सूर्यदेव का आशीर्वाद उस पर बना हुआ था, कवच से लेकर सुबह के समय मिलने वाली गर्माहट तक।
जी गुरुजी, मैं ऐसा नहीं करूंगा।

कर्ण तब से खुद को उसी नाम से पुकारता था जो उसे दिया गया था और वह यह सुनिश्चित करता था कि दूसरे लोग भी उसी का अनुसरण करें।
वह आश्रम में थे, जहाँ वे और सुयोधन लेटे हुए थे। वहाँ कौरवों, पांडवों या राजपरिवार के अन्य सदस्यों में से कोई भी उपस्थित नहीं था। आश्रम में कई छोटे कमरे थे और प्रत्येक कमरा किसी न किसी के लिए समर्पित था।
सुयोधन सोने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उसकी आँखें खुली हुई थीं और उनके नीचे काले घेरे थे। उसका शरीर दुबला-पतला और कमज़ोर था, लेकिन वह गदा चलाने में माहिर था।
"आप किस बारे में सोच रहे हैं?"
"आज उन्होंने मुझ पर हमला नहीं किया," उसने बिल्कुल मशीनी लहजे में कहा। “पांडव?”
“हां,” वह कांपते हुए बोला, उसके शब्द बर्फीले ठंडे थे।
“तुम्हें डरना बंद करना होगा। उन्हें तुम्हें चिढ़ाने में मजा आता है।” "मुझे झील में डुबोना मजाक नहीं है, वासु। यह तो सरासर धमकी है।"
“मुझे पता है,” उसने उसे खुश करने की कोशिश की। “मेरा एक नया नाम है। आज से मुझे कर्ण कहा जाता है।”
“कर्ण?” उसने अपनी भौंहें उठाईं। “मेरे भाइयों में से एक का नाम भी कर्ण है।”
उन्होंने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, "लेकिन वह सूर्यपुत्र कर्ण जितना लोकप्रिय नहीं होगा।"
"हर समय इतना घमंड करना बंद करो।"
और वे दोनों खिलखिलाकर हंस पड़े।
कर्ण ने आह भरी। गुरुकुल में उसका मित्र सुयोधन ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जिससे वह बात करता था। वह सुयोधन के दो सगे भाइयों से भी बात करता था, लेकिन वे कर्ण से कभी खुलकर बात नहीं करते थे। उनके लिए वह महज एक ड्राइवर था। लेकिन सुयोधन को इसकी परवाह नहीं थी, भले ही वह राजपरिवार में सबसे बड़ा था। वह खुद एक ऐसी जगह फंसा हुआ था जहाँ उसे लगातार आघात और उत्पीड़न झेलना पड़ता था।
किसी कारणवश कर्ण को कभी भी इसके परिणाम भुगतने नहीं पड़े, जबकि उसे भुगतने चाहिए थे। उसे बस इतना ही झेलना पड़ा कि उसे हर दिन लगातार सूतपुत्र कहकर पुकारा जाता था।

बुलबुल ने गाना गाया, और कर्ण ने कहा, "तुम सो जाओ, मैं नहीं सोऊंगा। ठीक है?"
सुयोधन ने आह भरी। "लेकिन अगर..."
“चिंता मत करो। मैं नज़र रखूंगा।”
सुयोधन ने घबराहट में एक गहरी सांस ली और सिर हिलाकर पूछा, "क्या आप निश्चित हैं?" वह थोड़ा कांप उठा, उसके गाल अंदर की ओर धंस गए और नथुने फूल गए।
"हाँ मुझे यकीन है।"
"ठीक है।"
उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। ऐसा करते हुए कर्ण आश्रम के उस दरवाजे पर गया जहाँ पर्दा लगा था और उसने बाहर झाँक कर यह सुनिश्चित किया कि कोई अंदर न आए। थोड़ी देर बाद, उसे अपने दोस्त के खर्राटे सुनाई दिए और वह मन ही मन मुस्कुराया।
उसे नींद तो आ रही थी, लेकिन वह नहीं चाहता था कि सुयोधन को लगे कि उसने अपना वादा तोड़ दिया है। इसलिए वह काफी देर तक उसी हालत में लेटा रहा, उसके विचार बचपन के दिनों, माता-पिता, छोटे सौतेले भाई और पांचाली की ओर खिंचे चले गए। उसे पांचाली की बहुत याद आ रही थी। उसने सोचा था कि सब कुछ खत्म होने के बाद, जब सब कुछ थम जाएगा, जब वह स्नातक होकर क्षत्रिय योद्धा बन जाएगा, तब वह उससे मिलने जाएगा।
मैं तुमसे विवाह का प्रस्ताव रखूंगा।
उसे पता नहीं था कि वह उसे पसंद करती है या नहीं। वह बस एक बहुत ही प्यारी इंसान थी, जिसने हमेशा उसके साथ एक दोस्त जैसा व्यवहार किया था। शायद बस एक दोस्त...
इस विचार ने उसे उदास कर दिया।
और जब उसके विचार भटक रहे थे, तो उसे नींद आने लगी और कुछ देर बाद वह सो गया।
कुछ देर बाद, जब वह खामोश चीखों की आवाज सुनकर जागा, तो उसने मुड़कर देखा कि एक साया सुयोधन के ऊपर मंडरा रहा है। वह साया लगातार सुयोधन के सिर पर मुक्के और घूंसे मार रहा था। उसे हंसी की आवाजें भी सुनाई दीं। उसने आंखें मलकर देखा तो पाया कि सुयोधन का सिर कंबल में लिपटा हुआ था और वह साया उसे घूंसे और लात मार रहा था।

कर्ण ने जरा भी समय नहीं गंवाया और सीधे उस परछाई की ओर झपटा, लेकिन तभी उसे एहसास हुआ कि वह काफी बड़ी है और वह कोने में जा गिरा, जहां वह दीवार से टकरा गया।
“सुतापुत्र, इससे दूर रहो।”
और वह परछाई, अपने दो साथियों के साथ गायब हो गई, और जैसे ही उसकी आंखों के सामने से रोशनी हटी, उसने देखा कि वह कोई और नहीं बल्कि भीम था।
उसने अपने जबड़े भींचे और सुयोधन की मदद करने गया, जो अपने शरीर और चेहरे पर लगे घावों के साथ रो रहा था और सिसक रहा था।
“तुमने मुझसे कहा था कि तुम सोओगे नहीं!” वह रोते हुए चिल्लाया।
और कर्ण ने तुरंत उसे गले लगा लिया।
कोई बात नहीं... कोई बात नहीं। मुझे खेद है...
सुयोधन ने पलटवार किया, लेकिन दोनों लड़के एक-दूसरे को गले लगाए रहे।
कर्ण को एहसास हुआ कि यह सिलसिला जारी नहीं रह सकता। उसने देखा कि आश्रम के पीछे प्रकाश लौट रहा है और उसने सुयोधन के अंतिम शब्द सुने, जिन्होंने कहा: इस बारे में कुछ तो करना ही होगा।

51

गुरुकुल के पहले वर्ष के अंतिम सप्ताह में, कर्ण भारतवर्ष के सभी शाही परिवार के सदस्यों की एक विशाल सभा में खड़े थे।
उनकी संख्या दर्जनों में थी, सभी अपनी पीठ सीधी करके और अपने भयंकर हथियारों के साथ खड़े थे।
उन्हें दूसरों की परवाह नहीं थी, सिवाय सुयोधन के, जो उनके पक्ष में था और राहत महसूस कर रहा था। राहत इस बात से थी कि वह घर लौट आएगा, अपनी माँ की गोद में और यहाँ की परेशानियों से दूर। द्रोणाचार्य आंशिक गुरु थे, कर्ण के नहीं तो सुयोधन के, क्योंकि सुयोधन पांडवों का पक्षधर था। अर्जुन उनका शिष्य था, वह पुत्र था जो उन्हें कभी नहीं मिला।
भले ही उसके पास एक योग्यता थी, लेकिन वह व्यक्ति जिसने इसे अतिरिक्त रूप से सीखा था।
द्रोणा अपने हाथ में छड़ी लिए एक विशाल चट्टानी चबूतरे पर खड़े थे, जहाँ से सैकड़ों छात्र दिखाई दे रहे थे, और उनके चेहरे पर आशा की चमक थी। उनकी दाढ़ी सफ़ेद थी और बाल छोटे कटे हुए थे।
“जब आप सब यहाँ आए थे, तो मैं हैरान और अभिभूत था कि क्या मुझमें आप सबकी मदद करने का साहस होगा। लेकिन आप सब इतने प्रतिभाशाली छात्र थे कि आपने मेरा शिक्षण आसान बना दिया। आप सबको घुड़सवारी सिखाने से लेकर तलवारबाजी, तीरंदाजी, कुश्ती, हमारे इतिहास, पौराणिक कथाओं, संस्कृति, धर्म के बारे में जानने और स्मृतियों और वेदों का अध्ययन करने तक, हम सब यहाँ तक साथ आए हैं… जहाँ हम अगले तीन वर्षों की यात्रा की शुरुआत में हैं। लेकिन वह एक काम क्या है जो हमें अभी करना बाकी है?”
“दक्षिणा!” किसी ने चिल्लाकर कहा। “हमें पहले वर्ष के अंत से पहले दक्षिणा देनी होगी, यानी फीस।”
कर्ण ने देखा कि वह कौन है, और उसने उस लड़के को पहले कभी नहीं देखा था, जिस पर सुयोधन ने उसे कोहनी मारी और कहा: "वह दूसरा कर्ण है।"

और कर्ण के माथे पर शिकन आ गई। सुयोधन तो बस उसे चिढ़ा रहा था और वह यह बात जानता था।
“मुझे यकीन है कि तुम खुश हो कि हम कुछ समय के लिए इस जगह को छोड़ रहे हैं,” कर्ण ने अपने दोस्त से फुसफुसाते हुए कहा।
“हां, मैं हूं। लेकिन जब हम लौटेंगे, तो मुझे एक काम पूरा करना है।
"और वह यह है कि?"
सुयोधन ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था।
और इस प्रकार कर्ण ने द्रोण की बात सुनी:
“अब आप सब सोच रहे होंगे कि यह दक्षिणा क्या है? मैं आप सब से क्या माँगूँगा?” उन्होंने कंधे उचकाते हुए कहा। “वही जो मुझे किसी भी विद्यार्थी से माँगना चाहिए। अटूट निष्ठा। मेरे प्रति और मेरी कही हर बात के प्रति निष्ठा, चाहे कुछ भी हो जाए। और जब दक्षिणा चुका दी जाएगी, तो आप सब जाने के लिए स्वतंत्र होंगे।”
कर्ण कार्य सौंपे जाने की प्रतीक्षा करता रहा, जबकि द्रोण आगे बोलते रहे: “मेरा एक दोस्त था। उसने मुझे धोखा दिया। उसने उन शब्दों को धोखा दिया जिन पर वह अड़ा रहता था। मैं चाहता हूँ कि आप सब मिलकर उस धोखेबाज़ से बदला लें। और बदले में, मैं चाहता हूँ कि आप में से कोई भी इसके बारे में एक शब्द भी न बोले। यह एक राज़ रहेगा और दक्षिणा अदा कर दी जाएगी।”
कर्ण को यह बात ठीक नहीं लगी। एक गुरु का अपने शिष्य से अपनी मनमर्जी करवाना, चाहे वह बात कितनी भी बेतुकी क्यों न हो, स्वार्थपूर्ण लगा। लेकिन उसने देखा कि सभी शिष्य लगन से द्रोण की बात मान रहे थे और सिर हिला रहे थे।
“मेरे उस मित्र का एक राज्य है, और वह राज्य मेरे लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि उसका आधा हिस्सा मुझे बहुत पहले दिए गए वचन के अनुसार प्राप्त है। मुझे वह आधा हिस्सा चाहिए। और उस आधे हिस्से को पाने के लिए, मैं चाहता हूँ कि मेरी यह निजी सेना मेरे लिए यह काम करे।”
लेकिन हम आपके छात्र हैं, आपकी सेना नहीं।
ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो द्रोण इन बच्चों को भारत के लिए नहीं, बल्कि स्वयं के लिए तैयार कर रहे हों, ताकि वे इस कार्य को पूरा कर सकें।
सुयोधन ने फुसफुसाते हुए कहा: "वाह, कुछ तो एक्शन है।"
"क्या आपको नहीं लगता कि यह गलत है?"

“खैर, नन्हे विद्रोही, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। कानून के अनुसार, गुरु ने चार साल तक आपको शिक्षा दी है, इसलिए आपको दक्षिणा देते हुए उनकी हर बात माननी होगी, वरना आप पर ऐसा कलंक लग जाएगा जो आप शायद नहीं चाहते। एकलव्य ने भी कानून का उल्लंघन न करने के लिए अपना अंगूठा दे दिया था, जबकि वह निषाद थे।”
कर्ण ने अपने जबड़े भींच लिए। वह इस विचार से सहमत होने ही वाला था कि तभी द्रोण की कहानी ने एक जाना-पहचाना मोड़ ले लिया। दरअसल, यह कहानी जानी- पहचानी ही थी। उसने इसे बहुत पहले सुना था। कई साल पहले... लेकिन कहाँ? जैसे ही द्रोण ने बोलना जारी रखा और उसे उस स्रोत को पहचानने के लिए कहा जहाँ से उसने इसके बारे में सुना था, उसने अपनी भौंहें ऊपर उठा लीं:
“मैं चाहता हूं कि तुम सब मेरे पुराने मित्र और पांचाल के राजा द्रौपद पर हमला करो।”
और उसी क्षण कर्ण का खून जम गया।
But…Panchali?

52

आज के समय में…
कर्ण को अहसास हुआ कि वे मालिनीपुर के बाहरी इलाके की ओर जा रहे हैं। दुनिया पर अंधेरा छाया हुआ था और वे अपनी सेना के साथ पहाड़ियों और चट्टानों को पार करते हुए उस रास्ते पर चढ़ रहे थे जहाँ उनके कवच खटक रहे थे, तलवारें म्यान से लटक रही थीं और घोड़ों के खुरों की धीमी, लेकिन तीव्र आवाजें गूंज रही थीं। यह दृश्य कुछ अलग ही था - विशाल खालीपन, हरी-भरी पहाड़ियों और सैनिकों के बीच दबी फुसफुसाहट कि कहीं यह कोई घात तो नहीं है।
कर्ण पहले अपने रथ पर सवार था, लेकिन फिर उसने घोड़े पर सवार होना चुना, उसके साथ शनाया और सत्य भी चल रहे थे। उसने अपना धनुष कंधे पर रखा हुआ था और उसके मन में द्रोण के साथ बिताए समय की यादें उमड़ रही थीं, जब उसने सबको उस स्त्री पर हमला करने का आदेश दिया था जिसे वह पसंद करता था; या शायद प्यार करता था। अर्जुन ने भी उसकी बात मान ली थी और बाकी सब भी, शायद दक्षिणा के कारण। लेकिन कर्ण को इसकी परवाह नहीं थी।
मुझे वर्तमान पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
तेज़ गति से जंगल में भागते हुए उसकी नज़रें हर तरफ़ घूम रही थीं। उन्होंने रात के लिए डेरा डाला हुआ था और मधुर संगीत बज रहा था। शनाया ने उससे बात करने की कोशिश की, लेकिन उसने विनम्रता से मुस्कुराकर उसे जवाब दिया और अपने तंबू की ओर चल दिया।
अगले दिन, जब वे पहाड़ियों के चारों ओर यात्रा कर रहे थे और उस दलदली भूमि की ओर बढ़ रहे थे जहाँ आर्किमिडीज के होने की उम्मीद थी, तो उसने शनाया को अपने घोड़े को रोकते हुए, उसकी लगाम खींचते हुए और एक फूल की ओर चलते हुए देखा।
“हम अब और देरी नहीं कर सकते,” कर्ण रुक गया और उसके आदमी भी रुक गए।
लेकिन शनाया फूल की सुंदरता को निहारने में व्यस्त थी। वह पीले रंग का फूल था, जिस पर लाल धारियाँ थीं।

“यह क्या है?” कर्ण ने पूछा।
“गंगा प्रिमरोज़, देखने में काफी अनोखा है,” उसने मुस्कुराते हुए कहा।
“मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि ये इस तरफ उगते हैं।”
कर्ण उसकी बचकानी उत्सुकता देखकर मन ही मन मुस्कुराया। जैसे ही वह घोड़े पर बैठी, नदी की हल्की कलकल ध्वनि के साथ पूरी सेना दलदली भूमि में आगे बढ़ गई। आसमान धूसर था, मानो बारिश होने वाली हो।
उन्होंने कहा, "हम करीब हैं।"
“हमें ऐसा ही करना चाहिए,” सत्या दूसरी तरफ से गुर्राते हुए बोला। “मेरी कमर में दर्द हो रहा है।”
शनाया ने भौंहें चढ़ाकर कर्ण से फुसफुसाते हुए कहा, "क्या उसके जैसे व्यक्ति के लिए इस तरह बात करना उचित है?"
कर्ण ने कंधे उचकाते हुए कहा, "मुझे लगता है कि आपको इसकी आदत डालनी ही पड़ेगी।"
"मैं आपसे कुछ पूछना चाहती थी," शनाया ने उत्सुकता से पूछा।
कर्ण की आंखें बाज जैसी तेज थीं और उसने दलदली भूमि, झील के चारों ओर उगने वाली घास के पैच और पेड़ों की कतारें देखीं। यह सब बहुत नीरस लग रहा था। "हाँ।"
“तुम्हें याद है जब तुम उत्तर में मेरे पिता के शिविर में आए थे, मैंने तुमसे पूछा था, क्या घर पर तुम्हारी कोई प्रेमिका है? शायद कोई लड़की?” कर्ण ने सिर हिलाकर कहा, "हाँ, मैं करता हूँ।" वह दृढ़ निश्चयी था।
“तुमने मुझे बताया था कि पांचाली नाम की एक लड़की है। क्या तुमने उससे शादी कर ली?”
कर्ण ने अपनी निगाहें सिकोड़ लीं। उसने दिखावे के लिए बहुत कुछ कह दिया था, लेकिन ज़िंदगी अक्सर आपको एक अलग राह पर ले जाती है। "नहीं, मैंने ऐसा नहीं किया। उसकी शादी किसी और से होनी है।"
“मैं समझ गया। मुझे खेद है।”
"कोई बात नहीं। मुझे लगता है कि मैं अकेले रहने के लिए ही पैदा हुई हूँ।" शनाया ने जबरदस्ती मुस्कुराया, और कर्ण ने शनाया की गंभीर निगाहों को नजरअंदाज करते हुए अपने घोड़े को और आगे बढ़ा दिया।

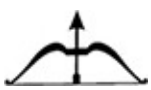

बारिश रुक गई थी, इसलिए आसमान साफ था। सामने का नजारा धुंधला और अंधेरा था, लेकिन इतना भी अंधेरा नहीं था कि कुछ दिखाई न दे।
आग। चीखें।
वहाँ लोग आपस में लड़ रहे थे और कर्ण ने अपने घोड़े की लगाम खींची और देखा कि दो समूह थे, एक समूह जानवरों की खाल से बने कवच में और दूसरा लाल कवच में, जो लोहे और धातु के हथियारों से एक-दूसरे से लड़ रहे थे।
“पिताजी पर हमला हुआ है,” शनाया घबराकर चिल्लाई।
इस पर रोड ने अपने आदमियों को आगे बढ़ने का आदेश दिया और कर्ण द्वारा शनाया को रोकने से पहले ही वे आगे बढ़ चुके थे।
कर्ण की सेना उसकी प्रतिक्रिया का इंतजार कर रही थी और वह यह जानने के लिए उत्सुक था कि आखिर हो क्या रहा है। झील के पानी में धंसे जूतों वाले सैनिक, दलदल में लड़ रहे सैनिक, लताओं से लटक रहे सैनिक और गहरे पानी में कूद रहे सैनिक - हर तरह के लोग थे। बारिश कुछ खास असर नहीं कर रही थी, और चारों ओर हजारों सैनिक लड़ रहे थे।
सत्य ने कर्ण की घोड़ी के पास अपनी घोड़ी को लाते हुए पूछा, “क्या हमें अंदर जाना चाहिए? जब हमें सैनिकों की सबसे ज़्यादा ज़रूरत है, तब उन्हें खोना जोखिम भरा हो सकता है। उन्हें अपनी लड़ाई लड़ने दो, हम उसके खत्म होने तक इंतज़ार कर सकते हैं।”
कर्ण ने मन ही मन सोचा, “मैंने एक बात सीखी है। भले ही मेरे सैनिक कम हो जाएं, लेकिन मुझे सद्भावना से बहुत लाभ होता है। लेकिन अगर अब मुझे कम सैनिक मिलते हैं, तो मुझे बहुत सारे सैनिक खोने पड़ेंगे। लाभ पाने के लिए मुझे नुकसान उठाना ही पड़ेगा।”
"तुम सूअर की लीद के व्यापारी की तरह बातें करते हो, तुम्हें पता है ना?" कर्ण मुस्कुराया और अपने सैनिकों को आगे बढ़कर अपनी साजो-सामान इकट्ठा करने और युद्ध में उतरने का आदेश दिया। हालाँकि स्थिति स्पष्ट नहीं थी, फिर भी वह अपने सैनिकों को म्लेच्छों के लिए युद्ध में उतरते देख सकता था। युद्ध की गर्जना सुनकर वह वहीं स्थिर खड़ा रहा। उसने अपने बाकी साथियों को सत्या के साथ रुकने को कहा और खुद घोड़े से उतरकर आगे बढ़ने की तैयारी करने लगा।
"क्या तुम पागल हो गए हो जो एक म्लेच्छा के लिए अपनी जान जोखिम में डाल रहे हो?"

“इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे कौन हैं। मुझे उनकी मदद करनी ही होगी।” “आप अंगा के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। आप किसी बाहरी व्यक्ति पर हमले के लिए खुद को खतरे में नहीं डाल सकते।”
यह मेरे लिए मायने रखता है।
कर्ण अपने धनुष पर तीर लदे हुए तेजी से आगे बढ़ा। जैसे ही वह युद्धक्षेत्र में पहुँचा, उसे कोहरा, बारिश, आग के तीरों की बौछार, चीखें और गुस्से भरी निगाहें महसूस होने लगीं। ये सब चारों ओर फैले हुए थे और एक पल के लिए उसे अभिभूत कर देने वाले थे, जैसे ही वह अंदर घुसा और आगे फिसल गया। वह लुढ़कने लगा, लाल रंग के दुश्मनों पर तीर चलाने लगा, तेजी से आगे बढ़ता रहा, तभी उसे किसी ने कंधे पर धक्का दिया और कीचड़ में गिरा दिया।
कर्ण उठ खड़ा हुआ तो उसने देखा कि उसके सामने खड़ा सिपाही हाथ में हथौड़ा लिए खड़ा है। एक झटके में धक्का देने पर हथौड़ा उसकी ओर आ गिरा। करवट बदलते हुए उसने तुरंत उस सिपाही पर हमला किया और उसके सिर पर तीर चला दिया। वह सिपाही यह सोचकर हैरान रह गया कि हमला कहाँ से हुआ।
मुझे शनाया को ढूंढना होगा।
उस अफरा-तफरी और अराजकता के बीच, जब बारिश की बूँदें गूँज रही थीं और आसमान में बादल छाए हुए थे, उसे अपने मुँह में खून का नमकीन स्वाद महसूस हुआ। उसने उसे चाटा और आगे बढ़ गया, अपने अनोखे अंदाज़ में तीर चलाते हुए, लगभग सभी तीर हेलमेट या गर्दन को भेदते हुए उन्हें मार रहे थे।
उसकी निगाहें उस छोटी बच्ची को ढूंढ रही थीं जो अब बड़ी हो चुकी थी, लेकिन वह उसे नहीं पा सका। वह गायब हो चुकी थी और उसने जिन लाल कवचधारी आदमियों को देखा वे विदेशी थे। वे यूनानी लग रहे थे। तभी उनमें से एक उसकी ओर बढ़ा…
उसे गले से पकड़कर पानी में डुबो दिया गया, और वह उस आदमी की धुंधली सी छवि देख पा रहा था... वह भ्रमित था और सांस लेने के लिए हांफ रहा था।
और फिर पकड़ ढीली पड़ गई और उसने उस आदमी को मरते हुए देखा जो उसे नीचे धकेल रहा था।
कर्ण पानी से बाहर निकला, उसका कवच और धोती पूरी तरह भीग चुके थे, उसने ताज़ी हवा में सांस ली और उसकी अहमियत को समझा।
“क्या तुम ठीक हो?” उसने आवाज सुनी और मुड़कर देखा तो शनाया उस आदमी के शरीर से घूमता हुआ खंजर निकाल रही थी। उसके पास तलवार और खंजर दोनों थे।

मैं तुम्हें ही ढूंढ रहा था।
“मेरी मदद करने के लिए? मुझे मदद की जरूरत नहीं है,” वह हंसते हुए बोली।
एक और सैनिक पीछे से आया; उसने अपने शरीर को मरोड़ा और घुमाया, सैनिक की आंतें चीरते हुए अपनी तलवार उसके गले में घोंप दी।
उसकी धड़कन तेज़ हो रही थी और लड़ाई में शामिल होने के कारण, उसके शरीर में हमेशा ही एड्रेनालाईन का प्रवाह होता रहता था। उसने उठने की कोशिश की, लेकिन उसके पैर कमज़ोर पड़ने लगे, और तभी दो सैनिक शनाया के पास पहुँचे और उसने उसकी मदद की।
एक तेज प्रतिक्रिया के साथ, उसने उनकी ओर दो तीर चलाए - दोनों तीर उनके माथे को भेदते हुए उन्हें जमीन पर गिरा दिया।
"दिखावा करने वाली," उसने मुस्कुराते हुए कहा।
कर्ण ने मुस्कुराकर जवाब दिया। उसे महसूस हो रहा था कि किसी कारणवश उसे सांस लेने में तकलीफ हो रही है और यह बात उसे बहुत परेशान कर रही थी।
क्या ये मेरे पैनिक अटैक की वजह से है?
"वे कौन हैं?" उसने अपना ध्यान भटकाने की कोशिश करते हुए पूछा।
“कल्यावन के आदमी। लगता है वे हमारा पीछा कर रहे थे…” एक और सैनिक आया, और उसने पलक झपकते ही उसका गला फिर से काट दिया।
आपको अच्छी तरह से प्रशिक्षित किया गया है।
“मैं प्रभावित करना चाहती हूँ,” उसने हंसते हुए कहा। “क्या तुम ठीक हो?” नहीं, मैं बस…
कर्ण को अक्सर इस स्थिति का सामना करना पड़ता था और ऐसा तब होता था जब वह तनावपूर्ण स्थिति में होता था। उसके विचार आपस में उलझने लगते थे और उसे सांस लेने में दिक्कत होने लगती थी।
“सब ठीक हो जाएगा। चिंता मत करो। तुम्हें इसमें शामिल नहीं होना चाहिए था।”
"नहीं, सब ठीक है।"
उसके पैर कमजोर पड़ गए थे। उसे दौरा पड़ रहा था। लेकिन क्यों? इस समय उसे असफलता का डर नहीं था, लेकिन ये दौरे आते-जाते रहते हैं, कभी-कभी इनके पीछे कोई कारण भी नहीं होता।
“तुम्हें इससे लड़ना होगा,” उसने उसके कान में फुसफुसाते हुए कहा।
"मुझे पता है।"

“□□□□! □□□□, □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□”
"□□□!"
□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□, □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□...
□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□...
□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□, □□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□

53

कर्ण झटके से जाग उठा।
लेकिन वह सपना नहीं देख रहा था। उसके पूरे शरीर पर पट्टियाँ बंधी हुई थीं, लेकिन वह यहाँ था, शायद किसी तंबू में। और जब वह जागा, तो उसने अपने सामने मौजूद परछाई को जगा दिया, जो तुरंत उसकी ओर बढ़ी और पूछा:
"तुम ठीक हो?"
It was Shanaya.
उसने पलकें झपकाईं। उलझन में। "क्या हुआ?"
“सब खत्म हो गया। शांत हो जाओ। हमने उन्हें हरा दिया है।” उसने मुस्कुराते हुए उसके बालों में उंगलियां फेरकर उसे शांत किया।
"तुम यहां क्यों हो?"
मुझे चिंता हो रही थी। मुझे उम्मीद है कि आपको बुरा नहीं लगेगा, मैं तम्बू के दूसरी तरफ सोया था, इसलिए चिंता मत कीजिएगा।
कर्ण ने अपने जबड़े भींच लिए। उसे यह बात पसंद नहीं आई कि शनाया इतनी विनम्रता से पेश आने और करीब आने की कोशिश कर रही थी, लेकिन फिर भी उसे आभारी होना चाहिए था।
“वहां तुम्हारे साथ क्या हुआ था?”
कर्ण ने सिर हिलाया। “मुझे बचपन से ही ये दौरे पड़ते हैं। ऐसा तब होता है जब मुझे लगता है कि मैं हार रहा हूँ,” वह रुका। “मुझे लगा था कि मैंने इस पर काबू पा लिया है, लेकिन बस…”
“क्योंकि तुम्हें हारना पसंद नहीं?” उसने पूछा।
“हां,” उसने आह भरी। “मैंने हमेशा खुद को असफल ही समझा है।”
"तो शायद आपको इस पर गर्व होना चाहिए।"
"आपका क्या मतलब है?"
“असफल होने के लिए बहुत कुछ करना पड़ता है,” वह खिलखिलाकर हंस पड़ी, उसके बाल खुले हुए थे और उसने उसके काले बालों को देखा, जो उसकी पीठ पर एक गहरी

खाई की तरह बह रहे थे, साथ ही उसकी तीखी नाक और स्पष्ट जबड़ा भी। “असफल होने के लिए कई तरह की चीजें आजमानी पड़ती हैं।”
"यह अच्छा एहसास नहीं है।"
“असफलता से भी ज़्यादा, डर ही तुम्हें अंदर से खा जाता है, वासु,” उसने कहा। “हम सब असफल होते हैं। मेरा मानना है कि यह जीवन का एक हिस्सा है।”
और यह ऐसी बात है जिसे मैंने अब तक स्वीकार नहीं किया है।
“मुझे पता है। आप मुझे अब राजा नहीं समझते होंगे। आखिर युद्ध में कौन गिरता है?”
“तुम मदद करने आए हो। यही बात तुम्हारी जीत या हार से ज़्यादा मायने रखती है।” वह थोड़ी देर रुकी, उसकी नज़रें उसकी नंगी छाती पर टिक गईं। “ट्यूलिप जैसे कुछ बारहमासी फूल होते हैं, जो उगने पर गिर जाते हैं और फिर दोबारा उग आते हैं। साल दर साल, वे खिलते हैं, गिरते हैं और फिर खिलते हैं। लेकिन उनकी सुंदरता, उनकी खुशबू, कभी नहीं बदलती। यह हमेशा बनी रहती है। गिरने की चिंता नहीं करनी चाहिए, बल्कि उठना ही महत्वपूर्ण है,” उसने आह भरी। “तुम्हें अपनी साँसों पर ध्यान देना चाहिए। मुझे पता है, इसका तुम पर जादुई असर होगा।”
मुझे पता है। मैं कोशिश करता हूँ।
“जब आप तैयार हों, तो मेरे पिता से मिलें। वे आपसे बात करने के लिए उत्सुक हैं।” वह मुस्कुराई और फिर दरवाजे की ओर बढ़ने लगी, तभी उसने कहा:
"क्या चल रहा है?"
"हाँ?"
“उस छोटी लड़की का क्या हुआ जिसने सोचा था कि दुनिया खत्म हो गई है क्योंकि उसने अपनी माँ को कल्यावन की सेनाओं के हाथों खो दिया था?”
वह मुस्कुराई। “वह यहीं है, वासु। वह कहीं गई ही नहीं।”
कर्ण ने सिर हिलाया। उसे याद आया कि पहले जब वह उससे मिला था तो वह कैसे रोती थी और अपनी माँ की मृत्यु का बदला कल्यावन से लेना चाहती थी, लेकिन अब वह शांत लग रही थी।
वह उसे छोड़कर चली गई और वह वहीं चुपचाप पड़ा रहा।
मुझे आर्किमिडीज से मिलना चाहिए।

कर्ण तम्बू से बाहर निकला और उसने देखा कि दलदली भूमि के पूर्व में, जहाँ वे लड़ रहे थे, वन की सीमाओं के भीतर एक शिविर स्थापित किया गया था, जिसमें वर्षा से बचाव के लिए पत्तों का आवरण बनाया गया था। वहाँ लगभग एक हजार सैनिक क्षितिज तक कतार में खड़े थे और वे सभी अलग-अलग कोनों में दावत कर रहे थे और पेय पी रहे थे। उसने सत्य को अपने सिर पर मिट्टी का घड़ा रखकर नाचते देखा, और सत्य ने उसे देखते ही अपने राजा से मिलने के लिए दौड़ पड़ा। "अरे, तुम तो मर ही जाते।"
"यूनानियों के हमले की वजह से मैं बेहोश नहीं हुआ था।"
"तब?"
“यह मेरी निजी समस्या थी।” वह अपराधबोध से ग्रस्त था और सबसे बढ़कर, खुद को कमजोर महसूस कर रहा था। वह ऐसा महसूस नहीं करना चाहता था।
“बहुत खूब। हमारे जीवन की इस सबसे कठिन लड़ाई के दौरान हमें बस इसी की जरूरत थी। एक ऐसा राजा जिसे खुद कोई समस्या हो।”
सत्या से मिलने वाली व्यंग्यात्मक टिप्पणियों पर कर्ण ने अपनी आँखें घुमाईं। "तुम्हें पता है, एक बूढ़ा द्वितीय-कमांड भी कोई खास मददगार नहीं होता।"
"किसने तुम्हें बूढ़ा कहने की हिम्मत की?"
“लेकिन हमने कितने लोगों को खोया?” कर्ण की आवाज गंभीर हो गई।
“एक, शायद दो। ज्यादा नहीं। म्लेचा जनजाति ने अपने दुश्मनों से काफी अच्छे से निपटा था।”
कर्ण ने पीछे से आती आवाज सुनकर कंधे उचका दिए।
“कर्ण!”
अपना नाम सुनकर वह मुड़ा, और सत्या भी मुड़ा, तो उसने देखा कि एक अधेड़ उम्र का आदमी, जिसकी सुनहरी दाढ़ी और लंबे काले बाल दो चोटियों में बंधे हुए थे, भारी कवच पहने हुए था और अपनी कमरबंद के दोनों ओर दो-दो कुल्हाड़ियाँ लिए हुए था।
उन चोटियों को देखकर ही कर्ण को पता चल गया था कि वह कौन है।
“आर्किमिडीज,” उसने कहा। “कैसे हो?”
उन्होंने एक दूसरे को गले लगाया।
“आओ मेरे साथ एक ड्रिंक लो,” उसने कहा।

कर्ण ने सिर हिलाया, उसकी नजर दूर से शनाया की उदास निगाहों पर पड़ी और उसने धीरे से उसे देखकर मुस्कुराया; शनाया ने भी मुस्कुराकर जवाब दिया।

वे अपने तंबुओं के अंदर बैठे थे। रोड भी वहीं था, और आर्किमिडीज ने उसे शराब का एक प्याला दिया और फिर खुद भी एक गहन, बेरोक-टोक शराब पीने के सत्र में डूब गया।
"मुझे पता था कि ऐसा ही होगा," उसने गिलास को एक तरफ फेंकते हुए कहा।
उसने देखा कि तंबू में कागजों के ढेर, थैले, हथियार और धुंधली रोशनी वाली मशालों के अलावा और कुछ नहीं था।
और वह क्या होगा?
“हमला। कल्यावन काफी समय से मेरे पीछे पड़ा है। उसे लगता है कि मैं अपनी पत्नी के साथ जो हुआ उसका बदला लूंगा।” उसकी बोली में एक विदेशी, अनोखा लहजा था। “लेकिन अफसोस, मैं अपने उत्तरी किलों से निकलकर खुले में आ गया, क्योंकि मुझे तुमसे मिलना था, भाई,” उसने कर्ण के कंधे पर थपथपाते हुए कहा। “तुमने अच्छा ही किया है।”
कर्ण ने विनम्रता से मुस्कुराते हुए कहा, "जरूरत के समय मेरी मदद करने के लिए धन्यवाद।"
जब मैंने तुम्हें देखा था, तब तुम एक असहाय, अपने ही घर में जमे हुए लड़के थे। अब तुम्हें देखो, तुम्हारे सिर पर ताज है और तुम्हारे शब्दों से राजसी भाव झलक रहा है।
मैं अभी भी अंतरिम राजा हूं।
"अरे, राजनीति से मुझे कोई लेना-देना नहीं है। लेकिन जो बात मेरे लिए मायने रखती है, वह यह है कि मैं यहां आया हूं, खुद को सबके सामने लाया हूं, क्योंकि मैं चाहता हूं कि आप और मैं साथ मिलकर इसमें भाग लें।"
"क्या तुम मुझसे लड़ना चाहते हो?"
“कल्यावन का इकलौता साथी जरासंध है। चलो उसे मार डालते हैं,” उसने मुस्कुराते हुए कहा। “तुम और मैं। इससे कल्यावन कमजोर पड़ जाएगा और फिर वो मेरा हो जाएगा।”
"तुम ऐसे राजा का साथ क्यों देना चाहते हो जिसकी सेना इतनी छोटी है?"

"क्योंकि तुम मुझे वैधता प्रदान करोगे।"
आह, यह रहा।
कर्ण मुस्कुराया। “वैधता? आपको वह क्यों चाहिए? क्या आप उत्तर में खुश नहीं हैं?”
“एक दिन मैं नीचे जाकर बसना चाहता हूँ, जहाँ मैं सुरक्षित रह सकूँ। और अंगा, जो यहाँ से थोड़ी दूर है, रहने के लिए अच्छी जगह है। आपके साथ साझेदारी करने से मुझे चिंता करने की ज़रूरत नहीं होगी, क्योंकि मुझे राजा का सहयोगी माना जाएगा।” वह रुका, पास झुकते हुए, उसके मुँह से मटन की महक आ रही थी। “आपको समझना चाहिए, भरत के महाराजा धृतराष्ट्र को मेरी कोई परवाह नहीं है। उन्होंने मुझे सिर्फ इसलिए गद्दार और अपराधी करार दिया क्योंकि जरासंध ने ऐसा किया था। लेकिन अगर मैं आपके साथ हूँ, तो मैं वैध कहलाऊँगा।” कर्ण ने उस यूनानी व्यक्ति की आँखों में हताशा देखी। वह जानता था कि वह बातचीत करने की स्थिति में है। "लेकिन इससे मेरी प्रतिष्ठा को नुकसान होगा।"
“मुझे पता है। म्लेचाओं का साथ देना। और तुम सही हो। ऐसा ही होगा। लेकिन नरक के क्रोध में, इससे तुम्हें क्या फर्क पड़ता है? तुम तो राजा हो!” आपको महाराजा से क्षमा प्राप्त करनी होगी।
“आप ही राजा हैं!” उसने कहा। “महाराजा का आपके स्थान पर कोई शासन नहीं है।” लेकिन जब तक वह मुझे सत्ता की बागडोर नहीं सौंप देता, मैं उसका जागीरदार ही रहूंगा।
सैद्धांतिक रूप से देखा जाए तो, कर्ण जानता था कि शास्त्रों के अनुसार वह म्लेच्छों को जबरन भर्ती किए गए भाड़े के सैनिकों के रूप में अपने पक्ष में कर सकता है। धृतराष्ट्र इस पूरी बात पर कुछ नहीं कहेंगे, सिवाय थोड़ा क्रोधित होने के। लेकिन जब तक म्लेच्छ अच्छा व्यवहार करते, कर्ण नियमों का उल्लंघन नहीं कर रहा होता।
लेकिन, वह अब भी एक जागीरदार था।
“आप जानते हैं, हाल ही में मेरी मुलाकात आपकी जाति के एक राजनेता से हुई।
वे काफी बुद्धिमान थे। उन्होंने मुझे आपके नियमों और विनियमों के बारे में कुछ बताया,” उन्होंने हंसते हुए कहा। “इस तर्क में कुछ कमियां हैं।
क्या मैं उन पर बात कर सकता हूँ?”

कर्ण पीछे की ओर झुक गया। अपनी भौंहें उठाते हुए उसने रोड की ओर देखा, जो बस एक मूक दर्शक बना हुआ था। "बेशक।"
“कार्यवाहक राजा के रूप में कार्यवाहक राजा भी अपने शासनकाल के दौरान म्लेच्छों को वैध बना सकता है। उसे क्षमादान की आवश्यकता नहीं होती है।” "हां, लेकिन अगर मैं पूर्ण शासक नहीं हूं, तो आपकी क्षमा रद्द की जा सकती है।"
मुझे पक्की चीजों पर दांव लगाना पसंद है। और मुझे पता है कि तुम एक पक्की चीज हो, बच्चे।
"लेकिन इसके लिए भी आपको..." और वह रुक गया, उसका खून जम गया।
तो बस यही था। शुरू से यही योजना थी। इसीलिए…
“तुम्हें शादी करनी ही होगी,” कर्ण ने आह भरी। “हाँ, तो इसीलिए तुमने शनाया को भेजा था, है ना?”
आर्किमिडीज ने शरारती मुस्कान के साथ कहा, "तुम जल्दी सीख जाते हो, बच्चे।" और इसीलिए शनाया ने पांचाली के बारे में पूछा... वह यह सुनिश्चित करना चाहती थी कि मेरी शादी तो नहीं हो गई है।
लेकिन… मैं किसी और से प्यार करता हूँ।
“सोचो तो सही, बच्चे। तुम्हें दो हज़ार सैनिक, योद्धा, उन्मादी और पागल लोग मिलेंगे जो तुम्हारे लिए जान दे देंगे। क्या तुम सच में वो ‘लेकिन’ कहना चाहते हो?”
कर्ण हिचकिचाया। प्रलोभन प्रबल था।
तब वह जीत सकता था।
वह निश्चित रूप से ऐसा कर सकता था। लेकिन उसे शनाया से कुछ और भी महत्वपूर्ण बात करनी थी। अगर उसे उसके लिए ऐसा निर्णय लेना था, तो उसे यह करना ही था।
उन्होंने कहा, "मैं कोई फैसला लेने से पहले उनसे मिलना चाहूंगा।"

उन्हें सोचने-समझने के लिए एकांत और समय दिया गया था, और हालांकि उन्होंने सत्या को नहीं बताया था, वे जानते थे कि उन्हें विरोध का सामना करना

पड़ेगा। लेकिन अपनी वर्तमान सेना से दस गुना बड़ी सेना जुटाकर जरासंध का सीधे सामना करने का विचार अब संभव था। लेकिन क्या यह सही कदम था?
न सिर्फ अपने लोगों के लिए, बल्कि…पांचाली के लिए भी?
वह कर्ण के साथ न रहने के बारे में स्पष्ट थी। उसने कर्ण से कहा था कि उसकी नियति अर्जुन से विवाह करना है, तो फिर क्यों परेशान होना? फिर भी, कर्ण का दिल उसके लिए तड़पता रहा।
और उसका मन उस दिन की यादों में खो गया जब उसने नियमों का उल्लंघन करते हुए गुरुकुल छोड़ दिया था, वह उससे मिलने और उसे चेतावनी देने के लिए भाग गया था कि द्रोण उन पर हमला करने आ रहा है।
लेकिन जिस तरह से यह सब हुआ, वह उनकी उम्मीदों से बिल्कुल अलग था।

54

चार साल पहले…
पंचाल साम्राज्य, कामपिल्या
पंचाल साम्राज्य की राजधानी दक्षिणी भाग में स्थित कामपिल्या थी, लेकिन इसके बावजूद, पृष्ठभूमि में हिमालय पर्वतमाला अपनी बर्फीली चोटियों के साथ विशालकाय पर्वतों की तरह फैली हुई थी। दक्षिण में चारमनवती नदी और पूर्व में नैमिषा वन था। पश्चिम में मत्स्य, सुरसेना और कुरु पर्वतमाला से घिरे होने के कारण यह क्षेत्र घने जंगलों से आच्छादित था और यहाँ कभी-कभी हिमपात भी होता था।
और पूरा राज्य दो भागों में बँटा हुआ था, जिसमें उत्तरी राज्य मैदान के निचले छोर पर स्थित था, कम विकसित और जिसका ठीक से उपयोग नहीं किया जाता था। पंचाल के पास व्यापारिक केंद्र नहीं थे और नौसैनिक वर्चस्व तो उनके लिए एक दूर की कौड़ी थी, लेकिन वे हर तरह के आभूषण, गहने, आधुनिक कपड़े बुनने और विनिर्माण भवनों के निर्माण में निपुण थे। पंचाल व्यापारियों का गढ़ था।
यह एक जीवंत राज्य था, जिसमें सुंदर सुनहरे, अलंकृत महल थे। इन पर शायद ही कभी हमले होते थे, क्योंकि ये चारों ओर से अच्छी तरह से सुरक्षित थे और एक सुव्यवस्थित स्थान पर बसे हुए थे। गंगा नदी भी यहीं से बहती थी और पंचाल के उत्तरी भाग को उसी प्रकार विभाजित करती थी जैसे वह अधिकांश राज्यों के साथ करती आई थी।
तब तक कर्ण वहाँ पहुँच चुका था और उसने पाँचाली को सूचना दी थी। पाँचाली उसे देखकर प्रसन्न तो हुई, लेकिन खबर सुनकर प्रसन्न नहीं हुई। अब वे राज्य के सार्वजनिक कक्ष में थे, जहाँ पाँचाली के माता-पिता अपने सिंहासन पर विराजमान थे, जबकि दर्शक दोनों ओर बँटे हुए थे और हल्के रंग के कवचधारी सैनिक उपस्थित थे।
पांचाली की माता कोकिला देवी थीं, जो कद में छोटी थीं, लेकिन उनकी आंखें अपनी बेटी की तरह ही पैनी थीं। द्रौपद एक मजाकिया, दुबले-पतले, गंभीर चेहरे

और शांत स्वभाव के व्यक्ति थे। पांचाली उनके बगल में बैठी थी, मानो कुछ ज्यादा ही चिंतित हो।
“तो आपका मतलब यह है कि गुरु द्रोण मेरे बचपन में किए गए एक छोटे से वादे के कारण मेरे घर पर हमला करने वाले हैं?” द्रौपद ने स्पष्ट किया।
कर्ण को दर्शकों की इस मूर्खता पर कानाफूसी और हंसी सुनाई दे रही थी। "हाँ महाराज।"
“क्या आप उनके गुरुकुल का हिस्सा नहीं थे?”
"हाँ महाराज।"
मुझे कैसे पता चलेगा कि यह उसकी कोई साजिश नहीं है?
कर्ण को कड़ाके की ठंड लग रही थी और इससे पहले कि वह अपना बचाव कर पाता, पांचाली ने अपने सजे-धजे वस्त्रों को ठीक करते हुए कहा: “पिताजी, मैं उसकी गवाही देती हूँ। वासु झूठ नहीं बोलेगा।”
“सचमुच, तुमने मेरी बेटी को चोट पहुँचाई है। बच्ची, मैंने तुम्हें कितनी बार कहा है कि ऐसे नीच लोगों की संगति में मत रहो? वह एक ड्राइवर का बेटा है। वह झूठा है। हो सकता है वह अभी भी झूठ बोल रहा हो।”
कर्ण का मन किया कि वह राजा को घूंसा मार दे, लेकिन उसने पांचाली की खातिर खुद को रोक लिया।
“मैं उसे जानती हूँ पिताजी,” पंचाली ने सख्ती से कहा। “मुझ पर भरोसा कीजिए।”
“और मुझे पूरा भरोसा है कि मैं ऐसा ही करूँगा,” द्रौपद आगे झुकते हुए, स्पष्ट रूप से ऊबते हुए बोला। “तो अब तुम मुझसे इस जानकारी का क्या करवाना चाहते हो, लड़के?”
कर्ण असमंजस में था। वह जानता था कि उसे द्रौपद को बताना ही होगा, लेकिन उसे यह समझ नहीं आ रहा था कि इसके अलावा और क्या किया जा सकता है। "अपनी रक्षा व्यवस्था को मजबूत करो?"
“कानून के नियमों के अनुसार, मैं महाराजा धृतराष्ट्र का जागीरदार हूँ। धृतराष्ट्र के अधीन गुरु द्रोण जैसे लोग मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकते। इसलिए आप लोग चिंता करना छोड़ दें और ये झूठे दावे मेरे सामने लाना बंद करें,” वह हँसते हुए बोले। “और अगर वह हमला भी कर दे, तो मेरे सैनिक कुछ बिगड़े हुए, अप्रशिक्षित बच्चों से लड़ सकते हैं।”

वह अपने ही भले के लिए हद से ज़्यादा घमंडी था। कर्ण जानता था कि वह ऐसा कर सकता है, लेकिन वे अप्रशिक्षित नहीं थे। पहले ही साल में, विशेष रूप से पांडवों ने काफी प्रगति दिखाई थी।
“और इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह है कि मेरे स्वयं के धृष्टद्युम्न मुझे चेतावनी देने नहीं आए, बल्कि तुम्हारे जैसा एक किसान आया है?” उन्होंने उस लड़के की ओर इशारा किया जो द्रोण की बातों को ध्यानपूर्वक सुन रहा था।
“मैंने नियम तोड़े, इसीलिए। आपका बेटा ऐसा नहीं करेगा। वह आपको नष्ट करने के अभियान में शामिल हो जाएगा क्योंकि नियम यह है कि गुरु द्वारा दक्षिणा के रूप में मांगी गई चीजों का पालन किया जाए।”
और कई लोगों ने ऐसा किया भी।
“यह सच है। और मैं अपने बेटे को इसी वजह से प्यार करता हूँ। वह नियमों का पालन करता है और वह तुम्हारे जैसा विद्रोही नहीं है?”
कर्ण ने ऊपर देखा। उसने अपने जबड़े भींच लिए। वह यहाँ केवल इसलिए आया था क्योंकि वह पांचाली की सुरक्षा को खतरे में नहीं डाल सकता था। अगर गोलीबारी में उसका अंत बुरा हुआ तो वह इसे बर्दाश्त नहीं कर पाएगा। “उन्हें आने दो,” द्रौपद ने कहा। “हम देखेंगे। और अगर वह आ गया, और अगर हमारी लड़ाई हुई, तो मैं तुम्हें उसके हवाले कर दूंगा, यह कहकर कि तुमने नियम तोड़े हैं और तुम्हें देश निकाला दिया जाना चाहिए।”
"क्या…"
लेकिन इससे पहले कि वह कोई प्रतिक्रिया कर पाता, गार्ड आ गए, उसे पकड़ लिया और जमीन पर धकेल दिया।
“पिताजी!” उसने पांचाली की आवाज सुनी…
लेकिन बहुत देर हो चुकी थी।
उसे पहले ही लोग घसीटते हुए जेल की कोठरियों की ओर ले जा रहे थे, उसके दिल का गुस्सा उसके चेहरे पर झलक रहा था और घोर विश्वासघात की भावना उसके अंदर उमड़ रही थी।

कर्ण तब तक कठोर, कंक्रीट की दीवारों पर मुक्के मारता रहा जब तक उसकी मुट्ठी से खून नहीं निकलने लगा और फिर उसने अपना सिर भी उन पर पटकना शुरू कर दिया।
मैंने न सिर्फ इस चीज़ के लिए गुरुकुल में अपनी पूरी ट्रेनिंग दांव पर लगाई, बल्कि यह बेवकूफ आदमी और भी जोखिम उठा रहा है...
और तभी उसके विचारों में खलल पड़ा जब उसने… ज़ोर-ज़ोर से रोने की आवाज़ें सुनीं। चीखें। चिल्लाहट।
कर्ण तुरंत जेल की कोठरी की छत पर चढ़ गया, रेलिंग को पकड़ लिया और उसे केवल सड़कें ही दिखाई दे रही थीं, लेकिन कदमों की आहट—लोग इधर-उधर भाग रहे थे और सरपट दौड़ रहे थे…
तभी एक सिपाही आया और सीधे ग्रिल के सामने गिर पड़ा, उसका बेजान चेहरा कुछ ही मीटर दूर था। कर्ण ने खुद को पीछे धकेला, ज़मीन पर गिर पड़ा और अचानक उसकी त्वचा में ठंडक सी दौड़ गई। उसे गले में एक गांठ सी महसूस हुई जिसे उसने निगल लिया, तभी उसे कदमों की आहट सुनाई दी। तेज़ कदमों की आहट! और उसने एक परछाई को अपने कारागार के दरवाजे की ओर रेंगते हुए देखा…
केवल खोलने के लिए।
और परछाई ने खुद को परिचित, सुंदर पांचाली के रूप में प्रकट किया, जो बेहद चिंतित और पसीने से तर थी।
“मैंने भेष बदलकर यहाँ आकर वार्डन से चाबी चुरा ली,” उसने कहा। “मुझे बहुत अफ़सोस है, वासु। ये सब मेरी गलती है…”
"नहीं - नहीं…"
उनकी बातचीत के बीच एक धमाके की आवाज गूंजी और वे दोनों डर गए, फिर उन्होंने एक-दूसरे की बाहों को कसकर पकड़ लिया।
“तुम्हें यहाँ से भागना होगा,” उसने कहा। “अभी निकल जाओ।”
लेकिन आपके बारे में क्या?
“सभी महिलाएं पूर्वी चौकी पर इकट्ठा हो रही हैं और हम ठीक रहेंगे। लेकिन मुझे आपके और भी बड़ी मुसीबत में पड़ने से पहले आना पड़ा। मुझे लगभग ऐसा लगता है कि बदकिस्मती आपका पीछा कर रही है।”
कर्ण ने अपनी भौंहें उठाईं। "मुझे इसके बारे में बताओ।"
“हाँ। मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि उस बूढ़े आदमी ने मेरे भाई को भी इस योजना में शामिल होने के लिए मना लिया। लेकिन फिर, वह तो हमेशा नियमों का

पालन करने वाला ही था। तुम तो कुछ अलग ही किस्म के हो, है ना? तुम तो दुनिया के नियमों के खिलाफ जाते हो।”
"मैं आदेशों का अंधाधुंध पालन नहीं करता, खासकर अगर मेरे प्रियजन खतरे में हों।"
यह सुनकर वह मुस्कुराई; एक प्यारी, मधुर मुस्कान। “काश, मैं तुम्हारे साथ और समय बिता पाती, वासु। हमें बहुत सी बातें करनी हैं। मुझे उम्मीद है कि पिताजी इस समस्या का समाधान कर देंगे…” रोना और भी तीव्र हो गया। “लेकिन अगर तुम कभी यहाँ आस-पास हो, तो ज़रूर आना। हम मिलेंगे।”
वे मुस्करा उठे।
“मैं अब चलती हूँ,” उसने कहा। “अपना ख्याल रखना, वासु।”
उसके पेट में खुशी और उत्साह की लहर दौड़ गई।
इन सब देवताओं को भाड़ में जाने दो, मुझे बस इसे करने दो।
इससे पहले कि वह जा पाती, उसने उसका हाथ पकड़कर उसे अपनी ओर खींच लिया और अपने होंठ उसके होंठों पर रखकर उसे पूरी ताकत से चूम लिया। जब वह पीछे हटी तो उसके चेहरे पर एक मुस्कान फैल गई; वह उसे एक अलग नजरिए से, एक अलग भाव से देख रही थी।
उन्होंने कहा, "मुझे यह करना ही पड़ा।"
“तुम…” वह हंस पड़ी। “तुम वाकई कुछ खास हो।”
"खैर, यह एक तारीफ है।"
"अब जाओ!"
और कर्ण ने वैसा ही किया। उसने इंतजार नहीं किया। लेकिन क्या वह सचमुच ऐसा कर सकता था?

55

द्रोण ने अपनी छड़ी को कीचड़ भरी जमीन पर पटका और धैर्यपूर्वक अपने सामने स्थित महल के ढहने की प्रतीक्षा करने लगे।
और फिर वह शहर की मुख्य सड़कों पर आगे बढ़ता गया, जहाँ लाशें कतार में लगी हुई थीं, उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था।
सच कहें तो, वह हमेशा से लंगड़ाकर चलता था, लेकिन उसे इसकी ज़्यादा परवाह नहीं थी। वह छड़ी के बिना भी जी सकता था, लेकिन जब वह उसे हाथ में पकड़ता था तो वह उसे एक डरावना रूप दे देता था।
द्रोणा आगे बढ़ा, क्योंकि उसने देखा कि उसके छात्र बड़ी आसानी से सैनिकों से लड़ रहे थे। वे फुर्तीले, युवा और चुस्त थे। उनका हाल ही में प्रशिक्षण हुआ था।
द्रोण यह भी जानते थे कि दक्षिणा और उसके पुराने नियमों का बहाना बनाकर, जो बहुत पहले अन्य ऋषियों द्वारा बनाए गए थे, वे धृतराष्ट्रों को आसानी से अपने वश में कर सकते थे। धृतराष्ट्र भले ही क्रोधित हों, उन्हें रहने दीजिए। द्रोण उन्हें हमेशा यही कह सकते थे कि वे विधि के नियमों का पालन कर रहे हैं। उनके शिष्य दक्षिणा अदा कर रहे थे। और भले ही उन्होंने इसकी योजना बनाई थी, वे स्वयं प्रत्यक्ष रूप से इसमें शामिल नहीं थे। इसके अलावा, पंचाल एक नया राज्य था, एक जागीरदार ज़रूर था, लेकिन महाराजा को इसकी चिंता नहीं होगी, अगर एक दिन यह राख हो जाए। यह एक भूले-बिसरे वादे की बात थी, और भरत में किसी मित्र से किया गया वादा हर हाल में निभाना होता था। महाराजा इस बात पर विश्वास करते थे, भले ही वे वादों से बचने का तरीका जानते थे।
और एक और कारण था। निवेश का कारण, जिसके बारे में द्रोण ने महाराजा द्वारा मांगे जाने पर उन्हें देने का सोचा था।
और इसका कारण उसके साथ चलना था। वह युवक अपने धनुष और बाण लिए हुए निशानेबाजी कर रहा था।

नहीं। वह अर्जुन नहीं था। बल्कि वह उसका अपना बेटा था, जिसके माथे पर मैनीक्योर की आकृति का टैटू बना हुआ था।
“ड्राउनी,” उसने अपने बेटे को पुकारा, “यह तुम्हारा होने वाला है।”
जी पिताजी।
वह जलते हुए महल के बाहर खड़ा था, और जल्द ही उसने अपने छात्रों को देखा— अर्जुन का धनुष और बाण द्रौपद की ओर तना हुआ था, जबकि भीम द्रौपद को गले से पकड़कर घसीटते हुए द्रोण के चरणों के सामने ला रहा था।
वह घायल था और सिसकते हुए उसने द्रोण के चरणों को छुआ।
इसके बजाय द्रोण ने द्रौपद की पीठ पर अपनी छड़ी रखी और कहा, "यह तुम्हारे वादे को पूरा न करने के लिए है।"
“यह बचकाना था…”
“नहीं। ऐसा नहीं था। मेरे लिए नहीं। मैं अपने बेटे के साथ यहाँ आई थी, आपसे अपने हिस्से की भीख माँग रही थी, और आपने मुझे भगा दिया। और इसलिए, आपके इस कृत्य के कारण यह सब हुआ है और आपके इतने सारे आदमी अब मर रहे हैं।” “क्या—क्या चाहते हो?” उसने कहा और ऊपर देखा, उसके मुंह से खून निकल रहा था।
“मुझे अपना आधा हिस्सा चाहिए,” उसने पहाड़ियों की ओर इशारा करते हुए कहा। “पंचाल का उत्तरी भाग। मेरा पुत्र अश्वत्थामा उस पर शासन करेगा।”
“इसे ले लो,” उसने हताशा से कहा और हाथ जोड़ लिए। “मुझे यह नहीं चाहिए।” उसे अत्यधिक खुशी का अनुभव हुआ। उसकी योजना सफल हो गई थी।
लेकिन धृतराष्ट्र को इस बात का पता चल जाएगा…
द्रोणा ने अपनी छड़ी और जोर से दबाई और एक कराहने की आवाज़ सुनी। “यह एक और बात है। अगर तुम अपनी औरतों को ज़िंदा रखना चाहते हो, तो उससे एक शब्द भी मत बोलो।”
लेकिन…लेकिन…उसे इसके बारे में पता चल जाएगा।
"तो फिर इनकार कर दो। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। ऐसा दिखाओ जैसे कुछ हुआ ही नहीं।"
लेकिन बात फैल जाएगी।
“जब तक तुम इसे नकारते रहोगे, यह सच नहीं है। वरना, मेरे प्रिय अर्जुन, मीनारों पर चढ़कर तुम्हारी बेटी की हत्या कर देगा।”

द्रोण ने देखा कि अर्जुन की आँखों में चिंता की एक झलक दिखाई दी। वह ऐसा नहीं करना चाहता था और क्यों करता? वह उससे प्रेम करता था। लेकिन द्रोण उसके गुरु थे और यदि चुनाव करना ही था, तो उसे अपने गुरु को चुनना था, न कि किसी ऐसी वेश्या को जिसके प्रति उसका साधारण आकर्षण था।
“ठीक है, ठीक है। मैं करूँगा।”
“उत्तरी पंचाल के लिए अश्वत्थामा अच्छा साबित होगा। वह शस्त्रागार को बढ़ाएगा और मुझे गर्व महसूस कराएगा। उत्तरी पंचाल एक सैन्य क्षेत्र होगा।”
“हां, हां,” द्रौपद ने विनती की।
"अच्छा।"
तब पंचाल के राजा ने ऊपर देखकर कहा, “यह कैसे संभव है कि तुम मेरे ही पुत्र को मेरे विरुद्ध षड्यंत्र रचने और प्रभावित करने में सफल रहे…लेकिन उस कमजोर सूतपुत्र को नहीं? कैसे?”
Sutaputr…
द्रोणाचार्य जानते थे कि कर्ण को ही इस युद्ध का नेतृत्व करना है, लेकिन जाने से ठीक पहले वह गायब हो गया। सुयोधन को भी नहीं पता था कि वह कहाँ है, और यह अजीब बात थी। शायद सुयोधन को लगा होगा कि वह बाद में यहाँ आकर उसकी मदद करेगा... द्रोणाचार्य ने इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया क्योंकि उनकी नज़र राज्य पर थी। लेकिन यह सुनकर उनके मन में चिंता जाग उठी।
"आपका क्या मतलब है?"
वह हमें यह चेतावनी देने आया था कि आप सब आ रहे हैं।
“कर्ण…मेरा कर्ण?” विश्वासघात का एक गहरा घाव द्रोण के हृदय में चुभ गया और उन्हें लगा जैसे उनके पैर कांपने लगे हों।
“आप ऐसा कैसे कर पाए…”
"कहाँ है वह?"
“यहाँ। जेल में।”
क्योंकि वह उतना कमजोर नहीं है जितना आप सोचते हैं।
वह बिल्कुल विपरीत है।
द्रोण ने अपनी भूरी आँखों से अर्जुन की ओर देखा, जो चुपचाप इस बातचीत को सुन रहा था, तभी द्रोण ने कहा: "उसे ढूंढो।"
अर्जुन ने सिर हिलाया।

56

कर्ण के पास कोई हथियार नहीं थे।
और जैसे ही वह भाग रहा था, नदी बहने वाली घाटी की ओर बढ़ रहा था, जहाँ से वह आया था वहाँ से चट्टानें पहाड़ियों से नीचे लुढ़क रही थीं, उसकी नज़र अपने पीछे की परछाई की ओर पड़ी। वह तेज़ी से हिली और गायब हो गई, जैसे ही उसने मुड़कर देखा कि वह कौन है:
अर्जुन।
“गुरुजी ने मुझे तुम्हें ढूंढने के लिए कहा था,” उसने कर्ण की ओर धनुष और बाण ताने हुए कहा। “लेकिन उन्होंने यह कभी नहीं कहा कि मुझे तुम्हें जीवित ही ढूंढना है।”
आपको ऐसा करने की जरूरत नहीं है।
"तुमने उसकी अवज्ञा की।"
“For Panchali,” Karna said.
"क्या आपको लगता है कि यही सही जवाब है?"
मैंने वही किया जो तुम्हें करना चाहिए था।
उसने एक तीर चलाया, लेकिन वह कर्ण को नहीं लगा और उसके कानों के पास से निकलकर धरती पर जा गिरा।
“यह जानबूझकर किया गया था,” अर्जुन ने दांत पीसते हुए कहा। “मैंने वही किया जो आवश्यक था, जो मेरे गुरु चाहते थे।”
कर्ण ने कंधे उचकाते हुए कहा, "तो तुम मूर्ख हो। द्रोण ने तुम्हारा इस्तेमाल अपने स्वार्थ के लिए किया।"
"शायद, लेकिन गुरु का अनुसरण करने का यही अर्थ है। अंधकार में भी, अंधत्व में भी, उनका अनुसरण करना पड़ता है।"
"तो फिर, मैं अंधी भेड़ तो नहीं हूँ।"
चांदनी छनकर उन पर पड़ रही थी। पृष्ठभूमि में मेंढक टर्रा रहे थे और उल्लू फड़फड़ा रहे थे। वह पहाड़ियों के करीब था और उसके पैर छलांग लगाने के लिए तैयार थे, उस अनजान जगह की ओर जाने के लिए जहां वह नहीं जानता था।

"और मैं चरवाहे की बात नहीं सुनता," कर्ण ने आगे कहा।
“अपनी भावनाओं पर काबू रखो। वरना तुम्हारा अंत हो जाएगा। हमेशा याद रखना,” उसने एक और तीर चढ़ाते हुए कहा, “इसी वजह से तुम्हारी हार होगी। इस दुनिया में सिर्फ चतुर और धूर्त ही जीतते हैं।”
"तो फिर यह रहने लायक दुनिया नहीं है।"
कर्ण ने इंतजार नहीं किया। वह लुढ़का, दो पत्थर उठाए और अर्जुन पर निशाना साधते हुए उसके चेहरे की ओर फेंकने लगा।
उनमें से एक ने उसे मारा और कर्ण अर्जुन पर कूद पड़ा, उसके ऊपर से लड़खड़ाते हुए।
वे दोनों जमीन पर गिर पड़े और लुढ़कने लगे, क्योंकि अर्जुन ने कर्ण को मुक्का मारा और कर्ण ने पलटवार किया।
कर्ण को लगा कि वह रक्षात्मक स्थिति में है, क्योंकि अर्जुन ने अपने तरकश से एक बाण निकाला और तुरंत उसके दाहिने हाथ पर वार कर दिया, जिससे वह धनुष के वार से नीचे गिरकर दूसरी तरफ जा गिरा।
जैसे ही वह जमीन पर गिरा, उसकी बांह में तेज दर्द की लहर दौड़ गई।
“मुझे जाने दो…” उसने अपने मोटे मांस में धंसे तीर को निकालने की कोशिश की, लेकिन अर्जुन ने उसे मौका नहीं दिया।
दो और तीर चलाए गए। एक घुटने पर लगा। दूसरा कंधे पर लगा और कर्ण गिर पड़ा; दर्द से कराहते हुए उसकी सांसें उथली हो रही थीं।
अर्जुन उससे काफी लंबा था और उसने उसके पेट में लात मारी।
“यह निष्पक्ष लड़ाई नहीं है!” कर्ण चिल्लाया।
और अर्जुन रुक गया। “तुम सही हो। लेकिन क्या इससे कोई फर्क पड़ता है?”
और उसने उसके चेहरे पर फिर से एक जोरदार प्रहार किया।
तब तक कर्ण को बहुत खून बह रहा था और उसकी दृष्टि धुंधली हो गई थी। वह वहीं पड़ा रहा, तभी अर्जुन ने कहा, “इस दिन को याद रखना। मेरी वजह से तुम्हें दूसरा जीवन मिला है।”
कर्ण ने आह भरी, कुछ नहीं बोला क्योंकि उसके जबड़े में दर्द हो रहा था और खून बह रहा था, नमकीन स्वाद उसके मुंह में घुल गया था। उसने एक और परछाई को उभरते हुए देखा और उसे छड़ी की आवाज़ सुनाई दी, जो पास आती जा रही थी। धुंधली दृष्टि थोड़ी साफ हुई, जब उसने द्रोण का पूरा चेहरा देखा, जो निराश

और दुखी लग रहे थे। उनका चेहरा कह रहा था: तुम मेरे बच्चे थे और तुमने मेरा दिल तोड़ दिया।
“तुम वैसे नहीं हो जैसा मैंने सोचा था। तुम विद्रोही हो। लेकिन तुम बस गुमराह हो गए हो। मैं तुम्हें ठीक कर दूंगा।”
“लेकिन गुरुजी!” अर्जुन चिल्लाया। “उसने नियम तोड़े हैं। उसे निकाल देना चाहिए। उसने आपको दक्षिणा नहीं दी है और आपके गुरुकुल में रहने के लिए शुल्क देना पड़ता है।”
“और वह करेगा,” द्रोण खड़े हो गए। “लेकिन अभी नहीं।”
अभी नहीं…
और उसकी दृष्टि धुंधली हो गई, अंधेरा उसे घेरने लगा, मानो कोई असहज कंबल हो जिसे वह पसंद नहीं करता था।

57

आज के समय में…
कर्ण एक अंधेरे कमरे में शनाया का इंतजार कर रहा था, शराब के प्याले के चारों ओर अपनी उंगलियां फेरते हुए, जो कुछ हो रहा था उस पर विचार कर रहा था।
सत्या से बात करने से पहले, किसी और से बात करने से पहले, उसे उससे बात करनी थी। वह उस सम्मान की हकदार थी। सच सुनने की, हर सांस में उसे महसूस करने की।
और इससे पहले कि वह कुछ समझ पाता, वह अंदर आ गई, हमेशा की तरह अपने ग्रे गाउन में बेहद खूबसूरत लग रही थी और उसके बाल कसकर जूड़े में बंधे हुए थे। उसके चेहरे पर निशान थे, लेकिन उसे उन पर गर्व था। उसकी नीली आँखें गहरी, काली और तीव्र थीं, उसका चेहरा अंडाकार था और उसकी त्वचा दमक रही थी।
वह वहां चुपचाप खड़ी रही।
कर्ण ने उसे सामान्य से बिल्कुल अलग नज़रिए से देखा। वह उसके लिए हमेशा एक बच्ची ही थी, लेकिन अब वह उसकी पत्नी बनने वाली थी—बशर्ते वह इसकी इजाज़त दे। चूल्हे में आग चटक रही थी और धुंधली रोशनी वाले तम्बू में अंगारे जुगनुओं की तरह चमक रहे थे।
“क्या आपको इसके बारे में पता था?” उसने पूछा।
शनाया ने सिर हिलाया। “मुझे तुम्हें बता देना चाहिए था, वासु। मुझे माफ कर दो।”
कर्ण ने अपने जबड़े भींच लिए। वह उससे नाराज़ नहीं था, लेकिन फिर भी, उन्हें एक गठबंधन के दिखावे के तहत लाया गया था—हालांकि यह गठबंधन युद्ध संबंधी था। पर राजा ऐसा करते थे। वे अपने साम्राज्यों के लिए दर्जनों महिलाओं से विवाह करते थे।
“क्या तुम चाहती हो?” उसने धीमी आवाज़ में उससे पूछा।
सवाल यह है कि क्या आप ऐसा करना चाहते हैं? किसी म्लेच्छ से जुड़ें।
मुझे परवाह नहीं। लेकिन दुनिया को परवाह है।

उसने आह भरी। “तुम्हें मेरे बारे में कुछ तो पता होना चाहिए। और अगर तुम्हें कोई आपत्ति नहीं है, तभी हम इस बारे में आगे बात कर सकते हैं।” "और वह यह है कि?"
“मैं तुम्हें कभी प्यार नहीं कर पाऊंगा,” उसने उसके पास आते हुए कहा, अपना गिलास वहीं छोड़कर उसकी आँखों में आँखें मिलाते हुए। “और मैं तुम्हारा इतना सम्मान करता हूँ कि यह बात तुम्हारे सामने कह रहा हूँ। तुम एक खूबसूरत औरत हो और तुम ऐसे इंसान की हकदार हो जो तुमसे प्यार करे। मुझसे शादी करने का मतलब होगा ऐसे इंसान से शादी करना जिसका दिल किसी और के लिए धड़कता है।”
शनाया शांत और भावहीन बनी रही। "क्या यह वही महिला है जिसके बारे में आपने बात की थी?"
"हाँ।"
लेकिन क्या वह शादी नहीं कर रही है…?
“मुझे पता है,” उसने सिर हिलाते हुए कहा। “लेकिन इससे उसके प्रति मेरी भावनाओं में कोई बदलाव नहीं आता। मेरे बाद वो सौ पुरुषों से प्यार कर सकती है, लेकिन मैं नहीं कर सकता। यह मेरी फितरत ही नहीं है।”
शनाया ने सिर हिलाया। "मैं समझ गई। तो आप ईमानदार रहना चाहते थे?"
“हाँ। तुम इसके लायक हो। और यह सब सुनने के बाद भी, अगर तुम मुझसे शादी करना चाहते हो, तो ठीक है। मुझे कोई आपत्ति नहीं है।”
उसे नहीं पता था कि वह क्या सोच रही है। लेकिन वह चुप रही। उनके बीच सन्नाटा छाया हुआ था, एक अनकही सी सिहरन।
“तो मैं अपने लोगों के लिए शादी कर रही हूँ। इसलिए नहीं कि मैंने तुम्हें पहली बार देखते ही प्यार कर लिया था,” शनाया ने कहा।
“तुम बच्ची थी, लड़की!” कर्ण अचानक बोल पड़ा।
“मैं थी। लेकिन अब नहीं हूँ और तुम सही हो। तुम शायद किसी और से प्यार करते हो, लेकिन मैं तुमसे प्यार करती हूँ। और मुझे लगता है कि यह एक अभिशाप है जिसके साथ जीना पड़ता है,” उसने कहा। “क्या तुम्हारा काम हो गया?”
कर्ण रुक गई। उसे दुख हुआ था। लेकिन उसे दुख होने का पूरा अधिकार था। "हाँ, मुझे दुख हुआ है।"
“अच्छा। अगर आप चाहें तो हम समारोह शुरू कर सकते हैं।”

कर्ण ने सिर हिलाया। और वह चली गई। वह पहले की तरह मुस्कुराती या खिलखिलाती नहीं थी। वह बस उदास थी और कर्ण को पहले से भी ज़्यादा बुरा लग रहा था। वह जानता था कि सच बोलने से उसे मुक्ति मिल जाएगी, लेकिन वह दूसरों को दुख नहीं पहुँचाना चाहता था।
जब सच लोगों का दिल तोड़ दे तो उसका क्या फायदा?
वह द्रोण या अर्जुन जैसा बनना चाहता था। हृदय से भ्रष्ट, लेकिन परिवर्तन के लिए तैयार।
उसने अपना सिर हिलाया। शायद वह जरासंध के विरुद्ध युद्ध जीत जाएगा।
लेकिन उन्हें लगा कि आज उन्हें हार का सामना करना पड़ा है।

58

इसी बीच हस्तिनापुर में…
अर्जुन दृढ़ निश्चय के साथ शेर की गुफा की ओर बढ़ रहा था।
वह इसे अपने गुरु का निवास स्थान कहता था। उसके गुरु ने अपने लिए एक पूरा किला ले रखा था, जहाँ उनके सैनिक और उनके पसंदीदा हथियार रहते थे।
वह हॉल से होते हुए आंगन की ओर बढ़ा, जहां एक फव्वारा खड़ा था।
उन्होंने अपने गुरुजी को पूर्ण शांति और अभ्यास करते देखा। वृद्धावस्था में भी द्रोण ने अपने लंगड़ेपन को अपने आड़े नहीं आने दिया। वे भूसे के लक्ष्य के सामने तीरंदाजी का अभ्यास कर रहे थे। उनकी नसें उभरी हुई थीं और दाढ़ी सर्दियों की बर्फ की तरह चमक रही थी। किले के चारों ओर पहरेदार अपने प्रिय गुरु की निगरानी कर रहे थे, जबकि अश्वत्थामा पंचाल में हथियार बेचने के लिए कारखाने बना रहे थे।
पिछले कुछ दिनों से अर्जुन की तबीयत ठीक नहीं थी। हालांकि उसका घाव भर गया था, लेकिन वह थोड़ा निराश था। रंगभूमि में कर्ण का आगमन निराशाजनक रहा था। इतना ही नहीं, कर्ण को पांचाली भी मिल गई थी। उसने उसके बाद पांचाली से बात नहीं की थी, लेकिन अगर वह करता तो उसका दिल और भी टूट जाता।
वह उसे यह कैसे बता सकता था कि उसने जो कुछ भी किया वह सिर्फ उसे प्रभावित करने के लिए किया था। अर्जुन जन्मजात प्रतिभाशाली था, लेकिन वह जानता था कि उसकी प्रेरणा, उसका जुनून, पांचाली की वजह से था। वह उसके लिए एक योग्य शासक और योद्धा बनना चाहता था।
जब द्रौपद ने अपने गुरु को पंचाली पर नियंत्रण पाने में मदद की, तो उसके बाद के कुछ हफ्तों में अर्जुन के प्रति आकर्षण प्रकट हुआ। वह अर्जुन को इसलिए पसंद करता था क्योंकि उसने तब शक्ति दिखाई थी जब दूसरे नहीं दिखा सकते थे। द्रौपद की सोच अनोखी थी—वह मानता था कि सच्ची शक्ति पंचाली के पास होनी चाहिए।
लेकिन अगर उसका दिल किसी और के साथ था, तो इसका क्या फायदा?
बह।

या शायद वह योद्धा उसके लिए नहीं बल्कि खुद के लिए था। वह बस सारा दोष उस पर डाल रहा था। उसे ज्यादा कुछ पता नहीं था। वह बस इतना जानता था कि जब भी वह तीरंदाजी का अभ्यास करता था, उसे तभी अच्छा लगता था जब पांचाली उसे देख रही होती थी।
“अर्जुन, मेरे प्यारे पुत्र,” द्रोण ने उसकी ओर देखे बिना ही कहा, “मैं तुमसे विनती करता हूँ और तुम आ जाओ।”
“जी हां, गुरुजी।”
“गुरुकुल समाप्त होने के बाद भी तुम अनुशासन बनाए रखते हो,” द्रोणा मुड़े और लंगड़ाते हुए उनकी ओर बढ़े। “तुम मेरा सम्मान करते हो। यह बहुत ही दुर्लभ बात है।”
अर्जुन मुस्कुराया। "बेशक, गुरु तो गुरु ही होता है, और यह स्थान पर निर्भर नहीं करता।"
“जी हां। आजकल आप क्या कर रहे हैं?”
विचार-विमर्श।
“अभ्यास कर रहे हैं, गुरुजी।”
“जानते हो मुझे क्या नापसंद है, बेटे?”
"क्या?"
“मुझे अवसरवादी लोग बिल्कुल पसंद नहीं,” उसने गुस्से से कहा, उसके शब्दों में ज़हर भरा था। “मुझे वे लोग बिल्कुल पसंद नहीं जो आकर दूसरों से चीजें छीनना चाहते हैं। स्वार्थी, लालची। मुझे लालच से नफरत है, आप जानते हैं।” जी जी, गुरुजी।
“क्या आपको लगता है कि कर्ण एक अवसरवादी है?”
अर्जुन को इसके बारे में सोचने की जरूरत नहीं थी। उसे पहले से ही जवाब पता था। "हां, वह है।"
“क्या आपको पता है, मैंने छानबीन की और पता चला कि विजया डॉक पर हमला एक बेहद कुशल तीरंदाज ने किया था, जिसने सूर्य का चिन्ह धारण किया हुआ था। मेरे जासूस ने मुझे बताया कि ग्रामीणों ने वह चिन्ह देखा था। अब वह कौन हो सकता है?”
उसकी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। "क्या वह कर्ण था?" उसे विश्वास नहीं हो रहा था। उसने तो उन सभी किरदारों को निभाया था।

“हां। उसने अपनी प्रतिभा का इस्तेमाल साम्राज्य के खिलाफ किया है और इसके लिए उसे सबसे कड़ी सजा मिलनी चाहिए।”
“राजद्रोह?”
“नहीं,” द्रोण ने कंधे उचकाते हुए कहा, “धृतराष्ट्र को समस्या है। वह पहले बुद्धिमान हुआ करते थे, लेकिन अब भावुक हो गए हैं। शायद इसलिए क्योंकि वह अपने बच्चों से जुड़ना चाहते हैं, जो पहले संभव नहीं था। वह अपने बेटे की बात सुनते हैं। और हमारे पास पर्याप्त सबूत नहीं हैं। सबूतों को महज़ संयोग भी माना जा सकता है क्योंकि सूर्य चिन्ह कोई भी धारण कर सकता है, यह कुंती राज्य का चिन्ह है। मैं नहीं चाहता कि राजमाता कुंती को इसका खामियाजा भुगतना पड़े। आखिर वह तुम्हारी माता हैं।”
अर्जुन ने सिर हिलाया। उनकी माता कुंती एक ऐसे राज्य से थीं जहाँ सूर्य और सूर्यदेव की पूजा होती थी, इसलिए उनके कवच पर उनका प्रतीक चिन्ह अंकित था। "तो आप मुझसे क्या करवाना चाहती हैं?"
द्रोण अर्जुन के सामने खड़े हो गए। “मैं चाहता हूँ कि तुम उसे ढूंढो।”
और क्या करें?
उन्हें कुछ कहने की जरूरत नहीं थी।
“तुम चाहते हो कि मैं उसकी हत्या कर दूं?” अर्जुन हैरान रह गया।
“लेकिन यह एक दुर्घटना की तरह दिखना चाहिए,” उसने कंधे उचकाते हुए कहा। “हमें कुछ करना ही होगा, वरना आगे चलकर वह आपके लिए और भी बड़ा खतरा बन जाएगा।”
यह बात उन्हें ठीक नहीं लगी, ठीक वैसे ही जैसे पंचाल के खिलाफ हुई घटना। यह अनैतिक और गलत लगा। लेकिन वे अपने गुरुजी से सवाल नहीं कर सकते थे। यही नियम था।
लेकिन अब उसके पास सेना है। वह एक राजा है…”
जबकि मैं कंगाल हूँ।
“मुझे पता है। और इसी वजह से,” द्रोण ने ताली बजाई और एक सिपाही एक पत्र लेकर आया। उस पर नज़र डालते हुए उन्होंने कहा, “मैं अपने प्रतिद्वंदी जरासंध के संपर्क में हूँ। वह एक बुरा आदमी है, लेकिन कूटनीति में माहिर है। हमारा एक साझा हित है—कर्ण का नाश करना।”
लेकिन क्या यह स्वयं राजा के विरुद्ध जाना नहीं होगा?

“नहीं।” उन्होंने अर्जुन के कंधे पर अपने दृढ़ हाथ रखे, उनकी सम्मोहक भूरी आँखें अपने शिष्य को घूर रही थीं। “तुम्हें यह समझना होगा—कर्ण के वध होते ही, मैं धृतराष्ट्र के समक्ष तुम्हारी सिफारिश करूँगा और तुम जरासंध के विरुद्ध युद्ध का नेतृत्व करोगे। उस मूर्ख राजा को सोचने दो कि मैं अपने राजा के साथ विश्वासघात कर रहा हूँ। उसे नहीं पता कि मेरे कुछ गुप्त इरादे हैं।”
अंगा सेना का कमांडर बनने का विचार उसे बेहद आकर्षित करता था, भले ही वह सिर्फ एक सेना का नेतृत्व करने के लिए ही क्यों न हो। आखिरकार, उसने अभी- अभी स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी और वह युद्ध के मैदान में उतरना चाहता था।
"ठीक है गुरुजी, जैसा आप कहें," उसने द्रोण के सामने झुककर प्रणाम किया, जिन्होंने अपने होठों के कोने पर एक पतली, परजीवी, बुखार जैसी मुस्कान के साथ जवाब दिया।

सुयोधन गुरु द्रोण से मिलने की योजना बना रहा था, ताकि वह गदा से आक्रमण करने की अपनी पुरानी तकनीक को फिर से निखार सके। तभी उसकी नज़र अर्जुन पर पड़ी जो वहाँ आ रहा था। वह छाया में छिप गया। अर्जुन दृढ़ निश्चयी लग रहा था, और सुयोधन भी उसके पीछे-पीछे एक खंभे के पीछे छिप गया ताकि द्रोण और अर्जुन के बीच की बातचीत सुन सके।
और उसे इस बात की खुशी थी कि उसने ऐसा किया।
क्योंकि इससे वह अंदर तक कांप गया था।
वे कर्ण को हराने के लिए जरासंध का साथ दे रहे थे। मुझे पिताजी को बताना होगा।
उन्हें आज यहाँ आकर खुशी हुई। शायद किसी दैवीय शक्ति ने उन्हें यहाँ लाया था। यदि कर्ण असफल हो जाता है या मर जाता है, तो उसके पिता का सुयोधन पर उतना भरोसा नहीं रहेगा, जितना सुयोधन पर उनका भरोसा बढ़ता गया था।
मुझे उनसे मिलना चाहिए।

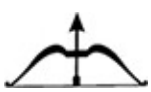

धृतराष्ट्र के माता-पिता बगीचे में भोज मना रहे थे, जहाँ फूल खिले हुए थे और गमलों में लगे पौधे सुंदर शाखाओं से लटके हुए थे। धृतराष्ट्र और गांधारी को नौकर भोजन करने के लिए ले गए, तभी सुयोधन ने सबको धक्का देते हुए अंदर प्रवेश किया और प्रणाम किया।
"पिता!"
अंधे राजा ने मुड़कर कहा, “तुम्हारी माँ और मैं एक ज़रूरी दोपहर का भोजन कर रहे हैं। हमें कुछ निजी समय चाहिए। मुझे उम्मीद है कि यह इंतज़ार कर सकता है, बेटा।”
"नहीं, यह पिता नहीं बन सकता।"
राजा ने आह भरी और उसकी ओर मुड़ा। "आगे बोलो।"
सुयोधन ने गुप्त रूप से देखी गई पूरी घटना का वर्णन किया और राजा चुपचाप सुनता रहा। उसने कोई भाव नहीं दिखाया, लेकिन जब सुयोधन ने अपनी बात समाप्त की, तो उसने कहा: "राजनीति वह विष है जो किसी साम्राज्य में पनपता है और उसे नष्ट कर देता है।"
“तुम्हें द्रोण को कैद करना होगा और अर्जुन को रोकना होगा,” सुयोधन ने सुझाव दिया।
“कैद? क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है, पुत्र? वह इतना महत्वपूर्ण है कि उसे कैद नहीं किया जा सकता। वह आचार्य हैं, एक सम्मानित व्यक्ति हैं। क्या तुम्हें नहीं लगता कि मुझे तुम्हारे और उनके द्वारा द्रौपद पर किए गए हमले के बारे में पता है? मेरे सैनिक हर जगह मौजूद हैं, लेकिन मैं चुप हूँ क्योंकि वह बहुत महत्वपूर्ण हैं और उन्होंने मुझे या मेरे परिवार को कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचाया है। और मैं जानता हूँ कि इस कार्रवाई से वह कर्ण को खत्म करना चाहता है, मुझे नहीं। इसलिए मुझे उनसे कोई खतरा नहीं है।” सुयोधन को अपने पिता की बातों पर विश्वास नहीं हुआ। "लेकिन...लेकिन..." “सुनो, कर्ण… खैर… वो तो बस जरासंध पर वार करने के लिए है। जैसे ही मुझे लगेगा कि सही समय आ गया है, मैं आऊंगा और जरासंध को या तो नष्ट कर दूंगा या उसे फिर से अपना सहयोगी बना लूंगा। देखते हैं। कहावत क्या है? अगर युद्ध जीतना है तो पहले अपने मूर्खों को भेजो। उन्हें कुछ नुकसान करने दो और फिर सैनिकों को मैदान में उतारो।”
“लेकिन मुझे लगा था कि आप उस पर विश्वास करते हैं,” सुयोधन को धोखा महसूस हुआ; वह अपने पिता पर क्रोधित था।

“जी हाँ, बिलकुल, मेरे पुत्र।” राजा मुस्कुराए। “लेकिन वह तो मेरे लिए कोई मायने नहीं रखता। मेरी सेना नहीं। तुम्हें क्या लगता है कि मैं उसे अपने सैनिक देकर उसका समर्थन क्यों नहीं करता? क्योंकि मैं चाहता हूँ कि जरासंध अपना समय उस पर बर्बाद करे और जब वह थक जाए, ऊब जाए और परेशान हो जाए, तब मैं आ सकूँ। मैंने कर्ण के पिता के साथ भी यही किया था। और यह कारगर साबित हुआ। इन छोटी-मोटी लड़ाइयों की चिंता मत करो। तुम अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो।”
उसने अपने जबड़े भींच लिए।
और द्रोण के लिए भी, उन्हें जो करना है करने दीजिए। अगर कर्ण की मृत्यु हो जाती है, तो हम उनकी जगह किसी और को ला लेंगे। मेरा मतलब है, उनकी जगह कोई और ले सकता है।
लेकिन द्रोणा जो कर रहा है वह गलत है।
“शायद। लेकिन फिर हम कौन होते हैं यह तय करने वाले कि क्या सही है और क्या गलत?”
सुयोधन उठ खड़ा हुआ और जाने का फैसला किया, अपने पिता के प्रति अपशब्द न कहने के लिए उसने खुद को मजबूर किया। तभी धृतराष्ट्र ने नरम स्वर में कहा, “पुत्र, मैं जानता हूँ कि तुम मुझसे नाराज़ हो। लेकिन युद्ध इसी तरह चलता है। और जहाँ तक द्रोण की योजना की बात है—कर्ण को न केवल अपने शत्रुओं से बल्कि अपने सहयोगियों से भी हमेशा विरोध का सामना करना पड़ेगा। एक अच्छा राजा दोनों तरह की लड़ाइयाँ लड़ना जानता है। अगर वह उतना ही अच्छा है जितना तुम कहते हो, तो उसे इससे निपटने दो। अगर वह विजयी होता है, तो हम ही उसके लिए तालियाँ बजाएँगे, उसके लिए खुश होंगे। लेकिन अभी के लिए, उसकी लड़ाई उसकी लड़ाई है। तुम्हारी नहीं, मेरी नहीं।”
सुयोधन ने कोई जवाब नहीं दिया। और वह यह जानते हुए चला गया कि वह अंगा जा रहा है ताकि कर्ण को चेतावनी दे सके और अपने मित्र का समर्थन कर सके।

59

देवी जानती थी कि उसने अपने उत्पीड़क, अपने पति सेनापति विजया की हत्या कैसे की थी।
यह एक प्रकार का एकोनाइट था जो उसे एक घुमंतू तांत्रिक से मिला था। तांत्रिक ने कहा था कि यह एक शक्तिशाली विष है, जिसे वुल्फ्सबेन भी कहा जाता है। इसकी एक बूंद हृदय और तंत्रिका कोशिकाओं की झिल्लियों में भारी तबाही मचा सकती है।
उसने यह सब अच्छी तरह से योजना बनाई थी। वह दिखाना चाहती थी कि यह सचमुच का दिल का दौरा है; आखिर विजया बूढ़ा हो रहा था। वह दौड़ भी नहीं सकता था और सीढ़ियाँ भी नहीं चढ़ सकता था। वह उसे लाल मांस खिलाती, जिससे उसके दिल की धड़कन धीमी हो जाती और उसे सीने में दर्द होने लगता, साथ ही साँसें भी धीमी हो जातीं। यह एक धैर्यपूर्ण प्रक्रिया थी, जब तक कि उसने ज़हर नहीं डाल दिया। उसने ज़हर उसके पेय में मिला दिया था और एक जंगली सूअर का शिकार करने चली गई थी। जब वह लौटी, तो उसने सबको दिखाया कि वह कितनी दुखी थी। लेकिन फैले हुए काजल, लाल गालों और लाल आँखों के पीछे अत्याचार पर विजय छिपी थी। और वह मुस्कुराई थी। खामोशी में। अकेलेपन में।
देवी को नहीं पता था कि उसे इस बात का पछतावा होगा या नहीं। शायद न भी हो। लेकिन वह निर्दयी थी और जो भी उसके रास्ते में आता, वह मर जाता। कर्ण की मृत्यु की योजना बनाते हुए उसने बाहर शोर सुना। उसने दरवाजा खोला तो देखा कि कुछ लोग आपस में झगड़ रहे हैं। ये निषाद और उसके आदमी थे, और वे आपस में लड़ रहे थे। एक-दूसरे को घूंसे मार रहे थे, लात मार रहे थे।
"तुम सब इसे बंद करो," उसने गुस्से से कहा।
उसने किसी को अपने कमरे की ओर आते देखा और उसे एहसास हुआ कि वह सूअर जैसे चेहरे वाला शांतनु है। उसका सिर झुका हुआ था। "क्या मैं आपसे बात कर सकता हूँ, जनरल?"
"हाँ।"

वे अंदर चले गए और वह अपनी चारपाई पर बैठ गई, जबकि वह उस आदमी की बातें सुन रही थी।
“राजा कर्ण को गए तीन दिन हो गए हैं और हमारी आपसे एक निवेदन है, सेनापति। हम राजा के आचरण से प्रसन्न नहीं हैं। हमने उन्हें अपना मान लिया था, लेकिन फिर वे इन बाहरी लोगों को ले आए।”
देवी ने सिर हिलाया। "मुझे पता है, मैं समझ गई।"
क्या आप उसे समझाने की योजना बना रहे हैं?
“मैं तुम्हारी बात सुन रही हूँ, सिपाही। अब जाओ और अपने साथियों के लिए कुछ सूप बनाओ,” उसने आदेश दिया और सिपाही ने सिर हिलाया।
देवी ने आह भरी। उसके सैनिक उसके प्रति शत्रुतापूर्ण होते जा रहे थे, लेकिन वह कर्ण के दृष्टिकोण से सोच रही थी। शायद जीतने के लिए दूसरों को खुश रखना ज़रूरी था। निषाद एक अस्थायी समाधान थे, इसलिए वह जानती थी कि युद्ध समाप्त होने पर वे चले जाएंगे।
लेकिन फिर भी…मुझे उसे मारना ही होगा। उसके विचार समस्याग्रस्त हैं।
और फिर वो कमान संभाल लेगी। इस विचार पर उसे ठहाका लगा।
तभी अचानक दरवाजे पर फिर से दस्तक हुई। उसने अंदर आने वाले व्यक्ति को अंदर आने दिया, जो घबराया हुआ सा अंदर आया और बोला: “महाराज, म्लेच्छ निषादों के पास शिविर लगा रहे हैं और उन्हें बना रहे हैं। हमारा पूरा राज्य हमारे शत्रुओं से घिरा हुआ है!”
क्या? म्लेचास?
“उन्हें कैंप लगाने की अनुमति कैसे दी गई?”
“राजा, सेनापति। वह हजारों म्लेच्छ सैनिकों के साथ लौट आया है।”

कर्ण के प्रवेश करते ही उसका सामना सन्नाटे से हुआ।
उसने देखा कि किसी ने मुस्कुराया नहीं। यहाँ तक कि सहमति में सिर भी नहीं हिलाया। कोई भी इस बात से खुश नहीं था कि वह यूनानियों को अपने साथ ले आया था।

पहले की तरह ही, वह अपने साथ शनाया को लेकर यूनानियों का एक छोटा दल अंदर ले आया था। किला शांत था, और सत्य, जो कर्ण के साथ अपनी घोड़ी पर सवार था, बोला:
“और मैंने सोचा था कि हमारे आने पर युवतियाँ नाचेंगी और तुरही बजेंगी। पता नहीं उनका उत्साह कहाँ चला गया।”
कर्ण ने मुंह बनाया। उसे पता था कि ऐसा होगा। लेकिन इस हद तक नहीं। उसके अपने सैनिक डरे हुए थे। और उन्हें डरना भी चाहिए था। वे उन लोगों से घिरे हुए थे जिनसे वे इतने लंबे समय से लड़ रहे थे। लेकिन अब उन्हें यह समझाने का समय था कि वह ऐसा क्यों कर रहा है।
उसने ऊपर देखा; देवी से उसकी निगाहें मिलीं, जिसने भावनाओं के बजाय निर्ममता दिखाई। वह चुप रही और मानो दिन भर का काम खत्म कर चुकी थी। उसकी आँखें झुकी हुई थीं और होंठ सिकुड़े हुए थे। वह खुश नहीं थी।
लेकिन मैं यहां लोगों को खुश करने नहीं आया हूं, मैं यहां एक खूनी युद्ध जीतने आया हूं।
कर्ण ने घोड़े पर सवार होकर प्रत्येक व्यक्ति का चेहरा देखा और तेज़ी से सीढ़ियों की ओर बढ़ गया। वह घोड़े से उतरा और उसने अपने लोगों को देखा; वे भ्रमित और अलग-थलग थे। यूनानी ठहाके लगा रहे थे और मुस्कुरा रहे थे। वे जानवरों की खाल से बने वस्त्र पहनने वाले युद्धप्रिय लोग थे, जो हमेशा आगे रहना पसंद करते थे। आर्किमिडीज़ उनके साथ नहीं गया, क्योंकि वह युद्ध समाप्त होने और अंगा का एक हिस्सा अलग हो जाने के बाद ही उनके साथ जाएगा। कर्ण ऊपर आया, जहाँ से उसने भाषण देने की योजना बनाई थी, क्योंकि नीचे का मैदान लोगों से भरा हुआ था। यहाँ तक कि नागरिक भी कोनों से झाँक रहे थे। वे यह जानने के लिए उत्सुक थे कि क्या नया घटनाक्रम हुआ है।
“मैं म्लेच्छ राजा आर्किमिडीज से मुलाकात करके लौटा हूँ। एक विदेशी,” और कर्ण के चारों ओर घूमते हुए और उसके बगल में खड़े शनाया की सतर्क, मौन निगाहें उस पर टिकी हुई थीं।
देवी, उस समय, कोने में बैठी थी, बिल्कुल भी नहीं बोल रही थी, उसकी बाहें कसी हुई थीं।
“हम उनसे यह युद्ध जीतेंगे। म्लेच्चा समुदाय ने कृपा करके हमारा समर्थन किया है। हम जानते हैं कि अतीत में वे उतने भरोसेमंद नहीं रहे हैं, लेकिन

वे अच्छे लोग हैं। जब मैं आज जिस मुकाम पर हूँ वहाँ पहुँचने के लिए संघर्ष कर रहा था, तब मेरी उनसे कुछ समय के लिए मुलाकात हुई थी।”
पूरी तरह सन्नाटा।
“म्लेच्छों और मैंने वैवाहिक अनुबंध द्वारा गठबंधन करने का निर्णय लिया है। मेरी पत्नी,” उन्होंने उसका हाथ पकड़कर ऊपर उठाया, “हमारा विवाह हो गया है। और आपको यह जानना चाहिए कि हम सभी के लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि हम सब इसमें एक साथ हैं। मैं आज रात एक भोज का आयोजन करना चाहता हूँ, ताकि आप सभी एक-दूसरे को जान सकें। मेरे दूसरे-कमांड सत्य इसका आयोजन करेंगे। मैं लड़ाई-झगड़ा नहीं चाहता। मैं झगड़े नहीं चाहता। मैं चाहता हूँ कि आप सभी एक जगह इकट्ठा हों और उद्देश्य को समझें—एक स्वतंत्र अंग का। जरासंध से मुक्त। धृतराष्ट्र से मुक्त। और उस उद्देश्य को मन में रखकर, अपने नए भाइयों और बहनों से मित्रता करें।” वे रुके। “हम यह युद्ध जीतेंगे। चाहे कुछ भी हो जाए। जिस प्रकार मेरा जन्म सत्ता हथियाने वालों द्वारा शासित अंग में हुआ था, मैं नहीं चाहता कि अभी सैकड़ों बच्चे उस शहर में पैदा हों। मैं चाहता हूँ कि वे गर्भ से बाहर आते ही स्वतंत्र हों। इसे याद रखें।”
सभी को यकीन नहीं हुआ, लेकिन उसने सत्य की ओर देखा और दावत की तैयारियां शुरू करने को कहा। फिर उसने देवी की ओर देखा।
अब बात करने का समय था।

60

कर्ण अपनी कुर्सी पर सोच-विचार करते हुए बैठा था, और देवी की घातक निगाहें उसे परख रही थीं।
शनाया कोने में हाथ बांधकर बैठी थी। सत्या वहां नहीं थी, हमेशा की तरह व्यस्त थी।
“क्या अब वह हर मीटिंग में मौजूद रहेंगी?” देवी ने पूछा।
“हां। वह एक अच्छी योद्धा है। हम उसके सुझाव ले सकते हैं,” कर्ण ने सख्ती से जवाब दिया।
“बहुत खूब,” देवी ने आह भरी। “तो अब आगे क्या? महाराज, जरासंध से लड़ने के लिए उसके साथ साझेदारी करेंगे?”
कर्ण ने अपनी निगाहें सिकोड़ लीं। "जनरल, आपका लहजा मुझे पसंद नहीं आया।" देवी ने अपने जबड़े भींच लिए।
कर्ण ने शनाया की ओर देखा, जिसका चेहरा इस समय बिल्कुल भावहीन था, शायद वह निराश थी, यात्रा से थोड़ी थकी हुई थी।
कर्ण ने कहा, "हमें किसी महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा करनी है। राज्य की मौजूदा स्थिति से कहीं अधिक महत्वपूर्ण विषय पर।"
देवी ने कहा, “लोग खुश नहीं हैं। और आपके फैसलों के गंभीर परिणाम होंगे, मैं आपको चेतावनी देती हूं।”
“शायद,” कर्ण ने कंधे उचकाते हुए कहा, “लेकिन मेरी चिंता इससे कहीं अधिक सीधी है। यह इस बात की है कि जरासंध के आने पर क्या होगा। उसने हमें एक पत्र दिया है, जिसमें मध्य मार्ग से मिलने के लिए कहा गया है।”
देवी थोड़ी देर रुकी और सिर हिलाया। "हाँ। और आप इसे अस्वीकार करने की योजना बना रहे हैं?"
“नहीं। मैं जाने का इरादा रखता हूँ। मैं सुनना चाहता हूँ कि वह क्या कहता है। उसकी सेना की नवीनतम गतिविधि रिपोर्ट क्या है?”
“वह चंपा नदी के किनारे पहुँच चुका है और उसकी सेना प्रतीक्षा कर रही है। हम भी आज रात से अपनी सेना भेजेंगे,” देवी ने यंत्रवत जवाब दिया। उसे सारी

जानकारी रटी हुई थी। “यह कहना गलत होगा कि उसे आपके हालिया गठबंधनों के बारे में जानकारी नहीं है।”
“मुझे पूरा यकीन है कि वह ऐसा करता है। और मैं चाहता हूं कि उसे पता चले। उसे डरना चाहिए,” कर्ण खड़ा हो गया।
“अगर वह तुम्हें धृतराष्ट्र के खिलाफ गठबंधन करने को कहे, तो उसे रिपोर्ट करना मेरा नैतिक कर्तव्य है, तुम यह जानती हो ना?” देवी ने कहा।
उन्होंने कहा, "हमें समझदारी से काम लेना होगा। मेरे पास एक विचार है।"
और वह विचार क्या होगा?
आपको पता चल जाएगा।

कर्ण और शनाया अपने कमरे में गए और उन्होंने दरवाजा बंद कर लिया। उन्होंने मुलाकात के लिए पत्र भेजा था, उम्मीद थी कि कल या परसों तक मुलाकात हो जाएगी, और पृष्ठभूमि में उत्सवों की आवाजें सुनाई दे रही थीं। शनाया दासियों की मदद से पर्दे के पीछे कपड़े बदलने चली गई, जबकि कर्ण वहीं रुका रहा और उदास होकर खिड़की से बाहर देख रहा था, जहाँ से उसे यूनानियों और कुछ आंगण सैनिकों के जश्न मनाने की आवाजें सुनाई दे रही थीं।
शायद वे यह नहीं समझ पाएंगे कि वह ऐसा क्यों कर रहा था। यह उसके लिए एक टीम-बिल्डिंग अभ्यास था। दो अलग-अलग संप्रदायों को एक साथ लाकर और शराब पिलाकर, दुश्मन भी दोस्त बन सकते हैं।
उसने मुड़कर देखा तो शनाया अपनी स्लीपिंग गाउन में थी, जो बेहद खूबसूरत लग रही थी। हल्की चांदनी उस पर पड़ रही थी और उसके काले बाल झिलमिला रहे थे। वह पास आई और मुस्कुराई। "क्या देख रहे हो?"
“जैसे-जैसे तुम बड़ी होती गई हो, तुम और भी खूबसूरत होती गई हो।”
“ओह, मैं समझ गई। बहुत-बहुत धन्यवाद,” वह हंसते हुए बोली। “यह तो बहुत ही सौहार्दपूर्ण प्रशंसा है।”
“ज्यादा जोर मत लगाओ,” कर्ण ने हंसते हुए कहा।
"अच्छा, तुमने ही तो कहा था कि तुम सिर्फ एक ही व्यक्ति से प्यार करते हो।" “और मैं अब भी ऐसा करता हूँ। लेकिन मुझे समझ नहीं आता कि मैं किसी और की तारीफ क्यों नहीं कर सकता। खासकर अपनी पत्नी की।”

वह मुस्कुराई। उसकी आँखों में उदासी झलक रही थी। और वह उसे खुश करना चाहता था। वह... उदास थी। खैर, कोई भी उदास होता।
“तुम हमेशा से क्या करना चाहते थे?” उसने पूछा।
उन्होंने कहा, "मैं हमेशा से युद्ध में लड़ना चाहती थी। अपने साथियों के साथ मरना चाहती थी।"
"यह सुनने में उतना आकर्षक नहीं लगता।"
“ऐसा नहीं है। क्योंकि बचपन से ही मैंने नपुंसक बनाना, बहिष्कार, खून-खराबा और अराजकता देखी है। मैं इसी माहौल में मरना चाहती हूँ। अगर शान से मौत न आए तो दुनिया जीने लायक नहीं है।” उसने उसी गर्व से कहा, जो उसने अक्सर यूनानी लोगों में देखा था। “आपका क्या ख्याल है?”
“मैंने बहुत पहले एक वादा किया था। वह कब पूरा होगा, मुझे नहीं पता। मैंने कभी इसके बारे में सोचा ही नहीं।” और इससे पहले कि वह उससे वादा पूछ पाती, उसने बात टाल दी और कहा: “मुझे उम्मीद है कि आपके आदमी यहाँ ठीक से समा जाएँगे।”
“बेशक वे लड़ेंगे। उन्हें एक लक्ष्य दे दो और वे लड़ेंगे,” वह हंसते हुए बोली। “और, मैं आपसे पूछना चाहती थी। क्या आप मेरे आपके प्लान में शामिल होने को लेकर आश्वस्त हैं?”
“क्या कर रहे हो?” उसने कहा।
"आपको पता है।"
उन्होंने सिर हिलाया। "तुम सक्षम हो।"
उसने कंधे उचकाते हुए कहा, "मैं कोशिश करती हूँ।"
और तुम जरूर सफल होगे। बस सावधान रहना।
"आप भी।"
योजना सरल थी, लेकिन कारगर। देवी यह सुनकर हैरान रह गई, और जब उसने सत्या को बताया, तो उसने बस इतना कहा: "मैं योनि के देवता से प्रार्थना करता हूँ कि वह तुम्हें वह ज्ञान प्रदान करे जिसकी तुम्हें बहुत कमी रही है।" कर्ण को एहसास हुआ कि चार साल बीतने से उसके पास कुछ अपशब्दों का ज्ञान तो आ ही गया था।
लेकिन सब ठीक था।
क्योंकि वह जानता था कि जरासंध से मुलाकात या तो शुरुआत थी या…अंत।

61

जगह तय कर ली गई।
यह एक साधारण सी जगह थी। एक लहरदार मैदान जहाँ घास के कुछ टुकड़ों के अलावा कुछ भी नहीं उगता था। रात की चाँदी जैसी रोशनी उस पर पड़ रही थी। वहाँ से ज़्यादा कुछ दिखाई नहीं दे रहा था।
और यही मुख्य बात थी।
गुप्त हमले या हत्या की कोई गुंजाइश नहीं थी। चूंकि यह एक समतल मैदान था, इसलिए वहां कोई पेड़ नहीं थे और न ही कोई शाखा के शीर्ष से तीर चला सकता था या झाड़ियों के नीचे छिप सकता था।
यह बहुत ही सुरक्षित जगह थी और दो राजाओं को आपस में मिलने के लिए ऐसी ही जगह की आवश्यकता होती है।
युद्ध से पहले, बीच का रास्ता निकालने के लिए राजाओं का आपस में मिलना एक प्रथा थी। यदि कोई बीच का रास्ता नहीं निकलता, तो वे अपने शिविरों में लौट जाते और युद्ध शुरू हो जाता। उनके साथ बहुत अधिक सैनिक नहीं होते थे, बस उतने ही जितने उनकी सुरक्षा के लिए घेरे में खड़े हों, और उनके भोजन की जाँच परीक्षकों द्वारा की जाती थी, और संगीत भी बजता रहता था।
इस प्रकार, जब कर्ण वहाँ पहुँचा, तो जरासंध पहले से ही तैयार था। वह पहले से ही बैठा हुआ था और अंगूर और खुबानी का आनंद ले रहा था।
कर्ण घोड़े से उतरकर प्रकट हुआ और बैठ गया, जरासंध को घूरता रहा। जरासंध बदल गया था। कर्ण ने उसके रूप-रंग के बारे में सुना तो था, लेकिन उसे कभी करीब से नहीं देखा था। उसने कभी ध्यान नहीं दिया था कि उसकी दाढ़ी नारंगी रंग की थी, उसके होंठों पर एक दरार थी और मूंछें नहीं थीं। उसके बाल छोटे कटे हुए थे और चेहरे पर झुर्रियां थीं।
"अंततः, अंगा के प्रसिद्ध राजा के बारे में इतना कुछ सुनने के बाद," उसने चांदनी रात में कालीन पर लेटते हुए और एक विदूषक की तरह मुस्कुराते हुए कहा, "आपसे मिलकर अच्छा लगा, प्रिय।"

कर्ण ने आह भरी। उसने जबरदस्ती मुस्कुराने की कोशिश की। उसे राजाओं के बीच की यह बात कभी समझ नहीं आई। भला कोई ऐसा क्यों करना चाहेगा? वे आपस में लड़ने ही वाले थे और उससे पहले मिलना चाहते थे। आखिर क्यों?
लेकिन उसने खुद को रोका। और वह उस दुष्ट व्यक्ति को देखकर मुस्कुराता रहा। आपने मुझे बुलाया और मैं यहाँ हूँ।
“तुम लोग काफी संख्या में सैनिक लाए हो,” उसने उनकी ओर देखते हुए कहा। “क्या तुम्हें डर है कि मैं हमला कर दूंगा?”
"कोई भी कभी भी पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हो सकता।"
उसने कंधे उचकाते हुए कहा, “अगर मुझे हमला करना ही होता, प्रिय, तो मैं बहुत पहले ही कर चुका होता। लेकिन मुझे परवाह नहीं। मैं तुम्हारे विकास को देख रहा था…” वह उत्साहित हो गया और दृढ़ निश्चय से उसकी ओर देखते हुए बोला, “तुम जो कर रहे हो। अंगा की हालत बहुत खराब थी। मालिनीपुर में कोई सैनिक नहीं थे। और जब मैंने उस पर युद्ध छेड़ा था, तो मुझे पता था कि सब कुछ जीतने में मुझे एक घंटे से भी कम समय लगेगा। लेकिन तुम्हें अपने लिए सैनिक जुटाने के लिए पूरी दुनिया में घूमते देखना प्रेरणादायक था। पहले तुमने निषादों के साथ गठबंधन किया, फिर म्लेच्छों के साथ, और उसके बाद ही तुमने मुझ पर हमला किया। युद्ध शुरू होने से पहले ही। मुझे उसी दिन युद्ध की घोषणा कर देनी चाहिए थी, लेकिन मैंने नहीं की। क्योंकि तुमने मुझे एक मामूली लड़ाई से कहीं अधिक श्रेष्ठ चीज़ दिखाई।”
कर्ण प्रतीक्षा करता रहा। कुछ और भी था; उसकी कवच, जिस पर सूर्य का चिन्ह बना हुआ था, चमक रही थी।
“तुमने मुझे दिखाया कि तुममें शक्ति है। तुममें विपरीत परिस्थितियों से लड़ने की ताकत है। तुममें असंभव को संभव करने की शक्ति है,” उसने मुस्कुराते हुए कहा। “और यही वो गुण है जो मैं एक राजा में खोजता हूँ।” मुझे लग रहा है कि मुझे ऑफर मिलने वाला है।
“और आपमें दूरदर्शिता भी है!” वह हँसते हुए बोले। “जी हाँ, है। जैसा कि आप जानते हैं, अंग की संधि मेरे और धृतराष्ट्र के बीच हुई थी। मैं आपको एक विकल्प देता हूँ, आप मेरे साथ साझेदारी कर सकते हैं। महाराजा के विरुद्ध लड़कर हस्तिनापुर पर एक साथ शासन करने का। आपका क्या विचार है?”
मैं उतना मजबूत नहीं हूँ…
“हाँ, तुम हो। तुमने पहले ही अपने लिए एक बहुत बड़ी सेना तैयार कर ली है।”

“हां, मैंने किया है,” उसने गर्व से सिर हिलाया।
“जी हां, बिल्कुल,” उसकी मुस्कान और चौड़ी हो गई। “अभी तुम एक अंतरिम व्यक्ति हो, एक ऐसा व्यक्ति जिसका कोई ठिकाना नहीं है। धृतराष्ट्र आकर इसे ले जा सकता है और तब तुम्हारे पास कोई विकल्प नहीं बचेगा। तब तुम क्या करोगे?”
उसने इस बारे में सोचा ही नहीं था। वह खुद भी निश्चित नहीं था और उसका चेहरा भावहीन बना रहा; जकड़ा हुआ।
“मैं ऐसा नहीं करूँगा। मेरे अधीन तुम पहले से ही राजा हो, अंतरिम राजा नहीं। और तुम मुझे ताज संभालने में मदद करोगे। शुरू में मैं तुम्हें हराना चाहता था, लेकिन तुम्हें दुश्मन बनाने के बजाय सहयोगी बनाना ज़्यादा समझदारी है।”
कर्ण ने सिर हिलाया। "जी हां।"
“Are you a Kshtriya?”
"नहीं।"
“हाँ, तुम तो ज़रूर उनमें से एक हो। झूठ बोलने की हिम्मत मत करना।”
कर्ण ने अपनी आँखें बंद कर लीं। और वह हँसे बिना नहीं रह सका। जरासंध भी उसके साथ हँसा और उसने कर्ण के लिए थोड़ी शराब डाली, जिसे कर्ण ने भी पी लिया।
“वाह! लेकिन तुम किस बात पर हंस रहे हो?” जरा ने पूछा।
“मुझे तो बस इस बात पर हैरानी हो रही है कि हालात कैसे पलट गए। हम कुछ ही दिनों में आमने-सामने होने वाले हैं और देखिए हम—अब बीच का रास्ता निकालने की कोशिश कर रहे हैं।”
जारा ने सिर हिलाया। "राजनीति ऐसे ही चलती है, प्रिये।"
“पर एक बात है,” कर्ण ने जरा के पीछे मुड़कर यह सुनिश्चित करते हुए कहा कि लोहे का मुखौटा पहने वह व्यक्ति उसके सैनिकों के बीच मौजूद तो नहीं है। “तुम मुझे नहीं जानते थे। मतलब, इन सब से पहले।”
"क्या मुझे ऐसा करना चाहिए था?"
उन्होंने कहा, "आपने मेरे पिता को सिंहासन से हटा दिया।"
“अधिरथ?” वह उत्सुकता से बोला। “तुम अधिरथ के पुत्र हो। वाह, मैं तो हैरान हूँ। उन्हें वाकई उत्तम संतान मिली है। लेकिन तुम्हारे सहयोगी

धृतराष्ट्र को भी तो यही मिला था। अरे प्रिय, मेरा मतलब है कि तुम इस बात को लेकर मुझसे शिकायत नहीं कर सकते।”
“मुझे पता है मैं नहीं कर सकता। और तुम सही हो। लेकिन तुमने इससे भी बुरा कुछ किया है,” कर्ण ने खुद से सहमति जताते हुए सिर हिलाया।
"आपका क्या मतलब है?"
“मुझे नहीं पता कि आपको याद है या नहीं,” कर्ण ने कहा। “यह तब की बात है जब आपने चंपा का कार्यभार संभाला था और मेरा जन्म ही हुआ था। मैं उस समय काफी बीमार था। मेरे माता-पिता एक भीषक की तलाश कर रहे थे। और मैं… खैर, आपने कुछ किया था।”
"मैंने क्या किया?"
वह रुका। "तुमने मेरी माँ को मार डाला।"

62

22 साल पहले…
जब तक वे अंगा के बाहरी इलाके में स्थित सबसे नजदीकी गांव पहुंचे, तब तक बारिश शुरू हो चुकी थी।
पानी की तेज बौछारें ज़मीन पर ज़ोर से गिर रही थीं, जिससे सड़कें और लाल मिट्टी की दीवारों और बेंत की खिड़कियों वाले घर कीचड़ से सन गए थे। वे सभी झोपड़ियाँ थीं, एक के बाद एक बनी हुई थीं, जिनके बीच में गलियाँ थीं जहाँ भिखारी बारिश से झुलसी हुई शॉल ओढ़कर छिपे हुए थे।
राधा ने टोकरी पर अपनी चुन्नी डाल रखी थी ताकि बारिश का पानी उस पर न गिरे, लेकिन फिर भी टोकरी पूरी तरह भीग गई थी। वह बच्चे के शरीर में और पानी जाने नहीं देना चाहती थी।
अधिरथ ने रथ को बीच में रोका, लेकिन जीवन का कोई संकेत नहीं मिला।
बारिश के कारण सभी लोग घर के अंदर चले गए हैं।
गांव के पीछे नारियल के पेड़ ज़ोर से हिल रहे थे और हवा के कारण खेत उखड़ रहे थे, उसकी गंध उसे आ रही थी। दूर से बारिश की आवाज़, हवा के झोंके और भेड़ियों की दहाड़ सुनाई दे रही थी, मानो उन्हें पता चल गया हो कि राधा ने उनके जैसे किसी एक के साथ क्या किया है।
और फिर उसकी नजर उस भयावह दृश्य पर पड़ी, जिसे उसके प्यारे पति ने नहीं देखा था।
उसने दबी आवाज़ में चीख मारी और फुसफुसाते हुए कहा: "यह बारिश की वजह से नहीं है।"
"क्या?"
गीले हाथों से उसने दीवारों की ओर इशारा करते हुए अधिरथ को दिखाया कि सभी नागरिक अंदर क्यों थे।
कुछ झोपड़ियों की दीवारों पर, पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को पीठ के बल सड़क पर कीलों से ठोंका गया था, उनके नितंब लाल थे और उनकी त्वचा मानो किसी धारदार हथियार से फटी हुई थी। लाशों पर कीड़े और चूहे दावत उड़ा रहे थे।

उनके खून से संस्कृत में लिखा था: शूद्र सबसे पहले मरेगा। वर्ण व्यवस्था के अनुसार, शूद्रों को नीची जाति और समाज का अपवित्र माना जाता था, हालांकि राधा और अधिरथ इस बकवास में विश्वास नहीं करते थे।
“ऐसा कौन करेगा…?” अधिरथ ने एक भयानक चीख मारी।
बारिश तेज हो गई थी।
उन्होंने कहा, "चलो यहाँ से चलते हैं।"
“नहीं। हमारे पास समय नहीं है। हमें यहीं भीषक को ढूंढना होगा,” उसने जवाब दिया।
अधीरथ ने अपने जबड़े भींचते हुए सिर हिलाया।
“ठीक है। चलिए, घर-घर जाकर लोगों से मिलना शुरू करते हैं।”

पांचवीं झोपड़ी तक आते-आते वे लगभग उम्मीद छोड़ चुके थे।
वे पूरी तरह भीग चुके थे। चुन्नी ओढ़े होने के बावजूद बच्चा पहले ही पूरी तरह भीग चुका था। दस्तक देने पर कुछ ही लोगों ने ध्यान दिया, लेकिन उन्होंने दंपति को भगा दिया। कुछ लोग तो डर से कांप रहे थे और फुसफुसा रहे थे: "भागो वरना वह तुम्हें पकड़ लेगा।"
या…
वह यहाँ है।
किसी ने नहीं बताया कि वो कौन था। लेकिन राधा को इसकी परवाह नहीं थी।
उसे भीषक को ढूंढना था।
उसने बगल वाले दरवाजे पर दस्तक दी और उसे तब तक पटकती रही जब तक घुंघराले सफेद बालों वाली एक महिला ने दरवाजा थोड़ा सा नहीं खोल दिया। उसके दुबले- पतले शरीर पर एक लंबा कपड़ा लिपटा हुआ था।
“मुझे गांव के डॉक्टर को ढूंढना होगा,” राधा हांफते हुए बोली।
“तुम्हें यहाँ नहीं होना चाहिए,” उसने कहा। “तुम यहाँ सुरक्षित नहीं हो।
चले जाओ।”
“मुझे डॉक्टर चाहिए!” उसने बच्चे की ओर इशारा करते हुए कहा। “वह बीमार है।” और अगर वह इस गांव में कहीं भी है, तो वह मर चुका होगा।

और जब वह दरवाजा बंद करने लगी, तभी राधा ने तुरंत अपना पैर बीच में रख दिया। "या तो मुझे सच बताओ, वरना मैं तुम्हारी जीभ काट दूंगी, औरत!"
वह हैरानी से आंखें चौड़ी करके बच्चे की ओर देखने लगी। “वह पहाड़ी पर, पीपल के पेड़ के पास बनी झोपड़ी में बैठा है।” और फिर उसने अपने दरवाजे पर उनके सामने दरवाजा बंद कर लिया।
राधा ने अपने पति से आशा भरी नज़रें मिलाईं और फिर दोनों ने ऊपर की ओर जाती पहाड़ी की चोटी की ओर देखा, जो छोटी थी और जिस पर चढ़ना आसान था। वहीं पर एक विशालकाय पेड़ खड़ा था, जिसकी छतरी कई घरों को मिलाकर जितनी बड़ी थी, और लताएँ किसी बूढ़ी औरत के झुर्रीदार हाथों की तरह लटक रही थीं। चुपचाप। डरावने ढंग से। उन्हें वह झोपड़ी भी मिल गई, जहाँ उन्हें जाना था।
बिना देर किए वे ऊपर चढ़ने लगे। रास्ते में उसने बच्चे को देखने के लिए अपनी चुन्नी हटाई। ऐसा लग रहा था मानो वह सांस नहीं ले रहा हो।
कृपया जीवित रहें। कृपया!
उसने आकाश की ओर देखा। “सूर्यदेव, आपने ही मुझे उनके पास पहुंचाया है। उन्हें मरने मत देना।”
बेशक वह जानती थी कि कोई मौखिक जवाब नहीं मिलेगा, लेकिन वास्तव में एक जवाब मिला, क्योंकि जब वह पहाड़ी की चोटी पर पहुंची, तो बारिश रुक गई थी लेकिन सूरज अभी तक नहीं निकला था।
उसने सोचा, कुछ न होने से कुछ होना बेहतर है।
भगवान सचमुच चाहते हैं कि यह लड़का जीवित रहे।
अधिरथ ने दरवाजा खटखटाया, जबकि राधा उनके पीछे इंतजार कर रही थीं। वह सूर्यदेव के मार्गदर्शन की लगातार प्रशंसा करती रहीं।
कुछ देर बाद दरवाजा खुल गया।
और उनके सामने दाढ़ी वाला एक बूढ़ा आदमी खड़ा था, जिसकी कमर पर केसरिया अंगवस्त्रम बंधा था। उसके गले में छोटे-छोटे शंखों की माला लटक रही थी। वह झुका हुआ था।
“मैं तो बस एक साधारण भिक्षु हूँ। मैं ब्राह्मण हूँ,” उसने स्पष्ट किया, मानो वह सोच रहा हो कि वे उन शूद्रों को मारने वालों में से एक हैं। “मैं तुम्हारा शत्रु नहीं हूँ।”
“हम आपको नुकसान पहुंचाने नहीं आए हैं। हम वो हत्यारे या उनके गिरोह का हिस्सा नहीं हैं,” उसने स्पष्ट किया। “हम यहाँ बच्चे की वजह से आए हैं… वो

बीमार है… वो…” और फिर वह रुक गई, अपने होंठ दबाते हुए, थके हुए अधीरथ की तरफ देखा। “कृपया हमारी मदद कीजिए… हमारे पास जाने के लिए और कोई जगह नहीं है।”
डॉक्टर ने उनकी ओर पलकें झपकाईं और फिर कंधे उचकाते हुए दरवाजा चौड़ा खोल दिया। "अंदर आ जाओ।"
राधा और अधिरथ मुस्कुराते हुए ऐसा ही कर रहे थे कि तभी उन्हें पीछे से कुछ आवाज़ सुनाई दी। दूर से काले घोड़ों के खुरों की आवाज़ गीली ज़मीन पर पड़ रही थी। पहाड़ी के नीचे से चीखें और गुस्से भरी निगाहें सुनाई दे रही थीं। घोड़े आकार में बहुत बड़े थे और राधा ने अंगदेश में ऐसे घोड़े देखे थे। ये सीधे फारस से आयात किए गए थे और आम भारतीय घोड़ों से कहीं ज़्यादा शक्तिशाली थे। और ये केवल राजपरिवार के ही घोड़े थे।
“वह यहाँ है,” भीषक कांपते हुए बोला।
“यह कौन है?” राधा ने झोपड़ी के अंदर कदम रखते हुए पूछा।
भीषक ने धीमी आवाज़ में बुदबुदाते हुए उस भयानक नाम का उच्चारण किया: "जरासंध."

63

“यहां क्या हुआ?” राधा ने पूछा, जब भिषक बच्चे का इलाज कर रहा था।
“जब जरासंध आता है तो आमतौर पर यही होता है। अफरा-तफरी और बेवजह की हत्या,” उसने जवाब दिया और बच्चे की नसों को छूते हुए, उसके गले, छाती और पैरों को टटोलने लगा। फिर उसने छाती में हवा भरी ताकि अंदर जमा पानी बाहर निकल जाए, जो शिशु के पीले होंठों के किनारों से रिस रहा था। “उसने खारा पानी निगल लिया है और वह लंबे समय तक ठंड में रहा है। यह लगभग एक…एक…चमत्कार है कि वह जीवित है। वह सांस ले रहा है, लेकिन बहुत धीरे-धीरे।”
राधा ने सिर हिलाया। यह तो वाकई एक अद्भुत चमत्कार था। उसने सोचा। वह एक स्टूल पर बैठी थी जबकि अधिरथ मिट्टी के जग से पानी पी रहा था।
“मैं एक मिश्रण बनाता हूँ,” भिसक अपनी मेज पर गया और एक जार से तुलसी के फूल, कुछ काली मिर्च, अदरक पाउडर और शहद निकाला—तांबे के ओखली और मूसल से उन्हें मिलाना शुरू किया। “मुझे यकीन नहीं है कि यह काम करेगा या नहीं, लेकिन मैं कोशिश कर सकता हूँ।”
“जरासंध निर्दोष ग्रामीणों को क्यों नुकसान पहुंचा रहा है?” राधा ने उत्सुकता से फिर पूछा, और साथ ही खिड़की से झाँककर यह देखने की कोशिश करती रही कि क्या आसपास कोई फारसी घोड़ा दिखाई दे रहा है।
अभी तक कोई नहीं।
भय ने उसके कार्यों को निर्देशित किया।
वह जानती थी कि समय अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि जरासंध और उसके आदमी किसी भी समय उसे और उसके पति को बच्चे के साथ ढूंढ सकते थे।
“क्या आपने लाशें देखीं?” डॉक्टर ने पूछा।
“हां,” राधा ने सिर हिलाया।
“ये वही लोग हैं जिन्होंने विद्रोह किया। जरासंध के आदमियों ने इस गाँव के खेतों में अच्छी अनाज की पैदावार देखी। जब उसने खेतों पर कब्ज़ा करने की कोशिश की, तो उसे किसानों के…उह…एक तरह के विद्रोह का सामना करना पड़ा।
उसने उन सभी को मार डाला क्योंकि वे सभी शूद्र थे। धिक्कार है! इस गाँव की

किसी भी दूसरी जाति—चाहे वह वैश्य हो, क्षत्रिय हो या ब्राह्मण—ने आवाज़ नहीं उठाई। वे चुप रहे। खामोश। मानो शूद्रों की जान की कोई कीमत ही न हो,” भीषक ने आगे कहा। “वह और नीच लोगों की तलाश करता है, लेकिन सच कहूँ तो, उसे इस बात की परवाह नहीं कि वह किस जाति का है। वह बस लोगों को मारने के बहाने के तौर पर इसका इस्तेमाल करता है। वह बस वही चाहता है जो उसे चाहिए और वह ये बेतुके बहाने देता है। जो भी उसका विरोध करता है, वह अपने आप शूद्र बन जाता है क्योंकि शूद्रों को मारा जा सकता है और उनके लिए कोई विरोध करने वाला नहीं है। वे, कड़े शब्दों में कहें तो, कुछ भी नहीं हैं। और किसी तुच्छ व्यक्ति के लिए कौन रोता है?”
राधा ने दांत पीस लिए। उसे जरासंध के इस पहलू के बारे में पता नहीं था। उसने अधिरथ की ओर देखा, जिसने अपनी अकड़ दिखाते हुए सीना चौड़ा कर रखा था और झोपड़ी के अंदर मोमबत्तियों की रोशनी में उसकी मूंछें चमक रही थीं। “गुरुजी,” उन्होंने कहना शुरू किया, “आपको यह जानना चाहिए कि हम आपको किसी भी प्रकार की वस्तु भेंट नहीं कर सकते। हमारे पास सिक्के तो हैं, लेकिन हम जानते हैं कि भीषक नकद लेन-देन स्वीकार नहीं करता।”
“कोई बात नहीं,” डॉक्टर ने कंधे उचकाते हुए कहा। “यह एक बच्चा है। मुझे इसकी मदद करने में बहुत खुशी होगी,” वह थोड़ा रुका। “क्या यह आपका बच्चा है?” उसने पूछा।
राधा ने कहा, "हां।"
“ठीक है,” भिसक ने सिर हिलाया।
उसने पेस्ट बनाया और शिशु की ओर बढ़ते हुए धीरे-धीरे उसे शिशु के मुंह में डालने लगा, लेकिन शिशु ने उसे थूक दिया।
“मेरी मदद करो,” उसने राधा से कहा।
वह अपने पैरों पर खड़ी होकर बच्चे के पास आई।
“बच्चे को पकड़ो,” भीषक ने कहा।
उसने सिर हिलाया और उसे अजीब तरह से पकड़े रही। वह घबराहट से बेहाल थी, इसलिए उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे अपनी बाहों में कैसे थामे रखे, लेकिन भीषक ने उसकी बाहों को सही तरीके से रखा, बच्चे का सिर उसकी दाहिनी बांह पर था, जबकि बाईं बांह उसकी पीठ के लिए एक आधार का काम कर रही थी।
“उसे खिला दो,” भीषक ने कहा।

“मैं ही क्यों?” वह कांप रही थी और घबराई हुई थी। उसने अपने जीवन में कभी किसी बच्चे को इस तरह अपनी बाहों में नहीं लिया था।
क्योंकि एक बच्चा अपनी माँ द्वारा दी गई किसी भी चीज़ को कभी मना नहीं करेगा।
उसने सिर हिलाया और अपनी छोटी उंगली में पेस्ट लेकर शिशु के ठंडे होंठों के पास ले गई। उसके होंठ उसकी त्वचा से छू गए और वे इतने कोमल, इतने ठंडे थे। फिर धीरे-धीरे उसे महसूस हुआ कि मसूड़े और जीभ उस खट्टे पेस्ट को चाट रहे हैं। बहुत धीरे-धीरे।
"मुझे और दो।"
और उसने फिर वही किया, इस बार मसूड़े और जीभ तेज़ी से हिले और उसे अपनी त्वचा पर गुदगुदी का एहसास अच्छा लगा। उसके होठों पर मुस्कान आ गई। “अच्छा लग रहा है,” उसने धीरे से कहा और देखा कि अधिरथ उसके पास आकर खड़ा हो गया और उसके कंधे पर हाथ रखकर उसे बगल से गले लगा लिया। “जिस तरह से वो इसे करता है, जैसे बस कुतर रहा हो, जैसे…जैसे…गिलहरी।” वो अपने पति पर हंस पड़ी, उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उसकी आँखों में आंसू आ गए थे। “वो अब बेहतर लग रहा है।”
“तुम्हें यहाँ से चले जाना चाहिए,” भीषक ने बीच में ही टोकते हुए कहा। “जरासंध किसी भी क्षण आ सकता है और तुम उसके शिकार बन जाओगे। अगर उसे पता चल गया कि तुम सूत हो, तो तुम्हें भी दूसरों की तरह ही कीलों से जड़ा जाएगा।”
राधा ने सिर हिलाया। अधिरथ ने भी ऐसा ही किया। "अगर हम उसे यह पेस्ट देते रहेंगे, तो क्या वह ठीक हो जाएगा?"
“बिल्कुल नहीं,” भीषक ने कहा। “वह थोड़ा कमजोर होगा। मेरा सुझाव है कि आप शिशु को यहीं छोड़ दें और अपनी जान बचाकर भाग जाएं। मैं धैर्यपूर्वक उसकी देखभाल कर लूंगा और हालात सामान्य होने पर आप वापस आ सकते हैं।”
“अगर जरासंध आ गया तो?” अधिरथ ने पूछा.
मैं लड़के को छुपा दूँगा। और क्या कर सकते हैं?
राधा को विश्वास ही नहीं हो रहा था कि ऐसा विचार भी सामने रखा गया है। “मैं अपने बच्चे को ऐसे नहीं छोड़ सकती। खासकर तब जब आसपास एक आवारा कुत्ता हो।”

“वह तुम्हारे साथ रहने से ज़्यादा मेरे साथ सुरक्षित है। साथ ही, उसे दवाइयाँ भी चाहिए। मैंने जो लेप लगाया है, वह तो बस शुरुआती उपाय है। उसे धूप चाहिए, खूब धूप चाहिए ताकि उसे कुछ ऊर्जा मिल सके। और अभी तो मुझे कहीं धूप नज़र नहीं आ रही। चारों तरफ़ नमी है,” भीषक ने खिड़की से झाँकते हुए कहा, जहाँ बादल गरज रहे थे। “तुम दोनों मक्के के खेतों को पार करो और लाशों को नज़रअंदाज़ करो। गंगा नदी तक पहुँचो और उम्मीद है कि किनारे पर कोई परित्यक्त मछुआरे की नाव मिल जाएगी, क्योंकि जरासंध ने तो मछुआरों और मछुआरिनियों को भी मार डाला था। अगर तुम अपने वाहन के पास वापस जाओगे, तो जरासंध को पता चल जाएगा। नाव लो और अपनी जान बचाकर भागो। शायद कुछ हफ़्तों में तुम लड़के को देखने वापस आ सको और मुझे यकीन है कि वह ठीक होगा।” अधिरथ ने भीक्षक की ओर पीठ करके राधा की ओर मुड़ते हुए कहा, “उसकी बात सही है, मेरी प्रियतमा। हम अभी सुरक्षित रह सकते हैं और बाद में लड़के को लेने लौट आएंगे।”
राधा ने उसे घूरकर देखा और हालाँकि वह इस विचार पर सहमत होने के लिए उसे थप्पड़ मारना चाहती थी, पर यह बात उसे समझ में भी आई। इतनी समझ में आई कि वह दुविधा में पड़ गई। "अगर... अगर उसे चोट लग गई तो? अगर..."
“वह यहाँ सुरक्षित रहेगा,” अधिरथ ने उसके कंधे पर थपथपाते हुए कहा।
और जब उसके गले में पित्त अटक गया, उसके शरीर की हर कोशिका 'नहीं' चिल्ला रही थी—तो उसने कहा:
"अच्छा।"

64

राधा जब अनाज के खेतों तक पहुंची ही थी कि उसके निर्णय पर संदेह मंडराने लगा।
यह उसके सामने ताबीज की तरह लटका हुआ था, मानो नैतिकता का प्रतीक हो। वह स्वार्थवश बच्चे को छोड़ना नहीं चाहती थी, फिर भी वह जानती थी कि यही सही काम है।
"क्या वह ठीक हो जाएगा?" उसने सौवीं बार की तरह यह सवाल पूछा।
“वह आ जाएगा, मेरी जान। चिंता मत करो।”
आसमान अब सुहावना था, हालांकि आसमान में हल्के भूरे बादल छाए हुए थे। सीगल पक्षी उनके सिर के ऊपर मंडरा रहे थे। राधा ने खरपतवारों को रौंदते हुए चरचराहट की आवाज़ की, जब वह उस मक्के के खेत में दाखिल हुई जिसके पौधे उसकी ऊंचाई से दोगुने थे। वे बाहरी दुनिया से अच्छी तरह छिपे हुए थे।
उन्होंने कहा, "मेरा अंतर्मन कहता है कि हमें उसे पीछे नहीं छोड़ना चाहिए।"
अधिरथ ने उसका हाथ पकड़ रखा था और उसने उसे और कसकर दबा दिया। उसे लगा जैसे वह उसे गोली मार देगा, लेकिन इसके बजाय उसने उस पर भरोसा किया। "तुम इन मामलों में हमेशा सही होती हो। तुम्हें ऐसा क्यों लगता है?"
मुझे नहीं पता। बस अंतर्ज्ञान है।
उसकी तरफ से हल्की सी हंसी सुनाई दी।
“क्या?” उसने अपनी भौंहें चढ़ा लीं।
“जब भी मैं बच्चों के साथ खेलने जाता था, मेरी माँ को भी ऐसा ही लगता था। हम पहाड़ चढ़ते और चोटी तक पहुँचने की होड़ लगाते। जल्दबाजी में चोट लग सकती है। उन्हें पता चल जाता था कि मुझे चोट लगी है, और जब मुझे पता चलता, तो वे मेरे घाव धो देती थीं,” वह मन ही मन मुस्कुराए। “वे इसे माँ का अंतर्ज्ञान कहती थीं,” वे रुके। “उसे दवाइयाँ चाहिए, लेकिन आप यह कैसे सुनिश्चित करेंगे? अगर हम चंपा के लिए नाव से जाएँ,” उन्होंने अंगदेश की राजधानी का जिक्र किया, जहाँ वे रहते थे और जो जरासंध के प्रभाव से अछूता एकमात्र

क्षेत्र था, “तो इसमें हमें कुछ घंटे लगेंगे और इससे बच्चे की जान को खतरा हो सकता है।”
राधा ने सिर हिलाया। “मुझे पूरा यकीन है कि वह ठीक हो जाएगा। मुझे भरोसा है।”
"लेकिन क्यों?"
“क्या?” वह इस सवाल से अवाक रह गई।
“क्यों?” उसने दोबारा पूछा।
उसने नीचे देखा, उनके हाथ कसकर एक-दूसरे से जुड़े हुए थे, और उसने अपने अतीत को याद करते हुए कहा: “जब मैं पाँच साल की थी, तब एक मेले में खो गई थी। मैंने बहुत देर तक अपनी माँ को ढूँढने की कोशिश की, लेकिन मैं उन तक नहीं पहुँच पाई, फिर एक पादरी ने मेरी मदद की और हम उन्हें ढूँढ पाए। जब मेरी माँ ने मुझे देखा, तो वह मुझे एक पादरी के साथ देखकर हैरान रह गईं।”
वह चौंक गया। "आपका मतलब..."
“हाँ, उसे सच में पता ही नहीं चला कि मैं घंटों के लिए गायब हो गई थी। उसे कोई परवाह ही नहीं थी।” उसकी आँखों से आँसू बहने लगे और उसने उन्हें पोंछ लिया। “मैं कभी माँ बनना ही नहीं चाहती थी, क्योंकि मुझे कभी समझ ही नहीं आया कि एक बच्चे के जीवन में माँ की क्या भूमिका होती है। वे बच्चे को बर्बाद करने वाली होती हैं, ठीक वैसे ही जैसे मेरी माँ ने मुझे चोट पहुँचाई थी। मुझे यह भी डर था कि कहीं मैं भी अपनी माँ जैसी न बन जाऊँ। लेकिन तुमसे शादी करने के बाद सब कुछ बदल गया। मुझे एहसास हुआ कि मैं बेहतर माँ बन सकती हूँ और मैंने बच्चा पाने के लिए बहुत कोशिश की, जब तक कि गंगा माता ने हमें वासु का वरदान नहीं दिया,” वह थोड़ी देर रुकी। “मैं अपने बच्चे को अपनी माँ की तरह नहीं छोड़ना चाहती। मैं उसे अपने पास रखना चाहती हूँ। अपनी बाहों में। जब तक हो सके।”
अधिरथ ने उसके गाल पकड़कर दोनों को चूमा। "तुम उससे बिलकुल अलग हो।"
उसने सिर हिलाया, उसका जबड़ा कांप रहा था और उसके घुटने सुन्न हो रहे थे। अधिरथ ने अपने जबड़े भींच लिए थे और वह उसे कठोरता से घूर रहा था। “तुम हमेशा से ही भावुक मूर्ख रही हो। और इसीलिए मैं तुमसे प्यार करता हूँ। चलो चलते हैं।”
“नहीं,” उसने अपना हाथ उसकी छाती पर रखते हुए कहा, “तुम जाओ और नाव ले आओ। मैं अपने बच्चे को ले आती हूँ। फिर हम निकलेंगे।”

उसकी आँखों में खुशी की लहर दौड़ गई।
“हाँ, हम हैं, मेरे प्रिय। हाँ, हम हैं।” और उसने भीख की झोपड़ी की ओर जाने से पहले उसके होठों पर ज़ोर से चुंबन किया।

जब वह वहाँ पहुँची, तो उसे अपने फैसले पर पछतावा हुआ और वह वहाँ होने के लिए आभारी थी।
झोपड़ी से कुछ ही गज की दूरी पर पीपल का पेड़ था, जहाँ भीषक को लटकाया गया था। उसके नीचे एक स्टूल रखा गया था, ताकि वह अपने पैर उस पर रख सके।
स्टूल पर लटके हुए उसके शरीर के चारों ओर पांच व्यक्ति थे, जो सभी कांस्य कवच और लोहे की तलवारों से लैस थे।
एक को छोड़कर।
राधा ने देखा कि वह बीच में खड़ा था। वह आम लोगों से छोटा था, गले में कुछ नहीं था, लेकिन उसकी नारंगी रंग से रंगी दाढ़ी उसके गले के न होने की असुरक्षा को छुपा रही थी। उसके ऊपरी होंठ पर एक दरार थी, मेंढक जैसी उभरी हुई आँखें थीं और छोटे, घुंघराले बाल थे जो कोयले जैसे काले थे। उसका शरीर पहलवान जैसा था, मांसपेशियां कसी हुई थीं, चौड़ा सीना और मोटी जांघें थीं जिन पर उसने धोती पहनी हुई थी। एक मणि ताबीज की तरह लटक रही थी। उसकी छोटी उंगली में नीलमणि की अंगूठी थी। उस आदमी की सबसे खास बात उसके स्याही से बने गहने थे। गुड़ना की एक प्रक्रिया होती थी जिसमें स्याही में डूबी सुई से त्वचा पर सुंदर डिज़ाइन बनाए जाते थे और वे गहने का काम करते थे। लेकिन उसका ध्यान फिर से उस भीषक पर गया जो अभी तक जीवित था। उसने ज़ोर से चीखते हुए राक्षसों से कहा: "उसे छोड़ दो!"
वे सब मुड़ गए।
टैटू वाला आदमी एक द्वेषपूर्ण मुस्कान के साथ आगे आया। राधा को उसमें कुछ अजीब सी बेचैनी महसूस हुई। मानो अधर्म ने नया जन्म लिया हो और साक्षात प्रकट हुआ हो।
"और तुम कौन हो, प्रिय?"
वह कुछ नहीं बोली। एकदम सन्न रह गई। उसके पास चाकू तक नहीं था, जबकि स्याही लगे आदमी को छोड़कर बाकी सभी आदमियों के पास किसी न किसी तरह का हथियार था।

उसके पास एक चाबुक था—एक तरह का कोड़ा जिसमें छोटे-छोटे ब्लेड लगे हुए थे।
“अगर आप शर्मा रहे हैं, तो चलिए मुझसे शुरू करते हैं,” उन्होंने आगे कहा।
“मैं जरा हूँ। राजा जरा। और ये मेरे आदमी हैं।”
उसकी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई।
नहीं। मैं सही थी। बच्चा सुरक्षित नहीं है।
लेकिन वह कहाँ है?
भीषक ने अपनी गर्दन को फंदे से छुड़ाने की पूरी कोशिश करते हुए बीच में ही कहा, "छोड़ो, लड़की। छोड़ो!"
“क्या तुम उसे जानते हो?” जरा बूढ़े आदमी की ओर मुड़ा। “अरे रुको, ज़रा ठहरो। तुम मेरे गाँव में नए आए हो। वह रथ तुम्हारा ही था, है ना? वह तो अधीरथ का है, जो एक नाकाम राजा है। मेरे आदमियों ने मुझे रथ के बारे में बताया था। तुम्हारे लोग सबसे बुरे हैं। मैंने और तुम्हारे राजा धृतराष्ट्र ने गठबंधन किया था, लेकिन तुम्हारे लोग अब भी विद्रोह कर रहे हैं और तुम्हारी वजह से…” उसने गंभीर और उदास भाव से कंधे उचकाए और भीषक की ओर चल पड़ा।
“डॉक्टर ब्राह्मण है। तुम उसे क्यों मार रही हो?” राधा ने मुट्ठी भींचते हुए पूछा।
“जो भी व्यक्ति नीची जाति के किसी व्यक्ति की सहायता करता है, वह स्वयं नीची जाति का होता है,” जरा ने कहा। “कुछ ग्रामीणों से पूछताछ करने पर पता चला कि एक दंपति डॉक्टर की तलाश कर रहा था।”
“तुम पागल हो,” उसने कहा।
“मुझे अक्सर यही सुनने को मिलता है,” जारा हँसते हुए बोला और उसकी हँसी खाँसी और घरघराहट जैसी थी। उसके सभी साथी भी उसके साथ हँस पड़े।
वह चंद्रवंशी थे, जो शाही वंश के थे और चंद्रदेव के वंशज माने जाते थे, इसलिए वे चंद्रमा की पूजा करते थे। वे वीर थे, लेकिन जरा ने… चंद्रवंशियों के सभी आदर्शों का उल्लंघन किया।
“तेरी पति कहाँ है, कुतिया?” उसने पूछा।
राधा ने कुछ नहीं कहा।
“उफ़, ठीक है, मुझे बोर करो। मैं कुछ मज़ेदार काम क्यों न कर लूँ।” और फिर उसने उस स्टूल को धक्का दिया जिस पर भीषक खड़ा था।

उसका दम घुटने लगा और चेहरे पर आई लाली के आखिरी झटके में वह चिल्लाया: "बच्चा... मेज के नीचे!"
जरा और उसके सभी आदमियों का ध्यान भीषक पर था और जब उसने यह कहा, तो वे घबरा गए। जरा राधा की ओर मुड़ा। "बच्ची?"
तभी राधा ने अचानक रास्ता बदला और झोपड़ी की ओर दौड़ पड़ी। जरा भी उसके पीछे-पीछे भागा, क्योंकि उसके आदमी यह देखकर स्तब्ध रह गए थे कि अभी-अभी क्या हुआ था।
राधा, अपने सीने में उठती आग को चीरते हुए, अपने शरीर में छाई सुन्नता के बीच, झोपड़ी के दरवाजे की ओर भागी और अंदर कूद गई।
जरा उसके ठीक पीछे था, लेकिन राधा ने फुर्ती से दरवाज़ा लात मारकर बंद कर दिया। जरा पीछे गिर पड़ा और लुढ़कते हुए दरवाजे की ओर भागी। राधा ने दरवाजे के कोने से लटकती हुई बांस की रस्सी से उसे चारों तरफ से बांध दिया, जिससे जरा अंदर न जा सके।
"तुम मुझसे बच नहीं सकती, कमीनी। तुम नहीं बच सकती," उसने जारा की आवाज सुनी।
राधा तुरंत मेज की ओर दौड़ी और उसे पलट कर देखा तो पाया कि बच्चा उसी टोकरी में था जिसमें उसने उसे छोड़ा था, और उसके ऊपर शॉल पड़ी थी। उसने टोकरी वहीं छोड़ दी और बच्चे को गोद में उठाकर सहलाने लगी, उसके कान की बालियाँ भी पकड़ लीं, लेकिन कवच नहीं पकड़ा। बच्चा पहले की तरह ठंडा नहीं था, लेकिन आँखें भी नहीं खोल रहा था।
राधा अपने विकल्पों पर विचार करने लगी। बाहर निकलने का केवल एक ही रास्ता था और उस पर जरा पहरा दे रहा था।
उसने बच्चे को अपनी छाती से लगा लिया, उसकी आँखों में आंसू थे, और वह सोच रही थी कि वह इस समय क्या कर सकती है।
सूर्यदेव, आप इतने लंबे समय से इस बच्चे की रक्षा कर रहे हैं... कृपया इसे फिर से करें।
कोई जवाब नहीं आया। हांफते हुए उसने खिड़कियों की तरफ देखा कि जरा क्या कर रही है, लेकिन उसे वहां कोई नहीं दिखा।
क्या वह चला गया है?
लेकिन उसने यह सोचने में जल्दबाजी कर दी, क्योंकि अगले ही पल उसे गर्मी महसूस हुई। उसे धुएं की गंध आई। उसे लकड़ी के चटकने की आवाज सुनाई दी।

अपनी भौंहें चढ़ाते हुए, उसे एहसास हुआ कि यह क्या था।
आग।
आग!!!
जब तक वह उसके सामने आया, तब तक वह तेजी से सांस ले रही थी—फिर उसने एक चाकू निकाला।
उसने हथियार निकाला और उस पर हमला कर दिया, उसे चाकू मार दिया, जिससे उसे एक तेज दर्द महसूस हुआ और वह आगे की ओर गिर पड़ी और नीचे की ओर लुढ़क गई। उसे एहसास हो गया कि यह दर्द कुछ समय तक उसके साथ रहेगा।
कितने समय तक, उसे इसका कोई अंदाजा नहीं था।
सब कुछ धुंधला दिखने लगा था, इसलिए वह करवट बदलने लगी। पर उसे पता था कि उसे नाव की ओर भागना होगा। जहाँ अधिरथ उसका इंतज़ार कर रहा था…

65

आज के समय में…
“उस मनहूस दिन के बाद से, मेरी माँ को उस जगह असहनीय दर्द होता रहा जहाँ तुमने उन्हें चाकू मारा था। पहले तो हमें लगा कि यह ठीक हो जाएगा, लेकिन यह ज़हर था। धीरे-धीरे असर करने वाला। और फिर सालों बीतते गए, दर्द बढ़ता गया, और तकलीफ बढ़ती गई। उन्होंने दवाइयाँ लीं, लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। वह मुस्कुराती रहीं, लेकिन बुखार उन पर लगातार बढ़ता रहा, शायद कुछ दिनों भगवान की कृपा रही हो, लेकिन इसके अलावा उन्हें अंत तक लगातार दर्द होता रहा जब तक कि…” वह रुके, एक गहरी, धीमी साँस लेते हुए। “वह जानती थीं, मैं जानता था और हर कोई जानता था कि मौत करीब है, लेकिन दर्द लंबा खिंचता चला गया। वह दर्द के साथ सिर्फ मेरे और मेरे भाई के लिए ही रहीं।”
उसने पीले पड़े जरासंध की ओर देखा, जिसे अभी-अभी ज्ञान का अहसास हुआ था। वह कुछ कहना चाहता था, लेकिन खांसने लगा। उसने कोने में बज रहे संगीतकारों को रुकने को कहा और कर्ण की ओर देखा। "तो इसलिए।"
“मेरा जन्म अंगा में हुआ था, लेकिन जो तुमने छीना है, वह मुझे तुम्हें मारने के लिए प्रेरित नहीं करता। तुम्हें जान से मारने की मेरी तीव्र इच्छा इस तथ्य से उपजी है कि तुमने मेरी माँ को उसके पूरे जीवन भर यातनाएँ दीं,” वह खड़ा हो गया।
“आपको ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है,” जारा ने कहा। “आपको जाने की ज़रूरत नहीं है। मेरे सहयोगी बन जाइए। पुरानी बातों को भूल जाइए।”
"आपके लिए यह कहना आसान है।"
उसने अपनी निगाहें सिकोड़ते हुए कहा, "मेरा यकीन करो, ऐसा नहीं है। अंगा ने मेरी पत्नी को मुझसे छीन लिया।"
कर्ण ने सिर हिलाया। “तो मुझे उसके लिए दुख है। लेकिन मैं कर्म के सिद्धांत में दृढ़ विश्वास रखता हूँ।”
"तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई यह कहने की?"

कर्ण मुस्कुराया। “महाराज, मैं आपको मार डालूंगा। यह तो बस समय की बात है।”
और वह उस घोड़े की ओर चल पड़ा जो उसका इंतजार कर रहा था।
उसने ज्यादा देर इंतजार नहीं किया, लेकिन जरा के मुंह में अंगूर स्थिर रहा। वह असमंजस और घबरा गया। कर्ण के घोड़े ने हिनहिनाया और जैसे ही सूरज निकलने लगा, वह चला गया।
और उसने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

जारा को अपने आप से और उस नए मूर्ख से अत्यधिक घृणा महसूस हुई।
उसे लगता है कि वह मुझसे लड़ सकता है। वह युद्ध चाहता है। मैं उसे युद्ध दूंगा।
जरा अपने रथ पर सवार था, क्रोध से लबालब भरा हुआ और सीधे शिविर की ओर देख रहा था। उसका शिविर। चंपा नदी के किनारे से मीलों दूर, सैकड़ों शिविरों, अलावों और यहाँ तक कि एक निगरानी मीनार से भरा हुआ था जहाँ उसके जासूस तैनात थे। वे दूरबीनों से दूर से देख रहे थे और किसी भी हलचल पर नज़र रख रहे थे।
वह अंदर दाखिल हो चुका था और इससे पहले कि वह अपने कप्तानों से युद्ध योजनाओं के बारे में बात कर पाता, उसे वहां मची अफरा-तफरी का एहसास हुआ। लोग इधर-उधर भाग रहे थे। नर्सों और भीषकों के तंबू आग की चपेट में थे। तेल के कई ड्रम फट गए थे, साथ ही खाने-पीने के सामान से भरे बक्से और पानी की आपूर्ति भी जलकर खाक हो गई थी।
जारा ने देखा कि उसके सैनिक शिविरों के पिछले हिस्से की ओर दौड़ रहे थे, और वह भी थकावट और उत्सुकता से वहां पहुंचा, यह पता लगाने के लिए कि अभी-अभी क्या हुआ था।
वह दक्षिणी भाग में पहुंचा, जहां उसने एक परिचित आकृति को अपने सफेद, हल्के रंग के गाउन और खुले, घुंघराले बालों के साथ खड़े पाया।
Vrishni.
“क्या हुआ?” वह उसके बगल में खड़ा हो गया।
"हमला। एक खामोश हमला।"

और उसके सामने तबाही का मंजर था—शिविर जले हुए थे, भोजन और पानी के भंडार नष्ट हो चुके थे, यहाँ तक कि उसके हथियार भी चकनाचूर हो चुके थे, और घोड़ों को गोदकर मार डाला गया था। अस्तबल जले हुए थे, चारों ओर अफरा-तफरी मची हुई थी। युद्ध शिविर का पिछला हिस्सा हमेशा कम सुरक्षित क्षेत्र होता था और हमला करने वाला हर कोई जानता है कि यह सबसे असुरक्षित क्षेत्र भी है। लेकिन कोई भी ऐसा नहीं करता, क्योंकि युद्ध शिविर विशाल भूभाग में फैला हुआ था। मोर्चे पर सभी सैनिक पूरी तरह से सुसज्जित थे। लेकिन दक्षिणी भाग भोजन के लिए मवेशियों और पशुधन तथा जल टरबाइनों के लिए समर्पित था। सब कुछ वहीं रुका रहा और कई दिनों तक चले युद्ध के दौरान पूरे युद्ध शिविर की जीवनरेखा बना रहा। वे शहर से शिविर तक बार-बार आना-जाना नहीं कर सकते थे, इसलिए वे आवश्यक वस्तुएँ अपने साथ ले आए थे।
हालांकि अभी आवश्यक वस्तुएं उपलब्ध नहीं थीं।
"वह कौन था?" उसने उससे पूछा, और उसे उससे यह नहीं पूछना चाहिए था, लेकिन वह उसके सबसे करीब थी और उसके कप्तान दूसरों को फटकार लगाने में व्यस्त थे। “रिपोर्टों के अनुसार, निषादों का नेतृत्व एक यूनानी कर रहा था,” उसने कंधे उचकाते हुए कहा। “तुम्हें उस लड़के ने बेवकूफ बनाया था, जरा। सावधान रहना।”
जरा को तुरंत गुस्सा आ गया और वह उसका गला पकड़कर उसे नीचे गिराना चाहता था, लेकिन फिर रुक गया। काल को गुस्सा तो आएगा ही। उसने आह भरी। "वह पीछे से कैसे आ गया?"
"हम बस यही उम्मीद कर सकते हैं कि हमें इसका जवाब मिल जाए।"
जारा उससे दूर हट गई और एक कप्तान के पास जाकर उससे पूछा, "क्या हमने कुछ सैनिक खो दिए हैं?"
“महामहिम, उन्हें केवल गिराया गया था। वास्तव में, उनका इस तरह हमला करना विचित्र है। उन्होंने हमारे किसी भी सैनिक को नहीं मारा, लेकिन हमारे सभी रसद को नष्ट कर दिया।”
वे मेरे संसाधनों को खत्म करना चाहते हैं।
जारा ने गुस्से में कहा, "अगर हम युद्ध शुरू करते हैं, तो यह मूर्खता होगी। वह चाहता है कि मैं युद्ध भड़काऊं।"
"शायद, महाराज।"

लेकिन मैं ऐसा नहीं करूंगा। शहर से और सामान लाने में हमें कितना समय लगेगा?
कप्तान डरा हुआ और असमंजस में लग रहा था। यह सवाल उसे परेशान कर रहा था क्योंकि वे दोनों जानते थे कि चाहे कितनी भी जनशक्ति का इस्तेमाल किया जाए, युद्ध अनिश्चित काल के लिए टल जाएगा।
“उह, ठीक है। दक्षिण से बचा हुआ सामान शिविर के पूर्व में ले आओ। इस पर कड़ी निगरानी रखना।”
"ठीक है, महाराज। हालांकि मुझे ऐसा लग रहा है कि वह दोबारा हम पर इस तरह हमला नहीं करेगा।"
कोई भी कभी भी निश्चित नहीं हो सकता।
सूरज उग चुका था और नारंगी रोशनी जरा के चेहरे पर पड़ रही थी, जिससे उसका चेहरा खिल उठा था। वह जानता था कि उसके साथ धोखा हुआ है और वृष्णि सही थी, लेकिन तभी उसकी नज़र पहरेदारी मीनार पर पड़ी जहाँ उसके पहरेदार ज़ोर-ज़ोर से ढोल बजा रहे थे और तुरही बजा रहे थे।
कप्तान का चेहरा पीला पड़ गया। "महामहिम..." उसने हांफते हुए कहा।
यह युद्ध का संकेत था।
लड़ाई शुरू हो चुकी थी। लेकिन…
मैं गलत था। वह नहीं चाहता था कि मैं युद्ध शुरू करूं।
वह युद्ध को मेरे पास ला रहा है!

66

आकाश में दिखाई देने वाला तीर आशा की किरण जैसा लग रहा था।
लेकिन ऐसा नहीं था।
यह एक सैनिक का अभिशाप था, क्योंकि यह कवच को भेदते हुए मांस को चीरता हुआ निकल गया - वह आग जो जल रही थी, वह दर्द जो इसने पैदा किया, उसने सैनिक को जमीन पर कुचल कर छोड़ दिया, उसका चेहरा पूरी तरह से मिट्टी से सना हुआ था।
और उसके शरीर के ऊपर से सैकड़ों फीट की दूरी तक पानी बहता रहा।
या शायद इससे भी अधिक।
वे घोड़ों, हाथियों और रथों पर सवार होकर आगे बढ़ रहे थे, जैसे ही युद्ध के दोनों पक्ष आमने-सामने आए, आपस में भिड़े और तलवारों की बौछार के साथ बेरहमी से युद्ध छिड़ा। युद्ध के दोनों पक्षों की पैदल सेना सबसे आगे थी, जबकि घुड़सवार सेना अपने घोड़ों के साथ अपने लंबे भाले लहराते हुए एक-दूसरे के दुश्मनों को घायल कर रही थी। वे ढालों को तोड़ रहे थे और कवच को चकनाचूर कर रहे थे, हेलमेट गिर रहे थे और खोपड़ियाँ चूर-चूर हो रही थीं। यह पूर्णतः अराजकता थी। पूर्णतः रक्तपात, नारंगी सूर्य की चमक में खून के लाल कुंड बन रहे थे, जो उन्हें मृतकों की बर्फीली भूमि में गर्मी प्रदान कर रहा था।
तीरंदाज पीछे थे और वे अपने तीरों को तेल में डुबोकर, उन्हें जलाकर आकाश में चला रहे थे, जिससे वे प्रज्वलित होकर दुश्मन के तीरों से टकरा रहे थे, सरकंडे टूट रहे थे और उनके टुकड़े जमीन पर बिखर रहे थे, जो अनजान सैनिकों पर बरस रहे थे।

सत्या को युद्ध का हिस्सा नहीं होना चाहिए था। यहाँ होना उसका मकसद नहीं था। अभी तो बिलकुल नहीं। वह ज़मीन पर, बहुत पीछे, अपने आदमियों को तीर चलाने का आदेश दे रहा था और तीरंदाजों को लोगों का कत्लेआम करने दे रहा था।

तभी, जरा के आदमियों की ओर से तीरों की एक और बौछार आई और उसने अपनी ढाल ऊपर उठा ली, क्योंकि तीरों की बौछार ढाल से टकराकर चकनाचूर हो गई।
उसने कुछ और सैनिकों को पूर्वी हिस्से की रक्षा करने और जरा पर बगल से हमला करने का आदेश दिया, जबकि वह क्षितिज पर जरा को खोजने की कोशिश कर रहा था, लेकिन वह वहां नहीं था।
बेशक वह ऐसा नहीं होगा।
वह एक क्रूर राजा था। वह अपने तम्बू में बैठकर अपने सेनापतियों को अपने घिनौने काम करने का आदेश देता था। लेकिन सत्य ने कर्ण के घोड़े पर एक नज़र डाली। वह राजा की बजाय एक साधारण व्यक्ति जैसा लग रहा था। उसके चेहरे पर विनम्रता झलक रही थी और उसने सुनहरे रंग का अलंकृत हेलमेट पहन रखा था, साथ ही उसकी घनी दाढ़ी भी थी जो सामान्य से अधिक बढ़ी हुई थी। उसका पूरा सीना कवच से ढका हुआ था और वह किसी अन्य सैनिक जैसा ही लग रहा था।
लेकिन यही योजना थी।
अगर सैनिकों को राजा मिल जाता, तो वे उसे घेर लेते, इसलिए राजा को युद्ध के दौरान छिपना पड़ता था। इस तरह वह बिना किसी को पता चले ही सफल हो गया।
कर्ण घोड़े को पीछे छोड़कर, अपनी धनुर्विद्या के बल पर युद्ध में उतर गया।
सत्य में भी कभी ऐसी ही अधीरता और पौरुष का भाव हुआ करता था।
लेकिन अब वह बूढ़ा हो चुका था।
अपने मुंह के दोनों ओर उगी मूंछों को सहलाते हुए उसने आदमियों को आगे बढ़ने का आदेश दिया...
जब उसने देखा।
उनकी पैदल सेना का एक जवान लड़का मृत पड़ा था। और कई अन्य सैनिक भी मृत पड़े थे।
किसी चीज़ ने उसे युद्ध में जाने से रोक दिया, लेकिन... उसे ये शब्द सुनाई दिए: कप्तान! कप्तान! कोई चिल्ला रहा था, लेकिन वह केवल सोमा नामक मादक पदार्थ के आराम की कल्पना कर सकता था। वह कितना गर्म था। वह कैसा एहसास देता और उसे आनंदित करता, साथ ही उसे होश खोने और दुनिया को भुलाने में मदद करता।
लेकिन अपने आदमियों को उस तरह मरते देख, उसके लिए कुछ करना ज़रूरी हो गया था। यहाँ होना, अपने द्वारा बनाई गई स्वार्थी दुनिया में जीने से कहीं ज़्यादा ज़रूरी था।

और उसने वैसा ही किया।
वह घोड़े से उतरा, हाथ में तलवार लिए वह आगे बढ़ा और उसके हर कदम से धरती कांप उठी। वह करीब पहुंचा, उसकी हड्डियां कांप रही थीं, लेकिन उसके दिल में साहस भरा हुआ था। अंगा के लिए लड़ो! अंगा के लिए लड़ो! वह इन शब्दों को दोहराता रहा और आने वाले सैनिकों पर वार करता रहा, अपनी ढाल से आग के तीरों की बौछार को रोकता रहा और दूसरे आदमी पर तलवार चलाता रहा, तभी उस आदमी ने वार को रोककर उसे धक्का दे दिया और उसकी ढाल छीन ली।
और इससे पहले कि दुश्मन उस पर हमला कर पाता, अचानक कहीं से एक घोड़े ने उसके चेहरे पर जोरदार प्रहार किया और उसे कुचल दिया।
एक पल के लिए सत्या भ्रमित और विचलित हो गया, लेकिन फिर उसने खुद को संभाला।
सोमा…सोमा…
उसके विचार उसी दिशा में प्रवाहित होने लगे…
मैं यहाँ नहीं रह सकता।
और वह और दूर खिसक गया, उसका दिल बेरहमी से धड़क रहा था। लेकिन डर से नहीं, बल्कि अपराधबोध से, क्योंकि वह उस घटना के केंद्र से भाग रहा था।

शनाया ने अपने लोगों के लिए लड़ाई लड़ी।
और ये वो लोग नहीं थे जिनसे उसने अपना संबंध जोड़ा था— वो अंगान नहीं थे जिनके लिए उसने लड़ाई लड़ी थी। बल्कि ये यूनानी थे।
यदि कर्ण उससे विवाह करता और उससे प्रेम करता, तो वह इस सब को अपना समझती।
लेकिन ऐसा नहीं था। यह सब केवल कर्ण का था और वह अपने पिता आर्किमिडीज के लिए युद्ध में उसकी सहायता कर रही थी। कर्ण के साथ उसका अच्छा रिश्ता था और उसमें हास्य का भी बड़ा योगदान था, लेकिन युद्ध के मैदान में स्वार्थी होना ही पड़ता था।
उसके पिता हमेशा यही कहते थे।
और वह युद्ध के बीचोंबीच थी; युद्ध के मैदान में मौजूद बहुत कम महिलाओं में से एक, लेकिन फिर भी उसने अपना प्रभाव छोड़ा।

तीरों की बौछार, चीख-पुकार और ढालों के गिरने की आवाज़ों के बीच, वह जानती थी कि देवी भी वहीं कहीं दूर कोने में मौजूद थी।
शनाया के पास हथियार के रूप में एक हथौड़ा था, साथ ही खुद के लिए एक ढाल भी थी। वह ढाल लेकर अपने आस-पास मौजूद किसी भी दुश्मन की ओर बढ़ती और उस पर वार करती। उसके यूनानी साथी उसके करीब थे और उन्होंने भालों से बना अपना एक छोटा सा घेरा बना लिया था।
“आग की बारिश!” शनाया चिल्लाई।
और उन सभी ने अपनी ढालें ऊपर उठा लीं, क्योंकि गोलियों की एक और बौछार उनकी ढालों पर जोरदार तरीके से लगी और उन्होंने उसे अच्छी तरह से बचा लिया।
“अंदर आ जाओ!” उसने फिर आदेश दिया।
और यह घेरा तब तक बढ़ता रहा, जब तक कि एक हाथी का पैर बीच में आकर उन्हें ज़मीन पर पटक कर कुचल नहीं दिया, और शनाया उछलकर दूर भाग गई, क्योंकि उसके अधिकांश आदमी उन विशाल पैरों के नीचे कुचल गए जिन पर जरा का महावत बैठा था। दांत पीसते हुए वह हाथी की ओर बढ़ी और उसके पैरों पर प्रहार करने लगी। ऐसा करते ही हाथी ज़ोर से चीखा और तुरही जैसी आवाज़ निकाली जो उसे हमेशा के लिए परेशान कर देगी। उसने अपने दोनों पैर उठाकर ज़मीन पर पटक दिए, जिससे उसके और उसके साथी दोनों मारे गए।
वह बाल-बाल बची, जब वह एक कोने में गिरी, तभी शनाया ने एक आंगन सैनिक को जमीन पर पड़ा देखा, जो उससे मदद की गुहार लगा रहा था क्योंकि एक दुश्मन लगातार उस पर तलवार से वार कर रहा था...
जब उसने दूसरी तरफ देखा और उस यूनानी सैनिक की ओर बढ़ी, जिसने अपना पैर खो दिया था, तो उसने उसे कंधों से पकड़कर दूर ले गई और उसकी देखभाल करने और उसे स्वस्थ रखने के लिए वापस शिविर में चली गई।

युद्ध बिल्कुल भी सुनियोजित नहीं थे।
वे हर जगह मौजूद थे।
कर्ण ने पहले कभी ऐसी लड़ाई नहीं लड़ी थी। लेकिन अब वह यहाँ था, और उसे अपराधबोध हो रहा था। उसे और अधिक तैयार रहना चाहिए था। युद्ध शुरू होने के

पड़ा। लोहे का मुखौटा पहने हुए व्यक्ति आगे बढ़ा और अपनी विशाल भुजाओं से कर्ण का गला घोंटने लगा, तभी कर्ण ने उसके गले पर एक जोरदार मुक्का मारा, जिससे उसका दम घुट गया और कर्ण पीछे लुढ़कते हुए एक और तीर चला दिया...
उस पर नहीं, बल्कि पीछे से आ रहे दुश्मन पर, जो उस पर चुपके से हमला करने की योजना बना रहे थे।
उसके गले में अभी भी एक अजीब सी सिहरन थी, जब उसने लोहे का मुखौटा पहने हुए आदमी को कुल्हाड़ी लाते और कर्ण के चेहरे पर वार करते देखा। कर्ण ने कुल्हाड़ी को रोक तो दिया, लेकिन वह वार उसकी बांह में जा लगा और उसे अपने पूरे शरीर में असहनीय दर्द की लहर महसूस हुई।
कुछ क्षणों के लिए उसे चक्कर आने लगे क्योंकि वह सांस भी नहीं ले पा रहा था।
मैं असफल हूँ।
हालांकि वह नहीं चाहता था कि यह विचार उस पर हावी हो, फिर भी यह विचार उसके मन में आया और उसने अपने होंठों को चाटा और अपने सामने खड़े व्यक्ति से लड़ने पर ध्यान केंद्रित किया...
तभी अचानक लोहे का मुखौटा पहने हुए व्यक्ति पर एक परछाई झपटी और उसका गला पकड़ लिया।
कर्ण को देखने की भी जरूरत नहीं थी, वह जानता था कि उसके ऊपर बैठी देवी ही थीं, जिन्होंने उसका गला पकड़ रखा था, तभी कर्ण ने आखिरी बाण निकाला और दूसरा बाण चलाने के लिए आगे बढ़ा...
मास्क के आर-पार दिखाई दे रही आंख की पुतली पर निशाना साधा गया।
और वह कीचड़ भरे मैदान के ऊपर से उड़ता हुआ लोहे का मुखौटा पहने हुए आदमी के चेहरे की ओर बढ़ रहा था...
लेकिन उसने बीच में ही उसे पकड़ लिया और उस तीर से देवी की बांह में वार कर दिया, जिसने रोने और चीखने के बावजूद अपनी पकड़ ढीली नहीं की।
"मैं तुम्हें मार दूँगा!"
लेकिन लोहे का मुखौटा पहने उस आदमी ने उसका सिर पकड़कर उसे ज़मीन पर पटक दिया। उसने उसे मुक्का मारने की कोशिश की, जिसे उसने अपने कवच से रोक दिया और कर्ण आगे बढ़कर पास में पड़े भाले को उठाकर उसके पेट में घोंप दिया। लोहे का मुखौटा पहने वह व्यक्ति खून से लथपथ था और भ्रमित था, इससे पहले कि उसने उसे बाहर निकाला।

“पीछे हटो! पीछे हटो!” कर्ण ने अपने सेनापतियों को पुकारते हुए सुना।
“हमें यहाँ से निकलना होगा,” उसने देवी से कहा, जिसने सिर हिलाकर सहमति जताई।
उसने लोहे का मुखौटा पहने उस व्यक्ति पर हमला नहीं किया, जो वहीं खड़ा रहा और कर्ण और जरा के सैनिकों के पीछे हटने पर भी उसने कोई हमला नहीं किया। हमला करने की क्षमता होने के बावजूद, लोहे का मुखौटा पहने वह व्यक्ति उन्हें देखता रहा, जबकि देवी और कर्ण धीरे-धीरे पृष्ठभूमि में चले गए। “धन्यवाद,” उसने कहा। “अगर आप नहीं होते तो मैं मर जाता।”
देवी अपने कटे हुए घाव को पकड़े हुए उसके बगल में चलती रही और बोली, "यह कोई व्यक्तिगत बात नहीं है। तुमने मुझे बचाया। मैंने तुम्हें बचाया। हम बराबर हैं।"
और उसने अपनी आँखें घुमाईं और आगे बढ़ गई, जबकि कर्ण शिविर की ओर दौड़ पड़ा।
घबराहट में उसने देखा कि उसके साथी अन्य घायल या मृत सैनिकों को ला रहे हैं। उनके सामने का युद्धक्षेत्र सिकुड़ता जा रहा था और शवों से भरा पड़ा था। अब युद्ध शिविरों से चांडालों को शवों को दाह संस्कार के लिए लाने का काम सौंपा जाएगा।
लेकिन इन लड़ाइयों में यह पता नहीं चलता था कि कौन जीतेगा।
लेकिन जहां वह खड़ा था, वहां से और अपनी सेना को मैदान के बीचोंबीच लगभग कटी-फटी और लूटी हुई देखकर, उसे एहसास हुआ कि वह हार गया है।

67

जारा अपने तंबू में आराम से बैठकर इलाके का अध्ययन कर रहा था। उसके कुछ खोजी दल भी लौट आए थे और उन्होंने उसे युद्ध की पूरी कहानी सुनाई थी। जब तक नतीजा उसके पक्ष में था, वह खुश था।
फिलहाल तो युद्ध उन्हीं ने जीत लिया था, क्योंकि कर्ण की सेना पीछे हट गई थी और वह अपनी जीत पर मुस्कुरा रहा था, भले ही कल एक और दिन होगा।
उसने अपने आदमियों को रात भर पहरा देने का आदेश दिया था, ताकि हमले की आशंका में वे डटे रहें। घायलों को या तो वापस भेज दिया गया था या उनका इलाज किया जा रहा था। जो बच गए थे, उन्हें खूब दावतें, शराब और खाना दिया गया, क्योंकि उन्होंने अच्छा काम किया था। मेजों और कुर्सियों की लंबी कतारें लगाई गईं और उसके सैनिकों ने खाना खाया, जबकि कुछ आराम कर रहे थे। सैकड़ों सैनिक अपना पनीर, शराब और भुना हुआ मांस मंगवा रहे थे। मुर्गियाँ और बकरियाँ पकाने और परोसने के लिए काटी जा रही थीं।
यहां तक कि जारा भी इस पल का भरपूर आनंद ले रहा था। उसने अपने कप्तानों से लंबी बातचीत की, जिन्होंने उसे बताया कि कल उनका दिन होगा और पूरी लड़ाई तीन दिन से भी कम समय में समाप्त हो जाएगी।
उसने उन्हें बधाई दी और भोज में आमंत्रित किया, तभी उसने देखा कि घायल और अक्षुण्ण काल प्रवेश कर रहा है और उसकी ओर देख रहा है। जरा उसे कर्ण के हथियार—उसके हाथ—को तोड़ने के लिए बधाई देता, लेकिन वृष्णि उसके चारों ओर ऐसे मंडरा रही थी जैसे कोई कुत्ता पट्टे से बंधा हो।
जरा को इस बात की खुशी थी कि वृष्णि ही वह थी जिसने काल को वे अपार शक्तियां प्रदान कीं जो अब उसके पास थीं, लेकिन वही उसके अभिशाप का कारण भी थी।
जरा अपने तम्बू में दाखिल हुआ, उसके पीछे काल और वृष्णि भी आए, जो गंभीर मुद्रा में खड़े थे।

जारा ने अपनी वाइन की चुस्की लेने और कुशन पर लेट जाने के लिए कुछ पल का समय लिया और चौड़ी मुस्कान के साथ कहा: "अब लड़के को पता चल गया है कि वह किससे निपट रहा है।"
“हां, तुमने उसे दिखा दिया है,” वृष्णि ने शांत, निष्क्रिय काल के चारों ओर चक्कर लगाते हुए कहा।
तो, आपको क्या चाहिए? आप यहाँ क्यों आए हैं?
“मैंने काल के साथ कुछ साझा किया। कुछ ऐसा जो कांटे की तरह चुभ रहा था और मैंने सोचा कि मुझे इसे आपके साथ साझा करना चाहिए, जब उसने कहा कि यह बात समझ में आती है।”
“उसने क्या कहा?” जरा खिलखिलाकर हँसी। “जब से तुमने उसे इस प्राणी में बदल दिया है, तब से उसने बोलना बंद कर दिया है। वह…”
“एक सिपाही,” वृष्णि ने वाक्य पूरा किया और काल ने घायल आँखों से जरा को देखा। “तुम्हें इस बात की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है कि वह क्या बन गया है। वह अब भी मुझसे प्यार करता है। वह मेरा बेटा है। लेकिन तुम्हें यह समझना शुरू करना होगा कि कर्ण एक दुर्जेय शत्रु है, कोई बच्चा नहीं जिसे तुम यूँ ही फेंक दो।”
और आप ऐसा क्यों कहते हैं?
वृष्णि आगे आई और उसकी आवाज लगभग फुसफुसाहट जैसी थी, जबकि उसका हार चमक रहा था: "क्या आपको यह अजीब नहीं लगा कि उसने आपके कुछ सामान पर हमला किया लेकिन बड़ी मात्रा में भोजन और शराब को बिना नुकसान पहुंचाए छोड़ दिया?" “वह जल्दी में रहा होगा। उन्होंने सबसे पहले जिस चीज को देखा, उसी पर हमला कर दिया।”
और फिर भी शराब के पीपे अछूते थे।
भगवान शिव की तीसरी आंख की कसम, वह मुझे मेरी जीत का आनंद भी नहीं लेने दे रही है।
आप क्या कहना चाह रहे हैं?
"उसने जो लड़ाई शुरू की वह एक चाल थी।"
“तुम्हारा क्या मतलब है?” जरा गुस्से से उबलता हुआ, आँखें सिकोड़ते हुए खड़ा हो गया।
"इसका मकसद आपको यह एहसास दिलाना था कि आपने जीत हासिल कर ली है और आप जश्न मनाएंगे और शराब के उन खूनी पीपों को पिएंगे, और साथ ही आपको इस विचार से

विचलित करना था, जिसमें वह सफल रहा, क्योंकि आप युद्ध में व्यस्त थे, लेकिन मेरे पास सोचने का समय था।"
"क्या आपका मतलब है कि उसने उन्हें जहर दिया?"
"शायद।"
“अरे! यह तो बिलकुल बेतुका लगता है…”
और फिर उन्होंने यह सुना। एक सिपाही बिना किसी पूर्व सूचना के तंबू के अंदर प्रकट हुआ और पसीने से तर माथे के साथ बोला: "महाराज...कुछ घटित हो रहा है..."
"क्या?"
“सैनिकों को स्ट्रोक आ रहा है!”

जरा, काल और वृष्णि उस भोज स्थल की ओर दौड़े जहाँ पहले संगीत बज रहा था, लेकिन अब वहाँ सन्नाटा छाया हुआ था, क्योंकि सैकड़ों सैनिक अचेत हो रहे थे, उनके मुँह से झाग निकल रहा था और वे विकृत हो रहे थे।
क्या हो रहा है?
उसने अपने बगल में खड़े उस सैनिक को आदेश दिया, जो उसे सूचना देने आया था: "शिविर की सभी चौकियों की जाँच करो। क्या उनके साथ भी ऐसा हो रहा है?"
"जी महाराज।" और वह धुएं का निशान छोड़ते हुए तेजी से चला गया।
जरा वहीं खड़ा रहा, जबकि भीषक और नर्सें घटनास्थल पर पहुँचकर समस्या की जाँच करने की कोशिश कर रहे थे। वह स्थिर ही रहा। शराब में जहर मिला हुआ था। बेशक, वृष्णि सही थी। और जब उसने जादूगरनी की ओर देखा, तो वह पहले से ही झाग उगल रहे पीड़ितों में से एक की आँखों की जाँच करने में व्यस्त थी।
“मैंने इसे पहले भी देखा है,” उसने कहा।
"आपका क्या मतलब है?"
“जहां से मैं आती हूं,” उसने कहना शुरू किया, “यह माया सभ्यता की शिक्षाओं में से एक है।” उसने राक्षसों के जादू के बारे में बताया, जो जादू-टोना कम और विज्ञान ज़्यादा था। आख़िरकार, वह एक राक्षसी थी और अपने पुरुष समकक्षों से ज़्यादा सभ्य दिखती थी, लेकिन राक्षसों की कहानियां सदियों से चली आ रही हैं और वे उतने आदिम नहीं थे जितना उन्हें समझा जाता था।

विज्ञान और अन्य अध्ययनों में उनके ज्ञान ने उन्हें मनुष्यों को काटकर उन पर प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया, और इसीलिए उन्हें नरभक्षी कहा जाता था। “यह अपने शत्रु के आक्रमण को वास्तव में कमज़ोर करने का एक तरीका है।” "यह कैसा रहा?"
“दुश्मन की सेना को खूंखार राक्षसों, जीवों, नरभक्षियों में बदलकर। एक खास तरह का परजीवी है—टॉक्सोप्लाज्मा गोंडी—जो चीजों को देखने के संज्ञानात्मक तरीके को प्रभावित करता है और व्यक्ति को…सरल शब्दों में कहें तो…पागल बना देता है। उसने उन्हें जहर नहीं दिया। उसने बस तुम्हारे आदमियों को तुम्हारे ही खिलाफ कर दिया!”
और जब उसने यह कहा, तो उनमें से एक आदमी खड़ा हो गया और खून से लाल आंखों से जरा की ओर बढ़ा, तभी काल बीच में आ गया और उस आदमी के सिर में चाकू घोंप दिया, जिससे वह जमीन पर गिर गया।
“और अगर आप उन्हें सम्मोहित कर दें…,” उसने कहा, “…और उन्हें यह विश्वास दिला दें कि वे कोई नरभक्षी हैं, जैसे कि कोई बाघ या पिशाच, तो आपको एक दुर्जेय शत्रु मिलेगा जो ऐसा ही सोचेगा। लेकिन सवाल यह है कि उसे यह जानकारी कैसे मिली? किसी दूसरी राक्षसी से, ज़ाहिर है।”
“इससे क्या फर्क पड़ता है?” जरा ने कंधे उचकाते हुए कहा। “काल, यहाँ मौजूद सभी को मार डालो। उन्हें चाकू मार डालो।”
“नहीं!” वृष्णि चीखी। “मैं इसे उलट सकती हूँ। बस मुझे थोड़ा समय दो। काल, मेरे बालक, इन्हें बाँध दो, जितने बाँध सको।”
क्या आप उन्हें ठीक कर पाएंगे?
“हां,” उसने आत्मविश्वास से कहा। “लेकिन बेहतर होगा कि तुम उम्मीद करो कि वह बच्चा तुम पर हमला न करे क्योंकि तुम्हारी सेना लगभग मर चुकी है।” “मेरे पास अभी भी कुछ बचा है। मैं…” उसने दांत पीसते हुए कहा। वह चाहता है कि मैं हार मान लूँ, लेकिन मैं नहीं मानूँगा।
जरा ने बचे हुए सैनिकों को आदेश दिया कि वे अस्पताल जाकर घायलों को भी बुलाएँ, क्योंकि उन्होंने बहुत कम समय में बड़ी संख्या में सैनिकों को खो दिया था। और जब उसने वृष्णि को विभिन्न औषधियों और लेपों का प्रयोग करते देखा, तो उसे एहसास हुआ कि उसका यहाँ आना किसी न किसी तरह से उसके हित में ही था।

और वह खुश था। लेकिन साथ ही भयभीत भी था कि कर्ण ने उसे फिर से धोखा दिया था। जरा इतना मूर्ख नहीं हो सकता था और उसने निराशा में अपना माथा पीट लिया, और अपने शिविर की ओर जाने लगा, जबकि उसके साथी संभल रहे थे, तभी उसने अपने सामने एक नकाबपोश परछाई को खड़ा देखा।
वह कहीं से अचानक प्रकट हुआ था, मानो आसपास के लोगों की भागदौड़ और झड़प के बीच एक मूक दर्शक हो।
फिर जारा के कुछ कहने से पहले ही उसने अपना हुड उतार दिया। जारा ने देखा कि उसके लंबे बाल उसके कंधों पर लहरा रहे थे, उसकी आंखें बादलों जैसी तीखी और तूफानी भूरी थीं, और उसका चेहरा बेहद आकर्षक था। उसकी नुकीली नाक पर एक नथनी थी।
“तुम कौन हो?” जरा ने पूछा। किसी कारणवश, उसे ये आकृति जानी-पहचानी सी लगी, लेकिन वो इसे पहचान नहीं पा रहा था।
“मुझे लगता है उसने तुम सबको चुरा लिया है,” लड़के ने हंसते हुए कहा; वह मुश्किल से कर्ण की उम्र का था, शायद उससे भी छोटा।
“तुम मेरे शिविर में आए हो,” जारा उस लड़के की ओर बढ़ा, जो दुबला-पतला था, प्रसिद्ध पहलवान की तरह हट्टा-कट्टा नहीं था, “और तुमने मेरा अपमान किया। अपनी पहचान बताओ।”
उसने एक हस्तपत्र निकाला और जारा ने उसे उससे छीन लिया। पढ़ते समय जारा की पीठ लड़के की ओर थी और उसने परिचित शब्दों पर ध्यान दिया। "अहा, अब समझ आया। मैं इस विषय पर विचार नहीं कर रहा था क्योंकि मुझे लगा था कि मैं जीत जाऊंगा।"
“लेकिन उसने आपको हरा दिया,” लड़के ने कहा। “मैं मदद कर सकता हूँ।”
“मुझे तो यह सोचकर हैरानी होती है कि मुझे तुम पर भरोसा क्यों करना चाहिए?” जारा ने पूछा।
वह मुस्कुराया। एक घिनौनी मुस्कान। "क्योंकि हमारा एक साझा मित्र और एक शत्रु है।"
“तुम्हारे मन में क्या है?” जरा ने पूछा।
उन्होंने कहा, "घात लगाकर हमला किया गया था।"
जारा ने अपनी निगाहें सिकोड़ीं। "मैं समझ गया।"
इससे पहले कि वह कुछ और कह पाता, उसने किसी आदमी की गुर्राहट सुनी जो उसे पकड़ने और खाने के लिए उसकी ओर बढ़ रहा था। तभी लड़के ने अपना धनुष और बाण

निकाला और खोपड़ी पर तीर चला दिया, जिससे आंखें और दिमाग चीरकर जमीन पर बिखर गए। तीर जरा से कुछ इंच दूर था और अगर जरा थोड़ा सा भी बाईं ओर होता, तो उसका सिर भी उसके साथ उड़ जाता।
“अच्छा निशाना था,” उसने कंधे उचकाते हुए कहा। “फिलहाल हमारी टीम के मनोबल में थोड़ी गिरावट आई है।”
"मैंने कभी नहीं सोचा था कि कर्ण तुम सबको इस तरह से हरा देगा।"
मुझे भी समझ नहीं आ रहा, बच्चे।
लेकिन वह होशियार था। और जारा को उससे भी ज्यादा होशियार होना था। उसे अपने दुश्मन को कम आंकना बंद करना था।
"क्या तुम शराब पीते हो?"
"ज़रूर।"
“अच्छा।” जरा आगे बढ़ी और मुस्कुराई। “हस्तिनापुर के राजकुमार अर्जुन, आपसे मिलकर आखिरकार खुशी हुई।”
अर्जुन मुस्कुराया। "इतना अच्छा नहीं है। क्योंकि हमारी समस्या एक जैसी है।"
और जरा सिर्फ यही सोचती रही कि यह क्या चीज है।

68

तेज हवा वाली रात में खुर जमीन पर जोर से टकराए।
सुयोधन के हाथ में चमड़े की लगाम थी और वह अपने घोड़े पर आगे की ओर झुका हुआ था, जैसे ही वह कर्ण और मालिनीपुर की ओर जाने वाले रास्ते पर चल पड़ा। उसने अंधेरे में अपने घर का आराम छोड़ दिया था और भाग निकला था। उसने किसी को भी, यहाँ तक कि अपने आदमियों को भी, अपने पीछे नहीं आने दिया। वह तेज़ी से भागा क्योंकि उसकी अनुपस्थिति से निराशा और चिंता फैल जाएगी, खासकर उसकी माँ को—उसे कर्ण तक पहुँचना था और उसे सब कुछ बताना था।
हवा उसकी दाढ़ी और बालों को सहला रही थी, और अन्यथा शांत जंगल में केवल घोड़ों के खुरों की आवाज ही सुनाई दे रही थी।
सुयोधन बार-बार पीछे मुड़कर देख रहा था कि कहीं कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा। उसे इस बात की भी चिंता थी कि भले ही जंगल में अंधेरा था, फिर भी वहाँ कोई घात लगाकर बैठा तो नहीं था। उसने अपने साथ गदा नहीं, बल्कि एक साधारण सी तलवार रखी थी, क्योंकि गदा उसके घोड़े की गति धीमी कर देती।
जल्दी करो!
वह बीच-बीच में डेरा डालता था, कभी जंगल में, तो कभी उन गांवों और कस्बों में जो उसे रास्ते में मिलते थे। वह मनुष्यों की दयालुता पर निर्भर था, जो उस जैसे अजनबी के प्रति आश्चर्यजनक रूप से स्नेहपूर्ण थे और उसे दही और चावल खाने को देते थे। उन्हें नहीं पता था कि वह हस्तिनापुर का राजकुमार और उत्तराधिकारी है, और सुयोधन जानता था कि जब वह अपने राज्य की सुरक्षा में लौटेगा, तो वह उन सभी को धन से नवाजेगा जिन्होंने उसकी सहायता की थी। जैसे-जैसे घंटे बीतते गए, उसकी आँखें झुकती गईं और उसका चेहरा मुरझाता गया, तभी उसने अपने सामने कुछ देखा और अपनी लगाम खींची, तभी घोड़े ने आधी रात में हिनहिनाया, झींगुर टर्राने लगे और उल्लू गोल-गोल आँखों से देख रहे थे कि क्या हो रहा है।
सुयोधन ने देखा कि परछाई ज़मीन पर पड़ी है और उसे रोने की आवाज़ सुनाई दी। वह घोड़े से उतरा और उसने एक युवती को देखा, जिसकी आँतें बाहर निकली हुई

थीं, उसका चेहरा पीला पड़ गया था और वह अपनी हालत में किसी भी आम इंसान की तरह रो रही थी। उसकी आँखें सुयोधन से मिलीं और उसने अपनी खून से सनी उंगलियों से उसकी ओर हाथ बढ़ाया।
"मेरी मदद करें, कृपया मेरी मदद करें…"
सुयोधन उसकी ओर दौड़ा, झुककर घाव देखा और समझ गया कि उसे बचाया नहीं जा सकता। वह अपनी आखिरी साँसें ले रही थी और उसका शरीर बुरी तरह से घायल था। “तुम्हारे साथ यह किसने किया?”
'"वे…"
"कौन हैं वे?"
“तुम्हें… यहां से… जाना होगा,” उसने फुसफुसाते हुए उससे कहा।
"क्या?"
“यह सब…एक…”
और इससे पहले कि वह अपनी बात पूरी कर पाती, उसने वह आवाज़ सुनी। कदमों की आहट और घोड़ों के खुरों की आवाज़ सुनाई दी, और तुरंत ही उसने अपनी तलवार म्यान से निकाली और अपनी ओर आ रही तलवार को मोड़ दिया—तभी सुयोधन ने उसे पीछे धकेल दिया और उसने सैनिकों को देखा…
काले कवचधारी सैनिक। जरा के आदमी।
सुयोधन को एहसास हुआ कि वे अपने घोड़ों पर सवार थे, और कुछ पैदल थे। सुयोधन ने जरा भी समय बर्बाद नहीं किया। वह तेजी से इधर-उधर भागा, लोगों से बचते हुए और उन्हें चकमा देते हुए, अपने घोड़े की ओर दौड़ा और उसे पकड़ लिया - आगे बढ़ते ही घोड़ा बेकाबू हो गया।
अपने बंधकों से बचने के लिए दृढ़ संकल्पित होकर वह आगे बढ़ रहा था, तभी उसने दो घोड़ों को अपनी ओर आते देखा। वे हर दिशा से उस पर तीर-कमान ताने हुए थे, लेकिन सुयोधन अपने घोड़े को दाएं-बाएं घुमाता हुआ, ज़मीन पर उछलता- कूदता हुआ, आखिरकार एक मोड़ पर पहुंचा, अपनी स्थिति बदली और खाई की ओर बढ़ गया। घोड़ा खाई को पार करते हुए इतनी तेज़ी से भागा कि किनारे से उसके पास पहुंच गया। सुयोधन यह देखकर चौंक गया, क्योंकि रक्षक लगभग उस पर वार करने ही वाला था—अपनी तलवार से उस पर प्रहार कर रहा था। सुयोधन ने वार को रोका और चकमा दिया, फिर अपनी तलवार निकाली और रक्षक के सिर पर वार करते हुए उसे चीर डाला।

सिर कटा घुड़सवार घोड़े से गिर पड़ा, तभी अन्य घुड़सवारों ने अपने तीर निकाले और लगातार तीर चलाने लगे, जिनमें से एक तीर सुयोधन की पीठ पर लगा; उसे तेज दर्द हुआ, उसकी त्वचा जल उठी, उसने घोड़े की लगाम पर से नियंत्रण खो दिया और गिर पड़ा, और घोड़ा बिना किसी उद्देश्य के आगे बढ़ता चला गया। सुयोधन दर्द से कराह उठा, उसे एक ऐसा दर्द महसूस हो रहा था जो उसने काफी समय से महसूस नहीं किया था, उसने तीर निकाले और चिल्लाया।
और जब वह ऐसा कर रहा था, तो घोड़ों के खुरों की आवाजें करीब आने लगीं और उसने देखा कि वे उसे घेर चुके थे - तब तक लगभग दो या तीन लोग थे, और वे अपने धनुष उसकी ओर ताने हुए थे।
बहुत खूब। कर्ण को बचाने की सारी योजना धरी रह गई।

लोहे के पिंजरे के कोने में धकेला गया, जाली से बंधा हुआ, नग्न अवस्था में, उसका गुप्तांग सपाट पड़ा हुआ था, आँखें पीली पड़ गई थीं और शरीर पर जगह-जगह निशान थे—सुयोधन को जरासंध के युद्ध शिविर में उसकी कैद में यातनाएँ दी जा रही थीं और चूहों की गंदगी खिलाई जा रही थी। वह अपने ऊपर बंधी लोहे की जंजीरों को धक्का देने और हिलाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन कोई फायदा नहीं हो रहा था, ऊपर से वह एक सेना से घिरा हुआ था। वह यहाँ एक-दो दिन से था। सुयोधन ने धीमी आवाज़ में गुर्राते हुए कुछ बुदबुदाया।
वे सड़कों पर निगरानी रख रहे होंगे। और मैं संदिग्ध लग रहा था।
लोग कर्ण को उतना नहीं जानते थे जितना सुयोधन को जानते थे; उनका चेहरा एक राजसी स्वामी जैसा था और उनकी दाढ़ी हस्तिनापुर की सबसे खूबसूरत दाढ़ियों में से एक थी।
सुयोधन गहरी सांसें लेते हुए इंतजार कर रहा था, कुछ न कर पाने की निराशा और बेबसी महसूस कर रहा था, तभी उसकी नजर उन परछाइयों पर पड़ी जो उसे सुनाई देते ही उभर आईं:
“जैसा कि आपने कहा,” एक अधिक परिपक्व और समझदार आवाज बोली, “वह रास्ते में था, इसलिए हमने उसे पकड़ लिया। उसे धोखा देने के लिए हमने एक गांव की लड़की के टुकड़े-टुकड़े कर दिए।”

"तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था," एक और युवा आवाज सख्त लहजे में सुनाई दी।
“ये तरीके मेरे हैं,” वयस्क आवाज ने कहा।
और सुयोधन ने परछाइयों को आकार लेते देखा, और उसने पाया कि वह जरा था और कोई और नहीं बल्कि…अर्जुन था। वही विश्वासघाती।
अर्जुन ने तेज नजर से सुयोधन की ओर देखा और जरा से पूछा, "क्या मुझे उसके साथ कुछ समय मिल सकता है?"
“बिल्कुल। लेकिन उसके बाद हमें अपनी योजनाओं पर चर्चा करनी होगी।” अर्जुन ने थोड़ी झिझक के साथ सिर हिलाया। जरा ने सुयोधन की ओर देखकर मुस्कुराते हुए कहा, “तुम्हारे पिता अब बहुत डर गए होंगे। मैं तुम्हें कभी जाने नहीं दूंगा और तुम्हारे बदले में मैं दुनिया भर की दौलत मांगूंगा। इस लड़के की वजह से ही ऐसा हो पाया है।” यह कहते हुए उसने अर्जुन की पीठ थपथपाई, जो उस समय घबराया हुआ था।
जरा चला गया। अर्जुन और सुयोधन चुपचाप खड़े रहे। सुयोधन को ऐसा लग रहा था मानो वह शिविर के उस कोने में खड़ा हो, जहाँ बहुत शोरगुल हो रहा था। अँधेरा था। शिविर के इस हिस्से में काफ़ी अँधेरा था।
“तुम्हें कैसे पता चला कि मैं आऊंगा?” सुयोधन ने पूछा।
“मैं एक धनुर्धर हूँ। मेरी नज़रें चील जैसी हैं। मैंने तुम्हारी परछाईं पकड़ ली,” अर्जुन ने कहा। “लेकिन मुझे पता था कि तुमसे बाहर ही निपटना होगा, जहाँ तुम ज़्यादा असुरक्षित होगे।”
“तुम जो कर रहे हो वह गलत है,” सुयोधन ने गुर्राते हुए कहा।
अर्जुन भावहीन बना रहा।
“आप वापस जा सकते हैं। इसे सुधार सकते हैं। आपको दुश्मन का साथ देने की जरूरत नहीं है।”
अर्जुन ने एक बार फिर कुछ नहीं कहा। वह चुप रहा।
“ये सब उसी की वजह से है, है ना?” सुयोधन ने अपने जबड़े भींच लिए। “भाई, मैंने जीवन में एक बात सीखी है, और वो ये है कि किसी और से प्रभावित होकर अपना जीवन तय मत करो। जो भी करो, किसी और के लिए नहीं, बल्कि अपने लिए करो। जल्दबाजी में नहीं, बल्कि अहमियत को ध्यान में रखते हुए।”
"यह बात वह व्यक्ति कह रहा है जो रंगभूमि पर भीम की हत्या करने ही वाला था।"

“वह अलग था।”
अर्जुन मुस्कुराया। "मुझे लगता है कि सब कुछ नजरिए पर निर्भर करता है।" सुयोधन ने सिर हिलाया। “कर्ण को लेकर तुम्हारी ईर्ष्या तुम्हें और भी बुरे अंजाम तक ले जाएगी। भीम या किसी और से बेहतर बनो। एक बेहतर इंसान बनो।”
"और अगर मैं ऐसा करूँ तो इससे क्या फायदा होगा?"
"आप हमेशा जीतेंगे, चाहे आप हार ही क्यों न जाएं। क्योंकि आप अपनी ईमानदारी से कभी समझौता नहीं करेंगे।"
संघर्ष की एक क्षणिक घटना घटी।
“पूरी जिंदगी,” सुयोधन ने कहना शुरू किया, “तुम पांचाली के प्रति अपनी भावनाओं या अपने गुरु के प्रति अपनी अटूट निष्ठा से नियंत्रित होते रहे हो, जो तुम्हारा लगातार दुरुपयोग करता रहा है,” वह रुका। “अर्जुन, अपनी खुद की पहचान बनाओ।”
अर्जुन ने सिर हिलाया। वह आश्वस्त नहीं लग रहा था। “अगर यह प्रेम से प्रेरित होता, न कि जीने की बेबसी से, तो मैं सुन लेता। लेकिन सुयोधन, तुम एक क्रूर, दुष्ट व्यक्ति हो जिसने कभी अपने कर्मों की बुराई नहीं देखी और तुम जो कुछ भी झेल रहे हो, उसके पूरी तरह हकदार हो।”
अर्जुन वहां से चला गया और वापस अंधेरे में छिप गया।
सुयोधन चिल्लाया, चीखा-चिल्लाया, पर कोई लाभ नहीं हुआ, और वह तब तक वहीं बैठा रहा जब तक उसकी आँखों से आँसू नहीं बहने लगे। उसके शब्द भले ही असरदार नहीं थे, लेकिन अर्जुन को यह नहीं पता था कि वे प्रेम से, हृदय से निकले थे।

69

देवी अस्पताल की ओर देख रही थी, जहाँ उसके सैकड़ों सैनिकों को एक छोटी सी जगह में इकट्ठा किया गया था और उनके घावों का लगातार इलाज किया जा रहा था। अस्पताल के लिए, उनकी सेना ने लिनन से बना एक विशाल गुंबदनुमा तंबू तैयार किया था, जो अन्य छोटे तंबुओं के ऊपर फैला हुआ था, क्योंकि वे सभी जानते थे कि इसका बहुत उपयोग होगा। युद्ध के मैदान से शवों को लाया गया और उन्हें दाह संस्कार के लिए आए चांडालों को सौंप दिया गया। बाकी हथियारों को तेज किया जा रहा था। तीर बनाए जा रहे थे। वे सभी अपनी-अपनी दुनिया में व्यस्त थे।
देवी की नजर कुबड़ा चांडालों द्वारा ले जाए जा रहे शवों की पंक्तियों पर पड़ी और युद्ध में इतने सारे लोगों को खोने के कारण उन्हें अपराधबोध हुआ। वह खुद बुरी तरह घायल थी और उसके पूरे शरीर में दर्द हो रहा था। उसने अपने तम्बू की ओर जाने का फैसला किया, तभी उसकी नज़र ज़मीन पर पड़े एक युवा, परिचित लड़के पर पड़ी, जिसके सिर पर पट्टी बंधी थी और वह दर्द से कराह रहा था।
वह उसके पास गई और उसका मासूम सा सूअर जैसा चेहरा देखा। शांतनु।
“आप कैसे हैं?” वह उसके बगल में घुटनों के बल बैठ गई, उसकी धोती में सिलवटें पड़ गईं।
"जनरल, स्थिति अच्छी नहीं है।"
उसने उसके कंधे पर थपथपाते हुए कहा, "तुमने वहाँ अच्छा प्रदर्शन किया।" "ऐसा क्यों होता है कि हम इतनी लंबी योजना बनाते हैं लेकिन लड़ाई कुछ ही मिनटों तक चलती है?"
“क्योंकि वहाँ हर मिनट एक घंटे जैसा लगता है,” उसने आह भरी। “उम्मीद है तुम जल्दी ठीक हो जाओगे,” वह जाने के लिए उठने लगी, तभी शांतनु ने उसका हाथ पकड़ लिया।
"सामान्य?"
देवी इस अचानक हावभाव से अचंभित रह गईं। "जी?"

“लड़ाई से पहले, मैं और कुछ आदमी सोच रहे थे…” उसने अपने जबड़े भींच लिए। “महामहिम को मार डालने के बारे में।”
देवी ने अपना चेहरा बिगाड़ लिया। "यह राजद्रोह है और तुम जेल जा सकते हो।" "यह उस शासक के शासन में रहने से बेहतर है जो अपने लोगों से बिल्कुल भी जुड़ा हुआ नहीं है और उनके प्रति वफादार नहीं है।"
"इससे और भी समस्याएं पैदा होंगी," देवी ने कहा, हालांकि वह भी यही चाहती थी।
“लेकिन जनरल, मैं आपको यह इसलिए बता रहा हूँ क्योंकि हमें नहीं पता कि यह कब होगा, लेकिन हो सकता है। हम अभी भी योजना बना रहे हैं। जैसा कि मैंने कहा, इसे अंजाम देने में केवल एक मिनट लगेगा और यह ज़रूरी है कि हम इसे करें। जनरल, मैं आपको यह इसलिए बता रहा हूँ क्योंकि हम चाहते हैं कि इस मिशन के दौरान आप हमारे साथ हों। यह बहुत महत्वपूर्ण है।”
उसने अपने जबड़े भींच लिए। "मैं आपको बता दूंगी।"
और वह मन ही मन कई विचार लिए अस्पताल के बाहर लौट आई। वह ऐसा करना चाहती थी, लेकिन उसे डर था कि कहीं उसे चाकू न मार दिया जाए। और शांतनु जैसा लड़का अपने वादे पर कायम कैसे रह सकता है? उसे क्या पता, कहीं वो उसे धोखा न दे दे और सारा दोष उस पर न मढ़ दे। और उसके स्त्री होने के कारण उसे विधर्मी करार दिया जाएगा और राजा को हराने वाली डायन बताकर सार्वजनिक किया जाएगा। उसे बहुत सावधानी से आगे बढ़ना था, लेकिन पहले उसे यह जानना ज़रूरी था कि वह क्या करने जा रही है, क्योंकि वह अभी भी दुविधा में थी।
मैदान पर एक लड़ाई चल रही थी, और उसके दिमाग के अंदर एक और लड़ाई चल रही थी।

कर्ण क्रोध से भीगे जबड़े के बल पर अपने तम्बू की ओर निर्भीक रूप से चल रहा था। उसने अभी-अभी अपने सेनापतियों से लंबी बातचीत की थी और उन्होंने उसे युद्ध के दौरान अपने जासूसों या खुद द्वारा देखी गई हर बात बताई थी।
यद्यपि उनके कई सैनिक मारे गए थे, लेकिन अगर वे पीछे नहीं हटते तो और भी अधिक हताहत होते। अब जरा सेना के हमले में बुरी तरह घायल हो गया था और कर्ण के सैनिक कुछ आराम करने के बाद अपनी स्थिति तैयार करेंगे और ऊपर उठेंगे।

उन्होंने फैसला किया था कि अगला युद्ध इतना अव्यवस्थित नहीं होगा, बल्कि रणनीतिक व्यूह संरचनाओं के क्रियान्वयन को शामिल करते हुए योजनाबद्ध तरीके से आयोजित किया जाएगा।
लेकिन उसका मन थका हुआ और उदासीन था।
कर्ण तम्बू की ओर गया और उसे खोलकर देखा तो वह खाली था, सिवाय उन नौकरों के जो मेजें और उसका पलंग साफ कर रहे थे। उसने इस बात को अनसुना कर इधर-उधर घूमना शुरू किया, उसके पीछे उसके आदमी भी चलने लगे, और उसकी निगाहें सीधे उसी पर टिक गईं जिसे वह ढूंढ रहा था।
उसकी पत्नी।
वह अपने यूनानी दोस्तों के साथ बैठी हँस रही थी। उसने अभी भी अपना कवच पहना हुआ था और उसके पूरे शरीर पर चोट के निशान और खरोंचें थीं, बाल गुंथे हुए थे, लेकिन वह बिल्कुल अलग दिख रही थी। जैसे ही उसने कर्ण को देखा, उसने अपना सिर घुमाया और उसकी ओर देखकर मुस्कुराई।
मुझे लगता है कि यह इस तरह हुआ…
कर्ण ने ध्यान नहीं दिया और उसे बांह से पकड़कर एक तरफ ले गया।
“तुम्हें क्या हुआ है?” शनाया ने पूछा।
कर्ण ने उसकी चमकती आंखें देखीं। "तो इस तरह तुम अपना बदला लेती हो?"
मैं कुछ नहीं ले रहा हूँ।
"तुम हमारे आदमी को पीछे छोड़ गए।"
"वे बस कुछ ही लोग थे," उसने अपना हाथ उससे दूर धकेलते हुए कहा, "और मुझे लगा कि कोई उसे पकड़ लेगा।"
"तुम्हें अपने लोगों के लिए मौजूद रहना होगा, शनाया।"
वह लड़की, जो अब उतनी मददगार और दयालु नहीं लग रही थी, बस मुंह बनाकर बोली, "मैं हूँ। मेरे लोग।"
“आपको ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है। मैं वहाँ यह सोचकर परेशान नहीं हो सकता कि आप सिर्फ यूनानियों के लिए वहाँ हैं।”
लेकिन वे मेरे खून के रिश्तेदार हैं, मेरे आदमी हैं। तुम नहीं हो।
“तुमने उनके सामान को जलाने और उनके खाने में जहर मिलाने में बहुत अच्छा काम किया, और मैं इसके लिए तुम्हें तहे दिल से बधाई देता हूँ। मैं तुम्हारे साथ ऐसा नहीं कर पाता। लेकिन अगर तुम राजा के लिए सिर्फ एक चमचा बनकर नहीं

रहना चाहते, तो तुम्हें उन लोगों की परवाह करना सीखना होगा जो तुम्हारे खून के रिश्तेदार नहीं हैं।”
वह आहत थी। वह इसे देख सकता था और उसके साथ बदतमीज़ी कर रहा था, लेकिन वह गुस्से में था और अपना गुस्सा निकालना चाहता था। उसके लिए यह जानना ज़रूरी था कि उसने जो किया वह एक गलती थी और उसे दोहराया नहीं जाना चाहिए।
उसने उसका कंधा पकड़कर थपथपाया, उसकी बाहों पर उंगलियां फेरते हुए उसे दिलासा दिया, जब उसने अपनी निगाहें नीचे कर लीं। “मुझे माफ कर दो। मैं बस… मैं समझता हूँ कि तुम मेरे लोगों से अलग-थलग क्यों महसूस करती हो। यह मेरी वजह से है। मुझे खेद है कि मैं तुमसे प्यार नहीं कर सका… बल्कि मैं तुमसे प्यार नहीं कर सकता। यह एक अभिशाप है जिसके साथ मुझे जीना होगा, लेकिन अगर तुम यह चुनती हो, तो मैं तुम्हें फिर कभी मैदान में नहीं जाने दे सकता।” “ऐसा इसलिए नहीं है कि तुम मेरे प्यार का जवाब नहीं दोगे। मैं बचकानी नहीं हूँ,” उसने व्यंग्य करते हुए कहा। “बात तो यह है कि तुम कोशिश भी नहीं करोगे।”
एक पल के लिए कर्ण अवाक रह गया। उसने अपनी निगाहें भी नीचे कर लीं और शनाया पर अपनी पकड़ ढीली कर दी।
“पूरी जिंदगी मैं योद्धाओं से घिरी रही—उन उन्मादी योद्धाओं से जिनके पास करने को कुछ नहीं था सिवाय क्रोध, हताशा और रोष से भरे रहने के। मैंने बस यही देखा और यही मुझमें भी आ गया। जब मैं छोटी थी, मुश्किल से पंद्रह साल की, तब मेरी मुलाकात एक लड़के से हुई। वह मेरे प्रति दयालु था। स्नेही। उसने मुझे तीरंदाजी सिखाई और मुझे दिखाया कि इस दुनिया में नफरत के अलावा भी बहुत कुछ है। प्यार भी है। मुझे पता है कि तुम नहीं चाहते थे कि मैं तुम्हें पसंद करूं, लेकिन यह अपरिहार्य था। तुम्हारे साथ, मुझे एक खिंचाव महसूस हुआ और यह खिंचाव लगातार बना रहा, मैं अपने भीतर की नफरत को रोक नहीं पाई, जब तक कि मेरी तुमसे दोबारा मुलाकात नहीं हुई और मुझे एहसास हुआ कि मैंने तुम्हें पहली बार क्यों प्यार किया था। तुम इस दुनिया में उम्मीद की किरण हो, कि शायद यह दुनिया एक दिन बेहतर हो जाए, बस शायद। तुमने इतनी सारी मुश्किलों का सामना किया, फिर भी तुम एक अच्छे इंसान बने रहे,” उसने आह भरी। “लेकिन मैं अपने कार्यों का निर्धारण ऐसी भावनाओं के आधार पर नहीं करती। महाराज, युद्धक्षेत्र में जो कुछ हुआ, वह मेरी गलती थी और मैं उसके लिए क्षमा मांगती हूँ। मैंने स्पष्ट रूप से सोचा था कि अपनी जाति को बचाना

अधिक महत्वपूर्ण है और मैं गलत थी। मुझे दोनों को बचाना है। क्योंकि मैं आपके मेरे प्रति प्रेमहीन रवैये को युद्धक्षेत्र में भावुक होने का कारण नहीं बनने दे सकती।”
कर्ण ने आगे कुछ नहीं कहा। वह चुप रहा और उसने चुप्पी को कायम रहने दिया, फिर शनाया ने कंधे उचका दिए।
“तुम एक अच्छी इंसान हो,” कर्ण ने कहा और आगे झुककर उसके माथे पर चुंबन लिया।
उसने उसे गले लगाया, लेकिन बदले में उसे कुछ नहीं मिला, इसलिए वह चुप रहा, तभी उसे पीछे से खांसी की आवाज सुनाई दी और दोनों मुड़कर देखने लगे तो पता चला कि एक संदेशवाहक इंतजार कर रहा था।
"महामहिम, एक पत्र है।"
“कहां से?” कर्ण ने पूछा।
“इसमें अर्जुन लिखा है। वह कहता है कि सुयोधन उसकी हिरासत में है और अगर तुम उसे बचाना चाहते हो, तो तुम्हें आकर उससे अकेले में मिलना होगा।” अर्जुन? सुयोधन? ये कहाँ से आए?
कर्ण ने पूछा, “कहाँ?”
"ताताका में जंगल का एक लंबा इलाका है।"
यह योजना के अनुसार नहीं हो रहा है।

70

कर्ण युद्ध तम्बू में दाखिल हुआ, जो उसका दूसरा कमरा था जहाँ नक्शा और लकड़ी की मूर्तियाँ एक चबूतरे पर फैली हुई थीं। देवी और सत्या पहले ही पहुँच चुके थे। युद्ध के बाद कर्ण ने उन्हें पहली बार स्पष्ट रूप से देखा। वे घावों से क्षत-विक्षत लग रहे थे। सत्या पहले से भी अधिक पीला पड़ गया था और उसकी मूंछें पसीने से भीगी हुई थीं।
देवी खड़ी थीं और काफी थकी हुई लग रही थीं। वे रणनीति पर चर्चा कर रहे थे तभी उनकी नजर कर्ण और शनाया पर पड़ी।
“हमारे सामने एक समस्या है,” कर्ण ने कहा और उसने उनके सामने रखे हुए स्क्रॉल को देखा और उसमें से मूर्तियां हटा दीं।
“सुयोधन?” सत्य ने मुंह बनाया। “अरे, ये क्या बकवास है?”
कर्ण ने कहा, “अर्जुन हमारे साथ खेल रहा है। हमें कुछ करना होगा।”
“हमें कुछ करने की ज़रूरत नहीं है,” शनाया ने आगे कहा। “जैसा कि मैंने आपको बताया, वह आपकी समस्या नहीं है। धृतराष्ट्र को इसे संभालने दीजिए।” “लेकिन वे इस मामले में कैसे शामिल हो गए?” देवी ने पूछा। “यह युद्ध तुम्हारे और जरासंध के बीच है।”
“उसने जरासंध के साथ मिलकर साजिश रची होगी, या शायद जरासंध ने उसे मना लिया होगा,” कर्ण ने कहा। “समस्या यह है कि ऐसा करने से अर्जुन खुद मुसीबत में पड़ जाएगा।”
“जरासंधा के बारे में मुझे जो कुछ भी पता है,” देवी ने आगे कहा, “उसकी यही योजना है। युद्ध से आपका ध्यान भटकाना। वह जानता है कि आप उसके साथ चालाकी कर रहे हैं, इसलिए वह आपके पुराने साथियों का इस्तेमाल आपके खिलाफ कर रहा है। इसका मतलब घात लगाकर हमला करना भी हो सकता है।”
सत्य ने सिर हिलाते हुए कहा, "यह एक घात लगाकर हमला है। और मुझे यकीन है, बेटा, तुम इस खतरे को जानते हुए भी आगे बढ़ने की मूर्खता नहीं करोगे।" कर्ण व्याकुल था, वह पास की कुर्सी की ओर गया और उस पर पीछे की ओर झुककर बैठ गया। वह अपने मित्र, अपने सहायक के बारे में चिंतित था। उसने अपने जबड़े

भींच लिए और अपनी निगाहें नीचे कर लीं, ढीले भूरे रंग के कुर्ते और सफेद धोती में, वह सोच-विचार करते हुए गुनगुना रहा था, उसके कानों में कुंडल लटक रहे थे।
“तो, मेरी आंतरिक परिषद के रूप में, आप क्या सुझाव देते हैं?” कर्ण ने शांत स्वर में पूछा। “क्या हम कुछ न करें?”
सत्य ने सुझाव दिया, "हम एक दस्ता भेज सकते हैं।"
शनाया आगे बढ़ी और उसने अपना हाथ उस पर रख दिया। "मैं जाकर उसकी मदद कर सकती हूँ, वासु।"
कर्ण जानता था कि यहाँ ज़रा सी भी गलती मुसीबत खड़ी कर देगी, और वह सुयोधन को इसका खामियाजा भुगतने का जोखिम नहीं उठा सकता था। न केवल मित्रता के कारण, बल्कि इसलिए भी कि इससे धृतराष्ट्र के साथ उसके संबंध खराब हो जाते, क्योंकि सुयोधन कर्ण और महाराजा के बीच की दीवार था, जो यह सुनिश्चित करता था कि महान राजा का कुरूप पक्ष कर्ण जैसे छोटे राजा को नुकसान न पहुँचाए। सुयोधन को सुरक्षित रखना एक रणनीतिक निर्णय था।
“इससे और भी जटिलताएं पैदा हो जाएंगी। मैं जोखिम नहीं उठा सकता,” कर्ण ने सिर हिलाते हुए कहा। “मैं जाऊंगा।”
सत्या ने गुस्से से कहा, “तुम वही कर रहे हो जो वह तुमसे करवाना चाहता है। इस लड़ाई को व्यर्थ मत जाने दो। आज दूसरा दिन है और अगर तुम हमारा साथ दोगे तो हम शाम तक हमला कर सकते हैं, जिससे हमें बड़ी जीत मिलेगी।”
“मैं ही यहाँ अकेला सक्षम योद्धा नहीं हूँ। शनाया है। वह यूनानी और निषाद टुकड़ियों का नेतृत्व कर सकती है, जबकि देवी सेनापति बन सकती हैं। मंडल व्यूह करो,” उन्होंने आदेश दिया। “और सबको बता दो कि मैं इसका नेतृत्व कर रहा हूँ।” यह एक ऐसी संरचना थी जिसमें सेनापति सबसे आगे होता, पूर्वी और पश्चिमी मोर्चों पर घुड़सवार सेना होती, उसके पीछे पैदल सेना और ढोल वादक होते जो सैनिकों के समूह का नेतृत्व करते हुए एक ठोस गठन बनाते।
"लेकिन तुम यहां नहीं रहोगे," देवी असमंजस में थी।
"मुझे पता है।"
उसने अपने कुंडल उतारकर अपने सेनापति को सौंप दिए, और साथ ही अपने कमरे के पीछे से अपना कवच निकालकर उसे दे दिया। “तुम इसे पहन लो और सबको यह यकीन दिलाकर मूर्ख बना दो कि यह मैं हूँ। मंडल व्यूह से पता चल जाएगा कि यह मैं

ही हूँ, और युद्ध में चेहरे की बारीकियों पर किसी का ध्यान नहीं जाता। तुम इन सबका नेतृत्व करो, और मैं जाकर अर्जुन को रोक लेता हूँ।”
देवी अचंभित रह गईं, उनकी सांसें थम गईं और मशाल की रोशनी में चमकते सुनहरे गोलों जैसे कुंडल देखकर उनका चेहरा खिल उठा। कर्ण का उन पर जो विश्वास था, वह उन्होंने स्पष्ट रूप से दिखा दिया था। "लेकिन शत्रु को क्यों भ्रमित करना?"
"ताकि वे यह सोचें कि मैंने उनके जाल में नहीं फंसा। उन्हें चिढ़ाने के लिए। वे यह सोचकर हम पर हमला करेंगे कि राजा यहाँ नहीं है, लेकिन जब वे राजा का भ्रम देखेंगे, तो वे दंग रह जाएंगे।"
"यह तो सीधे मौत को दावत देना है," शनाया ने अपने नथुने फुलाते हुए कहा। "तुम न सिर्फ खतरे के मुँह में जा रही हो, बल्कि बिना सुरक्षा कवच के भी जा रही हो।"
तब तक सत्या के पास कोई जवाब नहीं था।
कर्ण जानता था कि वह अपने कुछ आदमियों को साथ ले जाएगा। “मुझे खेद है। लेकिन मैं वापस आऊंगा और अगर मैं नहीं लौटा, तो देवी मिशन पूरा करेंगी।” और वह अपनी सेनापति के बगल में खड़ा हो गया, जो अभी भी असमंजस में थी। उसकी आँखों में आँसू आ गए जब उसने उसे गले लगाया और कहा, “मुझे खेद है कि मैंने पिछली बार तुम्हें धमकी दी थी। सावधान रहना और सैनिकों का अच्छे से नेतृत्व करना।”
कर्ण ने शनाया की ओर देखा, जो उससे नज़रें भी नहीं मिला रही थी, और वह निराश हो गया। जाने से पहले, अंधेरे में जाने से पहले, घात में जाने से पहले, वह एक बार उसका चेहरा देखना चाहता था, लेकिन उसे अर्जुन पर भरोसा था, भले ही वह एक लापरवाह लड़का था।
उन्हें भरोसा था कि उन्हें समझा जा सकता है।

71

अर्जुन एक कटार से अपने बाणों को तेज कर रहा था और उन्हें पहले से भी अधिक नुकीला बना रहा था। यहाँ आए हुए उसे एक दिन हो गया था, लेकिन उसने किसी से कोई बातचीत नहीं की थी और चुपचाप बैठा रहा। शांत। अपने आप में मग्न। सुयोधन की कही बातों के विचार उसे परेशान करने लगे थे और वह सचमुच दुविधा में था। वह जानता था कि उसने जो किया वह अपने गुरु के आदेश और पांचाली के प्रति प्रेम से प्रेरित था। लेकिन क्या यह सही था? क्या वह ऐसा करके सही राह पर चल रहा था? द्रोण शायद हाँ कहते, लेकिन फिर भी कुछ उसकी अंतरात्मा को कचोट रहा था।
मुझे अपने फैसलों में सतर्क रहना होगा। मुझे हर हाल में अपने गुरु का अनुसरण करना होगा।
“तुम यहाँ हो,” उसने एक आवाज़ सुनी।
उसने ऊपर देखा तो उसे एक महिला भूरे रंग के गाउन में दिखाई दी, जिसकी आँखें चमकीली थीं और बिल्ली की पुतलियों जैसी थीं। उसने पलकें झपकाईं और मुस्कुराई।
“तुम ही भीषक हो।”
“बिल्कुल नहीं। तुम कर्ण पर घात लगाकर हमला करने जा रहे हो,” उसने कहा। “इसके लिए मेरे पास तुम्हारे लिए कुछ है। मेरे पीछे आओ।”
जो कुछ हो रहा था, उसे देखकर अर्जुन स्तब्ध रह गया, लेकिन वह उसके पीछे- पीछे चलता रहा। रास्ते में उसे अस्पताल में भर्ती सैनिक मिले, जिनमें से कई ज़मीन पर पड़े थे। उनमें से कुछ ही जीवित बचे थे और दूसरों की देखभाल कर रहे थे। बीमारी अभी भी बनी हुई थी, लेकिन कुछ हद तक कम हो गई थी, और वे अब क्रोधित और अंधे नहीं थे, बल्कि केवल बुखार से पीड़ित थे। अर्जुन यह सोचकर हैरान था कि इतने भीषण हमले के बाद कोई कैसे खड़ा हो सकता है।
"क्या आपको तीरंदाजी पसंद है?"
"हाँ।"

“अच्छा। तो मेरे पास तुम्हारे लिए बिल्कुल सही चीज है।” वह मुस्कुराई और अर्जुन भी मुस्कुराए बिना नहीं रह सका।
वे उसके तम्बू तक पहुँचे और उसने देखा कि अंदर बहुत सारी पारदर्शी नलियाँ, चीनी मिट्टी के बर्तन और लकड़ी के छोटे-छोटे डिब्बे रखे थे, जिनमें कुछ तरल पदार्थ भरा हुआ था। मेज पर तरह-तरह के पत्ते अलग-अलग करके रखे हुए थे। कमरे की दुर्गंध बेहद भयानक थी, लेकिन अर्जुन ने उसे नजरअंदाज कर दिया।
“तुम एक राक्षसी हो। तुमने यहाँ क्या जादू किया है?” अर्जुन ने पूछा। उसने राक्षसों के बारे में सुना था कि वे मनुष्यों को खा जाते हैं, लेकिन वह देखने में बिल्कुल भी नरभक्षी जैसी नहीं लग रही थी।
वह मेज के पास आई और अपने द्वारा जलाई गई हल्की आग पर बैंगनी रंग का तरल पदार्थ उबलता हुआ एक घड़ा लेकर आई। उसने वह घड़ा अर्जुन को दिखाया।
“मेरे पास तुम्हारे लिए कुछ है। यह एट्रोपा बेलाडोना है, जिसे नाइटशेड भी कहते हैं। यह एक घातक विष है जो किसी को भी लगने पर लकवाग्रस्त कर सकता है। बस अपना तीर लो और उसका सिरा इसमें डुबो दो, लेकिन मेरा सुझाव है कि ऐसा करते समय दस्ताने पहन लो, नहीं तो तुम खुद को चोट पहुँचा सकते हो,” उसने सावधानी से सिर हिलाते हुए चेतावनी दी। “इसमें एट्रोपिन होता है जो किसी को भी लगने पर उसे लकवाग्रस्त कर देता है। यह एक दुर्लभ पौधा है और इसलिए युद्ध में इसका व्यापक रूप से उपयोग नहीं किया जाता है, लेकिन यदि तुम कर्ण को उसकी सेना से अलग कर रहे हो, तो उस पर इसका प्रयोग करना अच्छा रहेगा। वह धीरे-धीरे इससे मर जाएगा।”
अर्जुन जानता था कि उनकी दुश्मनी एक दिन खून-खराबे में तब्दील हो जाएगी, लेकिन उसने कभी नहीं सोचा था कि बात यहाँ तक पहुँच जाएगी। जहाँ उसे अपने प्रतिद्वंदी का बेरहमी से कातिल बनना पड़ेगा। यह बात उसके अंतरात्मा को ठेस पहुँचा रही थी, लेकिन उसने गहरी साँस ली। "यह तो दिलचस्प है।"
“हाँ।” उसने उसके लटकते तरकश से एक तीर निकाला और उसे तरल में डुबोया। फिर उसने एक सिपाही को सीटी बजाकर बुलाया और उस तीर से उसे घायल कर दिया। सिपाही सदमे से गिर पड़ा, उसे कोसने लगा और कांपने लगा, उसका पैर हिल नहीं रहा था और वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। “अरे, बच्चे की तरह मत रोओ। मैं तुम्हारा नया पैर बना दूंगी।” उसने अपनी आँखें घुमाईं और फिर अर्जुन की ओर देखा। “प्रभावित हुए?”
आपको ऐसा करने की जरूरत नहीं थी।

"तुम एक सैनिक होकर भी बहुत नरम दिल हो," उसने गुस्से से कहा।
“एक राक्षसी मगध के राजा की मदद क्यों कर रही है?”
“क्योंकि हमारा एक साझा मित्र है, जिसकी मैं बहुत परवाह करती हूँ,” उसने कहा। “उसने मुझसे इस मामले में मदद मांगी है, क्योंकि कर्ण ने युद्ध में उसे पूरी तरह से उलझन में डाल दिया है।”
सच में? क्या वह इतना अच्छा है?
अर्जुन ने देखा कि वह आदमी अभी भी रो रहा है और उसे उस पर दया आई, लेकिन उसने जहर का घड़ा अपने हाथों में लिया और संतुलन बनाए रखने के लिए उसे सावधानीपूर्वक अपनी बगल में रख लिया।
“अगर आप अच्छे तीरंदाज हैं, तो आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है। जहर अपना काम कर देगा। तो, क्या आप अच्छे तीरंदाज हैं?”
अर्जुन मुस्कुराया। साफ है कि उसने मेरे बारे में नहीं सुना है।

सूर्य हरे-भरे आकाश में छिपा हुआ था; पूरा दृश्य हरे रंग में रंगा हुआ था। ऐसा लग रहा था मानो तूफान आने वाला हो, क्योंकि पत्ते कर्ण की गति के विपरीत दिशा में हिल रहे थे।
उसके पास धनुष और बाण थे, और उसके पीछे दो आदमी थे, जब उसने उस ताताका जंगल की ओर देखा जहाँ उसे संदेश में रहने के लिए कहा गया था। लेकिन वहाँ सन्नाटा पसरा हुआ था, सिवाय हवा की सरसराहट के।
वह आगे बढ़ता गया, उसने घना और अंधेरा जंगल देखा, झाड़ियाँ सामान्य से बड़ी थीं और पेड़ अनियमित रूप से पंक्तिबद्ध थे।
उसने मुझे यहाँ क्यों बुलाया?
कर्ण सावधानीपूर्वक अंदर चला गया, उसकी निगाहें बाज़ की तरह हर तरफ़ घूम रही थीं, वह उन दो आदमियों को देख रहा था जिनकी तलवारें हथेलियों में म्यान से बाहर निकली हुई थीं, जो किसी भी बाधा पर प्रहार करने के लिए तैयार थे। रास्ता ऊबड़-खाबड़ था, ऊपर-नीचे जाता था, और उसमें अलग-अलग स्तर के पठार थे, एक बहती हुई नदी थी, और ठंडी हवा उसके कपड़ों को मरहम की तरह छू रही थी। कर्ण ने अपना शस्त्र निकाला, बाण पर प्रत्यंचा चढ़ाई और अपनी आँखें बंद कर लीं।

चलो, तुम कहाँ हो?
फिर उनकी तीव्र श्रवण शक्ति ने उन्हें किसी ध्वनि का आभास कराया। वे समझ नहीं पाए कि वह क्या था, लेकिन वे सावधानीपूर्वक आगे बढ़े, जब तक कि वे ध्वनि के स्रोत के करीब नहीं पहुँच गए।
वह खुले मैदान के ठीक बीच में था, और उससे पचास गज की दूरी पर उसने बंधे हुए सुयोधन को देखा। वह जमीन पर लेटा हुआ था, उसकी आँखें बंद थीं और वह या तो रो रहा था या खर्राटे ले रहा था। कर्ण को ठीक से समझ नहीं आया, लेकिन वह कोई आवाज़ निकाल रहा था।
“महाराज! हमने उसे ढूंढ लिया!” उसके पीछे खड़े सैनिक उत्साहित हो गए और आगे बढ़ने का फैसला किया, तभी कर्ण ने अपनी निगाहें कस लीं।
“नहीं!” उसने चीख कर कहा, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी।
एक चमकीली रोशनी प्रकट हुई और कर्ण के ठीक बगल में आकर उसके सैनिक की बांह पर जा लगी। सैनिक गिर पड़ा, उसकी भुजाएं लकवाग्रस्त हो गईं। तभी कहीं से तीरों का एक और समूह आया और दूसरे सैनिक पर हमला कर दिया, जिससे वह भी गिर पड़ा।
तीर सैनिक की मोटी खोपड़ी के अंदर घुस गया था और उसके मुंह और आंखों ने काम करना बंद कर दिया था।
कर्ण तुरंत एक पेड़ के पीछे छिप गया और वहाँ से ध्यान से देखने की कोशिश करने लगा कि क्या उसे अर्जुन दिखाई दे रहा है—पर वह कहीं नहीं था। उसने फिर अपने सैनिकों पर नज़र डाली और वे सब लगभग मृत अवस्था में थे। वे रो रहे थे, लेकिन जहाँ भी उन्हें चोट लगी थी, वहाँ से हिलने में असमर्थ थे।
वह मुझ पर किस चीज से हमला कर रहा है?
कर्ण को यह अहसास हुआ कि यह जरासंध की सेना द्वारा किया गया घात नहीं था। यह उसके पुराने प्रतिद्वंदी अर्जुन द्वारा किया गया एक घात लगाकर हमला था।

72

देवी को अपने कवच में एक अलग ही अनुभूति हो रही थी, क्योंकि वह अपने पीछे हजारों सैनिकों के साथ युद्ध के मैदान में उतर रही थी।
वह शुरू में इस कवच को पहनने के लिए अनिच्छुक थी, लेकिन सत्या ने उसे मजबूर कर दिया, क्योंकि दुश्मनों को मूर्ख बनाने का यही एकमात्र तरीका था।
और इसलिए उसने कवच उठाया और अपना काम करने के लिए चल पड़ी।
यह वही संरचना थी जो कर्ण ने सुझाई थी और वह देख सकती थी कि उसकी सेना सभी दिशाओं से उमड़ रही थी, जबकि जरा के पास कोई सुनियोजित संरचना नहीं थी।
मैं यह मैच जीतूंगा।
देवी कर्ण से काफी समय से नफरत करती थी, लेकिन निस्वार्थ भाव से उसे अचानक सारी जिम्मेदारी सौंप देना उसकी उम्मीदों से परे था। और न जाने किस कारण से, मन ही मन वह कर्ण की बात मानकर उसे गर्व महसूस कराना चाहती थी।
सामने की ओर मौजूद शत्रु सैकड़ों की संख्या में मौन खड़े होकर उसे देख रहे थे। कर्ण की भविष्यवाणी के अनुसार वे सभी भ्रमित दिख रहे थे। वे उत्तर चाहते थे, लेकिन दूर से ही चमकीली कवच और कुंडल देख लेने के कारण उन्हें कोई उत्तर नहीं मिला।
रथ पर सवार होने के दौरान उसकी रीढ़ की हड्डी में दर्द हो रहा था, रथ से चरमराहट और लुढ़कने की आवाज आ रही थी, उसकी आंखें सामने की ओर दौड़ रही थीं, और वह अपने पीछे घोड़े पर सवार धनुर्धारियों को चिल्लाकर कह रही थी कि वे उनकी ओर आ रहे आग के तीरों के खिलाफ तीर चलाएं।
उसने ढाल को कसकर पकड़ लिया और आग की बौछार को रोक दिया, जैसे ही वह लड़खड़ा गई, रथ उसके दुश्मनों से टकरा गया।
वह भीड़ को चीरते हुए आगे बढ़ी और अपनी तलवार से दुश्मनों को काट गिराने लगी। उसका शरीर तेज़ी से हिल रहा था, जबकि दुश्मन उसकी ओर बढ़ते और वार करते हुए, उसे स्त्री देखकर चौंक गए; धोखे में आ गए।
वह हमलों को रोकती, बचाव करती और जमीन पर लुढ़कती रही, उसकी आंखें उसकी ओर आ रहे हथियारों के हमले पर टिकी थीं, और वह पलटवार करते हुए अपनी ढाल से

दुश्मन सैनिकों पर वार करती रही, उसे दुश्मन सैनिकों के ऊपर धकेलती रही और अपनी तलवार को उनकी मोटी छाती में घुसा देती रही।
एक और उसके पीछे से आया और बोला: "मैंने तुम्हें पकड़ लिया है, राजा!" लेकिन उसने उसे गिरा दिया और उसके चेहरे पर वार कर दिया। दोनों दुश्मन आगे बढ़े और वह तब तक बचती रही जब तक कि एक वार उसके कवच से नहीं टकराया और जोरदार पलटवार की आवाज नहीं हुई; फिर उसने तेजी से पलटवार करते हुए सैनिक के गले पर वार किया और उसे गिरा दिया, जबकि उसने दूसरे सैनिक को ढाल से धक्का दिया, जिससे एक तीर उसकी आंख में जा लगा।
वह थोड़ी भ्रमित थी, उसके चेहरे पर खून के छींटे पड़े थे, क्योंकि युद्ध के दौरान उसके शरीर में एड्रेनालाईन का प्रवाह बढ़ रहा था और वह चिल्ला रही थी। उसे अपने आदमियों की चीखें भी सुनाई दे रही थीं।
और उसे पूरा यकीन था कि वह जीत जाएगी, जैसा कि उसके आसपास के पुरुषों को भी लग रहा था, क्योंकि उसके दुश्मन भागने लगे थे।
एक को छोड़कर।
लोहे का मुखौटा पहने हुए आदमी।

जारा ने अपने यात्रा के बक्से में मिले दो पासे उठा लिए थे और घबराहट में उन्हें आपस में रगड़ रहा था। पिछली बार के विपरीत, वह युद्धक्षेत्र के पास खड़ा था, जहाँ एक बड़ा तंबू तूफानी मौसम से बचाव कर रहा था, उसकी निगाहें चल रहे युद्ध पर टिकी थीं, तभी उसने एक जासूस को रेगिस्तानी मैदान में दौड़ते हुए और जमीन पर गिरते हुए देखा।
"महामहिम, कर्ण यहाँ है।"
क्या?
"वह यहाँ हैं, महाराज।"
एक पल के लिए जरा असमंजस में पड़ गया। लेकिन उसे युद्ध से बाहर निकालकर अर्जुन के पास ले जाया जाना चाहिए था, ताकि वह सुयोधन को बचा सके। योजना तो यही थी।
"क्या आपको यकीन है?"
"कई लोगों ने कवच को देखा है।"

जारा ने अपने जबड़े भींच लिए। "हाँ, लेकिन क्या तुमने उसे धनुष और बाण चलाते देखा?"
संदेशवाहक भ्रमित लग रहा था; उसकी आँखें आधी बंद थीं और चेहरा धूल से सना हुआ था। "मुझे लगता है कि वह तलवार का इस्तेमाल कर रहा था।"
उसे पकड़ लिया।
"यह वह नहीं है," जारा मुस्कुराया, जैसे ही उसके कप्तानों ने जारा के दोनों ओर घेरा बना लिया।
“लेकिन वह हमें बेवकूफ बनाने की कोशिश क्यों करेगा?” कप्तानों में से एक ने पूछा।
“हमें पीछे हटने पर मजबूर करने के लिए। हमें यह सोचने पर मजबूर करने के लिए कि उसने जाल में नहीं फंसा,” जारा ने कहा। “वह जानता है कि हम अभी शारीरिक रूप से कमजोर हैं और हमने उस पर दोबारा हमला इसलिए किया क्योंकि वह यहाँ नहीं था, और हम उसके जाल में फंस गए थे। इसलिए उसने हमें यहाँ होने का भ्रम दिया, ताकि हमें भ्रमित और चौंका सके, यहाँ तक कि हमारे मन में डर भी पैदा कर सके,” वह हँसा। “लेकिन उसने मुझे मूर्ख समझा। वह गलत था।”
उसने अपने हाथों को पीछे की ओर खींचा, उसके हाथों में मौजूद पासे जोर से फड़फड़ाए, जब उसने उन्हें जमीन पर फेंका, और जो संख्या आई वह तीन थी।
तीन।
"तुम्हें पता है कि तुम्हें क्या करना है," उसने कप्तानों से कहा, और अपने द्वारा तैयार की गई जवाबी योजना पर मुस्कुराया।

लोहे का मुखौटा पहने उस व्यक्ति ने अपनी कुल्हाड़ी आगे बढ़ाई और जैसे ही वह जमीन पर गिरी, देवी लुढ़क गई। उसने तुरंत उसके धड़ पर हमला किया, लेकिन वह उसे केवल घायल ही कर पाई।
फिर उसने अपनी मजबूत भुजाओं से देवी की ओर बढ़कर उसके चेहरे पर एक जोरदार थप्पड़ मारा और वह जमीन पर गिर पड़ी; थोड़ी हैरान और अचंभित सी।
वह अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश कर रही थी और गिरी हुई ढाल को पकड़ने की कोशिश कर रही थी, तभी उसने उसका पैर पकड़ लिया और उसे हवा में उठा लिया,

“पीछे हटो! पीछे हटो! पीछे हटो!” वह चिल्लाई और उसके आदमियों ने तुरंत अपनी ढालें उठा लीं और अपने शिविर की ओर बढ़ने लगे।
देवी टूटे हुए पैर के साथ वहीं खड़ी थी, जब उसने देखा कि उसके आदमियों को उसके फैसले से बचाया जा रहा है और वे गुलेल से दागे गए लोहे के गोलों से सुरक्षित घेरे में जा रहे हैं।
उसकी निगाह लोहे के मुखौटे वाले उस व्यक्ति पर भी पड़ी, जो अपने दस्ते और गुटों के बीच गायब हो रहा था, जो पीछे हट चुके थे। वह धुंध में, अंधेरे में, उसके साथ ही प्रतिशोध की उसकी प्यास भी मिट गई।

73

कर्ण पेड़ के पीछे ही रहा।
“तुम्हें ऐसा करने की जरूरत नहीं है,” वह चिल्लाया।
लेकिन कोई जवाब नहीं मिला।
और इसलिए उसने मुड़कर देखा कि क्या वहाँ कोई और है—कोई साया भी…
एक तीर उसके बिल्कुल करीब से कुछ इंच की दूरी से गुजरा।
कर्ण ने खुद को पीछे खींचा और जमीन पर गिर पड़ा, लंबी-लंबी घासों के बीच छिप गया। उसकी निगाहें ऊंचे पेड़ों पर टिकी थीं, लेकिन उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।
उसे अच्छी तरह से भेष बदलना होगा।
कर्ण झाड़ियों और लंबी घास के बीच अपना शरीर ज़मीन पर घसीटने लगा। उसकी साँसें तेज़ चल रही थीं। वह हर घूँट को गिन रहा था, उसकी आँखें उत्तर दिशा की ओर टिकी हुई थीं, ताकि वह देख सके कि कोई तीर उसकी ओर तो नहीं आ रहा है।
हवा तेज हो गई थी और झाड़ियाँ, उसके साथ-साथ, हिलने लगी थीं और वह थोड़ा- थोड़ा दिखाई देने लगा था।
मुझे दूसरा कवर ढूंढना होगा।
और ठीक उसी समय जब उसने सोचा कि—
एक तीर उसके पास से तेज़ी से निकल गया!
जैसे ही तीर ज़मीन पर गिरा और धूल उड़ने लगी, वह लुढ़क गया। उसने अपने पैरों को पकड़ा और चट्टान की ओर भागा, लेकिन ज़हर से लथपथ तीरों की बौछार उसकी ओर बढ़ती रही, जिससे वह फिसलने लगा। उसने ज़मीन पर कलाबाज़ी खाई और खुद को शांत करने के लिए गहरी सांस ली।
वह लड़ाइयों में शामिल रहा था। वह एक युद्ध में था। लेकिन उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि अर्जुन जैसा अदृश्य शत्रु इतना खतरनाक हो सकता है।
उसने सुयोधन की ओर देखा, जो अब थोड़ा करीब आ गया था, और वह मन ही मन मुस्कुराया।

“क्या तुम्हें लगता है कि मुझे मारकर…” कर्ण ने कहना शुरू किया, “पांचाली के साथ तुम्हारे मौके बढ़ जाएंगे? मुझे नहीं लगता कि तुम एक बात भी जानते हो। उसने तुम्हें चुना, अर्जुन। उसने तुम्हें चुना। उसने मुझे कभी नहीं चुना…” और पांचाली की छवि को सामने देखकर उसकी आवाज़ धीमी पड़ गई। वह सोच रहा था कि उसने उस स्त्री से प्रेम क्यों किया जिसने उसे स्वीकार नहीं किया, जिसने उसका इंतज़ार नहीं किया। उसके मन में शन्या की छवि आ गई। “उसने मुझसे प्रेम किया, बेशक, लेकिन उसने विवाह के लिए तुम्हें चुना। मैं उसे यहाँ नहीं लाया क्योंकि उसने आने से इनकार कर दिया था। क्या तुम समझते हो? क्या तुम्हें लगता है कि मुझे मारकर तुम उसका सामना कर पाओगे? तुम उस आदमी को मारने वाले बनोगे जिससे वह प्रेम करती थी। क्या तुम हर दिन उठकर खुद का सामना कर पाओगे?” कर्ण ने कहा। “तुम इसे अपनी नैतिकता पर हावी नहीं होने दोगे। मुझे यकीन है कि तुम्हारी नैतिकता मुझे, उस व्यक्ति को जिसे तुम्हारी प्रेमिका प्यार करती है, मरवाने की इजाज़त नहीं देगी। मैं जानता हूँ कि हमारी इस दुश्मनी के बीच कहीं न कहीं तुम एक अच्छे इंसान हो। तुम बस गुमराह हो गए हो।”
कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया। उसे कुछ सुनाई नहीं दे रहा था। ऐसा कुछ भी नहीं जो उसे प्रभावित कर सके, और वह फिर से पेट के बल लेट गया और कोहनियों को जमीन पर टिकाकर हिलने-डुलने लगा।
अर्जुन अभी भी अदृश्य था।
और तब…
घटित हुआ…
दो तीर एक साथ उसकी ओर चले।
कर्ण लुढ़क गया, अपना धनुष और बाण निकाला और तुरंत उसी दिशा में तीर चला दिया जहाँ से वह आया था, साथ ही वह और आगे फिसलते हुए एक और चट्टान की ओर बढ़ा और खुद को घसीटते हुए एक पेड़ तक पहुँच गया।
“क्या तुम भूल गए कि वो दिन कैसा था? मैं सुबह जल्दी उठ गया था। भोर से पहले, और अभ्यास करने बाहर गया था, तभी मैंने तुम्हें देखा। तुम रात भर अभ्यास कर रहे थे। हम दोनों ने नींद में एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराया और तीरंदाजी के बारे में बातें कीं, एक-दूसरे से कुछ सीखा। यह किसी और दिन जैसा ही था और हमें लड़ना चाहिए था क्योंकि हम टीम में अलग-अलग टीमों में थे। लेकिन उस समय हमारे आसपास कोई नहीं था, इसलिए हमने प्रतिद्वंद्वियों

की तरह नहीं, बल्कि परिचितों की तरह व्यवहार किया—बस तीरंदाजी के दो अच्छे छात्र। क्या तुम्हें वो दिन याद है?”
उसकी सांसें तेज हो गई थीं।
“उस दिन मुझे पता चल गया था कि मैं किसी ऐसे व्यक्ति से बात नहीं कर रहा हूँ जिसने सिर्फ़ अपनी प्रतिभा के कारण तीरंदाजी को चुना हो। उस दिन मुझे एहसास हुआ कि मैं किसी विलक्षण प्रतिभा वाले लड़के से नहीं, बल्कि एक मेहनती लड़के से बात कर रहा हूँ जो अपनी प्रतिभा का सही इस्तेमाल करना चाहता है। जो खुद को बेहतर बनाना चाहता है,” कर्ण ने अपने धनुष पर तीर चढ़ाते हुए कहा। “मुझे सच में लगता है कि तुम जन्मजात तीरंदाज हो, अर्जुन। मुझे ऐसा लगता है,” वह रुका, यह महसूस करते हुए कि उसके शब्द…वास्तविकता और ईमानदारी से निकल रहे थे। “लेकिन तुम कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प से एक महान तीरंदाज बने हो और ऐसा सिर्फ़ वही कर सकता है जिसे इस कला से सच्चा प्यार हो। और अपनी इस अद्भुत प्रतिभा के कारण तुम इसे हल्के में लेते हो। तुम्हें लगता है कि तुम यह किसी लड़की के लिए करते हो, लेकिन तुम गलत हो।” कर्ण ने सुयोधन को देखा। वह पास ही था। उसे सुयोधन को पकड़कर आगे बढ़ना था। लेकिन सुयोधन भारी था और उसके मन में विचारों की दौड़ तेज़ थी। “तुम यह इसलिए करते हो क्योंकि तुम्हें इससे प्यार है, लेकिन तुम इसे कहने से डरते हो। तुम्हें लगता है कि तीरंदाजी के इस वरदान और इसके लिए की गई मेहनत का बोझ किसी और पर डालने से यह बोझ कम हो जाएगा… खैर, तुम्हारे जैसा प्रतिभाशाली व्यक्ति अंततः डरता ही है। कहीं वह…”
एक तीर पेड़ की शाखा से टकराया और उसके तने के पास से गुजरा, कर्ण की आंख से बस कुछ इंच की दूरी से, जब वह पीछे हट रहा था।
गलत शब्द! गलत शब्द!
अंत में, जब कर्ण को एहसास हुआ कि उसे सच बोलना ही होगा, तो उसने कहा, "द्रोण अपने पुत्र अश्वत्थामा के लिए राज्य पर कब्जा करना चाहता था।"
और इसी के साथ, वह अपने हाथों को ऊपर उठाते हुए, अपने हथियार को एक तरफ फेंकते हुए, आवरण से बाहर निकल आया।
“अगर तुम मुझे मारना चाहते हो, तो मार दो,” वह सुयोधन के पास एक-एक कदम बढ़ाते हुए बोला। “लेकिन तुम्हें मेरी बात सुननी होगी। द्रोण ने अपने पुत्र के लिए राज्य लिया था, उसे एक पद देने के लिए, क्योंकि महाराजा अश्वत्थामा को कुछ भी देने वाले नहीं थे। अश्वत्थामा शाही खानदान का नहीं

था, इसलिए द्रोण ने उसे अपने पुत्र के लिए लिया। इसीलिए उसने द्रौपद पर आक्रमण किया। यह इसलिए नहीं था कि वह गलत था। और मुझे पता है कि तुम उसकी वजह से यहाँ हो,” उसने कहा। “उसने तुम्हें मेरे साथ आने के लिए कहा होगा और कहा होगा कि वह तुम्हें मेरा पद दे देगा। खैर, मुझे लगता है कि तुम इसमें भी गलत हो। वह ऐसा नहीं करेगा।”
कर्ण सुयोधन के करीब पहुंच गया था, जो जमीन पर बुरी तरह से घायल और जख्मी पड़ा था—इतना प्रताड़ित कि अगर उसे बचा भी लिया जाता तो भी उसे कई दिनों के आराम की जरूरत पड़ती।
“वह इसे अश्वत्थामा को दे देगा,” कर्ण ने कहा। “अर्जुन, चाहे वह तुम्हें कितना भी अपने बेटे की तरह माने, तुम उसके बेटे नहीं हो। अश्वत्थामा ही उसका बेटा है।”
कर्ण रुका। जवाब का इंतज़ार कर रहा था। लेकिन उसे अपने सामने केवल ऊँचे- ऊँचे पेड़ ही दिखाई दिए। “अंत में, तुम्हें फैसला करना होगा। अब क्या करना है। क्या मारना सही विकल्प है, या बेहतर इंसान बनना? धनुष उठाकर बाण चलाना तो आसान है, लेकिन सबसे मुश्किल है अपनी बुराइयों को छोड़ना। अपने…” वह रुका, यह महसूस करते हुए कि उसने खुद जरासंध के खिलाफ बदला लेने के लिए पूरा युद्ध लड़ा था। क्या यह सही था? उसे नहीं पता था। “अर्जुन, अपने आप पर भरोसा रखो। अपनी पहचान बनाओ और बुरे लोगों से प्रभावित मत हो। एक दिन शायद तुम्हें सही राह मिल जाए, लेकिन आज नहीं।”
कर्ण ने सुयोधन को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया और उसे अपनी पीठ पर उठा लिया। “मैं अब मुड़कर जा रहा हूँ,” उसने ऊँचे स्वर में कहा। “लेकिन मैं बस कुछ कहना चाहता हूँ जो मैंने पहले कभी नहीं कहा…” उसकी आँखों में लगभग आँसू आ गए, “…चाहे हम एक-दूसरे से कितनी भी नफरत करें, मैं एक धनुर्धर के रूप में तुम्हारा सबसे अधिक सम्मान करूँगा। और एक दिन हमारा द्वंद्वयुद्ध हो सकता है, लेकिन फिर भी…आज वह दिन नहीं है। आज वह दिन है जब मैं जरासंध का वध करूँगा। हमारा युद्ध भविष्य के लिए बचाकर रखा गया है। देर-सवेर, मुझे नहीं पता कब, लेकिन यह अवश्य होगा।”
और कर्ण भारी सुयोधन को अपनी पीठ पर लादकर अपने घोड़े की ओर चल पड़ा।
और कर्ण की ओर कोई तीर नहीं फेंका गया, सिवाय एक तीर के जो कर्ण के पैरों के पास जाकर लगा।
लेकिन वह जानता था कि यह हमला नहीं था। यह कर्ण को विदाई देने का समय था।

क्योंकि मुझे पता है कि वह कभी भी खुले लक्ष्य को नहीं चूकता।

दोनों आकृतियों को गायब होते देख, वह घने पत्तों के अंधेरे में गोधूलि बेला तक इंतजार करता रहा और फिर शाखाओं से कूदकर ज़मीन पर आ गिरा। उसने विष से सने तीरों को देखा और तरकश को दूर फेंक दिया।
अर्जुन को पता नहीं था कि वह क्यों रुक गया। कर्ण बहुत बोलता था और वह सब सुनता था, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे क्या रोक रहा है। क्या यह बात थी कि पांचाली ने कर्ण को छोड़कर उसके पास चली गई थी या द्रोण के असली कारण थे? लेकिन कर्ण झूठ नहीं बोल रहा था। वह भले ही कट्टर प्रतिद्वंद्वी था, लेकिन वह ईमानदार था। और यही एक बात थी जो उसे लगातार परेशान कर रही थी। चुपचाप नदी पार करते हुए, वह अपने हाथों को पीछे रखते हुए तब तक चलता रहा जब तक कि वह अपने लगामबंद घोड़े तक नहीं पहुँच गया और उस पर सवार होकर एक नए क्षितिज की ओर खुलते खुले मैदान की ओर देखने लगा। रात होने लगी थी और दिन की आखिरी किरण उस पर पड़ रही थी। यह गरज की रोशनी थी, गड़गड़ाहट की ऐसी गड़गड़ाहट, मानो उसके दिव्य पिता इंद्र ने अभी-अभी उसे अपना आशीर्वाद दिया हो।
ताकत नहीं।
लेकिन बुद्धिमत्ता से ही चीजों को अधिक स्पष्टता से देखा जा सकता है।

74

"हमने खो दिया।"
कर्ण ने जब सुयोधन को अपनी काठी पर एक बेजान लाश की तरह लटकाकर वापस लौटा, तो उसने सबसे पहले यही सुना।
लेकिन वह और कुछ सुनना नहीं चाहता था। वह जानता था कि आज उसके सैनिक हार गए हैं, फिर भी उसने उन्हें सुयोधन को भीषक ले जाने का आदेश दिया, जबकि वह किसी खास व्यक्ति के पास जाने के लिए निकल पड़ा; कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति। कोई ऐसा व्यक्ति जिसकी उसे परवाह नहीं थी, लेकिन होनी चाहिए थी।
कर्ण लोगों और अपने उन सेनापतियों के बीच से तेज़ी से भागा जो उससे कुछ बात करने के लिए आ रहे थे। तभी उसकी नज़र सत्या पर पड़ी जो सैनिकों से शराब पीते हुए बातें कर रही थी, और देवी लंगड़ाते हुए उसकी ओर बढ़ने ही वाली थी कि उसने अपना कवच उसे वापस दे दिया।
उन्होंने कहा, "तुमने अच्छा किया।"
“नहीं, हम हार गए। गुलेलें…”
“कोई बात नहीं। कल एक और दिन है और हम फिर लड़ेंगे,” कर्ण मुस्कुराया। “अभी कवच अपने पास रखो। मुझे कहीं जाना है।”
देवी को मुस्कुराने में मुश्किल हो रही थी; और शुरुआत में उसके मन में जो कुंठा और गुस्सा था, वह अब उतना ज़ाहिर नहीं हो रहा था जितना कर्ण उसे करते हुए देखता था। और कर्ण को एहसास हुआ कि एक खुशहाल आंतरिक सभा के लिए, सदस्यों को उपयोगी और उत्पादक महसूस कराना ज़रूरी है। यही एक नेता बनने की तरकीब होती है।
वह अपने तम्बू के अंदर गया तो देखा कि शनाया वहाँ लेटी हुई है, उसकी पीठ उसकी ओर है। वह उछलकर बिस्तर पर चढ़ गया और धीरे-धीरे अपनी उंगलियों से उसकी त्वचा को सहलाने लगा। उसने लाल रंग का गाउन पहना हुआ था और वह लगभग आश्चर्यचकित होकर उसकी ओर मुड़ी।
“मैं चिंतित थी,” उसने हैरानी से कहा।
कर्ण मुस्कुराया। "और इसीलिए तुम यश की प्राप्ति के लिए सो रहे थे?"

“खैर, मुझे थोड़ी चिंता तो थी ही,” उसने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। “मुझे पता था कि तुम वापस आओगे।”
आपको मुझ पर भरोसा है।
"बिल्कुल।"
कर्ण ने बड़ी उत्सुकता से उसकी आँखों में देखा। “मुझे खेद है कि मैं पहले इतना बुरा बर्ताव करता था। तुम सही थीं। मैंने कोशिश भी नहीं की। और देखो, तुम सब कुछ छोड़कर एक ऐसे संघर्ष में लगी हो जो न तुम्हारा है, न मेरा। तुम उन गिनी-चुनी महिलाओं में से एक हो जिनसे मैं अपने जीवन में मिला हूँ, लेकिन तुम्हें देखकर मुझे लगता है कि मुझे किसी और से मिलने की ज़रूरत ही नहीं है।”
"क्या तुम... फ़्लर्ट कर रहे हो?"
"हां, बिल्कुल।"
कर्ण ने इंतजार नहीं किया। वह आगे झुका और उसके होंठों को चूम लिया, जैसे ही उसने उसे अपनी बाहों में भर लिया। उसने महसूस किया कि उसकी उंगलियां धीरे-धीरे उसके सिर पर चल रही हैं, और दोनों उस पल में पूरी तरह डूबे हुए थे।
और यद्यपि कर्ण को पांचाली की झलकियाँ अपने सामने आती दिखाई दे रही थीं, फिर भी उसने महसूस किया कि यह ठीक है। क्योंकि अपने हृदय में वह अब भी उससे प्रेम करता था, लेकिन अंततः उसने शनाया से प्रेम करने की लंबी यात्रा शुरू कर दी थी।

सुयोधन बुखार से व्याकुल था और तंबू के एक कोने में पलंग पर लेटा हुआ था। उसका चेहरा पीला पड़ गया था और आंखों के नीचे काले घेरे थे। जैसे ही उसने आंखें खोलीं, उसे अपने सामने एक परछाई दिखाई दी, जिसमें टॉर्च की रोशनी का प्रतिबिंब था और आयुर्वेदिक क्रीम की महक थी, जिसमें जंगल की खुशबू समाई हुई थी।
उसने परछाई को एक व्यक्ति में बदलते देखा, और उसने कर्ण को पाया, जो अब घुटनों के बल बैठा था, जबकि उसके एक तरफ भगवा धोती पहने एक गंजा भीक्षक पेस्ट मिला रहा था।

मैं कहाँ हूँ?
“मेरे शिविर में।”
"क्या - क्या हुआ?"
“आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है,” कर्ण ने कहा।
“आपने बचाया… आपने बचाया…” शब्द उसके मुंह से गलत तरीके से निकल रहे थे, लेकिन वह अभी भी बातों को समझने की कोशिश कर रहा था, “आपने मुझे बचाया, है ना?”
कर्ण को जवाब देने की जरूरत नहीं थी।
“मुझे खेद है,” उसने कहा। “मैं आपको चेतावनी देने आया था, लेकिन मुझे पकड़ लिया गया और मुझ पर हमला किया गया। मुझे खेद है…क्या अर्जुन ने…”
मैंने उसे संभाल लिया।
“क्या वो मर गया?”
कर्ण ने सिर हिलाया। “तुम ठीक हो जाओगे। मैं तुम्हें जल्द से जल्द हस्तिनापुर वापस भेजना चाहता हूँ। महाराजा को यह नहीं लगना चाहिए कि मैं उनके बेटे की जान जोखिम में डाल रहा हूँ।”
“हां-हां…” उसने आह भरी, उसे अभी भी अपने जीवन के विभिन्न हिस्सों की छवियां याद आ रही थीं, लेकिन विशेष रूप से एक, “मुझे माफ कर दो।”
कोई बात नहीं, आपको पता नहीं था।
“नहीं, इसके लिए नहीं।” उसने गहरी साँस ली, उसके माथे से पसीना टपक रहा था और उसे अपने शरीर के दबाव वाले बिंदुओं का एहसास हो रहा था। “मैंने तुम्हें बलि का बकरा बनने दिया।”
"ओह।"
“मुझे पता है कि मैं तुम्हारा ऋणी नहीं था, लेकिन था।” वह सिसकने लगा और उसकी आँखों में आंसू आ गए। वह ऐसा महसूस नहीं करना चाहता था, लेकिन वह कर रहा था। अपराधबोध। “द्रोण ने तुम्हें स्वीकार कर लिया था, भले ही तुमने उसे दक्षिणा नहीं दी थी। उसने फिर भी तुम्हें स्वीकार किया क्योंकि तुम खास थे, जब तक कि मैंने तुम्हें एक बड़ी मुसीबत में नहीं फंसा दिया।”
"कोई परेशानी की बात नहीं…"
“हाँ, मैंने ही भीम को ज़हर दिया था, तुमने नहीं!” वह दर्द से चीख उठा और उसके माथे की नसें फूल गईं। “मैं उससे इतना तंग आ गया था कि मुझे ऐसा करना पड़ा और मैंने कर दिया। जब भीम बच गया, तो उसने कहा कि उसे ज़हर दिया गया था

और सब जानते थे कि यह मैंने किया था। उस दिन मैं ही उसे खाना परोसने वाला था, लेकिन तुम... तुमने सारा दोष अपने ऊपर ले लिया और तुम पर राजघराने के खिलाफ हत्या की साजिश का आरोप लगा और तुम्हें देश निकाला दे दिया गया।” सुयोधन कर्ण के शांत चेहरे को देख रहा था, जब वह उसकी बातें सुन रहा था। “अगर द्रोण ने समझदारी न दिखाई होती, तो तुम जेल में होते, लेकिन मैंने उनसे विनती की कि वे महाराजा को कुछ न बताएं। वे मान गए और उन्हें पता था कि यह मैंने किया है, फिर भी उन्होंने सारा दोष तुम पर डाल दिया, ताकि तुम्हें अपमानित कर सकें। शायद वे तुम्हें दूसरा मौका नहीं दे रहे थे। शायद वे बस तुम्हें दुखी करने, तुम्हें धोखा देने, तुम्हें अपमानित करने के अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। और उन्होंने ऐसा कर दिखाया।”
कर्ण ने सिर हिलाया। “जी हाँ। और जैसा कि मैंने तुम्हें बताया, तुम पर मेरा कोई एहसान नहीं है।”
“मेरे मित्र, मैं तुम्हारा जीवन भर ऋणी रहूंगा। तुमने मेरी जान बचाई।” और उसने अपना हाथ उठाया, जिसे कर्ण ने धीरे से पकड़ लिया, और फिर दोनों ने हाथ मिलाया।

शांतनु को उसकी हत्या करनी थी। उसने और कर्ण के शासन के अन्य दलबदलुओं ने इसकी योजना बनाई थी, लेकिन हस्तिनापुर के राजकुमार को यहाँ घायल अवस्था में देखकर... ओह... यह और भी कपटपूर्ण और घिनौना लग रहा था।
और इसलिए वह आधी रात के अंधेरे में चलता रहा, उसने अपने सामने एक सैनिक को देखा, जो उसका एक साथी था।
और उन्होंने कहा: “क्या आप तैयार हैं? यह एक लंबी यात्रा है।”
"हाँ।"
“साफ़-साफ़ बता देना,” उसने कहा और खांसते-थपथप थूकते हुए घुरघुराहट की आवाज़ निकाली। शांतनु दिखने में जवान और छोटा लगता था, पर ऐसा नहीं था। वह काफ़ी बूढ़ा था, लेकिन उसका चेहरा हमेशा जवान दिखता था। और वह कुछ समय से कर्ण से नफ़रत करता था। शुरुआत में वह धनुर्धर के प्रति श्रद्धा रखता था, लेकिन जल्द ही उसने कर्ण का शासन देखा और जाना कि कैसे उसने शत्रुओं को अपने अधीन कर लिया था—वह उस तरह का शासक था जिसने शांतनु के भाई की हत्या

के पीछे पड़े लोगों को काम पर रखा था। वह भी एक सैनिक था और म्लेच्छों के हाथों मारा गया था, अगर इस खास दल के हाथों नहीं तो दूसरे दल के हाथों। पर इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता, वे सब एक जैसे थे।
"हाँ।"
शांतनु ने सबूत के तौर पर सुयोधन के वस्त्र का एक टुकड़ा उसे दिया और मुस्कुराया। घोड़ी चली गई, और शांतनु मन ही मन सोचने लगा: राजा को यह जरूर पता होगा कि उसका पुत्र यहाँ एक ऐसे शिविर में है जो लगातार हार रहा है, और कर्ण के कुकारते फैसलों के कारण उसे नुकसान हो रहा है।
और उसकी मुस्कान और चौड़ी हो गई। राजा को मारना उसे सिंहासन से हटाने से कहीं बेहतर था।

75

भीतरी परिषद के सदस्य आग के चारों ओर बैठे थे और बीच में आग सुलग रही थी।
आज रात ठंड थी, और तूफ़ानी आसमान के नीचे वे सभी फर और कंबल ओढ़े हुए थे।
कुछ लोग कर्ण, सत्य, देवी और शनाया की तरह आग के चारों ओर बैठे थे।
वे अपनी भविष्य की योजनाओं पर चर्चा कर रहे थे।
“हम इस तरह के और हमलों का सामना नहीं कर सकते,” देवी ने आगे झुकते हुए, अपनी कठोर आवाज में कहा। “गुलेलों का हमला हमारे लिए बेहद चौंकाने वाला और कारगर साबित हुआ। मुझे पता है कि दोनों तरफ से लोगों ने अपनी जान गंवाई है, लेकिन मेरा दृढ़ विश्वास है कि हमें कुछ करना ही होगा।”
“और आप क्या सुझाव देंगे?” कर्ण ने कहा, उसके ऊपर एक कंबल था, उसकी सुनहरी आँखें गहरी और तीक्ष्ण थीं।
सत्या ने अपनी उंगलियों में एक प्याला पकड़ रखा था और बीच-बीच में बोलते हुए कहा: "मेरा सुझाव है कि अब लड़ाई खत्म हो जानी चाहिए। और सैनिकों को खोना हमारे बस की बात नहीं है, लड़के।"
“तो, हार मान लो?” कर्ण ने कंधे उचकाते हुए कहा। “मुझे नहीं लगता।” उसने शनाया की ओर देखा, जो चुपचाप उसके बगल में बैठी थी और उसके होंठ दबे हुए थे।
“मेरे पास एक और विचार है,” देवी अपनी सीट से उठीं और अपनी बाहों को मलते हुए बोलीं, “क्यों न मैं उसकी बात मान लूँ?”
“तुम्हारा क्या मतलब है?” कर्ण ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।
“वह महिला पागल हो गई है। आखिरकार हो ही गया!” सत्य ने ताली बजाते हुए कहा। “नहीं, नहीं,” देवी ने सिर हिलाते हुए कहा। “मैं दिखावा करती हूँ कि मैंने पाला बदल लिया है और उसकी मदद करना चाहती हूँ; उसे तुम्हारी कोई झूठी रणनीति बता देती हूँ और उनके अगले हमले के बारे में जानकर भाग जाती हूँ।” “अगर तुम भागने में कामयाब न हो पाओ तो?” शनाया ने पूछा।
"फिर मैं एक कौआ या कबूतर भेजता हूँ, मुझे नहीं पता, लेकिन कुछ ऐसा जिससे जानकारी बाहर पहुँच जाए।"

कर्ण ने अपने जबड़े भींच लिए। "जासूसी कर रहे हो, है ना?"
देवी ने सिर हिलाया।
“और इसकी क्या गारंटी है कि वो तुम्हें देखते ही मार नहीं डालेगा?” सत्या हँस पड़ा।
“कोई गारंटी नहीं है, लेकिन मेरा मानना है कि हमें जोखिम उठाना चाहिए। हम कभी नहीं जान पाएंगे कि उसकी अगली योजना क्या है। और मुझे यकीन है कि कर्ण की सारी चालें अब खत्म हो रही हैं। हम सिर्फ गुरिल्ला युद्ध की रणनीति से युद्ध नहीं जीत सकते। हम शायद एक छोटी सी लड़ाई जीत लें, लेकिन युद्ध नहीं। युद्ध के लिए, हमें यह जानना चाहिए कि दुश्मन क्या कर रहा है, क्या सोच रहा है,” देवी ने समझाया।
कर्ण को यह विचार अटपटा और डरावना लगा। देवी के उसके खिलाफ हो जाने की क्या संभावना थी? लेकिन लोगों के बारे में बुरा सोचना उसे खलता था। बेशक, उसे ऐसा नहीं सोचना चाहिए था, क्योंकि देवी बदल चुकी थी और उसके लिए अच्छा कर रही थी। "ठीक है," उसने कहा। "लेकिन जनरल, मुझे लगता है कि अगर आप वहां पकड़े जाते हैं, तो आपके पास एक योजना होनी चाहिए।"
“हां। हमारी रणनीतियों का खुलासा करने के लिए यातना सहने से पहले मैं आत्महत्या कर लूंगा।”
कर्ण ने सिर हिलाया। "अच्छा।"
सत्य और शनाया ने अविश्वास भरी नजरों से एक-दूसरे को देखा कि कर्ण ने आत्महत्या का समर्थन किया, लेकिन इससे स्पष्ट रूप से पता चलता है कि अब उनके लिए किसी व्यक्ति के जीवन की तुलना में राष्ट्र का कल्याण कहीं अधिक महत्वपूर्ण था।
“तुम्हें जाने की तैयारी शुरू कर देनी चाहिए। निहत्थे जाओ और सफेद झंडा लेकर जाओ, ताकि उन्हें पता चले कि तुम शांति से आए हो। और मुझे यह नहीं कहना चाहिए, लेकिन हमारे शहीद सैनिकों के कुछ सिर काटकर अपने साथ ले जाओ, ताकि उसे पता चले कि तुमने मेरे आदमियों को मारकर मेरे शिविर से विमुख हुए हो,” कर्ण ने निर्देश दिया और दृढ़ चेहरे से देवी ने सिर हिलाया, जबकि शनाया और सत्या उसकी इस क्रूर तकनीक को देखकर सदमे में थे। “लेकिन जब भी मौका मिले, निकास और भागने के रास्तों पर नजर रखना, भले ही तुम्हें ज्यादा कुछ पता न चले। जरासंध चालाक है और वह तुम्हारी कहानी में खामियां ढूंढने

की कोशिश करेगा, इसलिए एक विश्वसनीय कहानी सुनाओ कि तुमने मेरा पक्ष क्यों छोड़ा।”
"मैं कई विश्वसनीय कहानियाँ सोच सकती हूँ," देवी मुस्कुराई।
ओह, वह मजाक भी करती है।
"महान।"
और वह तैयारियों के लिए रवाना हो गई।
शनाया, सत्य और कर्ण चुपचाप बैठे रहे, तभी सत्य ने कहा: "मुझे लगता है कि हम इस युद्ध को जारी रखकर एक गंभीर गलती कर रहे हैं।"
“क्या तुम हारने के डर से ऐसा कह रहे हो?” कर्ण ने पूछा।
"आपका क्या मतलब है?"
“तुम्हारे अधीन तुम्हारे सैनिकों ने युद्ध के मैदान में तुममें भय देखा। तुम युद्धक्षेत्र में जाने से डरते हो, और यह स्वाभाविक है। लेकिन दूसरों के मनोबल को ठेस मत पहुँचाओ—”
“बेटा, तुम्हारे जन्म से पहले मैं कई युद्धों और लड़ाइयों का हिस्सा रहा हूँ,” सत्या गुस्से से भरी आँखों से खड़ा हो गया। “पूरी जिंदगी मैं इस धरती की रक्षा करते हुए मरना चाहता था, जब तक मुझे यह एहसास नहीं हुआ कि यह सब व्यर्थ है। जब तक मुझे यह एहसास नहीं हुआ कि ये नशा ही मेरी जिंदगी है और तुमने मुझे उम्मीद दी कि मैं अभी भी वही कर सकता हूँ जो मुझे पसंद है। लेकिन यह मुश्किल है। एक से दूसरे पर यूँ ही नहीं जा सकते। अब मुझे मौत से डर लगता है। मैं इसका इंतजार नहीं करता।” उसने उसकी आँखों में भय और भावहीनता देखी। “और मुझे सिर्फ अपनी मौत से ही नहीं, बल्कि दूसरों की भी मौत से डर लगता है…तुम्हारे लिए, तुम्हारी पत्नी के लिए, मैदान में मौजूद हर किसी के लिए।”
इतना कहकर वह चला गया।
कर्ण ने अपनी भौंहें उठाईं और कुछ कहना चाहा, लेकिन वह घबराया हुआ और शर्मिंदा महसूस कर रहा था। "यह आदमी," उसने अंततः शनाया से कहा, जब उसने महसूस किया कि उसके हाथ धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ रहे हैं और उसे कसकर पकड़ रहे हैं, "बचपन में वह मेरा आदर्श था, युद्धों और रक्तपात का समर्थन करता था। मैंने कभी नहीं सोचा था कि वह इस तरह बोलेगा। क्या तुम्हें लगता है कि वह सही है?"
“क्या युद्ध निरर्थक होते हैं?”

"हाँ।"
"मुझे लगता है कि राष्ट्र की खोज और उसका विकास एक बूढ़े शराबी की बातों से कहीं अधिक श्रेष्ठ है," शनाया ने कहा।
कर्ण मुस्कुराया। और वह भी मुस्कुराई।

अगली सुबह तक, देवी ने अपने घोड़े को रवाना होने के लिए तैयार कर लिया था और उसके गले में एक अजीब सी बेचैनी और पेट में एक अजीब सी घबराहट थी—डर और इस बात की उलझन कि आगे क्या होगा। वह शेरों की गुफा में जा रही थी और उसे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा, लेकिन यह उसके लोगों के लिए बहुत ज़रूरी था।
लेकिन जाने से ठीक पहले, उसे कुछ करना था। उसे किसी से मिलना था। यह ज़रूरी था। शिविर में तेज़ी से चलते हुए, अस्तबल, रसोई और औषधालय से गुज़रते हुए, वह उस बड़े तंबू के पास पहुँची जहाँ भोजन बाँटा जा रहा था, और सैनिक, अपने पैड और हथियारों के बिना, एक साथ बैठे हुए, बड़े नारियल के पत्तों पर परोसे गए चावल और दही खा रहे थे।
देवी सैकड़ों सैनिकों के बीच से गुज़रते हुए शांतनु को ढूंढने निकलीं, जो अपने दोस्तों के साथ हंसी-मज़ाक में बातें कर रहा था।
“सैनिक, एक शब्द बोलिए?”
शांतनु घबराकर खाना छोड़कर खड़ा हो गया और समूह से अलग होकर चुपचाप खड़ा रहा।
"जी हां, जनरल?"
“मैं आपको सूचित करना चाहता हूँ कि राजा की हत्या करना या उसकी साजिश रचना भी हत्या का षड्यंत्र है और आप पर मुकदमा चलाया जाएगा और जल्द से जल्द आपको फांसी दी जाएगी। क्या आप समझते हैं?”
वह चौंक गया। "लेकिन जनरल, मुझे लगा था कि आप..."
शायद पहले। लेकिन कर्ण को निष्पक्ष मौका दिया जाना चाहिए।
“इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं क्या सोचता हूँ। तुम्हें यह समझना होगा कि राजा से एक शब्द भी कह दिया तो तुम्हारी जान खतरे में पड़ जाएगी। लेकिन

चूंकि तुमने कुछ नहीं किया है और सिर्फ बातें करते हो, इसलिए मैं तुम्हें जाने दे रहा हूँ।”
लेकिन जनरल, ऐसा क्यों?
“और मुझे लॉगबुक से पता चला है कि पिछले कुछ दिनों में एक गैर-सरकारी घुड़सवार हस्तिनापुर के लिए रवाना हुआ है। अब आप सोच रहे होंगे कि ऐसा क्यों हुआ होगा।” वह छोटे लड़के के करीब आई और उससे काफी लंबी खड़ी हो गई। “मैं तुम्हारे भले के लिए यही दुआ करती हूँ कि हस्तिनापुर से कोई न आए, और अगर कोई आया तो… तुम्हें दांव पर लगा दिया जाएगा।”
उसकी आँखों में भय झलक रहा था। "जनरल, मैंने सुना है कि आप एक जासूसी मिशन पर जा रहे हैं। आपको शुभकामनाएँ।"
वह कंधे उचकाते हुए चली गई, अपनी घोड़ी की ओर लौटते हुए, यह सोचते हुए कि जाने से ठीक पहले उसे जो नज़र मिली थी, उसका स्पष्ट अर्थ था: मुझे उम्मीद है कि तुम वहाँ से वापस नहीं लौटोगे।

76

कर्ण झटके से जाग उठा।
सुबह के शुरुआती घंटे थे और वह सूर्यदेव की आराधना करने के लिए सबसे ऊँची चोटी पर टहलने गया था। जब वह लौटा, तब तक उसकी उंगलियों पर ठंडक महसूस होने लगी थी और उसकी धड़कन बेकाबू होकर तेज़ होती जा रही थी। जल्द ही, वह अपने बिस्तर की ओर बढ़ा जहाँ शनाया सो रही थी और उस पर गिर पड़ा। आमतौर पर प्रार्थना करके लौटने पर उसे अच्छा महसूस होता था, लेकिन आज स्थिति बिल्कुल विपरीत थी।
वह झपकी ले रहा था और उसने असफलता का सपना देखा। अस्वीकृति का। लगातार निराशा का। जब तक कि वह पसीने से भीगा हुआ जाग नहीं गया।
"क्या तुम ठीक हो?" उसके बगल से एक आवाज आई, और आवाज देने वाली महिला अपनी उंगलियों से उसकी नंगी छाती पर सहला रही थी।
"हां, मैं बस... मुझे नहीं पता।"
क्या आपको दोबारा असफल होने का डर सता रहा है?
वह रुका। "क्या मुझे नहीं होना चाहिए?"
हम असफल नहीं होंगे।
“तुम्हें कैसे पता?” उसने सीधे उसकी आँखों में देखा और उनकी निगाहें मिल गईं। उसने अपने होंठ सिकोड़े और उसके गालों पर एक चुंबन दिया। “क्योंकि हम इसे कर लेंगे।”
“और अगर हम नहीं जीते तो?” उसकी आवाज़ घबराहट से भरी थी। “मैं हार नहीं सकता, शनाया। मैं हार ही नहीं सकता। मुझे जीतना ही होगा। चाहे कुछ भी हो जाए।”
“जीतने की यही अटूट लालसा आपके स्वास्थ्य पर इतना अधिक तनाव पैदा कर रही है। इस हालत में आप किसी भी हालत में जीत नहीं पाएंगे।”
“मुझे नहीं पता…बस…” उसने चिंता से कहा। “मुझे जरासंध से छुटकारा पाना है, मुझे अंगा को वापस लाना है। मुझे अपनी पूरी ताकत लगानी होगी।”

और अगर आप ऐसा नहीं कर पाते हैं, तो कोई बात नहीं। एक और दिन है। एक और मौका है। सिर्फ इसलिए कि आप असफल हो गए, इसका मतलब यह नहीं है कि आप दोबारा उठ नहीं सकते।
“जब से यह युद्ध शुरू हुआ है, मैं उठने की कोशिश कर रहा हूँ। मैं जरासंध पर चाहे जितना भी हमला करूँ, वह फिर से उठ खड़ा होता है और अपनी सेना का इस्तेमाल करता है। मुझे लगभग ऐसा लगता है कि मैंने देवी को भी खो दिया है, और उन लोगों को भी खो दिया है जो विदेशियों को चुनने के कारण मुझसे नफरत करते हैं,” उसने गुर्राते हुए कहा।
आपके पास एक ऐसा हथियार है जिसका आपने अभी तक इस्तेमाल नहीं किया है।
"वह है?"
“Brahmastra.”
उसे एहसास हुआ कि वह कांप रहा है, इसलिए उसने एक कंबल उठाया और उसे ओढ़ा दिया। उसने उसे बिठाया और उसने शांति से अपना सिर उसकी गोद में रख दिया। वह खाली निगाहों से घूर रहा था; उसकी आँखें झिलमिला रही थीं और चेहरा मुरझाया हुआ था। पिछली रात उसने चाकू से अपनी दाढ़ी काट ली थी, क्योंकि उसमें खुजली होने लगी थी, और युद्ध शिविरों में नहाने की सुविधा भी अच्छी नहीं थी। उसने अपनी उंगलियाँ उसके सिर और बालों पर फेरना शुरू कर दिया। "मुझे तुम्हारे बाल हमेशा से पसंद थे।"
कर्ण ने कुछ नहीं कहा।
उसने उसका ध्यान भटकाने की कोशिश की। “मुझे हमेशा से यह जानने की उत्सुकता रही है कि हमसे मिलने के बाद क्या हुआ। मेरे पिता ने आपको हिमालय की चोटी तक पहुँचने में मदद की। क्या आपको वह मिल गया जिसकी आप तलाश कर रहे थे? क्या आपको पौराणिक परशुराम मिले? मुझे पता है कि आपको ब्रह्मास्त्र के बारे में जानकारी देने की अनुमति नहीं है, लेकिन क्या आप इसका प्रयोग करने वाले हैं?”
"जी हां, मैं उनसे मिला था, लेकिन ब्रह्मास्त्र... यह जितना आप सोचते हैं उससे कहीं अधिक जटिल है।"
“ठीक है। परशुराम कैसे थे?”
उन्होंने मुझे धनुष दिया।
"वास्तव में?"

“□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□”
□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□ □□□ □□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□, □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□-□□□ □□ □□□ □□□ □□□
□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□

77

तीन साल पहले…
अंततः कर्ण पहुँच गया था।
कर्ण की निगाहें उस स्थान पर टिक गईं, जहाँ माना जाता था कि भगवान परशुराम निवास करते थे। अमर, जिन्होंने उस संसार को देखा था जब वह ऐसा नहीं था, यानी इस समय से पहले का समय, और वे भविष्य को भी देखेंगे। कर्ण विस्मय में था, यह सोचकर कि वे कैसे होंगे, और उसने कल्पना भी कर ली थी कि वे कैसे दिखेंगे, लेकिन जो वह देखने वाला था, उसकी कोई तुलना नहीं थी।
बाहर से देखने पर सामने का इलाका सादा लग रहा था। ग्रामीण ज़्यादा चिंतित नहीं थे और अपने याक, भेड़ और गायों के साथ अपने दैनिक कामों में लगे हुए थे। यहाँ बर्फ़ मोटी थी, और कर्ण अपने घोड़े के साथ द्वार की ओर बढ़ा; उसके सीने में एक तीव्र क्रोध धड़क रहा था।
अगर आर्किमिडीज न होते तो वह यहाँ न होते। म्लेच्छों के साथ समय बिताना वास्तव में एक ज्ञानवर्धक अनुभव था, खासकर इसलिए क्योंकि उन्हें गुरिल्ला युद्ध के बारे में, हल्के हथियारों के बजाय भारी हथियारों के उपयोग के बारे में और अदृश्य होने के तरीकों के बारे में बहुत कुछ सीखने को मिला। कर्ण तब से गायब रहना चाहता था जब से उसे पता था कि भीम की हत्या की साजिश का आरोप उस पर लगाया जाएगा, जबकि उसने कुछ भी नहीं किया था। लेकिन राजपरिवार में से किसी ने भी उसका पीछा नहीं किया और यह बात उसे परेशान कर रही थी। वह समझ सकता था कि सुयोधन ने ऐसा क्यों किया, लेकिन वह यह नहीं समझ पा रहा था कि सुयोधन को कर्ण पर दोष मढ़ने में कोई बुराई क्यों नहीं लगी। जब कर्ण ने यह बात उठाई तो वह चुप रहा। उसने यह भी नहीं कहा कि यह सब मिलकर किया गया था।
लेकिन कर्ण ने अपने मित्र के लिए वही किया जो उसे करना था, और शायद एक दिन वह उससे उसकी चुप्पी का बदला भी ले सकता है।
फिलहाल, उसके चेहरे पर मुस्कान थी, जब वह गांव पहुंचा और अंदर दाखिल हुआ, तो रास्ते में उसे अपने-अपने कामों में मशगूल पुरुष और महिलाएं दिखाई दिए।

वह पूछना चाहता था कि क्या उन्हें पता है कि परशुराम कहां मिल सकते हैं। तभी उसकी नज़र गांव के बीचोंबीच उलझे बालों वाले, तेंदुए की खाल पहने और हाथ में कुल्हाड़ी लिए एक विशाल मूर्ति पर पड़ी। वह उसे देखकर दंग रह गया और कुछ देर तक उसे निहारता रहा, तभी उसे एक आवाज़ सुनाई दी:
"यह ग्रेनाइट से बना है।"
उसने मुड़कर देखा तो उसे एक युवक दिखाई दिया, जो कर्ण से उम्र में काफी बड़ा था, लेकिन अपेक्षाकृत युवा था। उसके बाल भी कर्ण की तरह उलझे हुए थे और उसने तेंदुए की खाल ओढ़ रखी थी। उसके हाथ में एक लंबी छड़ी थी जिससे वह ज़मीन कुरेद रहा था और वह कर्ण के साथ शांतिपूर्वक चल रहा था।
“क्या तुम… तुम ऐसा क्यों कर रहे हो…”
वह असमंजस में था। क्या ये भगवान परशुराम थे? नहीं, ये तो बहुत दुबले-पतले थे, मूर्ति की तरह चौड़े नहीं थे।
"आप कौन हैं?"
“तुम एक योद्धा हो,” उस व्यक्ति ने कहा। “मैंने तुम्हें दूर से ही देख लिया था और पहचान लिया था कि तुम ही हो। तुम हमारे बारे में पूछ रहे थे…” उसका हाथ कर्ण के कवच पर गया। “हाँ, कुंती राज्य का प्रतीक। क्या तुम वहीं से हो? तुम मुझसे मिलने क्यों आए हो?”
“मैं…मैं नहीं हूँ। दरअसल, मुझे यह मेरी माँ से मिला है।”
“माँ, तुम कह रहे हो,” उस आदमी की सुनहरी आँखें भेदक थीं। “और तुम्हारी माँ कौन है?”
“राधा।”
वह आदमी अपनी लाठी लेकर आगे बढ़ा और कर्ण लगभग ज़मीन पर गिर पड़ा। उसके सामने एक कांपती हुई रोशनी चमकी और उस आदमी ने कहा: "तुम मुझे क्यों ढूंढ रहे हो?"
“क्या आप भगवान परशुराम हैं?”
उनके चेहरे पर एक प्यारी सी मुस्कान थी। "मेरे साथ चलो, विद्यार्थी।" कर्ण को लगभग खुशी ही हुई कि उसे विद्यार्थी कहा गया, लेकिन वह फुर्ती से भागा और आदेश का पालन किया, जबकि वह रहस्यमय व्यक्ति उसे गाँव से ऊपर पहाड़ी पर ले गया, जहाँ एक छोटा मंदिर था। कर्ण ने आश्चर्य से देखा कि मंदिर एक चट्टान पर बना था, लगभग सौ फीट की ऊँचाई पर जहाँ बर्फीला तूफान आकर उन्हें बहा ले जा सकता था, लेकिन उन्हें किसी बात का डर नहीं था। यहाँ

से पूरा गाँव सुंदर दिखाई दे रहा था, यहाँ तक कि नीचे की हरी-भरी और भूरी ज़मीनें भी, और भारतवर्ष की सबसे ऊँची पर्वत चोटियाँ दिव्य लग रही थीं। मंदिर के चारों ओर छोटे-छोटे झोपड़े बने हुए थे, जो लकड़ी के टुकड़ों से बने थे, और वहाँ उसने उलझे बालों और तेंदुए की खाल जैसे कई पुरुषों को देखा, जो बिल्कुल उस रहस्यमय व्यक्ति की तरह थे। और वे सभी तलवारबाजी, तीरंदाजी, भाला फेंक, यहाँ तक कि मार्शल आर्ट और हाथ से हाथ मिलाकर लड़ने का अभ्यास कर रहे थे।
दरअसल, कर्ण ने मुड़कर लंबी चट्टानी चोटियों को देखा, जहाँ से जटाधारी पुरुष चढ़ रहे थे, जिनके पास लंबी रस्सियाँ और एक हुक था, वे चट्टानों पर चढ़ रहे थे, शायद चोटियों तक भी पहुँच रहे थे।
"यह क्या है?"
“परशुराम,” उन्होंने कहा। “हमारे पूर्वज के नाम पर रखा गया है। हमारे पिता के नाम पर।”
"पिता?"
"हमारे शिक्षक कहना ज़्यादा सही रहेगा।"
लेकिन…क्या भगवान परशुराम एक ही व्यक्ति नहीं हैं…?”
वह मुस्कुराया। "भगवान परशुराम को मरे हुए सौ साल से भी ज्यादा हो गए हैं।" क्या?
मैं उनका शिष्य हूँ। और वे सभी भी उनके शिष्य हैं।

कर्ण मंदिर के अंदर गए, उन्हें बैठने के लिए कहा गया और एक कटोरा सूप दिया गया। मंदिर के भीतर कोई फर्नीचर नहीं था, केवल कालीन बिछे थे जिन पर बैठना पड़ता था, और उनके चारों ओर मोमबत्तियाँ जल रही थीं। वहाँ बहुत शांति और सन्नाटा था।
“तुम तो बड़े ही बेपरवाही से अपने निशान छोड़ते हो,” उस आदमी ने कहा। “बस शहर में थोड़ी दूर चलते हुए ही मुझे एक जवान, हट्टा-कट्टा लड़का ढाल और धनुष लिए परशुराम को ढूंढता हुआ सुनाई दिया।”
“और तुम मेरा इंतजार कर रहे थे?”
"बिल्कुल।"

"ऐसा क्यों?"
“सीने की ढाल की वजह से,” उसकी आँखें चमक रही थीं।
“सीना-बहाने का कवच?”
“मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता था जो इसे पहनता था। लेकिन अफसोस, हम इस देश के युवाओं को बिना किसी प्रतिफल के शिक्षित करने के लिए हमेशा तत्पर हैं। आप हमसे सीखने आए हैं, है ना?”
कर्ण ने सिर हिलाया, उसके घुटने जमीन पर टिके हुए थे, उसे आश्चर्य हो रहा था कि यह सब कितना सरल था। "जी गुरुजी।"
“हम पूरे देश से युवा योद्धाओं को प्रशिक्षण देते हैं क्योंकि हम भगवान परशुराम के उस विचार में दृढ़ विश्वास रखते हैं, जिन्होंने इस धरती को दुष्ट क्षत्रियों से मुक्त करना चाहा था। और जैसा कि आप देख सकते हैं, हम इस धरती और यहाँ के सभी लोगों से प्रभावित हो चुके हैं… सत्ता की लालसा ने उन्हें लोभी बना दिया है। हम इन क्षत्रियों पर आक्रमण नहीं कर सकते, लेकिन जो कर सकते हैं, उन्हें प्रशिक्षित अवश्य कर सकते हैं।” वह रुका। “बहुत समय पहले, हमारे समुदाय के एक शिष्य ने द्रोण नाम से क्षत्रियों को प्रशिक्षण दिया था, और क्षत्रियों से लड़ने के बजाय, वह उन्हीं में शामिल हो गया,” उसने व्यंग्य किया।
उसे इन सब पर यकीन नहीं हो रहा था। कर्ण को लगा था कि यहाँ आना तो मुश्किल होगा, लेकिन गुरु को शिक्षा देने के लिए मनाना उससे भी ज़्यादा मुश्किल होगा। लेकिन उसके सामने खड़ा गुरु और उसके द्वारा पिया जा रहा गरमागरम सूप, दोनों ने ही उसे घर जैसा महसूस करा दिया।
“क्या आपने गुरुकुल से स्नातक की उपाधि प्राप्त की है?” उनके लहजे में तीखापन था।
कर्ण ने अपने होंठ दबाए। "नहीं, मैंने नहीं किया है।" लेकिन मैंने इसमें प्रशिक्षण लिया है।
“अच्छा, क्योंकि हम क्षत्रिय क्षेत्रों में स्थित गुरुकुलों के विद्यार्थियों को प्रवेश नहीं देते। उत्तर भारत विशेष रूप से क्षत्रिय-मुक्त है। अब, विद्यार्थी, एक कठिन प्रश्न,” उन्होंने नीचे देखते हुए कर्ण को ध्यान से देखा, मानो वह झूठ पकड़ने के लिए उसकी हर हरकत का अध्ययन कर रहे हों। “क्या तुम क्षत्रिय हो या ब्राह्मण? क्योंकि मुझे पता चल जाएगा। देर-सवेर।”

कर्ण ने फिर से अपने होंठ काट लिए। वह जानता था कि अगर उसने झूठ बोला तो उसे प्रवेश मिल जाएगा और अगर उसने सच बोला तो उसे वापस भेज दिया जाएगा।
लेकिन उसने सिर हिलाया।
“जी गुरुजी,” उसने कहा। “मैं ब्राह्मण हूँ।”

78

आज के समय में…
“तो क्या भगवान परशुराम नहीं हैं?” शनाया ने खुशी और हैरानी के साथ पूछा। “जी हां,” कर्ण मुस्कुराया। “उसके कई अनुयायी हैं।”
लेकिन वे वैसे ही क्यों बने रहते हैं?
वे आज भी युद्ध कला के सर्वोपरि गुरु भगवान परशुराम की शिक्षाओं का पालन करते हैं।
लेकिन वे उस ज्ञान का क्या करते हैं?
कर्ण ने कंधे उचकाते हुए कहा, "इसे उस दिन के लिए बचा कर रखो जब दुनिया को भगवान परशुराम की तरह एक और क्षत्रिय के संहार की आवश्यकता होगी।"
“और आपको यह खुलासा नहीं करना चाहिए कि भगवान परशुराम जीवित नहीं हैं?” “यह एक राज़ है,” उसने उसकी तरफ देखते हुए कहा। “और मैंने तुम्हें बताया भी था। अगर कोई मुझे मारता है, तो यह तुम्हारी गलती होगी।”
वे दोनों खिलखिलाकर हंस पड़े। कर्ण उसकी जांघों पर टिका रहा और फिर उससे पूछा, “मुझे लगता है कि मुझे देवी को इस तरह खुले में नहीं भेजना चाहिए था। जरा को पता चल जाएगा कि यह एक जाल है।”
“मुझे लगता है कि कटे हुए सिर लाने का विचार चतुराई भरा है। इससे यह आभास होता है कि वह बाहर निकलने के लिए तैयार है। और वैसे भी, सभी जानते हैं कि जब आप उसके आदमियों और उस पर शासन करने आए थे, तब देवी खुश नहीं थी। इसलिए, मुझे लगता है कि यह जरा को मनाने के लिए काफी होगा।”
कर्ण ने सिर हिलाते हुए कहा, "मुझे उम्मीद है कि आप सही हों। लेकिन धन्यवाद। अपनी कहानी साझा करके मुझे अच्छा लग रहा है। हालांकि पूरी तरह से नहीं। मुझे नहीं पता कि अगर मैं असफल हो गया तो मैं क्या करूंगा।"
“तुम फिर से कोशिश करो, मूर्ख। यही तो करना चाहिए।”
वह मुस्कुराया, और जब वह उसे चूमने के लिए उसके करीब आया, तो उसे सायरन, ढोल और तुरही की आवाज़ सुनाई दी। दोनों ने एक-दूसरे को हैरानी से देखा और कर्ण अपने बिस्तर से उठा और तंबू की खिड़की की ओर चला गया, यह देखने के लिए कि

आखिर शोर किस बात का है। चूंकि उसका तंबू पहाड़ी पर था, इसलिए वह दूर से सैकड़ों लोगों को झंडे और बैनर लिए हुए देख सका, और वे सभी फर के कोट पहने हुए थे, जबकि उनके झंडे मूंगा हरे रंग के थे। और किसी ने भी उन्हें अंदर आने से नहीं रोका। इसके पीछे बहुत ठोस कारण थे।
शनाया ने कर्ण से नजरें मिलाते हुए कहा, "मेरे पिता यहां क्या कर रहे हैं?"

कर्ण आर्किमिडीज को पेय पदार्थ अर्पित कर सकता था या उसके सामने फलों की थालियाँ ला सकता था, लेकिन वह व्यक्ति कर्ण के सामने गंभीर भाव से बैठा था, शनाया का हाथ पकड़े हुए, उसे चूम रहा था और उसे स्नेह से देख रहा था। उसके घने बालों का जूड़ा था, जो पोनीटेल में बंधा हुआ था, उसकी आँखें काजल से गहरी थीं और उसकी लंबी, घनी, बंधी हुई दाढ़ी थी।
“कैसा चल रहा है, मेरी प्यारी सूरजमुखी?” उसने पूछा।
शनाया ने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा, "सब कुछ बढ़िया है।"
"अच्छा।"
कर्ण चुप था। वे तम्बू में थे, तभी और अधिक यूनानी सैनिक आ गए, जिससे लोगों में अवांछित आक्रोश पैदा हो गया। उसने अपने संरक्षक और ससुर, आर्किमिडीज़ की निगाहें महसूस कीं और शांत, स्थिर आँखों से उन्हें देखा।
“तुम्हें पता है मैं यहाँ क्यों हूँ?” उसने पूछा।
"मुझे सूचित करो।"
उन्होंने कहा, “मैं यहाँ इसलिए आया हूँ क्योंकि जरासंध के संबंध में आपके कारनामों की गूंज दूर-दूर तक सुनाई दे रही है। और ये चर्चाएँ आपके पक्ष में नहीं हैं।”
उसने हार मानकर अपनी आँखें बंद कर लीं। मुझे पता था कि ऐसा ही होने वाला है। उसे गले में जकड़न महसूस हुई और उसकी साँसें तेज़ हो गईं।
धीरे-धीरे सांस लो। और शांत भाव से, उसने खुद से कहा।
“मैं जीतने वालों पर दांव लगाता हूं और जाहिर तौर पर मैं गलत था। आप मेरे आदमियों को खो रहे हैं और मुझे यह पसंद नहीं आ रहा है।”

“पिताजी,” शनाया ने कहना शुरू किया, लेकिन आर्किमिडीज ने उसे चुप कराने के लिए अपना हाथ उठाया, “मेरी प्यारी सूरजमुखी, मेरा सुझाव है कि तुम यहाँ से चली जाओ। यह हमारे बीच की बात है।”
शनाया ने अपने जबड़े भींचे और सिर हिलाया। शनाया ने कर्ण के कंधों पर हल्का सा स्पर्श किया और चली गई। कर्ण को लगा कि वह कमजोर हो गया है, लेकिन उसने अपनी छाती चौड़ी करके यह दिखाने की कोशिश की कि वह कमजोर नहीं है। "तो, क्या तुम्हें कुछ कहना है?" आर्किमिडीज ने पूछा।
“हां,” कर्ण ने सिर हिलाया। “उसने तुम्हें क्या वादा किया है?” आर्किमिडीज ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। "तुम्हारा क्या मतलब है?"
“उसने तुम्हें प्रभावित किया, है ना?”
आर्किमिडीज चुप रहे। और फिर अचानक जोर से हंस पड़े।
“मुझे तुम पर कभी भरोसा नहीं करना चाहिए था,” कर्ण ने सिर हिलाते हुए कहा। “विदेशियों के बारे में लोग सही कहते थे। वे पीठ पीछे छुरा घोंपने वाले होते हैं। मुझे लगा था कि यह एक रूढ़िवादी सोच है। लेकिन रूढ़िवादी सोच के बारे में जो कहा जाता है, वह सच है। रूढ़िवादी सोच के अस्तित्व में आने का एक कारण है, क्योंकि वे अक्सर सच होती हैं।”
“उसने मुझे अपने न्यूफ़ाउंडलैंड में नागरिकता देने का वादा किया था,” आर्किमिडीज़ अचानक बोल पड़ा।
और आपने सहमति दे दी?
“वह जीत रहा है, बेटा,” आर्किमिडीज ने कंधे उचकाते हुए कहा। “मैं क्या करूँ? चुप रहूँ और सारा भरोसा तुम पर छोड़ दूँ?”
“तो इसीलिए तो आपने सैन्य गठबंधन किया था। यही वजह है—”
उसने अपनी उंगलियां उठाईं। “और इसी वजह से मैंने तुम पर हमला नहीं किया। जरासंध चाहता था कि मैं तुम पर हमला करूं, लेकिन मैंने कहा कि मेरी बेटी तुमसे प्यार करती है, इसलिए मैं दूसरा सबसे अच्छा विकल्प चुनूंगा।” नहीं।
मैं अपनी सेना वापस ले लूंगा।
“तुम ऐसा नहीं कर सकते…” उसने मुट्ठी कस ली। “मैं जीत के बेहद करीब हूँ…” उसने सिर हिलाया। “और अगर तुम ऐसा करोगे, तो मुझे और भी गर्व होगा, लेकिन मैं जुआरी नहीं हूँ। मैं केवल पक्की चीजों पर ही दांव लगाता हूँ और अभी जरासंध जीत रहा है।”

“आपको क्या लगता है कि शनाया आपके इस फैसले पर कैसी प्रतिक्रिया देगी? उसे दुख होगा।”
“वो अभी राजनीति समझने के लिए बहुत छोटी है। लेकिन तुम समझते हो। वो चिल्लाएगी, रोएगी, लेकिन उसे करने दो। ये उसके अस्तित्व के लिए ज़रूरी है क्योंकि…”
कर्ण ने आगे कहा, “जब जरासंध मुझ पर आक्रमण करेगा, तब वह सुरक्षित रहेगी।” उसकी उम्मीद कम होती जा रही थी और उसकी साँसें पहले से ज़्यादा तेज़ हो रही थीं। सेना का अधिकांश भाग तो ज़ाहिर तौर पर यूनानी ही थे। और उनकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण थी। उनके बिना, उसके पास केवल कुछ अंगन सैनिक ही बचते, जो पहले से ही उसे नापसंद करते थे, और निषाद, जिनकी संख्या युद्धक्षेत्र में जाने के लिए काफ़ी कम थी।
"हां, और फिर वह तुम्हें मारने के बाद उससे शादी करेगा।"
कर्ण ने सिर हिलाया। "तो जो करना है करो और मेरे शिविर से दफ़ा हो जाओ।" आर्किमिडीज मुस्कुराए। “बच्चे, एक दिन तुम्हें समझ आ जाएगा कि मैंने ऐसा क्यों किया। यह सब जीवन रक्षा के लिए था,” वे खड़े हुए और उसके कंधे पर थपथपाया।
कर्ण ने धीमी आवाज़ में कहा, "वह काले यूनानियों के साथ है। उसने कल्यावन के साथ साझेदारी की है, जिसने तुम्हारी पत्नी की हत्या की थी।"
“मुझे पता है, और इसीलिए मैंने आपको जीतने का मौका दिया था, लेकिन जब मैंने देखा कि आपने कितने सैनिक खो दिए…” वह रुका, “मुझे दुश्मन का साथ देना पड़ा।”
आर्किमिडीज ने उसके कंधे पर थपथपाते हुए कहा, "जब तक यह स्थिति बनी रहे, मेरी बेटी का ख्याल रखना।"
उसके गायब हो जाने के बाद, कर्ण ने गहरी साँस ली और उसे असफलता का सारा दुख और निराशा महसूस हुई। वह जानता था कि वह अपने पिता जैसा ही हो जाएगा; हर तरफ से घिरा हुआ, जिसके पास जाने के लिए कोई जगह नहीं बचेगी।
मुझे नहीं पता मैंने क्या गलती की।

कर्ण घंटों तक तम्बू में ही बैठा रहा। उसने शनाया की तेज़ चीखें और चिल्लाहट सुनी थीं और जल्द ही उसे शिविर से बाहर जाते हुए कदमों और घोड़ों के खुरों की आहट सुनाई दी। वह जहाँ था वहीं जम गया और फिर उसे शनाया की उपस्थिति और उसकी लगातार माफी का एहसास हुआ—कि उसे इस बारे में कुछ भी पता नहीं था, और वह कभी विश्वास नहीं कर सकती थी कि उसके पिता ऐसा कुछ कर सकते हैं।
कर्ण अपनी जगह पर ही बैठा रहा और ज्यादा कुछ नहीं बोला, क्योंकि वह बोल नहीं सकता था। तम्बू में आती सूरज की रोशनी के प्रतिबिंब में उसे अपने पिता की परछाई और उनकी असफलता का एहसास हो रहा था।
उन्होंने मुझसे कहा कि हम राजा बनने के लिए नहीं बने हैं। मैंने सोचा... वह सही कह रहे थे।
कर्ण ने शनाया से कहा, "कोई बात नहीं, इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है।" उसने उसके हाथ पकड़े और अपनी दृढ़ता दिखाने की कोशिश की। वह तम्बू से बाहर निकला और लोगों की ओर देखा। सभी इधर-उधर बिखरे हुए थे, कर्ण को देख रहे थे और उसने देखा कि लोगों का एक बड़ा हिस्सा पहले ही जा चुका था...
वह सत्या को भी देख सकता था जो अपना सिर हिला रहा था। उसे समझाना चाहिए था, लेकिन रुंधी हुई आवाज़ में वह बूढ़े आदमी के पास गया और फुसफुसाया, जबकि सभी की निगाहें उस पर टिकी थीं:
“शनाया की रक्षा करो। वह यूनानी है, इसलिए सैनिकों से उसे खतरा होगा। अपने सबसे भरोसेमंद आदमियों को ऐसा करने के लिए कहो।”
लेकिन लड़के, मैंने तुमसे कहा था…
“मुझे पता है। आर्किमिडीज़ पर भरोसा नहीं करना चाहिए था,” कर्ण ने कहा। “लेकिन हमें अपनी अगली चाल की योजना बनानी होगी। हमें गिनती करनी होगी और देखना होगा कि कितने लोग आ सकते हैं, और फिर हमें इस युद्ध को जीतने का रास्ता खोजना होगा…” और जब उसने ये शब्द कहे, तो उसे मूर्खता का एहसास हुआ, लेकिन कहीं न कहीं वह जानता था कि उसे यही रास्ता अपनाना होगा—“बिना युद्ध लड़े।”

79

"हम जीत गए हैं," जरा ने लंबे, लकड़ी के चबूतरे पर बैठते हुए घोषणा की।
और सभी ने जोर-शोर से जयकार की।
वहां पुरुषों का एक समूह था, जिनमें से आधे अभी भी अस्पताल में थे, लेकिन कई लोग जीवित थे और वे सभी मुस्कुरा रहे थे।
“आज हम जश्न मना रहे हैं। कल हम हमला करेंगे,” उसने अपनी भौंहें चढ़ाते हुए कहा। “और इसे हमेशा के लिए खत्म कर देंगे। धीरे-धीरे हम अंग पर कब्जा कर लेंगे और अपने राज्य का विस्तार शुरू करेंगे। यह मत भूलो कि यह तो हमारे लिए बस शुरुआत है। कर्ण हमारे लिए काँटे की तरह था, और अब जब अंग हमारे हाथ में है, तो धृतराष्ट्र कुछ नहीं कर सकता, क्योंकि युद्ध के नियमों के अनुसार वह हार चुका है, और भले ही उसके पास सेना हो, वह हमें रोक नहीं पाएगा,” जरा मुस्कुराया।
फिर वह तेज़ी से चबूतरे से नीचे उतरा, तभी उसे तालियों और जयकारों की आवाज़ सुनाई दी, क्योंकि लोग एक-दूसरे को गले लगा रहे थे और साथ में पेय पी रहे थे। जरा मुस्कुराए बिना नहीं रह सका, और वह तम्बू के अंदर चला गया, जहाँ उसने वृष्णि और काल को आपस में बातें करते हुए पाया, जिसमें वृष्णि ज़्यादातर बातें कर रही थी।
"तुम्हें मेरे निजी कमरे में आना बंद करना होगा," जारा ने चेतावनी दी। “मुझे लगता है कि तुमने अपने आदमियों को खुश कर दिया है,” वृष्णि ने अपने लंबे, भूरे गाउन में, जो ज़मीन को खूबसूरती से छू रहा था, कहा। “लेकिन मुझे लगता है कि कर्ण हार नहीं मानेगा।”
"आर्किमिडीज के साथ हुए समझौते के बाद, हमें परवाह नहीं करनी चाहिए," जरा ने हंसते हुए कहा।
उस संधि पर हस्ताक्षर करके उन्होंने कल्यावन के साथ अपने संबंधों को खतरे में डाल दिया था, जो व्यावहारिक रूप से आर्किमिडीज के शत्रु थे, लेकिन उन्हें पता था कि कल्यावन समझ जाएंगे कि उन्होंने ऐसा क्यों किया। और एक

बार यह सब समाप्त हो जाने के बाद, कौन कह सकता था कि वे आर्किमिडीज के साथ संधि जारी रखेंगे?
जरा इस बात पर विचार किए बिना नहीं रह सका कि अर्जुन असफल रहा और द्रोण के साथ उसका समझौता विफल हो गया, लेकिन कोई बात नहीं, क्योंकि जरा को कुरुवंश की चतुराई पर भरोसा नहीं करना चाहिए था। उनके पास धूर्त धृतराष्ट्र के अलावा कोई और चतुर नहीं था, जिसके बारे में वह जानता था कि अब वही आएगा और स्थिति को संभालेगा। चाहे वह कोई और संधि करे, बदले में उसे और अधिक दे, जरा इस बार उसकी बात नहीं मानेगा।
“संक्रमित पुरुषों का क्या हाल है?” जरा ने वृष्णि से पूछा।
वे ठीक हो रहे हैं।
“लेकिन हमें कल हमला करना होगा। यह अंत है।” उसने एक गोल मेज पर नक्शा फैला रखा था, जिस पर हमले के स्थान और हमले न करने के स्थानों को चिह्नित किया गया था।
“क्या आपको लगता है कि यह रास्ता सही है?” वृष्णि ने पूछा।
“हाँ,” जरा ने अपना प्याला भरा और एक घूंट पिया। “काल इसका नेतृत्व करेगा और अंततः इस मूर्खता का अंत करेगा। अब मुझे मथुरा पर ध्यान देना होगा। गोनांद कहते हैं कि कृष्ण बहुत कठिन हैं और कर्ण से भी अधिक चतुर हैं, इसलिए हमें देखना होगा कि आगे क्या होता है।”
वृष्णि को यकीन नहीं हुआ। उसके चेहरे पर शिकन आ गई।
“क्या?” जरा हँस पड़ा। “कर्ण सूत था। सूत से क्षत्रिय का काम नहीं अपेक्षित है। वह अपने सैनिकों का नेतृत्व नहीं कर सकता,” वह रुका। “उसके साथ और क्या हो सकता है…”
कमरे में चौथे व्यक्ति की उपस्थिति महसूस होते ही उसकी आवाज धीमी हो गई और जब उसने मुड़कर देखा तो सामने एक सैनिक खड़ा था।
"महामहिम, एक नया घटनाक्रम सामने आया है।"
“ओह,” जरा मुस्कुराई, “और वह क्या होगा?”
“कर्ण की सेनापति यहाँ हैं और वे आपसे बात करना चाहती हैं। उन्होंने दल बदल लिया है,” सैनिक ने कहा।
और जरा ने वृष्णि और काल की ओर मुड़कर देखा; दोनों भावहीन थे, लेकिन जरा अपनी हंसी नहीं रोक सका।

देवी को हाथ पीछे बांधकर अंदर ले जाया गया, जबकि उनके सैनिकों के सिर भी साथ लाए गए। जैसे ही वह गहरे लाल रंग के तंबू में दाखिल हुईं, अंगूरों की तेज़ खुशबू उनकी नाक में समा गई और उनकी नज़र सोफे पर लेटे एक रंगे दाढ़ी वाले व्यक्ति पर पड़ी, जिसके हाथ-पैर फैले हुए थे। उसके चेहरे पर विजय की मुस्कान थी। उसने अपने सैनिकों को भगा दिया, जिन्होंने देवी के बगल में सिर गिरा दिए और चले गए।
वह आदमी, जारा, जिसे वह उसकी नारंगी दाढ़ी और ऊपरी होंठ पर पड़ी दरार से आसानी से पहचान सकती थी, ने सिरों की ओर देखा और अपनी आँखें सिकोड़ीं। "तो तुमने अपने आदमियों की हत्या की और इसे सबूत के तौर पर लाए?"
“हां,” देवी ने धीमी आवाज में कहा, उसकी आंखों में गुस्से की लहर दौड़ गई थी, लेकिन उसे शांत और संयमित रहने का नाटक करना पड़ा।
“बिल्कुल। तो कमरे में मौजूद स्वाभाविक सवाल,” उन्होंने पूछा, “आपने उसे क्यों छोड़ दिया?”
"क्योंकि उसने मेरी जगह ले ली।"
और आपको लगता है कि उसे हराने के बाद मैं आपको वह जगह दे दूंगा।
"मैं सिर्फ मालिनीपुर पर राज करना चाहता हूं, बस इतना ही।"
“जी हां। और बदले में आप मुझे क्या देंगे?”
उनका अगला कदम।
जारा ने ठहाका लगाते हुए हँसते हुए कहा, "और मुझे उसकी अगली रणनीति की क्या ज़रूरत है जब मैं उसे पहले ही हरा चुका हूँ?"
देवी का खून जम गया।
“आर्किमिडीज के साथ मेरी संधि के बाद यूनानी पीछे हट गए हैं और मुझे नहीं लगता कि कर्ण अब लड़ने में सक्षम है,” जरा खड़ा हो गया, और देवी को फूट-फूटकर रोने का मन हुआ, क्योंकि उसे इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि ऐसा हो रहा है।
जारा उसके पास गई, उसे सूंघा और सीधे उसकी आंखों में देखा। "मुझे तुम्हारी ज़रूरत क्यों है? तुमने अभी तक मुझे यह नहीं बताया है।"

“क्योंकि…” उसे लगा कि वह बहुत करीब है और फिर वह पीछे मुड़ी, उसके हाथ अभी भी जुड़े हुए थे, तभी उसने अपने पीछे एक परछाई देखी और वह…
लोहे का मुखौटा पहने एक विशालकाय व्यक्ति, जो उसके ऊपर खड़ा है!
उन्होंने उसे घेर लिया था।
“तुम्हें हमें बताना चाहिए कि हमें तुम्हारी ज़रूरत क्यों है, वरना…” जरा बिल्कुल पास खड़ा था और उससे शराब और मिट्टी की गंध आ रही थी, “तुम्हारा सिर कर्ण को वापस भेज दिया जाएगा।”
“वह…वह…” देवी ने अपने होंठ सिकोड़ लिए, लोहे के मुखौटे वाले उस व्यक्ति से पीठ सटाकर, “उसे भगवान परशुराम ने प्रशिक्षित किया है…”
“तो?” जरा ने अपनी भौंहें उठाईं।
और इसी कारण उन्हें ब्रह्मास्त्र का ज्ञान प्राप्त है।
यह सुनकर जरा की आंखें सिकुड़ने लगीं और वह एकदम ठंडा पड़ गया। "तुमने अभी क्या कहा?"
“वह ब्रह्मास्त्र बनाना जानता है,” उसने कहा। “और तुम जानते हो कि यह कितना शक्तिशाली है। वह तुम्हारी पूरी सेना और तुम्हें भी नष्ट कर सकता है।” “धत् तेरे की!” जारा गुर्राया, खुद को पीछे खींचते हुए और प्याला फेंकते हुए बोला। “क्या तुम मुझसे झूठ बोल रही हो, औरत?”
“नहीं…नहीं…मैं ऐसा क्यों करूंगा?”
“काल,” उसने कहा, “इस लड़की को मुझसे दूर ले जाओ। मुझे आज रात सोचने दो।” देवी को महसूस हुआ कि मजबूत, तगड़े हाथों ने उसे कंधों से पकड़कर तम्बू से बाहर धकेल दिया, क्योंकि उसे उस आदमी ने धक्का दिया और परेशान किया जिसने मनवी की हत्या की थी।

80

कर्ण जानता था कि वह क्रोधित होगा। उसने कभी नहीं सोचा था कि क्रोध इतना अधिक होगा।
उन्होंने सभी कप्तानों और उनके सहायक अधिकारियों को एक ही साझा हॉल में बुलाया था, और जब वे उन पर सवालों की बौछार कर रहे थे, तब वे चबूतरे पर खड़े हो गए...
“हमें म्लेच्चों पर कभी भरोसा नहीं करना चाहिए था! तुम्हारी वजह से हम अपनी जमीन खो देंगे!”
“शांत हो जाओ,” कर्ण ने कहा। “मेरे पास कुछ विचार हैं…”
“हमें तुम्हारे विचारों की जरूरत नहीं है!” उसके सैनिकों ने चिल्लाकर कहा।
उसने घबराकर सत्या और शनाया की ओर देखा, जो चुपचाप कमरे के एक कोने में बैठी थीं।
“हम ऐसे राजा का अनुसरण नहीं कर सकते जो इस तरह हार गया हो,” कुछ अन्य लोगों ने बुदबुदाते हुए कहा।
हालात पूरी तरह से अस्त-व्यस्त थे। म्लेच्छों के चले जाने के बाद, कर्ण को अपने अधीनस्थ सैनिकों से बातचीत करने के कई अवसर मिले, जो असंतुष्ट थे और युद्ध छोड़कर जाने को तैयार थे।
उनमें से कुछ ने चिल्लाकर कहा, "हम अब तुम्हारे लिए नहीं लड़ेंगे!"
और आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। आपको अंगा के लिए लड़ना चाहिए…।”
“नहीं, हम ऐसा नहीं करेंगे!”
कर्ण ने दांत पीसते हुए कहा, "तो तुम सबको भगोड़ा करार दिया जाएगा और देखते ही मार डाला जाएगा।" जब उसने ये कहा, तो उसे एहसास हुआ कि ये उसकी हताशा में निकला था और उसे अपने ही आदमियों को धमकी नहीं देनी चाहिए थी, जो पहले से ही उस पर आग उगल रहे थे, लेकिन उसे ये भी एहसास हुआ कि इन शब्दों ने उन्हें डरा दिया और वे चुप हो गए।

कभी-कभी नकारात्मक बातें करने वालों का मुंह बंद करने के लिए असभ्य होना जरूरी होता है।
लेकिन उन्हें वह चुप्पी पसंद नहीं थी, क्योंकि वह चाहते थे कि लोग उनका अनुसरण इसलिए न करें क्योंकि उन्हें डर था कि वह उनके साथ कुछ गलत करेंगे, बल्कि इसलिए करें क्योंकि वे उन्हें पसंद करते थे।
सभी नेताओं का लोकप्रिय होना जरूरी नहीं है।
“अब मेरे पास कुछ विचार हैं,” कर्ण ने कहना शुरू किया।
लेकिन समूह में कहीं भी उसे यह महसूस नहीं हुआ कि किसी को उसकी परवाह है।
उन्हें यहाँ रहने के लिए मजबूर किया गया था।
“सत्या आपसे ये बातें साझा करेगा,” कर्ण ने उदास होकर कहा। “अगर किसी को कोई समस्या हो तो वे बाद में मुझसे अकेले में मिल सकते हैं।”
कर्ण भारी मन से वहां से चला गया। उसके मन में अतीत की यादें उमड़ पड़ीं, वह उस क्षण को याद करने लगा जब उसने अपने गुरु परशुराम से बातचीत की थी और ब्रह्मास्त्र के बारे में जाना था।
उनकी आखिरी उम्मीद।

दो साल पहले…
“तुम अच्छा कर रहे हो!” उनके गुरु रामभद्र ने कहा।
कर्ण को पसीना आ रहा था और कड़ाके की ठंड में भी उसे गर्मी महसूस हो रही थी। वह सुबह से ही तलवारबाजी और तीरंदाजी का अभ्यास कर रहा था, और बर्फ में उसके पैर लगभग जम चुके थे, लेकिन हर दिन जब सूरज निकलता, तो वह उससे गर्मी और ऊर्जा प्राप्त करता और चट्टान के किनारे पर खड़ा होकर सूर्य की स्तुति करता। यही उसका तरीका था।
“तुम्हें चढ़ाई सीखनी होगी,” रामभद्रा ने कहा और उसे एक हुक और एक रस्सी थमा दी।
लेकिन मैंने तो पूरे दिन अभ्यास कर लिया था।
"मुझे परवाह नहीं है।"
कर्ण को यह समझ लेना चाहिए था कि उसे ऐसा करने के लिए कहा जाएगा। और अपने गुरु के साथ, वे पहाड़ी पर चढ़ने लगे, जैसे-जैसे वह खुद को ऊपर खींचता गया,

हुक चट्टान में धंसता गया। यह अभ्यास शक्ति, ऊर्जा और संतुलन के लिए था, क्योंकि हुक पर अधिक दबाव पड़ने से वह अपना संतुलन खो सकता था। उसने रामभद्र को देखा, जो बड़ी आसानी से और सुचारू रूप से पहाड़ी पर चढ़ रहा था। "तुम ये कैसे करते हो?" उसने लगभग चिल्लाते हुए पूछा, क्योंकि तब तक हवाएँ और भी तेज़ हो गई थीं और उसे ऐसी ठंड लग रही थी जो उसे पहले कभी नहीं लग रही थी।
“मैं तुमसे कई साल पहले से यह काम कर रहा हूँ, बेटा। चलो ऊपर वाली पहाड़ी पर पहुँचते हैं और वहाँ बैठ जाते हैं।”
कर्ण ने सिर हिलाया और खुद को और आगे खींच लिया। वह एक साल से इसी तरह अलग-अलग रूपों में अभ्यास कर रहा था। उसे लग रहा था कि उसने द्रोणाचार्य से जो सीखा था, उससे दस गुना ज़्यादा उसने यहाँ सीखा है। लेकिन ज़ाहिर है, यह सब झूठ पर आधारित था। सब कुछ झूठ ही था। उसने अपने गुरु को यह नहीं बताया था कि वह ब्राह्मण नहीं है और एक बार उसके गुरु ने उससे कहा था:
“तुम ब्राह्मणों की तरह युद्ध नहीं करते। आम तौर पर ब्राह्मणों को यहाँ आने पर युद्धकला का कोई ज्ञान नहीं होता, लेकिन तुम धनुष चलाने में तेज और तलवार चलाने में निपुण हो।”
इस पर कर्ण को कहना पड़ा कि उसे बचपन में उसके गुरु ने शिक्षा दी थी। लेकिन उसका गुरु इस जवाब से संतुष्ट नहीं हुआ।
कर्ण को लगा कि वह और आगे बढ़ गया है और वह उस पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गया जिसका ज़िक्र रामभद्र ने किया था। उसने चट्टान को कसकर पकड़ लिया और लगभग गिरते-गिरते बचा, तभी रामभद्र ने उसे पकड़ लिया और कसकर थाम लिया। “सावधान!” उसने कर्ण को ऊपर खींचा और उसे पहाड़ी की चोटी पर रख दिया।
कर्ण की सांसें कसने लगीं, जैसे-जैसे वह और झुककर चट्टान की ओर बढ़ा और नीचे बर्फ से ढके संसार को देखने लगा। हवाएँ और भी तेज़ हो गई थीं, लेकिन उसके गुरु रामभद्र ने बस हाथ जोड़कर मुस्कुराते हुए ऊपर देखा।
“तुम अच्छा कर रहे हो, बेटे,” उन्होंने कहा।
"धन्यवाद।"
लेकिन सूर्यदेव को नमस्कार करने का जो तरीका आपने अपनाया है, वह आपने कहां से सीखा है?
कर्ण को इसका जवाब देना नहीं आता था। "यह... मेरा हमेशा से सूर्य से जुड़ाव रहा है।"

“आपको जरूर करना चाहिए। यह ऊर्जा का सबसे अच्छा प्राकृतिक स्रोत है,” उसने चट्टान पर पालथी मारकर बैठते हुए मुस्कुराते हुए कहा।
“गुरुजी, मैं ब्रह्मास्त्र के बारे में जानना चाहता हूँ।”
रामभद्र ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। वह चुप रहे और लगातार आसपास के नज़ारों को देखते रहे।
“गुरुजी?” उसने फिर से पुकारा।
“मैंने आपकी बात सुन ली है। लेकिन मैं आपकी बात सुनना नहीं चाहता,” रामभद्र ने कहा। “ब्रह्मास्त्र एक ऐसा ज्ञान है जो केवल कुछ ही लोगों के पास होता है।”
"क्यों?"
क्योंकि इसे प्राप्त करने की क्षमता केवल कुछ ही लोगों में होती है।
कर्ण को ये पहेलियाँ समझ नहीं आ रही थीं। पिछले एक साल में उसने किसी न किसी तरह से ब्रह्मास्त्र के बारे में जानने की कोशिश की थी, लेकिन तमाम जासूसी करने के बावजूद उसे कोई ठोस जानकारी नहीं मिल पाई थी। “ब्रह्मास्त्र का प्रयोग जब बुराई की शक्ति द्वारा किया जाता है, तो यह संसार का अंत कर सकता है। अच्छाई की शक्ति द्वारा इसका प्रयोग करने से संसार का विकास होता है और वह सुंदर बनता है।” उन्होंने फिर पहेलियों में बात की और परिणामस्वरूप कर्ण को क्रोध का अनुभव हुआ। “और इसका प्रयोग तभी करना चाहिए जब आपके पास कोई और विकल्प न बचा हो।”
लेकिन मुझे लगता है कि मैं इसके बारे में जानने के लिए तैयार हूं। ज्ञान प्राप्त करने के लिए तैयार हूं।
“तुम्हें लगता है कि तुम जानते हो, लेकिन तुम नहीं जानते,” रामभद्रा ने कहा।
कर्ण ने अपने होंठ सिकोड़े और अपने गुरु के बगल में बैठ गया। वे चुपचाप बैठे रहे, केवल आकाश में ऊँची उड़ान भरते गिद्धों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। वे अपने आसपास की सुंदरता को निहारते रहे, तभी कर्ण ने कहा: “आपने मुझे एक साल पहले बताया था कि आप मेरे कवच वाले किसी व्यक्ति को जानते हैं।” “हां,” उसकी आंखों में नरमी आ गई।
मुझे बताओ वह कौन था।
रामभद्र ने अपनी मुट्ठी कस ली। "वह जीवन जो मैंने अतीत में जिया था।"

ओह। कर्ण को इस बात की हमेशा जिज्ञासा रहती थी, क्योंकि उसे बताया गया था कि वह इस कवच के साथ आया था और जो भी इस कवच के बारे में जानता होगा, वह यह भी जान जाएगा कि वह वास्तव में किसका पुत्र था—क्योंकि उसे गंगा नदी में त्याग दिया गया था। "गुरुजी, वह कौन था?"
“उस समय मैं तुम्हारी ही तरह जवान था। आनंद से उमंग से भरा हुआ। मैं महान ऋषि दुर्वासा के शिष्य के रूप में सूर्य उपासक था, तभी मेरी मुलाकात एक युवती से हुई, जो मुझसे छोटी थी… हमें प्रेम हो गया, लेकिन बात नहीं बनी, एक पुजारी प्रेम नहीं कर सकता, इसलिए मुझे निकाल दिया गया और मैंने यहाँ शरण ली और संन्यासी बन गया…” रामभद्र ने सिर हिलाया। “उसके पास वही कवच था, जो तुम पहनते हो, लेकिन उस राज्य के लोगों के लिए यह बहुत आम बात है।” कर्ण ने अपने जबड़े कस लिए। "क्या उसका कोई बच्चा था?"
गुरुजी ने बगल में देखा। "तुम्हें कैसे पता?"
कर्ण कहना चाहता था कि शायद वह उसका बेटा हो सकता है और इन कड़ियों को जोड़ने की खुशी उसे बेचैन कर रही थी—लेकिन यह भी संभव था कि वह गलत हो। और अपने असली माता-पिता को खोजने की लगातार चाहत के कारण उसकी उम्मीदें बेवजह बढ़ रही थीं।
शायद मैं गलत हूँ।
“उसका नाम क्या था?” उसने जिज्ञासावश फिर पूछा।
रामभद्र को इस बात पर हैरानी हुई कि कर्ण को इतनी दिलचस्पी क्यों थी। फिर भी उन्होंने बस इतना ही कहा: “कुंती। उसका नाम कुंती था।”

81

देवी को उसके अपने तम्बू में बंद कर दिया गया था और बाहर पहरेदार तैनात थे ताकि वह भाग न सके। उसके हाथ पीछे से बांध दिए गए थे और उसे एकांत में रखा गया था, जहाँ उसके मन में नकारात्मक विचार घर करने लगे थे। उसने ब्रह्मास्त्र के बारे में उन्हें बताने का सोचा था, लेकिन अब उसे अपराधबोध हो रहा था क्योंकि इससे जरा कुछ कर सकता था।
मुझे कुछ और कहना चाहिए था।
लेकिन उसके पास समय नहीं था। उसे उनकी अगली कार्ययोजना का पता लगाना था, इसलिए उसने अपनी धोती के पीछे छिपा हुआ एक छोटा चाकू निकाला और बाँस की रस्सी को फाड़ना शुरू कर दिया। उन्हें उसकी जाँच करनी चाहिए थी, लेकिन उन्होंने नहीं की।
उसके दिमाग में म्लेच्छों की खबर दौड़ गई। उन्होंने उसके अनुमान के मुताबिक ही धोखा दिया था और वह कर्ण को सबक सिखाना चाहती थी, लेकिन उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। उसे यह जानना ज़रूरी था कि वे क्या करने वाले हैं, इसलिए चुपके से निकल जाना एक विकल्प था।
उसने उसके तम्बू में कुछ कागजात और एक नक्शा देखा था।
और उसे दबे पांव उसकी ओर बढ़ना पड़ा।
चाकू से उसने तंबू का कपड़ा काटना शुरू किया और फिर धीरे से बाहर झाँक कर देखने लगी कि कहीं कोई उसे देख तो नहीं रहा है। पर कोई नहीं था, इसलिए वह ज़मीन पर लेट गई और खुद को घसीटते हुए तंबू से बाहर निकली और तंबू की ओर बढ़ने लगी।
आधी रात का घना कोना था और उसके आने के बाद से एक दिन बीत चुका था। ज़्यादा सैनिक मौजूद नहीं थे, और तंबू की ओर बढ़ते हुए उसे अपनी साँसों पर काबू रखना पड़ रहा था। वह कीचड़ में लोट-पोट हुई और उसे पूरा शिविर दिखाई दिया— वहाँ लोग थे और उसकी ही तरह, वे भी साधारण दिख रहे थे, बिल्कुल अपने शिविर के लोगों की तरह। और उसे एहसास हुआ कि वे बुरे नहीं थे, बस आदेशों और अपने राजा का पालन कर रहे थे। वे उसके अपने आदमियों से अलग नहीं थे।

देवी लड़खड़ाते हुए तंबू के पार गई और अंदर का नजारा देखा। हैरानी की बात यह थी कि वहाँ कोई पहरेदार नहीं था, और वह क्षण भर के लिए खुश हुई, लेकिन साथ ही उसे लगा कि कुछ गड़बड़ है। वे यहाँ क्यों नहीं थे? लेकिन वह पैदल ही आगे बढ़ी और अंधेरे में चलते हुए उस गोल मेज तक पहुँची जहाँ नक्शे वगैरह रखे थे। उसकी नज़र रेखाचित्रों पर पड़ी और उसे एहसास हुआ कि हमला...
झील से।
वे नावों का इस्तेमाल करके पीछे से हमला कर रहे थे, जिससे वास्तव में इस लड़ाई का अंत हो गया।
लेकिन मैंने उसे बताया था कि ऐसा नहीं होगा।
उसने अपना सिर पीट लिया, यह याद करते हुए कि बहुत समय पहले उसने कर्ण से इस बारे में बात की थी और उसे कितना यकीन था। लेकिन अब... उसकी सारी उम्मीदें चकनाचूर हो गईं। तभी उसे कुछ सुनाई दिया—लोग चिल्ला रहे थे: “वह भाग निकली! ढोल बजाओ!”
देवी ने मन ही मन बड़बड़ाते हुए नक्शों को पकड़ा और उन्हें लपेटकर तंबू के पीछे की ओर भागने की कोशिश करने लगी...
तभी एक हाथ कपड़े को चीरकर बाहर आया और देवी का गला पकड़ लिया। देवी का दम घुटने लगा और गर्दन में तेज दर्द होने लगा। जैसे ही वह जमीन पर गिरी, उसका जबड़ा जमीन से टकराया। उसके शरीर से बहुत खून बहने लगा, तभी उसके सामने मौजूद आकृति ने कपड़े को फाड़ दिया और अपना असली रूप प्रकट कर दिया।
लोहे का मुखौटा पहने हुए व्यक्ति। जिसे काल कहा जाता है।
भावहीन, पीली आँखों से वह उसे खाली निगाहों से देखता रहा।
उसके हाथ में एक जेब में रखा चाकू था और जैसे ही उसका हाथ उसे फेंकने के लिए आगे बढ़ा, उसने चाकू उसकी हथेली में घोंप दिया, और वह पीछे हट गया, धीरे-धीरे ब्लेड को बाहर निकाला और शांति से उसकी ओर देखने लगा।
"कोशिश भी मत करो," उसने एक आवाज सुनी।
देवी ने तंबू के सामने वाले व्यक्ति की ओर मुड़कर देखा।
वह जरा थी।
“उसे मारा नहीं जा सकता। मुझे नहीं पता वो क्या बन गया है। लेकिन उसे आसानी से मारा नहीं जा सकता क्योंकि हमने उसके अंदर की दर्द की नसों को सुन्न कर दिया है, इसलिए उसे आम तौर पर कोई दर्द महसूस नहीं होता,” जारा ने आह भरी।
“दूसरी तरफ, तुम तो काफी साहसी हो। इस तरह चुपके से आना।”

देवी ने देखा कि काल सामने एक दीवार की तरह खड़ा था, और उसने उसे छूने की भी जहमत नहीं उठाई, मानो देवी द्वारा उस पर हमला किए जाने पर उसके अंदर कोई क्रोध ही न हो।
क्या उसे कुछ महसूस भी होता है?
जरा की तीखी निगाहें देवी के हाथों पर पड़ीं, जहाँ उसने नक्शे पकड़ रखे थे। "अरे, समझ में आया। युद्ध की जानकारी चुरा रही हो। मैंने कभी नहीं सोचा था कि कर्ण ऐसे छल-कपट वाले काम करेगा। पर वो लड़का है। उससे और क्या उम्मीद करूँ? चलो, मैं तुम्हें कुछ दिखाती हूँ। मेरे साथ क्यों नहीं आती?"
देवी, चाहकर भी जा नहीं सकती थी क्योंकि काल उसे आगे धकेल रहा था, और वह दांत पीसते हुए जरा के पीछे-पीछे चल पड़ी।
उसने किसी तरह देवी को अपने शिविर का भ्रमण कराया और बताया कि कर्ण मूर्ख था, सूत था, और उसी की वजह से इतने सारे लोग मारे गए। उसे जरा से गठबंधन कर लेना चाहिए था, तो उसे इतना कष्ट नहीं उठाना पड़ता। जब उसका लंबा भाषण समाप्त हुआ, तब देवी को समझ आ गया कि वह उसे कहाँ ले गया है।
यह चम्पा नदी का वह स्थान था, जहाँ के विशाल जलक्षेत्र में, तलवारों और धनुषों से लैस बख्तरबंद सैनिकों द्वारा सैकड़ों नौकाओं को तैयार किया जा रहा था।
सरकंडे की नावों के दोनों सिरों पर सैकड़ों लट्ठे जल रहे थे।
“देखो हम क्या करेंगे,” जरा ने कहा। “और यह आखिरी हमला है जिसके बारे में कर्ण को कोई जानकारी नहीं है। बेचारा। उसे बिना किसी सुरक्षा के इस जगह को नहीं छोड़ना चाहिए था।”
देवी ने दांत पीसते हुए शाप दिया। मैंने ही उससे यह करवाया था। और अब, मेरी वजह से, उसे इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा। उसे अपनी मूर्खता का एहसास हुआ और उसे यह भी समझ आया कि कर्ण पर चाहे वह कितनी भी क्रोधित रही हो, उसके विचार हमेशा ही शानदार होते थे, जबकि वह नेतृत्व करने के लिए तैयार नहीं थी।
और इस गलती की वजह से वह हार जाएगा। उसकी वजह से।
“आप मुझे यह क्यों दिखा रहे हैं?” उसने पूछा।
"क्योंकि," वह मुस्कुराया, "मरने वाले व्यक्ति को यह पता होना चाहिए कि युद्ध में उसके पक्ष का क्या होगा।"
“मर रही हो?” वह असमंजस में थी।

□□ □□□, □□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□...□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□□

82

Guide me, Suryadev.
उसने अपने दोनों हाथ नमस्कार की मुद्रा में ऊपर उठा रखे थे, एक पैर दूसरे के ऊपर रखा हुआ था और आँखें बंद कर ली थीं, मानो वह अपने सामने सूर्य की आराधना कर रहा हो। वह पहाड़ी की चोटी पर था और उसका शिविर ढलान पर था। सूरज अभी-अभी निकला था, और यही वह समय था जब उसे यह सीखना था कि इन कठिन समय में, जब वह बुरी तरह हार रहा था, वह क्या कर सकता है। कुछ चुनिंदा लोगों को छोड़कर बाकी सभी उससे नफरत करते थे।
Guide me, Suryadev.
उसने फिर से सूर्य देवता को पुकारा; वह महसूस कर सकता था कि गर्मी उसे शक्ति दे रही है और वह शक्ति जो वह चाहता था, उसकी ओर आ रही है। वह मन ही मन मुस्कुराया, तभी उसे कुछ आवाज़ें सुनाई देने लगीं। बहुत सारी आवाज़ें। उसकी नज़रें वापस अपने शिविर की ओर गईं, और वह समझ गया कि यह शोर किस बारे में था।
और वह हवा की तरह दौड़ा, क्योंकि उसने देखा कि उसके शिविर पर हमला हो रहा है।
उसकी सांसें तेज और उथली थीं। उसके सीने में दर्द हो रहा था…
वे कहां से आए थे?
उसे तुरहियों की तेज आवाज सुनाई दे रही थी, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी क्योंकि काले कवच पहने हुए लोग तलवारों और भालों के साथ नीचे उतरने लगे थे।
कर्ण नंगे बदन था और उसने सुनहरे-नारंगी रंग की धोती पहनी हुई थी। उसके पास कोई हथियार नहीं था और उसका विजय धनुष उसके तम्बू में था।
मुझे इसे पाने के लिए हाथ बढ़ाना होगा।
उसने देखा कि सैनिक उसकी ओर आ रहे हैं, और उन्होंने उसके कुछ आदमियों को मार डाला है। वह एक पल रुका और मुस्कुराते हुए उन्हें देखा। फिर उसने शांत भाव से उन्हें अपनी ओर आने का इशारा किया।

जैसे ही एक सैनिक उसके सामने आया, उसने तुरंत तलवार के वार से खुद को बचाया और सैनिक का हाथ मरोड़कर तलवार गिरा दी, जिसे उसने तुरंत उठाकर उसकी गर्दन के पिछले हिस्से में घोंप दिया। दो और सैनिक आए और उसने वार रोकते हुए, चकमा देते हुए, लुढ़कते हुए और तलवार से वार करते हुए अपना रास्ता बनाया। जब वह उन्हें छोड़कर आगे बढ़ा तो उसने खून से चमकती तलवार को देखा और पाया कि उसके सभी सैनिक काले कवच वाले सैनिकों के खिलाफ जवाबी कार्रवाई कर रहे थे।
लेकिन वह अपने तम्बू की ओर बढ़ता रहा, और जो भी सैनिक उसके सामने आता... वह तलवार को मोड़कर उसे चाकू मार देता था।
वह अपने आदमियों के ही नहीं, बल्कि शिविर की महिलाओं, डॉक्टरों, रसोई कर्मचारियों और यहां तक कि छोटे बच्चों के भी क्षत-विक्षत शव देख रहा था, और यह देखकर उसका हृदय क्षत-विक्षत हो गया। पृष्ठभूमि में तलवारों की खड़खड़ाहट, चीख-पुकार और गंगा नदी की तरह जमीन पर बहते खून की तेज आवाजें सुनाई दे रही थीं।
वह तम्बू के पास पहुँचा और पहुँचते ही किसी से टकराकर ठोकर खा गया। उसकी नज़र तुरंत उस चीज़ पर पड़ी जिससे टकराकर वह गिरा था, और वह एक परिचित व्यक्ति पर गिर पड़ी।
वह उस आदमी को जानता था। उसे चाकू से बुरी तरह घायल किया गया था और बेरहमी से चबाया गया था, उसका कवच टूटकर मुड़ गया था।
शांतनु।
उसने अपने युवा सैनिक को निराश कर दिया था और उसने अपराधबोध से भरी निगाहें नीचे कर लीं। वह तेजी से आगे बढ़ा और शिविर की ओर चल पड़ा, अपना संदूक खोला, और शनाया को खोजने के लिए तंबू में चारों ओर देखने लगा... लेकिन वह वहां नहीं थी।
वह मूर्ख औरत पहले से ही लड़ रही होगी।
लेकिन उसे उसकी इस मूर्खता पर गर्व भी था, क्योंकि उसने संदूक खोला और सुअर की खाल से बना अपना तरकश निकाला, और उसे अपनी नंगी छाती पर पहन लिया। फिर, उसमें से उसने विजय धनुष निकाला, जिसका आकार सूर्य की किरणों के आकार जैसा था। और उसने उसे कसकर पकड़ लिया।
यह बात है।

सत्या को वास्तविकता को समझने में बहुत कठिनाई हो रही थी। उसके पास तलवार थी, कवच था और उसने अपने चेहरे के दोनों ओर लटकती लंबी मूंछों में तेल भी लगा लिया था, लेकिन वह तैयार नहीं था। कोई चीज़ उसे रोक रही थी।
मैं बस भाग सकता हूँ। मैं सब कुछ छोड़कर जा सकता हूँ। हम पहले ही हार चुके हैं। लेकिन…
सोमा के ख्याल उसके मन में आए और उसे गर्माहट का एहसास हुआ, और वह उस एहसास को फिर से पाना चाहता था... यह एक व्यर्थ प्रयास था, इसका कोई फायदा नहीं था...
मुझे भाग जाना चाहिए…
लेकिन फिर उनके विचार अधिरथ के सेनापति के रूप में बिताए उस समय की ओर लौट गए, और उन्होंने अपने सपनों को साकार करना शुरू कर दिया था जब उन्होंने उस युवा लड़के को देखा जिसे वे प्रशिक्षण देते थे; सुनहरी आँखों वाला, जिज्ञासा से भरा चेहरा। उनके भीतर का व्यक्ति बदल गया था, लेकिन कर्ण नहीं बदला था। वह वही रहा था। और वह और भी दृढ़ निश्चयी हो गया था।
मुझे नहीं पता कि मैं अंगा के लिए मर सकता हूँ या नहीं। लेकिन मुझे पता है कि मुझे कर्ण के लिए मरना चाहिए।
अपनी तलवार पर मज़बूत पकड़ बनाए हुए, वह तम्बू से बाहर निकला और सबसे पहले उसने अपने सामने आए पहले सैनिक पर वार किया। उस पर तीरों की बौछार हुई, लेकिन उसने पीछे से ढाल निकालकर उन्हें तुरंत रोक दिया।
“चलो!” वह चिल्लाया।
और उन्होंने ऐसा ही किया। सत्या को एक नया तलवारबाज मिला जो प्रकट हुआ और उसने अपनी ढाल उस आदमी पर फेंकी और उसे जमीन पर गिरा दिया, फिर उसके पीछे तलवार आई और उसने उसे घायल कर दिया।
एक और व्यक्ति प्रकट हुआ और उन्होंने तुरंत उसकी कवच में तलवार घोंपने की कोशिश की, लेकिन सत्या ने मुड़कर उसे रोक दिया और अपनी ढाल का उपयोग करके सैनिक के चेहरे पर जोरदार प्रहार किया।
इसी बीच उसकी नज़र शनाया पर पड़ी, जिसके हाथ में हथौड़ा था और वह अपने सामने आने वाले हर किसी को पीट रही थी। उसके पीछे उसने देखा कि कुछ माताएँ

और बच्चे थे; शायद वे नर्सें और उनके बेटे थे जिन्हें वे अपने साथ लाई थीं। वह हमेशा से शिविर में बच्चों के होने के विचार के खिलाफ था। उसने यह भी देखा कि शनाया अंगानों की रक्षा कर रही थी, क्योंकि वह उन्हें अस्पताल के अंदर धकेल रही थी और दरवाज़ा बंद कर रही थी।
सत्या तेज़ी से उसकी ओर बढ़ा, उसके सिर पर ढाल थी जिससे उसकी ओर आ रहे तीर रुक रहे थे। उसने एक सैनिक को पास आते देखा, कीचड़ उड़ता हुआ उसने उसे धक्का देकर दूर कर दिया और ढाल से उसे कोने में फेंक दिया। तभी एक और सैनिक प्रकट हुआ और सत्या ने उस पर झपट्टा मारकर उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। जब तक वह शनाया पहुंचा, तब तक वह भूल चुका था कि उसने कितने लोगों को मारा था, लेकिन वह हांफ रहा था और उसे अभी तक कोई चोट नहीं आई थी।
सत्य ने कहा, "हमें भागना होगा।"
“नहीं, हम जीत सकते हैं,” उसने दृढ़ता से कहा। “हमला करने वाले लोग संख्या में कम हैं। हमें बस लंबे समय तक डटे रहना है…और मुझे अस्पताल की रक्षा करनी है। सभी महिलाएं और बच्चे यहीं हैं।”
"ठीक है, तो मैं भी तुम्हारे साथ यहीं हूँ।"
शनाया मुस्कुराई। उसने उसके कंधे पर थपथपाया।
और फिर उनकी गर्मजोशी भरी बातचीत में विराम आ गया, क्योंकि उनकी नजर उस व्यक्ति पर पड़ी जिससे वे किसी भी कीमत पर बचना चाहते थे।
हाथ में कुल्हाड़ी लिए, बीच में एक दैत्य की तरह खड़ा था कोई और नहीं बल्कि… लोहे का मुखौटा पहने हुए आदमी। उन दोनों ने उसके बारे में बहुत कुछ सुना था, और वह यहाँ-वहाँ… हर जगह मौजूद था।
सत्य ने कहा, "मैं उससे निपट लूंगा। साला बेवकूफ।"
जैसे ही कुल्हाड़ी उसकी ओर आई, उसने उसे अपनी ढाल से रोक दिया। यह एक जोरदार हमला था, और वह लुढ़क गया, अपनी मूंछें झटकते हुए आगे बढ़ा और लोहे का मुखौटा पहने हुए आदमी की ओर तेज़ी से कुल्हाड़ी का वार किया, जिसे उसने आसानी से रोक दिया। वह शांत भाव से खड़ा था, जबकि सत्य के आसपास की दुनिया बिखर रही थी, सैनिक ताश के पत्तों की तरह गिरकर मर रहे थे, और उनके तंबुओं में आग बढ़ती जा रही थी।
सत्य ने कहा, "तुम्हें पता है तुम्हारी समस्या क्या है? तुम्हारा चेहरा इतना बदसूरत है कि तुम्हें उसे उस लोहे के मुखौटे के पीछे छिपाना पड़ता है।"

काल ने कुछ नहीं कहा। उसने बस अपने हाथ में कुल्हाड़ी उठाई और सत्या पर झपटा, जिसने वार को रोककर पलटवार किया और काल की रीढ़ में वार कर दिया। विशालकाय राक्षस ज़ोरदार आवाज़ के साथ नीचे गिर पड़ा, लेकिन उसके मुँह से एक भी चीख नहीं निकली, मानो उसे ज़रा भी दर्द न हुआ हो।
"तुम भले ही बड़े कद के आदमी हो, लेकिन मैं कभी कमांडर हुआ करता था..."
फिर काल ने अपनी कुल्हाड़ी सत्य के पैरों पर चलाई और उन्हें जोड़-जोड़ कर चीर डाला। सत्य दर्द से कराह उठा, जब उसने अपने पैरों को अलग होते देखा और ज़मीन पर गिरते हुए अपनी ढाल और तलवार को थाम लिया।
अपने पैर खो देने का अहसास होते ही वह तुरंत रोने लगा और उसे लगा कि उसका अंत निकट आ रहा है।
उसने ऊपर देखा तो पीली पड़ी हुई शनाया उसकी ओर आ रही थी, तभी सत्य ने उसे रोक दिया और अपने हाथ दिखाते हुए, पीली आँखों से उसे रुकने के लिए कहा, यह समझते हुए कि उसने जो कुछ भी किया वह कर्ण और...
उसने पीछे मुड़कर देखा तो लोहे का मुखौटा पहने उस आदमी के पैर उसके चेहरे की ओर बढ़ते हुए दिखाई दिए…

सिर मांस के लोथड़े की तरह फट गया।
कर्ण ने एक पल के लिए महसूस किया कि उसका दिल रुक गया है और उसके अंग कमजोर पड़ गए हैं, जब उसने अपने गुरु—अपने अतीत के गुरु—को बुरी तरह पिटते और क्षत-विक्षत हालत में, एक बेजान शरीर में परिवर्तित होते देखा।
“नहीं!” वह जोर-जोर से चिल्लाया और उसने शनाया को भी देखा जो रो रही थी और सैनिकों से लड़ रही थी।
लोहे का मुखौटा पहने उस आदमी ने सत्या के कुचले हुए सिर को ऐसे दबाया जैसे वह कोई कुचला हुआ संतरा हो।
“मैं तुम्हें मार डालूंगा!” कर्ण ने जरा भी इंतजार नहीं किया।
वह लोहे का मुखौटा पहने हुए व्यक्ति की ओर झपटा और एक झटके में उसे सीने पर ज़ोर से धक्का दिया। लोहे का मुखौटा पहने हुए व्यक्ति लगभग गिर ही पड़ा, क्योंकि उसने दो तीर निकाले और उसकी गर्दन की ओर तेज़ी से चलाए, जिससे तीर उसके गले में जा लगे।

लोहे का मुखौटा पहने उस व्यक्ति को कुछ समय लगा, लेकिन उसने अपने गले से तीर निकाले और उन्हें अपने नंगे हाथों से टुकड़े-टुकड़े कर दिया।
उसका मुखौटा। यही उसकी कमजोरी है। इसीलिए वह इसे पहनता है।
कर्ण योजना बना रहा था कि तभी लोहे के मुखौटे वाले व्यक्ति ने अपनी कुल्हाड़ी उसकी ओर घुमाई और वह बच निकला, पीछे की ओर लुढ़कते हुए उसने लोहे के मुखौटे वाले व्यक्ति को भ्रमित करने के लिए उसकी पीठ में एक और तीर चलाया, जिसने एक पल के लिए पीछे मुड़कर देखा कि तीर कहाँ गया...
और कर्ण को इससे अधिक की आवश्यकता नहीं थी।
वह हवा में कलाबाजी करते हुए मुखौटा पकड़ लिया और लोहे का मुखौटा पहने हुए आदमी के ऊपर चढ़कर उसे फाड़ने लगा। लेकिन वह आदमी उसे पकड़े रहने की कोशिश करता रहा... जब तक कि उसका संतुलन बिगड़कर वह जमीन पर गिर नहीं गया, कर्ण उसके ऊपर था, दोनों धूल और मिट्टी के गुबार में लथपथ हो गए। उसके शरीर में तेज दर्द हो रहा था, जैसे-जैसे वह मुखौटा ऊपर खींचता रहा, और आखिरकार... उसने किया।
उसके बालों की लटें खुल गईं और चेहरा दिखाई दिया, और लोहे का मुखौटा पहने हुए आदमी ने उसे जमीन पर गिरते ही धक्का देकर दूर कर दिया और जल्दी से अपनी कुल्हाड़ी पकड़ ली।
उसने मास्क उन कारणों से नहीं पहना था जिनके बारे में मैंने सोचा था।
वह जाना-पहचाना था। काफी जाना-पहचाना, और वह गुस्से से आग बबूला था।
उसने कर्ण पर बार-बार कुल्हाड़ी चलाई, जिससे कर्ण पीछे हटने लगा और संघर्ष करते हुए डटने लगा। ऐसा करते-करते उसका क्रोध पहले से भी भयंकर हो गया, तभी पीछे से एक साया उस पर झपटा और कर्ण ने देखा कि वह उसकी पत्नी शनाया थी। शनाया ने कटार से उसके सिर पर वार किया, जबकि कर्ण ने अपने दो बाण चलाए और कहा:
"तुम्हें कोई याद नहीं करेगा।"
और उसने अपने धनुष से दो तीर चलाए और वे सीधे उस आदमी की आँखों में जा लगे— दोनों तीर उसकी आँखों में धंस गए, जिससे वह अंधा हो गया…और वह पीछे गिर पड़ा। शनाया ने उसी क्षण का फायदा उठाकर छलांग लगाई और कर्ण के बगल में खड़ी हो गई।
कर्ण ने शंका दूर से दौड़कर लोहे का मुखौटा पहने हुए व्यक्ति के शव की जाँच की और पाया कि वह अपने मुखौटे की तरह ही शांत था, उसमें कोई हलचल नहीं थी।

वह मर गया। आखिरकार।
उसने अपनी आँखों से तीर निकाले और उसे फिर से गहराई तक घुसा दिया, ताकि उसकी खोपड़ी और दिमाग चकनाचूर हो जाएँ। "मैं ऐसा नहीं करूँगा..."
शनाया ने कर्ण को गले लगाया और सत्य के लिए दोनों रोने लगे, क्योंकि उन्होंने देखा कि उनकी मदद करने वाला व्यक्ति मर चुका था और उसका हत्यारा भी मारा जा चुका था। उसने चारों ओर देखा और पाया कि काले कवच वाले सैनिक लगभग मर चुके थे और उसके सैनिक बच गए थे, जबकि लोहे के मुखौटे वाले सैनिकों का हाल देखकर कई लोग जरा की सेना से भाग गए थे।
“क्या हम जीत गए?” उसने पूछा।
"शायद, यह वाला," शनाया ने कहा।
कर्ण ने आह भरी. “हमें जरासंध से मिलना है।”
और क्या करें?
“इसे हमेशा के लिए खत्म करो।” उसे यह भी चिंता होने लगी थी कि सुयोधन ठीक है या नहीं, क्योंकि वह इतनी देर से पलंग पर लेटा हुआ था, सो रहा था और आराम कर रहा था, इन सब से दूर। वह चाहता था कि उसका दोस्त यहाँ होता, लेकिन जरासंध ने उसे पहले ही बेरहमी से प्रताड़ित किया था। “और एक बात भी जान लो जो उसने कभी किसी को नहीं बताई।”
कर्ण की निगाह लोहे का मुखौटा पहने हुए व्यक्ति पर पड़ी।
“क्या?” शनाया ने पूछा।
उसने लोहे का मुखौटा पहने उस आदमी को देखा, जिसका चेहरा काफी जाना-पहचाना था—जरा का चेहरा, शरीर की विकृतियों और उसकी जीभ के साथ...जो बाहर निकली हुई थी, क्योंकि उसका जबड़ा जरासंध के जबड़े से छोटा था, लेकिन इसके अलावा — वह दिखने में बिल्कुल वैसा ही था।
"उसका एक जुड़वा भाई था।"

83

जब जरा ने सपना देखा, तो उसने उस दिन का सपना देखा जब उसने अपने भाई की हत्या की थी।
लेकिन झूठ यही था।
उसके भाई को बचपन से ही उसकी जीभ और जबड़े के कारण उपहास का सामना करना पड़ता था, और उसे मंदबुद्धि होने के कारण तंग किया जाता था। जरा ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो उससे प्यार करता था, जब तक कि उसके पिता ने उसके भाई को निर्वासित नहीं कर दिया और उसके साथ जरा भी चला गया। और जल्द ही, उसे जंगल में अपनी माँ मिल गई, वही राक्षसी जिसने उससे कहा था:
मैं तुम्हें वह सिखाऊंगा जो तुम्हारे पिता को सिखाना चाहिए था।
उसने दोनों लड़कों को युद्धकला और रणनीतियों का पूरा प्रशिक्षण दिया और अंत में वह उनके लिए गुरु और माँ दोनों बन गई। वे जाना नहीं चाहते थे, जब तक कि उसकी माँ ने उससे यह नहीं कहा:
अपने भाई को मार डालो।
जारा असमंजस में थी। "क्यों?"
क्योंकि वही तुम्हारा संरोध होगा। तुम्हारे पूरे जीवन भर। वही तुम्हें वापस खींच लाएगा। उसके प्रति तुम्हारा प्रेम इतना गहरा है कि यदि उसकी मृत्यु हो जाए तो तुम बिखर जाओगे। इसलिए, तुम्हारे सिवा किसी और को उसका रक्त नहीं बहाना चाहिए।
इससे उसका डर और बढ़ गया, और फिर जब उसका भाई, जिसे पासे से खेलना बहुत पसंद था, उन्हें ज़मीन पर लुढ़का रहा था, तब जारा पत्थर ले आया और वह उसे तोड़ने के लिए तैयार था, उसकी आँखों से आंसू बह रहे थे...
जब वह रुका, तो उसका भाई अनजाने में पीछे मुड़कर देखने लगा और बस मुस्कुराया। "रॉक..." उसने कहा। "रॉक..."
“नहीं…” जारा ने मुँह बनाया। “मैं नहीं कर सकता…” और उसने पत्थर एक तरफ फेंक दिया और उसे गले लगा लिया। “मुझे पता है कि अगर लोग तुम्हें देख लेंगे

तो वे तुम्हें मेरी कमजोरी समझेंगे। इसलिए, आज से मेरे भाई को जीवित नहीं माना जाएगा। तुम्हें यथासंभव लंबे समय तक अंधेरे में छिपाकर रखा जाएगा।” और जरा ने लोहे और धातु से उसके लिए एक मुखौटा बनाया, जिससे उसे एक नया चेहरा मिल गया।
जब वह अपनी मां के पास लौटा, तो उसके पास उसका अपना खून था, और उसने वह खून अपनी मां को पिला दिया, जिसे देखकर उसकी मां हंस पड़ी।
“अच्छा। अब मुझे मार डालो। मेरा मकसद पूरा हो गया,” उसने कहा और एक चाकू पेश किया।
"आपका क्या मतलब है?"
राक्षसी ने कहा, "मुझे इस दुनिया में जीने की कोई आवश्यकता नहीं है और तुम मेरा रक्त बहाओगे, इससे मेरी आत्मा तुम्हारे साथ ही रहेगी।"
जारा ने चाकू पकड़ा और कुछ देर तक उसे देखता रहा, कुछ समझ नहीं पा रहा था। तभी उसे एक कर्कश आवाज सुनाई दी और उसने ऊपर देखा, सदमे से उसकी आँखें सिकुड़ गईं, क्योंकि उसके भाई काल ने नकाब पहने हुए ही अपनी माँ के सिर पर एक बड़ा पत्थर मारा था। नकाब के पीछे से जारा को सिसकियाँ सुनाई दे रही थीं।
“मां हमें अलग करना चाहती थी। लेकिन कोई हमें अलग नहीं कर सकता।”
जारा मुस्कुराई और उसे गले लगा लिया। और वे दोनों उस स्त्री के रक्त पर खड़े थे जिसने उन्हें दो से एक बना दिया था।
जब जरा लौटा, तो वह अपने साथ लोहे का मुखौटा पहने एक व्यक्ति को लेकर आया था, लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, काल की बुद्धि में कोई वृद्धि नहीं हुई और वह कमजोर होता चला गया, यहाँ तक कि जरा के कई शत्रुओं ने उस पर हमला कर दिया। जब वह अपनी मृत्युशय्या पर था, तब जरा को एक राक्षसी मिली, जिसने उसे... कुछ दिया।
उसे जरा भी अंदाजा नहीं था कि यह उसे एक राक्षस में बदल देगा।

जारा जाग उठा था। उसकी आँखें खामोश थीं। और उसे महसूस हो रहा था कि उसकी साँसें धीमी हो गई हैं। किसी कारणवश, उसे पता था कि कुछ गड़बड़ है। मानो

उसका कोई हिस्सा मर गया हो। और उसे समझ नहीं आ रहा था कि उसे ऐसा क्यों लग रहा है।
अचानक झटके से वह जाग उठा और मात्र धोती पहने हुए तम्बू से बाहर निकल आया। उसकी गठीली काया उम्र के हिसाब से काफी प्रभावशाली लग रही थी। जरा के बाहर निकलते ही उसने लोगों को देखा—घायल लोग, जो घात लगाकर किए गए हमले से लौट रहे थे। तभी उसने देखा कि उसके कप्तान को दो आदमी दोनों तरफ से खींचकर ला रहे हैं और जरा के सामने आकर रुक गए।
"क्या हुआ?"
“हमने उन्हें भारी नुकसान पहुंचाया, महाराज,” कप्तान के मुंह से खून बह रहा था। “लेकिन हमने अपने कई सैनिकों को भी खो दिया, खासकर काल को।”
“तुम हार गए…काल…?”
"हाँ।"
जरा अपनी भावनाओं को पहचान नहीं पा रहा था। उसने कप्तान को शांत भाव से देखा और फिर सिर हिलाकर उसे जाने दिया। उसने आह भरी, वह कुछ महसूस करना चाहता था; गुस्सा, आक्रोश, लेकिन उसे बस सुन्नपन महसूस हो रहा था। उसने शिविर के उस पार देखा, उसकी नज़र वृष्णि पर पड़ी जिसके पास एक सैनिक खड़ा था, जो उसे खबर बता रहा था, और उसके चेहरे पर भी वही सदमे का भाव था।
और वह जानता था कि उसे जवाब चाहिए।

“मुझे उम्मीद है कि तुम उस लड़के का बेरहमी से कत्ल कर दोगे,” वृष्णि ने उसके तंबू में घुसते ही कहा। “मैं यही उम्मीद करती हूँ। वरना मैं उस पर आग बरसा दूँगी।”
“शांत हो जाओ। युद्ध में मौतें होती हैं,” उसने कहा, लेकिन ज़ाहिर है, उसका यह मतलब नहीं था। कुछ लोगों के लिए कुछ मौतें दूसरों की तुलना में ज़्यादा व्यक्तिगत होती हैं।
“वह मेरा बेटा था…”
“वह तुम्हारा प्रयोग था,” जारा झट से बोली। “उसके साथ ऐसा व्यवहार करना बंद करो जैसे तुम उसकी माँ हो। तुम उसकी माँ नहीं हो।”
"उसे ज़रूरत थी…"

“वह सिर्फ आपका परीक्षण के लिए रखा गया सुअर था,” जारा ने कहा। “और कुछ नहीं। इसलिए मुझे आश्चर्य होता है कि उसकी मौत क्यों हुई?”
“वह अजेय नहीं था। उसे बस दर्द का एहसास नहीं होता था और उसका शरीर विकृत हो गया था। मैंने सुना है कि उसकी आँखें उस धनुर्धर राजा के तीरों से निकाल ली गई थीं।” वृष्णि आगे आई और गुस्से से लाल आँखों से उनके बीच रखी मेज पर मुट्ठी पटकी। “उसके दिमाग पर हमला किया गया और यह बात दुनिया के सामने उजागर कर दी गई।”
"क्या वे लोग उसका शव वापस ले आए हैं?"
"हाँ।"
जारा ने सिर हिलाया। "क्या तुमने इसे देखा है?"
"मेरी की योजना है।"
"तुम ऐसा नहीं करोगे," जारा ने कहा, यह जानते हुए कि वह किसी को भी यह नहीं बताने वाला था कि उस मुखौटे के पीछे उसका भाई है।
"लेकिन…"
मुझे पता है कि तुम उस पर दोबारा प्रयोग करना चाहोगे। और मैं इसकी इजाज़त नहीं दूंगा…”
वृष्णि ने अपनी आवाज बुलंद की, लेकिन जरा ने बस अपना हाथ आगे बढ़ाया। “तुम्हारे लिए कुछ नहीं। और काल के प्रति सम्मान के कारण, मैं तुम्हें निर्वासित नहीं करूँगा, अन्यथा तुम अब तक बाहर हो चुकी होतीं। जब तक हम यहाँ हैं, आराम से रहो, जो कि ज्यादा देर तक नहीं रहेगा।”
वह और विरोध करना चाहती थी, लेकिन उसने राजा के सामने ऐसा करने की हिम्मत नहीं की। वह जानती थी कि राजा का क्रोध उसे नुकसान पहुंचाएगा। "तुम क्या करने की योजना बना रही हो?"
“ठीक है,” उसने आह भरते हुए कहा, यह जानते हुए कि इससे विवाद और आलोचना होगी, “मैं आत्मसमर्पण करने जा रहा हूँ… एक कीमत पर।”

84

कर्ण ने कपड़े के एक टुकड़े से अपने धनुष से खून पोंछा।
जब शनाया शिविर में सभी के कुशल मंगल का आश्वासन दे रही थी और बच्चों और महिलाओं को फिलहाल विदा कर रही थी, तब कर्ण जानता था कि युद्ध समाप्त हो चुका है। काम पूरा हो गया था। वह हार गया था।
वह अपने कमरे के कोने में बैठा रहा और उसे पोंछता रहा। उसे अब सांस फूलने की समस्या नहीं थी। दरअसल, यह समस्या तब गायब हो गई जब उसे एहसास हुआ कि असफलता का कोई डर नहीं है, क्योंकि वह पहले ही असफल हो चुका था। उसने उनमें से कई को मौत के घाट उतार दिया था। उसने सत्ता पाने के स्वार्थी मकसद से युद्ध भड़काया था; अन्यथा सब कुछ शांतिपूर्ण था।
अंगा को पाने और अपने वादे को पूरा करने के चक्कर में वह अंततः एक बुरा आदमी बन गया। एक ऐसा आदमी जिसके बारे में कहानियां सुनाई जाती थीं; एक ठुकराया हुआ और अहंकारी आदमी।
उसके पीछे दरवाजा तेज़ी से खुला और वह समझ गया कि यह शनाया है। वह मुड़ना नहीं चाहता था, तभी उसने एक मर्दाना आवाज़ सुनी: "मैंने सुन लिया।"
वह उस आवाज को पहचानता था।
“सुयोधन,” कर्ण ने धीमी आवाज़ में पूछा, “कैसा महसूस कर रहे हो?”
“और भी बुरा। मुझे वहां होना चाहिए था, उन्हें बचाने के लिए।”
“नहीं। यह तुम्हारी लड़ाई नहीं है। यह मेरी है। और अब कुछ भी बाकी नहीं है। तुम्हारे पिता ने बहुत बड़ी गलती की और तुमने भी मुझ पर भरोसा करके गलती की।”
“खैर,” सुयोधन की परछाई उसके पीछे मंडराती रही, “कोई बात नहीं। हम सब हार जाते हैं।”
“नहीं। मैंने अपने चाचा को खो दिया… मैंने अपने आदमियों को खो दिया… उनका सम्मान खो दिया, मैंने अपने सहयोगी को खो दिया और मुझे यह भी नहीं पता कि मेरा कमांडर कहाँ है…” उसने सिर हिलाया, यह महसूस करते हुए कि उसे देवी को खुले में नहीं भेजना चाहिए था। उसे इतना गलत फैसला नहीं लेना चाहिए था।

“तुम्हारे पिता रास्ते में हैं, जैसा कि स्काउटर्स ने मुझे बताया है। मुझे यकीन है कि वह वही करने आए हैं जो उन्होंने वर्षों पहले मेरे पिता के साथ किया था।”
“लेकिन इस बार मैं यहाँ रहूँगा। मैं उनसे सेना भेजने का अनुरोध करूँगा। बिना किसी सहायता के तुम्हें भेजना उनकी गलती थी,” सुयोधन ने कहा। “बात यहीं खत्म नहीं होती। तुमने जरासंध को भी इतना नुकसान पहुँचाया है कि उसकी भरपाई नामुमकिन है।”
कर्ण ने कहा, "क्योंकि वह मुख्य रूप से मथुरा में ही लड़ता है।"
“मेरे दोस्त, अगर तुम्हें ज़िंदगी में कामयाब होना है, तो समझदार बनो और खुद पर तरस खाना बंद करो, क्योंकि किसी को भी… मेरा मतलब है किसी को भी… इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुमने कितनी कोशिश की और कामयाब नहीं हुए। अगर तुम कामयाब नहीं होते, तो उठो और फिर से कोशिश करो। और फिर से। और फिर से!” उसने पैर पटकते हुए कहा। “मैं अपने पिता को साझेदारी के लिए मना लेता हूँ। वो अपनी सेना दे देंगे और इस बार मैं तुम्हारी मदद करूँगा।” कर्ण ने गंभीर भाव से सुयोधन की ओर रुख किया, जिसकी बांह पर पट्टी बंधी थी, लेकिन उसकी भौंहें तन गई थीं और वह दृढ़ निश्चयी दिख रहा था। "तुम एक अच्छे इंसान हो।"
“मैं यहाँ तारीफें बटोरने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ,” उन्होंने हंसते हुए कहा।
कर्ण ने अपने चेहरे पर हल्की सी मुस्कान बिखेरी और उनके बीच सन्नाटा छा गया, तभी एक ज़ोरदार आवाज़ ने सन्नाटा तोड़ दिया: "संदेश!"

“यह जनरल देवी का घोड़ा है!” एक सैनिक ने खुशी से चिल्लाकर कहा।
कर्ण सुयोधन और शनाया के साथ आमने-सामने खड़ा था, और उसने डूबते सूरज को देखते हुए आगे की ओर देखा। आंधी के कारण खेत लहरा रहे थे और उसके कुछ सैनिक उसके साथ आगे बढ़ रहे थे, तभी घोड़ा उनकी ओर दौड़ पड़ा।
वह कैसे बच निकली…?
घोड़ा आगे बढ़ रहा था और वह उसके ऊपर उसकी परछाईं और उसका सिर साफ देख सकता था...

यह गिर गया।
कर्ण का हृदय थम गया और शनाया ने अपने हाथों को और कसकर पकड़ लिया, जबकि उसके आसपास खड़े लोग हांफने लगे। देवी का सिर कटा शरीर घोड़े से नीचे गिर पड़ा, घोड़ा तेजी से आगे बढ़ा और कर्ण के सामने रुक गया। देवी वहीं सिर कटी पड़ी रहीं।
और जो खुशी उन्होंने कुछ पल पहले महसूस की थी, वह अब गायब हो गई थी। वह बस... गायब हो गई।
उन्होंने उसका सिर काट दिया।
वह तुरंत उसके पास दौड़ा और उसका सिर कटा हुआ शरीर पाया, जबकि उसके आदमी सदमे और भ्रम में वहीं रुके रहे। वह ज़मीन पर लोट-पोट हो गया और उसे देखने लगा; उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे और वह ज़मीन पर हाथ पटकते हुए रोने लगा, तभी सुयोधन ने उसके कंधे पर हाथ रख दिया।
नहीं। ऐसा नहीं हो सकता।
जब खून बहता है, तो वह आसपास के सभी लोगों को भिगो देता है।
उसके एक कदम से निर्दोष लोग मारे गए।
“उसे इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी!” शनाया चिल्लाई।
लेकिन कर्ण की आत्मा पहले ही पराजित हो चुकी थी। उसने हार मान ली थी। वह पूछना चाहता था कि कैसे, लेकिन उसका मुंह खट्टा और बासी था, तभी सुयोधन ने कहा: "उसकी जेब में कुछ है।" और वह उसे निकालने के लिए घुटनों के बल बैठ गया।
यह एक हस्तलिखित पत्र था।
"यह जरासंध की ओर से है," सुयोधन ने कहा, और यह पहले से ही एक धमकी जैसा लग रहा था।
"मुझे पढ़कर सुनाओ," कर्ण ने फुसफुसाते हुए कहा, उसकी आंखें अभी भी सूजी हुई और लाल थीं।
“वह चाहता है कि…” सुयोधन की निगाहें ऊपर उठीं। “वह आत्मसमर्पण करेगा।” “क्या?” कर्ण ने अपने मित्र की ओर देखा।
“लेकिन एक शर्त है,” सुयोधन ने आगे कहा। “वह युद्धक्षेत्र के बीचोंबीच तुमसे कुश्ती लड़ना चाहता है। और अगर वह जीतता है, तो वह अंगा को ले जाएगा। और अगर वह नहीं जीतता है—तो वह आत्मसमर्पण करके चला जाएगा और अंगा को हाथ भी नहीं लगाएगा। यह एक राजा का वादा है।”

कर्ण को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। कुश्ती? "यह ज़रूर कोई चाल होगी।"
“बात समझ में आती है,” शनाया ने एक कोने से कहा, उसके घुंघराले बाल तेज़ हवा में लहरा रहे थे। “पिताजी हमेशा कहते थे कि जरा कुश्ती का बहुत बड़ा प्रशंसक है। वह तो जन्म से ही पहलवान है, जैसे तुम तीरंदाजी में माहिर हो। वह तुम्हें अपमानित करना चाहता है।”
बिल्कुल।
"क्या उसने पहले ही ऐसा नहीं कर दिया है?"
"नहीं। यह व्यक्तिगत है," सुयोधन ने कहा।
हाँ। मैंने उसके भाई को मार डाला। और बिल्कुल उसकी तरह, वह भी अपने अंगूठों से मेरी आँखें निकालना चाहता है।
“तो फिर हम इसे स्वीकार नहीं कर सकते,” सुयोधन ने पत्र फाड़ते हुए कहा। “कर्ण को कुश्ती का ज़रा भी ज्ञान नहीं है। पिताजी कल आ रहे हैं, हम इन नाटकबाज़ियों के बिना भी जीत सकते हैं,” वह रुका। “और उनकी मदद से कर्ण ब्रह्मास्त्र का भी प्रयोग कर सकता है।”
कर्ण चुप रहा। वह कोई फैसला नहीं लेना चाहता था। वह खड़ा हुआ और अपने आदमियों को शव ले जाने का आदेश दिया, जबकि वह शनाया के साथ चल रहा था। एक विशालकाय व्यक्ति होने के बावजूद वह कमजोर दिख रहा था, फूल की तरह नाज़ुक। “कल देखेंगे महाराजा क्या कहते हैं,” कर्ण ने शनाया और सुयोधन से कहा, जो इन शोकपूर्ण समय में प्रसन्न हो गए थे। “लेकिन आज हम शोक मनाते हैं। हम अपना अंत्येशी अनुष्ठान करते हैं। मृतकों का अंतिम संस्कार करते हैं और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।”
दोनों ने सिर हिलाया। कर्ण ने अपने होंठ सिकोड़ लिए। वह ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करना चाहता था, और शायद अगर वह सौदा स्वीकार कर लेता तो उसे इसका प्रयोग करना ही पड़ता।
यह समय था।

85

एक साल पहले…
“गुरुजी, मैं ब्रह्मास्त सीखना चाहता हूँ!” उसने स्पष्ट स्वर में कहा। कर्ण को यहाँ आए दो साल हो गए थे और उसे महसूस हो रहा था कि वह बदल गया है और एक बेहतर इंसान, एक बेहतर योद्धा बन गया है। अब वह परम सत्य जानना चाहता था।
“तुम्हें और कई वर्षों तक अभ्यास करना होगा,” रामभद्र ने शांत भाव से अपनी बोतल से घूंट भरा, मानो इन शब्दों का कोई महत्व ही न हो।
वे मंदिर के भोजन कक्ष में थे; एक शांत, निर्मल स्थान जहाँ वे भोजन कर रहे थे।
"लेकिन क्यों?"
“ब्रह्मास्त्र के बारे में जानने के लिए मन को शांत रखना आवश्यक है। अगर आप अपनी भावनाओं को काबू में नहीं रखते हैं, तो आपकी भावनाएं आप पर हावी हो जाएंगी।”
“लेकिन मैं धैर्यवान हूँ!” उसने हैरानी से कहा, यह महसूस करते हुए कि उसने अभी-अभी अपने ही कथन का खंडन कर दिया है और इस प्रक्रिया में उसने अपने होंठ दबा लिए। “मुझे लगता है कि मैं समझ गया। लेकिन क्या कोई ऐसा तरीका है जिससे मैं यह साबित कर सकूँ कि मुझमें ब्रह्मास्त्र प्राप्त करने की शक्ति है?”
“शायद। वहाँ राक्षसों का अड्डा है। जब तुम्हारा प्रशिक्षण पूरा हो जाएगा, तो मैं तुम्हें दिखाऊँगा।”
कर्ण को लगा कि उसने सब कुछ सीख लिया है। अब और क्या बचा था? और इसीलिए उसने यह सवाल पूछा।
"जिस तरह से आप यह सवाल पूछ रहे हैं, उससे पता चलता है कि आप इसके लिए तैयार नहीं हैं... या शायद आप तैयार हैं। आप प्रतिभाशाली हैं। यह बात हमें आपके कमरे को देखकर समझ आ गई।"

“तो मुझे इस पर हमला करने दीजिए। मैं यहां राक्षस को हराकर आपको अपनी काबिलियत साबित कर दूंगा।”
रामभद्र ने अपनी निगाहें सिकोड़ीं। “तुम्हारी आत्मा क्षत्रिय की है, जो युद्ध और लड़ाई के लिए तड़प रही है। ब्राह्मण अध्ययन करता है, धैर्यवान होता है और प्रतीक्षा करता है। वह युद्ध के उन्माद को अपने ऊपर हावी नहीं होने देता। वह अपने आक्रमणों की योजना बनाता है।”
“पर मैं…” वह दोबारा झूठ नहीं बोलना चाहता था। इसलिए उसने आह भरी और मंदिर के द्वार की ओर बढ़ा। उसने गहरी साँस ली और अपने गुस्से को किनारे रखकर एक गहरी साँस ली, जिससे वह थक चुका था। उसके सामने उसने देखा कि मंदिर के कई पुजारी तेंदुए की खाल के वस्त्र और उलझे बालों में इकट्ठा होकर किसी चीज़ की ओर देख रहे थे। “क्या हो रहा है, गुरुजी?”
तब तक रामभद्र उसके करीब पहुँच चुके थे और कर्ण के सामने खड़े हो गए थे। "सचमुच, सबसे बुरा हो चुका है।"
"और वह यह है कि?"
“किरातास। पहाड़ी डाकू,” उसने कहा।
कर्ण ने वह देखा जिसकी ओर वह इशारा कर रहा था। पहाड़ियों की चोटी और ढलान पर बहुत सारे बिंदु दिखाई दे रहे थे, लोग अपने हुक से नीचे उतर रहे थे और ऊपर चढ़ रहे थे और आगे स्थित गांव से सामान चुरा रहे थे।
“और मार्शल आर्टिस्ट होने के नाते, आप इसके बारे में कुछ नहीं करते?” कर्ण चिल्लाया।
रामभद्रा मुस्कुराए। “हम ब्राह्मण हैं, बालक। हम जो कुछ भी करते हैं, वह केवल भगवान परशुराम के आदर्शों की पवित्रता के लिए करते हैं।”
लेकिन गांववाले…
“वे सिर्फ चोरी करते हैं। कोई खून-खराबा नहीं होता।”
"लेकिन उनका खाना और उनकी आजीविका चोरी हो रही है...वे भूखे मर जाएंगे।"
हम उन्हें खाना खिलाते हैं।
उसने मन ही मन बड़बड़ाते हुए गाली दी, जब उसने देखा कि कैसे एक युवती रो रही थी क्योंकि चावल से भरी एक विशाल टोकरी को किरातों ने छीन लिया था, जो सभी भालू की खाल पहने हुए थे, गहरे रंग के थे और उनके माथे पर किसी प्रकार का हरा या नीला रंग लगा हुआ था।
"यह गलत है।"

“इस दुनिया में कुछ भी गलत नहीं है, बेटा। मायने सिर्फ प्रकृति का नियम रखता है। डाकू का स्वभाव चोरी करना है, और ग्रामीण का स्वभाव खाने के लिए अधिक उगाना है। हिंसा का यही दुष्चक्र इस धरती पर लंबे समय से चला आ रहा है।”
लेकिन अगर आप इसे तोड़ दें तो क्या होगा?
"क्या तुम्हारा मतलब उन्हें मारकर है? अरे, अगर तुम ऐसा करोगे, तो क्या तुम खुद हिंसा का अभ्यास नहीं कर रहे हो?"
लेकिन वह जानता था कि उसे नियमों का पालन करने से कहीं बेहतर इंसान बनना होगा। वह जानता था कि नियमों का उल्लंघन और विद्रोह हमेशा उसे मुसीबत में डालता था, लेकिन कर्ण ने उसकी बात नहीं मानी। उसने अपना विजय धनुष, अपने पंखदार बाण उठाए और चल पड़ा, उसकी कमरबंद पर लटकता हुआ हुकनुमा ब्लेड भी उसके रास्ते में था।
सभी पुजारी क्रोधित थे। हताश थे। वह उन्हें गुस्से में देख सकता था, लेकिन उसे कोई परवाह नहीं थी, तभी किसी ने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे एहसास हुआ कि वह रामभद्र था।
“अगर तुम चली जाओगी, तो मैं तुम्हारी रक्षा नहीं कर पाऊंगा,” उसने चिंता व्यक्त करते हुए कहा।
लेकिन कर्ण ने नहीं सुना। उसे लोगों की मदद करनी ही थी।
और उसने अपने गुरु के हाथों से अपना हाथ छुड़ाते हुए कहा: “हिंसा के चक्र के बारे में आप सही कह रहे हैं। और शायद हिंसा को रोकना जरूरी है, भले ही इसके लिए अहंकार का त्याग करना पड़े, लेकिन मैं ऐसा नहीं हूँ। अगर मुझे लगता है कि यह सही है, तो मैं अपने जीवन के अंत तक हिंसा का मुकाबला हिंसा से करूँगा।”
कर्ण जब तेजी से आगे बढ़ा और अथाह गति से चलने लगा तो रामभद्र ने कुछ नहीं कहा।
जब खून बहता है, तो वह आसपास के सभी लोगों को भिगो देता है। ये शब्द गूंजे, लेकिन उसने उन्हें अनसुना कर दिया।

जब तक वह वहाँ पहुँचा, तब तक वहाँ केवल तीन लोग ही बचे थे और वे चोरी के सामान के साथ पहाड़ी पर चढ़ रहे थे और चोटियों से भाग निकलेंगे।
मुझे उन्हें भागने से पहले ही रोकना होगा।
उसने हुक के ब्लेड को घुमाना शुरू किया, जिसे उसने आकाश में उछाला और वह बर्फ की परत में धंस गया।
फिर उसने कमरबंद से बांधते हुए खुद को ऊपर खींचना शुरू किया। अब वह कसकर बंध गया था और उसके हाथ में धनुष था, वार करने के लिए तैयार।
उसने धनुष का निशाना साधा, और जब तक वह वहाँ पहुँचा, तब तक उसकी नज़र चावल की बोरी पकड़े हुए हाथ पर पड़ी। उसने तीर किरात के हाथ पर चलाया, जिसे तब तक उस पर शक नहीं हुआ था, और तीर उसे लगा, जिससे वह घायल हो गया। जैसे ही उसने अपने धनुष के नुकीले ब्लेड से पकड़ ढीली की, वह गिर पड़ा।
हालांकि कर्ण उसे पकड़ नहीं पाया, लेकिन उसने चावल की बोरी को पकड़ लिया और उससे लिपटा रहा जबकि वह आदमी पहाड़ की ढलान से गिरकर जमीन पर जा गिरा और मौके पर ही उसकी मौत हो गई।
इससे बाकी दो किरातों का ध्यान आकर्षित हुआ, जिन्होंने फुफकारते हुए एक-दूसरे को तेज़ी से आगे बढ़ने का इशारा किया। वे दाईं ओर तिरछे एक छोटे से किनारे की ओर बढ़ रहे थे, जहाँ से वे भागना चाहते थे।
कर्ण अपने हुक से बुरी तरह लटकने लगा और दाएं-बाएं हिलने लगा, जब तक कि उसे गति नहीं मिल गई और वह दोनों किरातों के करीब नहीं पहुंच गया। उसने खुद को उनकी ओर उछाला और एक को पीछे से पकड़ लिया। जल्दी से, कर्ण ने अपना तीर निकाला और उसकी बांह में घोंप दिया। किरात चिल्लाया, जबकि दूसरे ने धनुष से उस पर निशाना साधने की कोशिश की, और उनमें से एक...
कर्ण की बांह में तेज वार किया गया। कर्ण जोर से चिल्लाया, लेकिन वह किरात को काबू करने में कामयाब रहा, जो गिर पड़ा, हालांकि कर्ण नहीं गिर सका और उसने खुद को फिर से मजबूत कर लिया।
वह तुरंत ही आखिरी किराता की ओर दौड़ा, जो भागने ही वाला था, तभी वह बर्फीली चट्टान पर कूद पड़ा, हवा में उछलते हुए, उसका हुक ढीला होकर टूट गया—लेकिन उसने अपनी सटीक दृष्टि का उपयोग करके आखिरी किराता को घायल कर दिया।

और उसका शरीर छटपटा उठा, मानो हवा में उड़ रहा हो, जैसे ही उसने अपना धनुष डाकू की ओर साधा और आखिरी तीर उसके सिर में लगा दिया। उसके शरीर से और भी खाना गिर पड़ा और वह धड़ाम से गिर पड़ा...
जबकि कर्ण के पास बीच का कोई रास्ता नहीं था और वह...
गिर रहा है…
उसे जमीन करीब आती महसूस हो रही थी और वह जानता था कि उसकी मृत्यु निकट है। उसने हुकनुमा ब्लेड से जूझते हुए उसे पहाड़ी के पार फेंक दिया और उसे घुसाने की कोशिश की, लेकिन निशाना चूक गया।
Help me, Suryadev.
और उसने फिर से कोशिश की, जमीन से लगभग कुछ मीटर दूर, जब तक कि हुक बर्फ की परत से चिपक नहीं गया और उसे एक झटका लगा, जैसे ही उसने खुद को ऊपर खींचा और ऐन मौके पर खुद को मरने से बचा लिया।
वह मुस्कुराता रहा, जबकि उसके आसपास के लोग ताली बजा रहे थे, झुककर उसे डाकुओं का सफाया करने के लिए धन्यवाद दे रहे थे।
कर्ण ने ऊपर उन पुरोहितों की ओर देखा, जो यह तमाशा देखने आए थे और उन सबकी निगाहें दृढ़ता से उसे ही देख रही थीं।
लेकिन उनके चेहरे पर सांत्वना के भाव नहीं थे, बल्कि क्रोध के भाव थे।

86

आज के समय में…
कर्ण तम्बू में प्रवेश करने में हिचकिचा रहा था।
धृतराष्ट्र की सेना के साथ लगभग पाँच हज़ार सैनिक उसके शिविर के चारों ओर एक किलेबंदी की तरह जमा हो गए। वे कर्ण के अधिकांश सैनिकों से कहीं अधिक भारी और ताकतवर थे। मीनारें भर गईं और कर्ण खुद को छोटा और अपमानित महसूस करने लगा। वह कल्पना कर सकता था कि उसके पिता को कैसा लगा होगा जब उनके साथ ऐसा हुआ था। वास्तव में, अब उसके पिता भी यहाँ थे, अपने प्रिय रथ पर राजा को लेकर आए थे।
शनाया ने उसे कोहनी मारी, उसका हाथ पकड़ा और मुस्कुराते हुए उसे देखा। उसके काले बाल चमक रहे थे, और उसकी आँखों में आँसू आ गए। उसने सिर हिलाया, उसका हाथ छोड़ा और तम्बू में प्रवेश कर गया।
धृतराष्ट्र हमेशा की तरह कालीन पर बैठे अपने प्याले से घूंट ले रहे थे, जबकि सुयोधन उनके कानों में फुसफुसा रहा था; वह हताश और गंभीर दिख रहे थे, शायद अपने पिता को कर्ण की आगे मदद करने के लिए मनाने की कोशिश कर रहे थे। “आप यहाँ हैं!” अंधे राजा ने घोषणा की। “कृपया बैठ जाइए।”
कर्ण ने ऐसा किया, क्योंकि उसने देखा कि कमरे में तीन रक्षक सोने के मुखौटे और पगड़ी पहने हुए थे, जिन्होंने अपने चेहरे छुपा रखे थे और सीधे देख रहे थे। धृतराष्ट्र हमेशा से ही अच्छी तरह सुरक्षित थे।
उसने महाराजा की ओर देखा, जिसकी पीली, सफेद आंखें उसे घूर रही थीं और यद्यपि वह अंधा था, उसकी पुतलियां कर्ण की आत्मा में उतर गईं।
“मैं घुमा-फिराकर बात नहीं करना चाहता। इसलिए मैं सीधे-सीधे कह देता हूँ,” उसने कहा। “तुमने मेरे बेटे की जान खतरे में डाली, लेकिन तुमने उसकी जान बचाई भी। तुम्हारे आदमी तुमसे नफरत करते हैं क्योंकि तुम्हारा एक आदमी हस्तिनापुर सिर्फ मुझे यह बताने आया था कि मैं तुम्हें वहाँ से हटा दूँ। और… तुम हार गए। जरासंध जीत गया।”
लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है।

“अरे, अपने सैनिकों को देखो। वे तुमसे नफरत करते हैं। तुमने न सिर्फ भ्रष्टों का साथ दिया, बल्कि उन्हें युद्ध में भी हरा दिया। यही तो एक बुरे राजा होने का प्रमाण है।”
ये शब्द उसे मधुमक्खी के डंक की तरह चुभ गए। वे शब्द सच थे।
“अब जरासंध ने तुम्हारे साथ कुश्ती लड़ने का एक बेतुका सौदा रच दिया है। मुझे समझ नहीं आता क्यों। शायद तुमने उसे बुरी तरह चोट पहुँचाई हो क्योंकि वह ये सब नहीं करता। मैंने उसके भाई को मार डाला। मैं उसकी नफरत का हकदार हूँ, लेकिन वह भी मेरी नफरत का हकदार है। अब, मेरा प्यारा बेटा अभी भी तुम्हारे लिए एक अच्छा बेटा और अच्छा दोस्त बना हुआ है, और तुम खुशकिस्मत हो कि वह यहाँ है। मैं अपनी सेना तुम्हें सौंपने के लिए तैयार हूँ, जो मैंने शुरू में नहीं दी थी, और युद्ध जीतने में तुम्हारी मदद करने के लिए भी तैयार हूँ।”
एक पल के लिए कर्ण का खून जम गया। सचमुच? इन सब के बाद भी?
लेकिन फिर भी वह मुस्कुराया नहीं क्योंकि वह जानता था कि इसमें कुछ और भी छिपा है—कोई ऐसी स्थिति जो उसके लिए प्रतिकूल होगी।
“लेकिन बदले में तुम क्या चाहते हो?” कर्ण ने पूछा।
“तुम्हारा राज्य, बेशक,” वह मुस्कुराया। “पिछली बार के विपरीत, मैं जरासंध के साथ साझेदारी करने की गलती नहीं करूँगा। वह मेरी योजनाओं में बाधा था और मैंने सोचा था कि वह मेरा सहयोगी बनेगा। लेकिन हम पर युद्ध छेड़ना उसकी ओर से बहुत ही नासमझी भरा फैसला था, इसलिए मैं वही करूँगा जो मैंने तुम्हें करने को कहा था। लेकिन बेशक, तुम्हारा राज्य चला जाएगा, तुम्हारा सिंहासन चला जाएगा। अंगा अब तुम्हारा नहीं रहेगा। और यह मेरा हो जाएगा।” उसके चेहरे पर मुस्कान बनी रही, और वह एक व्यंग्यपूर्ण, दयनीय मुस्कान थी। कर्ण कुछ देर रुका, तभी सुयोधन ने गंभीर स्वर में कहा, “वासु, यह अच्छी योजना है। मुझे पता है कि तुम सिंहासन चाहते थे, लेकिन अगर पिता जी चले गए, तो अंगा का जो कुछ भी बचा है, वह भी चला जाएगा। कम से कम, पिता जी के अधीन तुम सेनापति के रूप में शासन कर सकते हो।”
“बेशक। औपचारिकता के तौर पर ही सही, आपको एक पद आवंटित किया जाएगा…” धृतराष्ट्र ने कर्ण पर एहसान जताते हुए मजाक के लहजे में यह आखिरी टिप्पणी की।

कर्ण समझ सकता था कि सुयोधन ऐसा क्यों करेगा; उसे त्यागने के लिए मनाना चाहता था। लेकिन उसका मन बार-बार अपने किए गए वादे की ओर लौट रहा था, और वह निश्चित रूप से जानता था कि राजद्रोही राजाओं के प्रस्तावों के आगे झुकने के बजाय वह उस वादे को निभाते हुए मरना पसंद करेगा।
“अगर मैं खुद यह युद्ध जीत जाऊं तो क्या होगा?” कर्ण ने ऊपर देखते हुए पूछा।
सुयोधन ने तुरंत अपना सिर हिलाया, लेकिन धृतराष्ट्र अपनी हंसी नहीं रोक पाए। "और आप यह कैसे संभव करना चाहते हैं?"
कर्ण ने कहा, "मुझे जो करना होगा, मैं वही करूंगा।"
“सचमुच? सचमुच?” धृतराष्ट्र अपने उस पुत्र की ओर मुड़े जो अड़ियल था और उम्मीद खो चुका था। “तुम्हारा मित्र बड़ा हठी है। वैसे तो वह एक घटिया राजा है। तुम सब कुछ दांव पर लगा रहे हो… अपनी जान, अपने सैनिकों की जान और अपनी म्लेच्छ पत्नी की जान, जो यहाँ तब भी डटी रही जब उसके वंश ने तुम्हें धोखा दिया।”
“मुझे पता है। लेकिन मैं यह जोखिम उठाने को तैयार हूँ,” कर्ण ने कहा। “अगर मैं जीत जाता हूँ, महाराज, तो मैं न केवल लकड़ी उत्पादन का प्रतिशत छोड़ दूँगा, बल्कि आपके राज्य से भी अपना संबंध तोड़ लूँगा। अगर मैं जीत जाता हूँ, तो।”
“कोई वफादारी नहीं?” उसने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। “अरे वाह, अब तो फिर से सौदा करना पड़ेगा। ठीक है,” उसने तुरंत सिर हिलाया। “आप लकड़ी उत्पादन क्यों बंद करना चाहते हैं? क्या आप सारा पैसा अपनी जेब में डालना चाहते हैं?”
“नहीं, मैंने एक मित्र से वादा किया था,” कर्ण ने एकलव्य को याद दिलाते हुए कहा। “मैं प्रकृति को नष्ट नहीं करना चाहता। अंगा पहले ही काफी तबाह हो चुका है।”
“आह, एक सच्चा, सम्माननीय व्यक्ति। दुख की बात है कि उनमें से अधिकांश जल्दी ही नष्ट हो जाते हैं। वीर दीर्घायु नहीं होते, मेरे प्रिय कर्ण,” अंधे राजा ने कहा।
लेकिन जब तक वे जीवित हैं, हर पल सार्थक है।
महाराजा चुप रहे। फिर उन्होंने सुयोधन की ओर मुड़कर कहा, “मुझे लगता है कि हमें अब चलना चाहिए। कर्ण को अपना काम करना है; असंभव लड़ाई लड़नी है।” वे

खड़े हो गए और कर्ण भी खड़े होकर महाराजा के सामने झुक गया। “कर्ण, एक बात याद रखना, अगर तुम यह युद्ध लड़ने जा रहे हो, तो मैं तुम्हें कुछ जानकारी देना चाहता हूँ—तुम्हारे सैनिक…” वे मुस्कुराए, “वे तुमसे नफरत करते हैं क्योंकि तुमने उन्हें यह नहीं दिखाया है कि तुम राजा हो और तुम्हें उन्हें यह साबित करना होगा कि उन्हें तुमसे नफरत क्यों नहीं करनी चाहिए। मुझे विश्वास है, अगर वे तुम्हारी असली क्षमता देख लें… तो मुझे यकीन है कि वे तुम्हें पसंद करने लगेंगे।”
कर्ण अंधे राजा को देखता रहा और जाते समय उसने सिर हिलाया, सुयोधन ने उसकी मदद की, जिसे आने वाले समय के बारे में सोचकर दुख हो रहा था।

87

कर्ण अस्तबल से बाहर निकलते ही अपने तम्बू की ओर चल पड़ा, उसके मन में योजनाएँ बन रही थीं। उसे अंततः जरासंध के साथ कुश्ती का मुकाबला स्वीकार करना ही था, लेकिन उसे चतुराई से भी काम लेना था।
क्या करें?
उन्होंने एक असंभव कार्य अपने हाथ में लिया था।
चलते-चलते उसकी नज़र अस्तबल में अपने पिता पर पड़ी, जो एक घोड़े को साफ कर रहे थे, मानो किसी सारथी की तरह। रथ सोने का और अलंकृत था, लेकिन पिछली बार जब उसने उसे देखा था, उससे कहीं ज़्यादा जंग लगा हुआ था। फिर भी, वह भव्यता से खड़ा था।
उसके पिता ने उसकी ओर एक नज़र डाली और कर्ण से नज़रें मिलाईं। वह अपने चारों ओर चल रहे लोगों के शोर के बीच असहज रूप से खड़ा था। उसका शरीर गोल-मटोल था, और उसकी घनी मूंछों में तेल लगा हुआ था और बाल पीछे की ओर कंघी किए हुए थे।
कर्ण आगे आया और अधिरथ ने उसे गले लगा लिया। परिवार में क्रोध आग की तरह होता है, लेकिन जितनी जल्दी भड़कता है उतनी ही जल्दी बुझ भी जाता है। वे काफी देर तक एक-दूसरे को गले लगाए रहे और कर्ण अधिरथ के कंधों पर सिर रखकर रोने लगा।
“मुझे खेद है। आप सही थे,” कर्ण ने कहा।
आपको ऐसा होने की जरूरत नहीं है।
मैंने किया... मैं बहुत मूर्ख था।
“तुम एक होशियार लड़के हो। ऐसा मत कहो।”
“मैंने इस पर बहुत मेहनत की…सीखते हुए…और…मुझे नहीं पता मुझसे कहाँ गलती हुई,” कर्ण ने कहा। “मैं अपनी माँ के अंत्येशी में भी नहीं गया, मुझे वहाँ होना चाहिए था, लेकिन यह वादा था…”
“तुम्हें किसने वादा करवाया?” अधिरथ ने अपने बेटे से लिपटते हुए पूछा।

कर्ण रुक गया। वह जानता था कि सफलता मिलने तक वह किसी को नहीं बताएगा, लेकिन अब उसे यह भी नहीं पता था कि वह बताएगा भी या नहीं। और वह यह जानकर संतुष्टि पाना चाहता था कि उसने किसी को बताया, खासकर उसे जो उसके लिए सबसे महत्वपूर्ण था।
“माँ,” उसने कहा, और उसके पिता का चेहरा उसके कंधे में छिपा हुआ था। “माँ ने मुझे बारह साल की उम्र में कहा था कि मुझे अंगा को वापस लाने के लिए अपनी पूरी ताकत लगानी चाहिए, क्योंकि मैं ही उसका असली वारिस था। वह अंगा को आज़ाद देखना चाहती थी। और उसने कहा था, अगर तुम मुझे रोकने की कोशिश भी करो, तो हार मत मानना। सीखते रहो। सीखते रहो। सीखते रहो। बस सीखते रहो और एक तैयार योजना के साथ वापस आना, और मैंने ऐसा ही किया, लेकिन फिर भी मैं हार गया।”
वह रुका।
“शायद आप सही थीं। मैं इसके लिए बनी ही नहीं हूँ। मुझे शॉन की तरह होना चाहिए था, मुझे माँ की बात नहीं माननी चाहिए थी…”
“नहीं, मैं गलत था, वासु।” अधिरथ ने भौंहें चढ़ाते हुए उसे पीछे खींच लिया। “मैंने तुम्हारी कही हुई बात पर गौर किया। मैं गलत था। तुम नहीं। कोई और नहीं। तीस साल पहले जरासंध का मुकाबला न करने में मेरी गलती थी। यह मानने में मेरी गलती थी कि तुम ऐसा नहीं कर सकते। और तुम कर सकते हो।”
"लेकिन कैसे?"
“जब तुम मुझसे मिलने आए थे, तब तुम्हारे अंदर राजा बनने की तीव्र इच्छा थी,” उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा। “तुम अपने अहंकार में इतने डूबे हुए थे। तुम्हें ताज और राजसी ठाठ-बाठ बहुत पसंद थे…और मुझे लगा कि तुम अपना आपा खो बैठे हो। तुम वही बन गए थे जो सारे राजा होते हैं। अपनी माँ के वचन को निभाने के चक्कर में तुम भौतिक सुखों में मग्न हो गए।” उनकी आँखों में भी आँसू आ गए। “लेकिन याद रखना बेटे। राजा मत बनो। नेता बनो। और तुम्हारे लोग…वे तुम्हारा अनुसरण करेंगे। मैं कभी नेता नहीं बना। लेकिन मैं तुममें वह गुण देखता हूँ।”
कर्ण स्तब्ध रह गया। बिल्कुल। मुझे हमेशा से इस पद की चाह थी, लेकिन मैं भूल गया था कि मुझे सबसे पहले क्या बनना था। मुझे अंगा को मुक्त कराना था और यह मेरे लिए केवल राजा होने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण था।
“I rejected Dhritarashtra.”

Adhirath smiled. And Karna smiled back.
“यह एक अच्छा निर्णय है। तीस साल की मेहनत के बाद लिया गया निर्णय, लेकिन वाकई बहुत अच्छा है,” अधिरथ ने हंसते हुए कहा। “क्या आपके पास कोई योजना है?”
कर्ण ने सिर हिलाया। "हाँ, मुझे ऐसा ही लगता है।"
और अगर आप असफल हो गए तो?
कर्ण जानता था कि अगर उससे पहले किसी ने यह सवाल पूछा होता, तो उसका गला भर आता।
लेकिन अभी नहीं।
क्योंकि उन्हें एहसास हुआ कि चीजों को लेकर चिंतित होना स्वाभाविक है, लेकिन इसे खुद पर हावी नहीं होने देना चाहिए और चिंता के खिलाफ लड़ाई लंबी है, लेकिन आपको हर दिन लड़ना होगा।
“अगर मैं असफल हो गया, पिताजी…” कर्ण मुस्कुराया। “मैं फिर से कोशिश करूंगा। और फिर से। जब तक मैं सफल नहीं हो जाता।”

88

कर्ण जानता था कि अपने साम्राज्य की रक्षा करने की प्रक्रिया में वह असाधारण कार्य करेगा, लेकिन उसने कभी नहीं सोचा था कि उसे इसके लिए संघर्ष करना पड़ेगा।
वह इसमें हमेशा औसत दर्जे का ही था। और उसे इसकी कोई खास समझ भी नहीं थी। हालाँकि तीरंदाजी उसकी विशेषज्ञता का क्षेत्र था, फिर भी वह जानता था कि भरत के सबसे प्रसिद्ध मल्ल योद्धा जरासंध के सामने वह कमजोर पड़ रहा है, जिसने हनुमान और भगवान शिव को समर्पित प्रशिक्षण मैदान बनवाए थे।
कर्ण ने लंगोट पहन रखी थी और अपने बालों को पीछे बांध रखा था ताकि कुश्ती में कोई बाधा न आए। उसने रेत में दीक्षा ली थी और उसके हाथ गंदे और मैले थे।
बस यही था। यही उसका अंत या शुरुआत होने वाला था…
"क्या आप निश्चित हैं?" शनाया उसके बगल में बैठी थी, उसकी तलवार उसकी कमरबंद से लटक रही थी।
"हाँ।"
आपको ऐसा करने की जरूरत नहीं है।
“मुझे पता है। लेकिन मुझे यह करना ही होगा। मेरे अधीन काम करने वाले लोगों को यह जानना चाहिए और मेरा अनुसरण करना चाहिए। अगर मैं पीछे हटता रहूंगा, कोने में बैठा रहूंगा और आदेश देता रहूंगा, तो वे मुझे कभी नेता के रूप में नहीं देखेंगे,” कर्ण ने कहा।
“ठीक है। और क्या आप चाहते हैं कि मैं उस विषय पर बात शुरू करूं जिस पर हमने चर्चा की थी?”
कर्ण ने सिर हिलाया। "हाँ। लेकिन सावधान रहना।"
मुझे नहीं लगता कि यह योजना सफल होगी।
लेकिन कर्ण मानव मनोविज्ञान को समझता था। "अगर तुम करोगे तो ऐसा हो जाएगा।"

“ठीक है। मैं अपने आकर्षण का इस्तेमाल करूंगी,” उसने मुस्कुराते हुए उसके होंठों पर ज़ोरदार चुंबन किया। “मुझे पता है हमने बहुत कुछ खोया है, लेकिन हम इसे ठीक कर लेंगे। हम इसमें साथ हैं, ठीक है?”
“हां, मुझे पता है,” वह मुस्कुराया।
और वह चली गई, ताकि वह योजना के एक हिस्से को वैसे ही अंजाम दे सके जैसा वह चाहता था।
अब भाषण देने का समय था।

जारा तैयारी कर रही थी।
हालांकि काफी समय से उसने कुश्ती नहीं लड़ी थी, फिर भी उसे इसकी बहुत याद आ रही थी। अपने शिविर के बीच में, कर्ण उस घोषणा के बाद तैयारी कर रहा था जिसमें बताया गया था कि उसने अपना पत्र तिरस्कार और दुख के साथ स्वीकार कर लिया है, क्योंकि उसका सेनापति बिना सिर के उसके पास वापस भेजा गया था। वह जानता था कि उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया जाएगा, इसलिए उसने तैयारी शुरू कर दी। उसके पास एक गोल गदा थी जिसे वह चला रहा था, साथ ही वह अपने नंगे शरीर पर रेत लगा रहा था और बालों में तेल लगा रहा था।
युद्धक्षेत्र के मध्य भाग को साफ किया गया, सभी शवों को हटा दिया गया और उस पर घी डाला गया, ताकि पहलवानों के लिए वह नरम हो जाए।
कुश्ती के अभ्यास के दौरान वह एक तरफ करवट ले रहा था, तभी उसने वृष्णि को देखा जो अपने हाथों में पाउडर की एक शीशी लिए हुए इधर-उधर घूम रही थी।
“मैंने यह आपके लिए तैयार किया है,” उसने बिना किसी भावना के कहा।
जब जरा ने उसे काल का शव देखने से रोका था, तब से वह जरा से बात नहीं कर रही थी। उसकी आँखों में क्रोध उमड़ रहा था और वह अब तक चुप थी।
“यह क्या है?” जरा ने पूछा।
“एक ऐसा पाउडर जिससे उसकी आंखें चौंधिया जाएंगी और तुम उसे आसानी से हरा कर मार सकते हो,” उसने कहा। “बस इसे रेत के साथ छिड़क दो, अपने किसी एक हमले में।”
“अरे,” वह खिलखिलाकर हँसा, “क्या तुम्हें सच में लगता है कि मैं इन नौटंकी के आगे झुक जाऊँगा? मल्ल युद्ध सम्मान का खेल है। मैं इसे इन चालबाज़ियों

से दूषित नहीं कर सकता। कर्ण मेरे…उम्म…काल का हत्यारा था,” उसने सुधार करते हुए कहा, “लेकिन उसने मेरी विनती का अपमान नहीं किया, भले ही मैंने उसे उकसाया था। उसने मेरी बात मानी, वही किया जो एक पहलवान करता है। और मैं उसे सम्मानजनक मृत्यु दूँगा, उसकी गर्दन में अपनी बाहें डालकर, लेकिन धोखे से नहीं। सही काम करके।”
एक पल के लिए वृष्णि चौंक गई। फिर उसने शीशी को मुट्ठी में कसकर पकड़ा और चली गई।
जारा ने हल्की सी हंसी हंसते हुए अपनी निगाहें युद्धक्षेत्र की ओर मोड़ लीं।
चलो शुरू करें।

कर्ण को तुरही की आवाज सुनाई दी और उसके जाने का समय हो गया था, लेकिन उससे पहले वह एक ऐसी जगह पर खड़ा हो गया जो दूसरों से ऊंची हो, ताकि सभी लोग उसे देख सकें।
“जब मैं यहाँ आया,” उसने कहना शुरू किया, “मैं संशय में था। लोग एक नया शासक चाहते थे।” उसने अपने सैकड़ों सैनिकों को देखा, जो जल्द ही उसका साथ छोड़ने वाले थे। कुछ ने तो भागने के लिए अपना सामान भी पैक कर लिया था। उसने शनाया को नहीं देखा क्योंकि वह किसी ज़रूरी काम से चली गई थी। सुयोधन वहाँ नहीं रुका। उसके पिता ने उसे अपने साथ जाने के लिए मजबूर किया, इस शर्त पर कि वह कर्ण के लिए प्रस्ताव रखेगा। “एक नया राजा। सेनापति देवी एक अच्छी विकल्प थीं और अगर मुझे अपना शासन किसी को सौंपना होता, तो वह एक उत्तम रानी होतीं। लेकिन दुर्भाग्य से उनका देहांत हो गया है। और हम सब उनके लिए शोक मना रहे हैं। आप सब यहाँ खड़े हैं, और मुझे एक बेहतर भविष्य की आशा है। एक ऐसा भविष्य जहाँ लोग यहाँ स्वतंत्र हों। हर चीज़ से। और हर किसी से। मेरे लिए बाहरी लोगों को लाना, म्लेच्छों और निषादों को लाना अनुचित था…” और उसने अपनी निषाद सेना के छोटे से दल की ओर देखा। “लेकिन क्या उन्होंने हमारे लिए कुछ अच्छा नहीं किया? निषादों ने घुसपैठ करके जरा के आदमियों को ज़हर दे दिया। म्लेच्छों ने तब तक हमारा साथ दिया जब तक कि हमारी हार का एहसास होने पर वे चले नहीं गए। और मैं जानता हूँ कि

उन्होंने हमें छोड़ दिया, लेकिन क्या शन्या ने संघर्ष के समय में तुम्हारी पत्नियों और बेटों की मदद नहीं की?”
वे सभी उन्हें थोड़ी उलझन के साथ-साथ श्रद्धा भाव से भी देख रहे थे।
“मैं अब यहाँ राजा बनकर नहीं खड़ा हूँ। अगर मैं वहाँ जाकर हार गया, तो तुम्हारे पास कोई राजा नहीं रहेगा,” कर्ण ने कहा। “मैं तुममें से एक बनकर खड़ा हूँ और मैं जानता हूँ कि तुममें से बहुत से लोग जाना चाहते हैं और तुम जाने के लिए स्वतंत्र हो। तुम सब। मैं किसी को नहीं रोकूँगा। मैं तुम्हें भगोड़ा नहीं कहूँगा और अगर मैं बच भी गया तो तुम पर कोई इनाम नहीं रखूँगा। लेकिन अगर हम जीतते हैं, तुम्हारे प्रयासों से नहीं, बल्कि मुझ पर और अंग पर तुम्हारे विश्वास से—तो यहीं रहो। जिस धरती पर तुम खड़े हो, उसके लिए यहीं रहो,” वह रुका। “मैं तुम सबके लिए कोई अच्छा नेता नहीं रहा। लेकिन मैं वादा करता हूँ कि अंग पहले से कहीं बेहतर होगा। क्योंकि यह सिर्फ मेरी भूमि नहीं है। यह हमारी भूमि है। और इसे एक बेहतर अंग बनाने के लिए, मैं उस अत्याचारी को हराने का पहला कदम उठाऊँगा जिसने इतने लंबे समय तक हमारे लोगों का वध किया है। मैं इसे अपने हाथों से करूँगा या कोशिश करते हुए मर जाऊँगा,” उसने कहा। “और इसके लिए, मैं अंततः ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करने जा रहा हूँ।”
“लेकिन ब्रह्मास्त्र…” किसी ने पुकारा, “…वह कहाँ है?”
आपको मैदान पर पता चल जाएगा।
कर्ण ने आह भरी और आगे बढ़ा, क्योंकि उसे कोई तालियाँ सुनाई नहीं दीं। न ही किसी के चेहरे पर मुस्कान या खुशी के कोई संकेत दिखे। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था।
काश वे यहीं रुक जाएं।

89

कर्ण चलकर मैदान के बीचोंबीच पहुंचा, जहां जरासंध बैठा था।
वह घात लगाए बैठा था। उसके सैनिक कुछ ही गज की दूरी पर भाले और धनुष लिए तैयार खड़े थे। कर्ण के सैनिक भी वहीं थे। भीषण गर्मी में वे किसी भी तरह की दखलंदाजी नहीं कर रहे थे। उनकी निगाहें एक-दूसरे पर टिकी थीं और जरा के चेहरे पर एक हल्की सी व्यंग्यात्मक मुस्कान साफ दिखाई दे रही थी।
"मैं आपके भाई की ओर से क्षमा मांगता हूं," कर्ण ने कहा, जब वे एक-दूसरे के चारों ओर चक्कर लगा रहे थे, लड़ नहीं रहे थे, बल्कि एक-दूसरे का सम्मान कर रहे थे।
“अच्छा हुआ। मुझे नहीं लगा था कि वो इतना घिनौना रूप धारण करने के बाद पहचानने लायक रह जाएगा,” जरा ने कंधे उचकाते हुए कहा, लेकिन कर्ण को उसके भीतर गहरे दुख और पीड़ा के भाव दिखाई दिए। “यहाँ आते समय मैं बस एक ही बात सोच रहा था।”
"क्या?"
“अगर तुमने मेरे जहाज पर हमला न किया होता, तो ये सब कभी शुरू ही न होता,” उसने कहा। “तुमने हिंसा, प्रतिशोध और बेवजह मौतों का यह सिलसिला शुरू किया है और अब मैं तुम्हारा सिर अपनी बाहों में लेकर इसे खत्म करने जा रहा हूँ।” कर्ण के भीतर भय की लहर दौड़ रही थी, लेकिन उसने इसे ज़ाहिर नहीं किया। वह चुप रहा और उसकी माँ की आवाज़ गूंज उठी:
जब खून बहता है, तो वह आसपास के सभी लोगों को भिगो देता है।
लेकिन तुमने मेरे आदमियों को मारकर शुरुआत की… मेरे लोगों को मारकर… क्योंकि उन्होंने विद्रोह किया और मेरी पत्नी की हत्या कर दी।
“क्योंकि तुमने उनका राज्य छीन लिया…”
“क्योंकि मुझे अपना साम्राज्य बढ़ाना था। मैंने तुम्हारे पिता से लकड़ी उत्पादन में हिस्सा मांगा था, लेकिन वे पेड़ काटना नहीं चाहते थे,” जरा ने आह भरी। “आज के लिए किसे दोषी ठहराया जाए, इस पर बहस चलती रहेगी। सूरज काफी ऊपर है। और मुझे उम्मीद है कि तुम तैयार हो। धृतराष्ट्र के खिलाफ खड़े

होने के लिए मैं तुम्हारा सम्मान करता हूँ, क्योंकि वह आया था और उसने तुम्हें कुछ न कुछ पेशकश जरूर की होगी। वह नीच और घटिया इंसान है।”
कर्ण ने सिर हिलाया और हल्के से हँसा, फिर वे एक-दूसरे के चारों ओर घूमने लगे, उनकी उंगलियों से रेत फिसल रही थी, उनके सीने कांस्य रंग के थे और मांसपेशियां उभरी हुई थीं। "अच्छा, इस एक बात पर तो हम सहमत हो सकते हैं।" "हालांकि, मुझे एक सरल तथ्य कभी समझ में नहीं आता," जारा ने कहा।
"क्या?"
लेकिन जरा मकड़ी की तरह जमीन से उछला और कर्ण को धड़ से पकड़कर हवा में उछाल दिया, जिससे वह ज़मीन पर बुरी तरह गिर पड़ा। दर्द से कराहते हुए कर्ण की त्वचा पर घाव और निशान पड़ने लगे। जरा का हमला कबूतर की तरह फुर्तीला और फुर्तीला था। कर्ण उठने की कोशिश कर ही रहा था कि उसने जरा को अगले वार की तैयारी करते देखा, पर वह उससे दूर ही था।
“बहुत बढ़िया,” कर्ण ने अपने चारों ओर उड़ती रेत को पोंछा, जो बिखरकर घूमने लगी, फिर वह आगे बढ़ा और दोनों ने एक-दूसरे की बाहों में अपनी बाहें डाल लीं।
दोनों ने अपनी बाहों को यथासंभव कसकर पकड़ रखा था, उनकी नसें उभर रही थीं और वे दोनों एक-दूसरे को धक्का देने की कोशिश कर रहे थे, जिसमें कर्ण विजयी रहा क्योंकि वह अधिक बलवान और छोटा था और उसने जरा को एक तरफ फेंक दिया, जरा - मकड़ी की तरह - लुढ़क गया और मुस्कुराया।
“बहुत बढ़िया। बहुत बढ़िया। आपने कुछ न कुछ सीख लिया। लेकिन कुश्ती इससे कहीं अधिक जटिल है,” उन्होंने कहा।
आपको क्या समझ नहीं आया?
“आप प्रसिद्ध ब्रह्मास्त्र का उपयोग क्यों नहीं कर रहे हैं?”
उसे पता है।
"क्योंकि यह उससे कहीं अधिक जटिल है।"
“मुझे बताओ,” जारा ने कहा।
कर्ण उछल पड़ा, तभी जरा नीचे झुका और तुरंत उसका धड़ फिर से पकड़ लिया, लेकिन उसे पीछे की ओर पलटने के बजाय, उसने उसे कसकर जकड़ लिया, उसका सिर अपने पेट के निचले हिस्से से सटाकर उसे इस तरह घुमाया कि कोई भी भ्रमित हो जाए, और फिर उसे जमीन पर पटक दिया। कर्ण खांसते और थूकते हुए जमीन पर धूल का गुबार उड़ा रहा था।

"कुंआ…"
कर्ण उस दिन के बारे में सोचने लगा जब उसे ब्रह्मास्त्र के बारे में सच्चाई पता चली थी।
यह वही दिन था जब उन्हें परशुराम गांव से निष्कासित कर दिया गया था।

एक साल पहले…
“गुरुजी, आप ऐसा नहीं कर सकते,” कर्ण की आँखों में लगभग आँसू आ गए थे। “मैंने बहुत कुछ किया है। मैंने बहुत कुछ सीखा है…”
“सब झूठ है!” उसने कर्कश स्वर में कहा। वह सैकड़ों अन्य पुजारियों के बीच एक छोटे से सभा कक्ष में खड़ा था, जहाँ एक निर्णय लिया गया। “तुम्हारी आत्मा क्षत्रिय है। जिस तरह तुमने ग्रामीणों को बचाया, वैसा कोई और नहीं कर सकता, सिवाय एक क्षत्रिय के। एक ब्राह्मण हमेशा व्यापक दृष्टिकोण रखता है, लेकिन क्षत्रिय भावुक होते हैं। वे वहीं जाते हैं जहाँ उनके गुण होते हैं। तुम ब्राह्मणों के सच्चे सार को नहीं दर्शाते, इसलिए तुम्हें निष्कासित किया जाता है।”
लेकिन मैं हूँ, मैं हूँ…
“नहीं, तुम नहीं हो। तुम्हें क्षत्रिय कहना गलत है, क्योंकि हमने कुछ शोध किया, कुछ दूत भेजे और पता चला कि जिस कर्ण को हम प्रशिक्षित करते हैं, वह वासु नाम से जाना जाने वाला कर्ण है और वह सूतपुत्र है। एक सारथी का पुत्र,” रामभद्र ने अपना सिर हिलाया, और हालांकि उनकी आवाज़ ने उनका झूठ उजागर कर दिया, उनकी आँखों ने कुछ भी नहीं कहा। “तुमने लगातार झूठ बोला है और इसके लिए तुम पर श्राप लगेगा। जब तुम्हें अपनी युद्ध कलाओं के ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता होगी, तब तुम उन्हें भूल जाओगे। मैं तुम पर श्राप देता हूँ और हम सब भी! तुम्हें निर्वासित किया जाए!”
कर्ण ने अपने जबड़े भींच लिए और झुकी हुई निगाहों से बाहर की ओर चलने लगा, इस उम्मीद में कि वह कभी पीछे मुड़कर नहीं देखेगा।

आज के समय में…
एक मुक्का हवा में तेजी से आया और उसके चेहरे पर जा लगा, जिससे उसका जबड़ा टूट गया और वह नीचे गिर गया।
कर्ण दर्द से कराह उठा, जब एक लात उसके सीने और पेट पर पड़ी और उसे जमीन पर गिरी रेत का स्वाद चखना पड़ा। तभी जरा ने उसका गला पकड़ लिया।
“यह तुम्हारा अंत है, सुतापुत्र। आशा है कि तुमने अब तक के सफर का आनंद लिया होगा,” वह हँसा।
कर्ण ने इस बंधन से खुद को छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन यह असंभव था, और इसलिए उसने तेजी से अपनी मुट्ठी से जरा के चेहरे पर प्रहार किया और तब तक ऐसा करता रहा जब तक कि जरा की नाक से खून बहने लगा और वह पीछे गिर गया। कर्ण उस पर कूदकर बैठ गया और उसके जबड़े पर मुक्के मारने लगा, लेकिन जरा ने दोनों हाथों को एक साथ रखकर उसे रोक दिया। फिर जरा ने अपना पैर आगे बढ़ाकर पीछे से लात मारी, जिससे कर्ण लुढ़क गया।
उसकी ऊर्जा तेजी से कम होती जा रही थी।
“ब्रह्मास्त्र का रहस्य क्या है?” जरा ने खड़े होकर और ज़मीन पर खून थूकते हुए पूछा। “मैं तुम्हें मारने से पहले जानना चाहता हूँ। इसकी विधि क्या है? यह क्या है? मुझे बताओ! इसे कैसे बनाया जाता है?” और वह बैल की तरह सिर के बल दौड़ा और कर्ण की छाती पर ज़ोरदार प्रहार किया।
उसके सीने में उल्टी आने जैसा अजीब सा एहसास हुआ, लेकिन उसने उसे दबा दिया और ज़मीन पर गिर पड़ा। दोनों आदमी गर्मी से थक चुके थे।
लेकिन जरा इससे बच नहीं पाया। इस बार उसने कर्ण को पकड़ लिया और उसका गला घोंटना शुरू कर दिया।
“बताओ, कमीने। तुम्हें बताना ही होगा…”
कर्ण का दम घुट रहा था, उसकी दृष्टि कमजोर होती जा रही थी और सब कुछ धुंधला दिखाई देने लगा था…

एक साल पहले…
कर्ण अपना सामान पैक कर रहा था और अपने गुस्से और हताशा को मन में दबाए हुए था। वह चला जाएगा और फिर कभी वापस नहीं आएगा। तभी किसी ने उसके कमरे के

दरवाजे पर दस्तक दी। वह कोई और नहीं बल्कि रामभद्र थे, जो गंभीर चेहरे के साथ खड़े थे।
उन्होंने कहा, "मुझे खेद है।"
"वह शर्मनाक था।"
"मुझे पता है।"
“मैं चलता हूँ,” कर्ण ने आह भरी और चलते हुए अपने गुरुजी के सामने आदरपूर्वक प्रणाम किया और आगे बढ़ने लगा।
मुझे खेद है। आपको झूठ नहीं बोलना चाहिए था।
लेकिन तुम मुझे कभी नहीं सिखाते।
"क्योंकि शायद आप तैयार नहीं हैं।"
"क्यों?"
“तुम बहुत जल्दी हार मान लेते हो। असफल होने के बाद आगे कोशिश करने से डरते हो। शायद एक दिन तुम ऐसा न करो, लेकिन आज तुम ऐसा करते हो और इसीलिए मैंने तुम्हें ब्रह्मास्त्र के बारे में कभी सच नहीं बताया,” उन्होंने कहा। “लेकिन एक ऐसे छात्र के रूप में जो क्षत्रिय और ब्राह्मण से भी अधिक दृढ़ था, मुझे तुम्हें इसके बारे में सच बताने का अधिकार है। तुम्हें यह जानना चाहिए, और शायद एक दिन इसका उपयोग भी करना चाहिए।”
कर्ण की आँखें चमक उठीं। क्या वह इसे दिखाने वाला था? लेकिन रामभद्र ने कुछ नहीं कहा। उन्होंने बस उसे अपने पीछे आने को कहा और कर्ण चुपचाप उनके कदमों पर चलने लगा। वे एक ऐसी जगह पर पहुँचे जहाँ लाल फूल खिले हुए थे और तेज़ हवा चल रही थी। चमकीले हरे घास में फूल बिखरे हुए थे, मानो वहाँ खून शान से बह रहा हो। वह उसे एक शाखा पर ले गया, एक ऐसी जगह जहाँ वह अक्सर जाता था, लेकिन अब तक उसने कभी कुछ खास नहीं देखा था।
वह एक तालाब था, जिसमें मछलियाँ तैरती थीं।
“ब्रह्मास्त्र भगवान ब्रह्मा द्वारा निर्मित सबसे महान शस्त्र है, क्योंकि वे ही सब कुछ के रचयिता हैं,” रामभद्र ने समझाया। “और जब उन्होंने ब्रह्मास्त्र की रचना की थी, तब वे जानते थे कि इस शस्त्र को प्राप्त करने पर किसी भी चीज का नाश हो सकता है, किसी भी चीज पर शासन किया जा सकता है, किसी भी शत्रु से लड़ा जा सकता है, लेकिन इसे केवल वही लोग प्राप्त कर सकते हैं जो मानसिक रूप से इसके लिए तैयार हों।”

“क्या बात है?” कर्ण की सांसें लगभग रुक सी गई थीं, वह बहुत उत्साहित और खुश था।
“कौन है?” रामभद्र ने कहा। “भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य जैसे महान गुरुओं ने ब्रह्मास्त्र की सच्ची महारत हासिल की क्योंकि वे सत्य को जानते थे और सत्य इस तालाब में है, मेरे प्रिय बालक।”
कर्ण ने नीचे देखा तो उसे कुछ पीली मछलियाँ, कुछ गीले पत्ते और अपनी परछाई दिखाई दी। "लेकिन मुझे कोई मिसाइल नहीं दिख रही है।"
“क्योंकि ऐसा कुछ है ही नहीं। युगों से ब्रह्मास्त्र के मिसाइल होने की अफवाहें झूठी थीं, क्योंकि सच्चाई यह है,” रामभद्र ने कर्ण के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा। “सच्चाई यह है कि तुम्हारा प्रतिबिंब ही ब्रह्मास्त्र है।” “क्या?” कर्ण को लगभग हंसी आ गई।
“जब भगवान ब्रह्मा ने ब्रह्मास्त्र की रचना की, तो उन्होंने अपने सबसे श्रेष्ठ, सबसे प्रतिभाशाली सैनिक को बनाकर इसकी रचना की। ब्रह्मास्त्र सबसे बड़ा शस्त्र है क्योंकि यह मनुष्य में किसी भी शत्रु का निडर होकर सामना करने की अदम्य भावना का प्रतीक है। सबसे बड़ा शस्त्र स्वयं सैनिक है,” वे मुस्कुराए। “तलवार चलाने वाले के बिना बेकार है, धनुष धारण करने वाले के बिना बेकार है,” वे रुके और अपने अंतिम शब्द कहे जो कर्ण को ईंट की तरह लगे।
"हथियार तभी सबसे अधिक प्रभावी हो सकता है जब उसे एक ऐसे व्यक्ति द्वारा चलाया जाए जिसे असफलता का कोई भय न हो।"

आज के समय में…
कर्ण को महसूस हो रहा था कि बत्तियाँ बुझ रही हैं और उसकी साँसें रुक रही हैं, न केवल इसलिए कि दो मजबूत पहलवानों की भुजाएँ उसके गले पर लिपटी हुई थीं, बल्कि इसलिए भी कि वह जानता था कि वह फिर से असफल हो रहा है...
मुझे पलटवार करना होगा। मुझे करना ही होगा...
एक नेता बनो।
मैं इसे छोड़ नहीं सकता।

उसकी आंखें मुश्किल से खुली थीं, उसका चेहरा बुरी तरह से चोटिल था और वह मरने ही वाला था कि...
उसने मुट्ठी कसी और जरा के सिर पर ज़ोरदार प्रहार किया। जरा ज़मीन पर गिर पड़ा, तभी कर्ण ने उसे टांग से पकड़कर खुद को ऊपर उठाया और पूरी ताकत से उसे मैदान के उस पार फेंकने लगा। जरा दर्द से कराहते हुए ज़मीन पर गिर पड़ा और अपनी पीठ पकड़ ली...तभी...
कर्ण दांत पीसते हुए चिल्लाया और जरा का सिर ज़मीन पर पटक दिया। एक झटके में उसने जरा की गर्दन पकड़ ली और उसका गला घोंटने लगा।
“मैं तुम्हें मार डालूंगा,” कर्ण ने कहा। “तुमने जो कुछ भी किया है, मैं तुम्हें उसके लिए मार डालूंगा, तुम खूनी…”
और वह आदमी सांस नहीं ले पा रहा था। कर्ण ने देखा कि उसके आदमियों ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, और न ही जरा के सैनिकों ने, जो चिंतित दिख रहे थे लेकिन उन्हें जरा की लड़ाई में हस्तक्षेप न करने का आदेश दिया गया था। जारा सांस लेने की कोशिश करते हुए जमीन पर पैर पटकने लगा, उसका चेहरा लाल हो गया, उसकी आंखें लाल हो गईं और वह हांफने लगा।
“तुमने जो भी किया है, उसके लिए मैं तुम्हें मार डालूंगा। तुमने मेरा घर, मेरी माँ, मेरा… सब कुछ तबाह कर दिया है।”
और वह आदमी और भी ज़्यादा हांफने लगा। कर्ण को यह महसूस हो रहा था कि किसी इंसान की आत्मा को धीरे-धीरे खत्म करना कैसा लगता है। “नहीं…कृपया…नहीं…”
फिर कर्ण को देवी, सत्य और उन सभी मृतकों के चेहरे याद आने लगे। उसका क्रोध बढ़ता गया और जरा की पकड़ और भी कसती चली गई, क्योंकि जरा मरने ही वाला था... बिल्कुल करीब...
जब उसकी माँ का चेहरा उसके सामने आया। खेतों में। वह वहीं था। और वह रो रहा था। वह आई थी और उसने उसे बताया था कि बहिष्कृत होना ठीक है। क्योंकि जो लोग अलग-थलग रहने के लिए पैदा होते हैं, उन्हें अक्सर बड़े होने पर अपमानित होना पड़ता है।
कर्ण उसे देख सकता था और उसने उससे कहा: “इन सिंहासनों के लिए इतना खून बहाया। मुझे इस बात की परवाह नहीं कि अधिरथ ने अपना ताज खो दिया। मुझे उन लोगों की चिंता है जो सामंती शक्तियों के कारण अपने घर खो रहे हैं। इसलिए, वासु, मुझसे वादा करो कि जब तुम बूढ़े हो जाओगे तो उन्हें मुक्त कराओगे।

उन्हें मुक्त कराओ और इस वादे को कभी मत तोड़ना, चाहे मैं रोऊं और तुमसे आने की भीख मांगूं। जिस धरती पर तुम बैठे हो, वह तुम्हारे अपनों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।”
“लेकिन आप रात को रोती हैं, माँ। दर्द। मैं उसे उसी तरह चोट पहुँचाऊँगा जैसे जरासंध ने आपको पहुँचाई है।”
“तो क्या तुम भी उसके जैसे नहीं बन जाओगे, मेरे बेटे?” वह मुस्कुराई। “याद रखना—जब खून बहता है, तो वह आसपास के सभी लोगों को भिगो देता है। उसे हराने के लिए कभी मत लड़ना। अंगा को आज़ाद कराने के लिए लड़ना।”
और उसने अपनी पकड़ ढीली कर दी!
जरा गहरी सांसें लेने लगा, उसने थूका और खांसा, और फिर खड़ा हो गया जबकि कर्ण उसके बगल में आराम कर रहा था। उसे अपने प्रतिद्वंदी को न मार पाने का दुख और गुस्सा था, लेकिन वह यह भी जानता था...
“तुम सही थे,” कर्ण ने कहा। “मैंने ही हिंसा का यह सिलसिला शुरू किया था और अगर मैं तुम्हें मार देता तो यह जारी रहता। इसलिए मैं इसे यहीं खत्म करता हूँ। अगर तुम मुझे मारना चाहते हो, तो मार सकते हो।”
जरा ने कर्ण की ओर देखा; उसकी आँखों में दर्द झलक रहा था। “तुम मूर्ख हो! जब मौका था तब तुम्हें कर देना चाहिए था। क्या तुम्हें लगता है कि मैं ऐसा करता…”
और फिर एक धमाका हुआ। वो भी बहुत बड़ा धमाका।
“हम पर हमला हुआ है!” जरा के आदमियों ने चिल्लाकर कहा।
और कर्ण मुस्कुराया, जब उसने शनाया और सैकड़ों पुरुषों को युद्ध के मैदान और अपने शिविर की ओर बढ़ते हुए देखा।
“अभी क्या हुआ?” जरा की आंखें चौड़ी हो गईं।
कर्ण मुस्कुराते हुए बोला, "म्लेच्छों के साथ जो समझौता हुआ था, हां, उसमें बदलाव आ गया है।"

90

जारा अभी भी अपने हाथों और पैरों के बल वहीं पड़ा था, आग जल रही थी, उसके आदमियों पर हमला हो रहा था और लोग जान बचाने के लिए इधर-उधर भाग रहे थे, क्योंकि म्लेचा बड़ी संख्या में आ गए थे, शिविरों को नष्ट कर रहे थे और गुलेलों को निष्क्रिय कर रहे थे। हमला अचानक और अप्रत्याशित था क्योंकि सबका ध्यान द्वंद्वयुद्ध पर था।
“तुमने मुझे बेवकूफ बनाया,” उसने लड़के की ओर देखते हुए कहा। “तुमने मुझे बुरी तरह बेवकूफ बनाया!”
कर्ण मुस्कुराया, उसके गालों से खून टपक रहा था और वह मुस्कुरा रहा था। "उन बर्बर लोगों, म्लेच्छों ने मेरे साथ हुए समझौते से कैसे मुकर गए?" “खैर,” कर्ण ने कंधे उचकाते हुए कहा, “क्योंकि मैंने तुम्हारे नाम से एक जाली दस्तावेज़ बनाया था; और मैंने युद्ध के मैदान से तुम्हारे एक आदमी का शव उठाया था और म्लेच्छ नेता की बेटी को भी साथ ले गया था, ताकि उन्हें और यकीन दिलाया जा सके। उन्हें लगा था कि मुझसे निपट लेने के बाद तुम सौदा तोड़ दोगे…”
लेकिन मैंने कभी कुछ नहीं लिखा।
“मुझे पता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। तुम तो वैसे भी यही करते। क्योंकि युद्ध,” कर्ण घुटनों के बल बैठ गया और अपने बाल ऊपर खींचने लगा, जिससे उसे दर्द हुआ, “ईमानदार और सम्मानित लोगों द्वारा नहीं जीता जाता। यह चतुराई से जीता जाता है, लेकिन साथ ही साथ नेकदिली से भी। यह संदिग्ध नैतिकता से जीता जाता है, लेकिन साथ ही रोजमर्रा की जिंदगी के शौर्य से भी। युद्ध संतुलन है।”
“क्या तुम्हें लगता है कि मैं हार मान लूँगा, तुम्हें मारने से खुद को रोक लूँगा?” जरा ने आह भरी। “मथुरा के बाद, मैं तुम्हारे पास आऊँगा। तुमने यह युद्ध भले ही जीत लिया हो…” ज़ोरदार युद्धघोष सुनाई दिए और उसकी आवाज़ शांत हो गई, “लेकिन तुम आगे नहीं जीत पाए हो। मैं बार-बार आऊँगा, जब तक तुम्हें हरा न दूँ।”

कर्ण सकारात्मक दिख रहा था। वह डरा हुआ नहीं लग रहा था। ऐसा नहीं लग रहा था कि उसे कोई फर्क पड़ रहा है। वास्तव में, जरा ने उसमें कुछ ऐसा देखा; कि वह युद्ध के लिए तैयार था।
“मैं इंतजार करूंगा,” कहकर वह जरा के बालों को छोड़कर चला गया।
और वे दोनों पृष्ठभूमि में चल रहे युद्ध के दृश्य को घूर रहे थे, तभी जरा अपने पैरों पर खड़ा हुआ और राहत की सांस लेते हुए कर्ण की ओर बढ़ा, और चिल्लाया, यह जानते हुए कि उसे काफी नुकसान पहुँचाया गया था, नष्ट किया गया था और अपमानित किया गया था, लेकिन वह जानता था कि वह फिर से उठेगा।
लेकिन फिलहाल, और सिर्फ फिलहाल के लिए, उसने चिल्लाकर कहा और सबने उसकी बात सुनी: “पीछे हटो! पीछे हटो! पीछे हटो!”

91

सुयोधन एक दिन और आगे बढ़ चुका था, जब उसे अपने पिता के साथ डेरा डालने के लिए कहा गया और उसने ऐसा ही किया। रात में संगीत बजने लगा और नर्तकियों को लाया गया। यह जंगल के बीचोंबीच था, जहाँ सड़कें सुनसान थीं और आसपास कुछ खास दिखाई नहीं दे रहा था। पहले की तरह, उसे दासियों या नौकरानियों के पास जाने का मन नहीं हुआ, बल्कि वह एक कोने में ही बैठा रहा। उसके पिता अपने मंत्रियों के साथ अपने अस्थायी सिंहासन पर बैठे हँस रहे थे।
सुयोधन ने अधिरथ को एक कोने में देखा, और वह सैकड़ों तंबू लगाए जाने के दौरान अलाव के पास बैठा था।
अंगा से निकले हुए उन्हें कुछ दिन हो गए थे, लेकिन चूंकि यह एक बड़ी सेना थी, इसलिए उन्हें हस्तिनापुर पहुंचने में समय लगेगा। वे बार-बार विश्राम करेंगे और फिर आगे बढ़ेंगे।
सुयोधन के हाथ में सरकंडे का घड़ा था और वह उसमें से शराब पी रहा था, डकार ले रहा था और फिर और पी रहा था, तभी उसने अपने पिता की आवाज सुनी:
“बेटा, आओ! अंगा का संदेश है। मुझे यकीन है कि तुम जानना चाहोगे कि तुम्हारे दोस्त के साथ क्या हुआ।”
सुयोधन की आँखें चमक उठीं और वह दौड़कर अपने पिता के पास पहुँचा, जिन्होंने अधीरथ समेत अपने मंत्रियों को इकट्ठा कर लिया था। सुयोधन उस दूत के सामने खड़ा हो गया जो हाँफते हुए धृतराष्ट्र के सामने घुटनों के बल बैठा था, और बोला: “हे स्वामी, एक समाचार है।”
“बेशक। मुझे बताओ,” उसके पिता ने तुरंत जवाब दिया।
“कर्ण विजयी हुआ।”
सुयोधन ने अपनी भौंहें उठाईं और अधीरथ की ओर असमंजस भरी नजर से देखा। “तुम्हारा क्या मतलब है, वो जीत गया?” उसके पिता ने झुंझलाहट में कहा। “वो जीत ही नहीं सकता। उसके पास तो सेना ही नहीं थी…”
“उसने द्वंद्वयुद्ध जीत लिया और म्लेच्छों ने फिर से उसकी मदद की,” दूत ने कहा। “यह एक अचानक हमला था। लेकिन वह जीत गया… जरासंध पहले ही बहुत से

सैनिक खो चुका था, अंततः पीछे हट गया और घोषणा की कि अंगा के लिए इतना नुकसान उठाना उचित नहीं है। हालांकि उसकी वापसी की योजना है; वह कब लौटेगा, यह हम नहीं जानते।”
सुयोधन के चेहरे पर मुस्कान आ गई। वह कर्ण के पिता की तरह ही खिलखिला रहा था। दोनों मुस्कुरा रहे थे और उन लोगों के सामने रुक ही नहीं रहे थे जो गुस्से से भड़क रहे धृतराष्ट्र को शांत करने के लिए थपथपा रहे थे।
“वह मूर्ख, नीच जाति का कुत्ता,” राजा ने ज़मीन पर थूका और प्याला फेंक दिया, जिससे शराब चारों ओर फैल गई। “वह जीत गया। वह जीत गया। अगर यह चमत्कार नहीं है, तो क्या है?”
सुयोधन चमत्कारों के बारे में कुछ नहीं जानता था। उसे उन पर कभी विश्वास नहीं था। उसके लिए वे सब व्यर्थ थे। लेकिन वह जानता था कि उसके पिता सही थे। कर्ण एक 'नीच जाति का कुत्ता' था। जिसने यह दिखाया कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कहाँ से आए हैं, आपकी पहचान क्या है।
यदि आपमें जोश और दृढ़ संकल्प है, तो आप इस दुनिया में कुछ भी हासिल कर सकते हैं।
हालांकि वह इस बात से दुखी था कि उसके मित्र ने हस्तिनापुर से सारे संबंध तोड़ लिए थे। क्योंकि एक दिन वह सिंहासन पर बैठना चाहता था और कर्ण को अपने साथ चाहता था।

92

कुछ दिन बीत चुके थे, और जहाँ एक ओर मालिनीपुर उत्सव का स्थल था, वहीं कर्ण चिंतित था।
उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या पहने।
और उसके पास बहुत सारे संदेश भी थे। बहुत सारे दस्तावेज़। बहुत दिलचस्पी।
कई छोटे-छोटे राज्य उसके बारे में सुनकर उससे गठबंधन करना चाहते थे, क्योंकि वह एक छोटी सी सेना के साथ एक विशाल शत्रु से लड़ रहा था। उसने यह कैसे किया, यह एक बड़े रहस्य और षड्यंत्र का विषय था।
लेकिन कर्ण को इसकी परवाह नहीं थी।
"यह कुर्ता अच्छा नहीं लग रहा है," कर्ण ने सुनहरे कुर्ते को पहनते हुए और उसे उतार फेंकते हुए कहा।
शनाया खुद कपड़े पहन रही थी, और उन दोनों ने तय कर लिया था कि वे अपने नौकरों और दासियों की मदद नहीं लेंगी। वे त्योहार के लिए एक साथ तैयार होंगी।
पुरोहितों और मंत्रियों द्वारा अंततः कर्ण के सिर पर ताज रखा जाएगा, और वह केवल एक अंतरिम राजा नहीं बल्कि एक राजा होगा।
“बस अपना कवच पहन लो,” उसने कहा। “यह अच्छा दिखता है।”
“वाह, तुम भी बहुत सुंदर लग रही हो,” कर्ण ने उसे साड़ी में और उसके खूबसूरत सूती वस्त्रों को देखकर कहा और उसके करीब आया। “तुम मेरे जीवन में देखी गई सबसे सुंदर लड़की हो।”
“खैर, यह झूठ है,” शनाया मुस्कुराई। “क्योंकि तुमने बहुत कम देखे हैं।” "अपराधी।"
दोनों हँसे और कर्ण ने उसे चूमा। "अपने पिता को मनाने में तुमने बहुत बहादुरी दिखाई।"
"यह तुम्हारी योजना थी।"
“लेकिन तुम्हारा निष्पादन,” कर्ण मुस्कुराया। “तुम स्वयं एक अच्छे नेता हो। और काश देवी यहाँ होती,” कर्ण अचानक उदास हो गया। “काश वह यहाँ होती, तो

मैं उसे ताज दे देता। यह मेरे किसी काम का नहीं है। और सत्य, ओह वह व्यक्ति जो शराबी बन गया था और फिर मेरे लिए सुधर गया—क्या अद्भुत व्यक्ति था। उसने वही किया जिससे वह डरता था। अपनी प्रजा के लिए, अपनी धरती के लिए मर गया।”
शनाया ने कर्ण के गाल पर उंगलियां फिराईं। "मैं जानती हूं। तुम्हें यहां तक पहुंचाने के लिए कई जानें गई हैं, लेकिन तुम्हें पता है...वे कहीं से तुम्हें देख रहे हैं।"
कर्ण ने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया। "मुझे यह भी देखना होगा कि जरासंध अब क्या करने वाला है।"
“क्षतिपूर्ति। मैंने पहले ही सैनिक भेज दिए हैं। उनका कहना है कि वह आराम कर रहा है और घायल है। अंगा पर हमला करने की ताकत जुटाने में उसे सालों लग जाएंगे। हमारा अगला कदम भावी राज्यों के साथ गठबंधन बनाना होना चाहिए।” “मुझे पता है,” कर्ण मुस्कुराते हुए उस खिड़की की ओर बढ़ा जहाँ पटाखे जल रहे थे और निर्माण कार्य चल रहा था। उसने चंपा में एक बड़ी सेना भेजी थी और अपने लोगों को भी वहाँ बसने का आदेश दिया था। जल्द ही चंपा में आबादी बस जाएगी और उसके चारों ओर सुरक्षा व्यवस्था की जाएगी।
हमें अपने भविष्य के व्यापार के बारे में भी बात करनी होगी…
"इसे रोक।"
“क्या?” उसने कहा।
तुमने मेरे सामने खुद को साबित कर दिया है।
“क्या?” उसने पूछा।
"मैं राजा नहीं बनना चाहता, शनाया।"
एक पल के लिए सन्नाटा छा गया, फिर वह उसके बगल में आकर खड़ी हो गई। "तुम्हारा क्या मतलब है?"
“मैं चाहता हूँ कि अंगा पर एक रानी का शासन हो। मैं राजा बनने के योग्य नहीं हूँ।” उसने उसके हाथ पकड़े हुए खिड़की से देखा कि छोटे बच्चे गीतों पर नाचते-गाते खेल रहे हैं, और दूर से राजधानी हस्तिनापुर की तरह जगमगा रही है। “मैं तुम्हारा सहारा बनकर तुम्हारे साथ रहूँगा, लेकिन यहाँ नहीं रहूँगा। जीवन भर, अपने किए वादे को पूरा करने की चाह ने मुझे बर्बाद कर दिया। इसने मुझे क्रूर और क्रोधित बना दिया। जरा ने जो कहा—मैंने ही युद्ध शुरू किया। वह सही है। मैंने ही किया। मैंने जीतने की ज़िद में इस

धरती पर मौत ला दी। और इस प्रक्रिया में, मैंने सब कुछ खो दिया। मैंने अपने चाचा को खो दिया। मैंने अपनी प्रजा की आशा खो दी। मैंने देवी को खो दिया। लेकिन शुक्र है कि मैंने तुम्हें नहीं खोया। मुझे तुम और तुम्हारा मूर्ख पिता मिला, जिसने शराब पीकर अपनी जान दे दी,” वह हँसा, यह समझते हुए कि आर्किमिडीज़ हमेशा एक अनिश्चित खतरा बना रहेगा, लेकिन कर्ण क्षमा करने और भूलने के लिए तैयार था, क्योंकि उसे एहसास हो गया था कि खून बहाने का कोई फायदा नहीं है। “और मुझे एक…” वह रुका।
तो तुम राजा नहीं बनोगे?
कर्ण खिड़की से दूर हट गया और कागज़ात देखने लगा। उनमें निमंत्रण पत्र, चिट्ठियाँ और संदेश थे, तभी उसकी नज़र किसी असाधारण चीज़ पर पड़ी। ऐसी चीज़ जिसके बारे में उसने कभी सोचा भी नहीं था कि उसे मिलेगी।
यह एक हस्तलिखित पत्र था।
उससे।
Panchali.
वासु,
मैंने तुम्हारी जीत के बारे में सुना है और मुझे विश्वास है कि मैं अपने पिता को मना लूंगी कि वे मेरा हाथ तुमसे जोड़ दें। और वे मान जाएंगे। कृपया इसका जवाब दो और मेरे पास लौट आओ और मुझे यहाँ से ले जाओ। प्लीज़, वासु। मुझे तुम्हारी बहुत याद आ रही है।
मुझे उम्मीद है कि आप मुझे भूले नहीं होंगे।
वह ऐसा कैसे कर सकता था? वह उससे प्यार करता था। वह अब भी करता था। लेकिन वह उसका अतीत थी, वह ऐसी थी जिसने उसे तब छोड़ दिया था जब वह कुछ भी नहीं था, जिसने अपने पिता के खिलाफ लड़ाई नहीं लड़ी बल्कि अर्जुन से शादी करने के लिए राजी हो गई। लेकिन शनाया, वह हमेशा उसके साथ थी, चाहे उसके पिता ने उसे धोखा ही क्यों न दिया हो, और वह धीरे-धीरे अपने कमरे के चूल्हे की ओर बढ़ा, जो चिट्ठी फेंकते ही जलने लगा।
“यह कौन है?” शनाया ने पूछा।
“कोई नहीं,” कर्ण मुस्कुराते हुए मुड़ा। “राजा बनने के लिए, मैं एक संभावित उम्मीदवार का नाम बता सकता हूँ।”
"और वह यह है कि?"
"आप।"

“क्या? मैं तो म्लेच्छ हूँ…”
“तुम एक अच्छे नेता बनोगे,” कर्ण मुस्कुराया। “मैं कोई पदवी नहीं चाहता, लेकिन मैं नगर पर शासन करने में तुम्हारी मदद करूँगा। मुझे ताज या दिखावे की कोई चीज़ नहीं चाहिए। इन चीज़ों का मेरे लिए अब कोई महत्व नहीं है। लेकिन जो मेरे लिए मायने रखता है वो है…” वह रुका। “राज्याभिषेक से पहले मुझे किसी से मिलना है, जहाँ मैं तुम्हारी सत्ता की घोषणा करूँगा और अपनी सत्ता को त्याग दूँगा।”
“लेकिन…” शनाया असमंजस में थी, क्योंकि कर्ण ने उसके होठों पर और फिर माथे पर चुंबन किया।
“मुझे किसी से मिलना है, मेरे प्रिय। क्योंकि मैंने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश में यह महसूस किया कि मुझे कुछ मिला है: मुझे दोस्ती मिली है।”
और वह चला गया।

सुयोधन यात्रा से थक चुका था।
लेकिन वह पहले से ही यहाँ था। और वह दासियों को अपने कमरे में ले आया था और उसने उन्हें तीन दिनों तक अपने साथ रखा, जब तक कि वह थक नहीं गया।
और जब नग्न महिलाएं उसके बिस्तर पर लेटी होती थीं, तो रात में उसकी खिड़की से तरह-तरह की आवाजें आती रहती थीं।
उन्हें पता था कि उन्हें राज्याभिषेक की तैयारी करनी है, और वे इसी उद्देश्य से यहाँ आए थे, जबकि उनके अधिकांश भाई नहीं आए थे। कर्ण ने जो किया, वह उन्हें पसंद नहीं आया था। धृतराष्ट्र भी नहीं आए। लेकिन अधिरथ आए, सारथी का काम छोड़कर, सिर्फ एक पिता होने का सुख भोगने के लिए।
सुयोधन को समझ आ गया कि खिड़कियों के चटकने का क्या कारण था, और वह आगे बढ़ा, पर्दे खोले और सबसे पहले कवच देखा, और फिर कर्ण का दाढ़ीविहीन चेहरा देखा।
“तुम यहाँ क्या कर रहे हो?” सुयोधन हँसते हुए बोला। “क्या तुम्हारे पास पहनने के लिए कोई मुकुट नहीं है?”
“मुझे रोमांटिक महसूस हो रहा था,” कर्ण मुस्कुराया।

“अरे बेवकूफ,” सुयोधन हँसते हुए बोला। “तो लड़कियों को पटाने का यही तरीका है? उनकी खिड़कियों पर पत्थर फेंकना। वाह, क्या अनोखा तरीका है, मेरे दोस्त!”
“खैर,” कर्ण ने कंधे उचकाते हुए कहा। “मैं तुम्हें कुछ बताने आया था।”
और वह क्या है?
मैं आपके ताज के प्रति निष्ठा की शपथ लेता हूँ।
लेकिन आपने मेरे पिता को मना कर दिया था…
“तुम्हारे पिता के लिए, हाँ, लेकिन तुम्हारे लिए नहीं। जब तुम शासन करोगे,” कर्ण ने कहा, “मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। हमेशा। सदा के लिए। मृत्यु तक।” सुयोधन ने अपनी निगाहें सिकोड़ीं। उसे शायद ही याद आ रहा था कि एक महीने पहले ही इस आदमी ने साफ-साफ कहा था कि वह उसकी मदद नहीं करेगा। और अब, वह करेगा। "तुम्हारा मन कैसे बदल गया?"
मैं तो बस एक बड़े दिल वाला मूर्ख हूँ।
“क्या यह सच नहीं है?” वह हँसा। “क्यों न हम राज्याभिषेक को छोड़ दें और शराब पीकर मर जाएँ?”
कर्ण ने सिर हिलाया। "और लोग कहते हैं कि रोमांस मर चुका है।"
सुयोधन हँसा। “पर तुम यह तो समझते हो कि निष्ठा की शपथ लेने का अर्थ है कि तुम्हें मेरे साथ पांडवों का नाश करना होगा। मेरे साथ। क्योंकि वे…” उसका चेहरा गुस्से से भर गया। “मेरे शत्रु हैं, चाहे कुछ भी हो जाए।”
“मुझे पता है,” कर्ण ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा। “क्या तुम्हारे पास कोई योजना है?”
“मुझे नीचे आने दीजिए,” सुयोधन रुकते हुए बोला। “अच्छा, एक है,” उसने सोच-विचार करते हुए कहा।
वे दोनों चुपचाप खड़े रहे, तभी सुयोधन ने मुस्कुराते हुए कहा, "खैर, इसमें उस वास्तुकार पुरोचना का जिक्र है जिससे मैं मिला था, और लाख के घर से भी कुछ लेना-देना है।"
“यह बेवकूफी भरा लगता है। मुझे लगता है कि यह कामयाब नहीं होगा,” कर्ण मुस्कुराया। “लेकिन हम कोशिश तो कर ही सकते हैं। आखिर, बात तो अपना सर्वश्रेष्ठ देने की ही है।”

***** *****

जारी ...

पुस्तक 2

कर्ण , सूर्य का पुत्र

भारत में पहली बार साइमन एंड शूस्टर इंडिया द्वारा 2021 में प्रकाशित।

कॉपीराइट © केविन मिसल, 2021
यह संस्करण 2021 में प्रकाशित हुआ।

केविन मिसल ने कॉपीराइट अधिनियम, 1957 की धारा 57 के तहत इस कृति के लेखक के रूप में पहचाने जाने के अपने अधिकार का दावा किया है।

1 3 5 7 9 10 8 6 4 2

साइमन एंड शूस्टर इंडिया
818, इंद्रप्रकाश बिल्डिंग,
21, बाराखंभा रोड,
नई दिल्ली 110001
www.simonandschuster.co.in

पेपरबैक ISBN: 978-81-951317-9-2 ईबुक ISBN: 978-81-951317-0-9

सूर्या, नई दिल्ली द्वारा भारत में टाइपसेट किया गया

रेप्लिका प्रेस प्राइवेट लिमिटेड द्वारा भारत में मुद्रित और जिल्दबंद।

[यहाँ FSC का लोगो डालें]

साइमन एंड शूस्टर इंडिया टिकाऊ वनों में उगाई गई लकड़ी से बने कागज का उपयोग करने के लिए प्रतिबद्ध है और अग्रणी अंतरराष्ट्रीय वन प्रमाणन संगठन, फॉरेस्ट स्टीवर्डशिप काउंसिल (FSC) का समर्थन करता है। हमारी जिन पुस्तकों पर FSC लोगो लगा होता है, वे FSC प्रमाणित कागज पर मुद्रित होती हैं।

प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी भी प्रकार से पुन: प्रस्तुत, प्रसारित या किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत नहीं किया जा सकता है।

यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि प्रकाशक की पूर्व सहमति के बिना, इसे व्यापारिक रूप से या किसी अन्य तरीके से, उधार नहीं दिया जाएगा, पुनर्विक्रय नहीं किया जाएगा, किराए पर नहीं दिया जाएगा या किसी अन्य

□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□, □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□

□□□□□□□□□

□□□□-□□□□□□ □□□□□

□□□□□□ □□□

1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28

91

92

□□□□□□□□